

श्रीआत्मानन्द-जैनग्रन्थरत्नमालाया अशीतितमं रत्नम् (८०)

पूज्यश्रीसङ्घदासगणिवाचकविनिर्मितं

वसुदेवहिण्डिप्रथमखण्डम् ।



तस्याऽयं प्रथमोंऽशः ।

(धम्मिल्लहिण्डिगर्भितः ।)



सम्पादकौ संशोधकौ च—

बृहत्तपागच्छान्तर्गतसंविग्नशाखीय–आद्याचार्य–न्यायाम्भोनिधि–
संविग्नचूडामणि-सिद्धान्तोदधिपारगामि-श्रीमद्विजयानन्दसूरीश-
शिष्यरत्नप्रवर्त्तकश्रीमत्कान्तिविजयमुनिपुङ्गवानां
शिष्यप्रशिष्यौ चतुरविजय-पुण्यविजयौ ।



प्रकाशयित्री—

भावनगरस्था श्रीजैन-आत्मानन्दसभा ।



वीरसंवत् २४५६
आत्मसंवत् ३४

विक्रमसंवत् १९८६
ईस्वीसन् १९३०

Printed by Ramchandra Yesu Shedge at the
Nirnaya Sagar Press, 26-28, Kolbhat Lane Bombay

Published by Vallabhadas Tribhuvandas Gandhi Secretary
Shri Jain Atmanand Sabha, Bhavnagar Kathiawar

प्रास्ताविक निवेदन.

प्रकाशन—प्रस्तुत वसुदेवहिंडी ग्रन्थने "श्रेष्ठिवर्य श्रीमान् देवचन्द्र लालभाई जैन-पुस्तकोद्धार फंड" तरफथी प्रसिद्ध करवाना इरादाथी तेना कार्यवाहकोए न्याय-व्याकरणतीर्थ पं० बेचरदास जीवराज भाई दोसीने पसंद करी तेना संपादनने लगतु सर्व कार्य तेमने सोंप्यु हतुं परन्तु पाछळथी अमुक आर्थिक प्रश्नने कारणे ते कार्य उपरोक्त फंड तरफथी पडतुं मूकातां सं० १९८२ मां अमे तेनी तैयार थएल कॉपी पं० बेचरभाई पासेथी लई लीधी, अने तेना सम्पादननो सर्व भार अमे स्वीकारी लीधो. आजे चार वर्षने अंते अमे तेना प्रथम खंडना प्रथम अंशने विद्वानोना करकमलमां अर्पीए छीए.

वसुदेवहिंडी अने तेना कर्ता—प्रस्तुत ग्रंथ बे खंड, सो (१००) लंभक अने तेना अंतमां उल्लिखित ग्रन्थाग्र (श्लोकसंख्या) ने आधारे २८००० श्लोकमां समाप्त थाय छे पहेलो खंड २९ लंभक अने ११००० श्लोक प्रमाण छे तथा बीजो खंड ७१ लंभक अने १७००० श्लोक परिमित छे. बन्ने य खंड एक आचार्यना रचेला नथी परन्तु जुदा जुदा आचार्ये रच्या छे प्रथम खंडना कर्त्ता श्रीसंघदास गणि वाचक छे अने द्वितीय खंडना कर्त्ता श्रीधर्मसेनगणि महत्तर छे. अत्यार सुधीना अमारा अवलोकनने आधारे एम जणाय छे के-प्रथम खंड वचमां तेम ज अंतमां खंडित थई गयो छे प्रथम खंडना अंतमां जे ११००० श्लोकसंख्या नोंधवामां आवेल छे ते अमारी अक्षर अक्षर गणीने करेल नवीन गणतरी प्रमाणे लगभग १००० श्लोक जेटली ओछी थशे. आ उपरथी एम अनुमान करी शकाय के—प्रथम खंडमां खूटतो भाग तेटलो ज होवो जोईए जेटलो अमारी नवीन गणतरीमां तूटशे

अत्यारे प्रसिद्ध करातो प्रथम अंश श्रीसंघदासगणिवाचककृत प्रथम खंडनो अंश छे. आ खंडनो तेम ज तेना कर्तानो परिचय द्वितीय अंशमां आपवानो अमारो संकल्प छे. अहीं टुंकमां फक्त एटलु ज निवेदन करीए छीए के—प्रस्तुत प्रथम खंडना कर्त्ता आचार्य, भाष्यकार पूज्य श्रीजिनभद्रगणि क्षमा श्रमण पहेलां थई गया छे आ वात आपणे भाष्यकार विरचित विशेषणवती ग्रन्थमां आवता प्रस्तुत ग्रन्थना उल्लेखने जोईने जाणी शकीए छीए.

प्रथम अंश—अत्यारे प्रकट करातो प्रथम अंश सात लंभक सुधीनो छे अर्थात् ग्रन्थकारे प्रस्तुत ग्रन्थना आरम्भमां (पृष्ठ १ पंक्ति १७) जे मुख्य छ विभागो पाड्या छे ते पैकी कहुप्पत्ती पेढिया मुहं अने पडिमुह आ चार विभागो पूरा थई पांचमा सरीर विभागना २९ लंभक पैकी सात लम्भकोनो आ अंशमां समावेश थाय छे.

धम्मिल्लहिंडी—प्रस्तुत ग्रन्थनुं नाम वसुदेवहिंडी छे छतां आमां धम्मिल्लहिंडी अने वसुदेवहिंडी एम बे हिंडिओ वर्णवायली छे. कहुप्पत्ती पूर्ण थया पछी लागली ज धम्मिलहिण्डी चालु थाय छे. छतां ग्रन्थनो वधारे भाग वसुदेवहिण्डीए रोकेल होवाथी आ ग्रन्थनु नाम वसुदेवहिण्डी कहेवामां आवे छे.

प्रतिओ—आ ग्रन्थना संशोधनमां अमे नीचेनी प्रतिओनो उपयोग करेल छे—

१ लींम्बडीना संघना भंडारनी ली० संज्ञक. २ त्रिस्तुतिक उपाध्यायजी श्रीमान् यतीन्द्रविजयजी महाराजनी य० संज्ञक ३ अमदावादना डेलाना भंडारनी डे० संज्ञक.

आ त्रण प्रतिओ परस्पर समान होवाथी पाठांतर लेती वेळा वारवार ली० य० डे० लखवुं न पडे माटे एनी टुंकी संज्ञा अमे ली ३ राखी छे.

१ प्रवर्त्तक प्रज्ञांश श्रीमान् लाभविजयजी महाराजनी क० संज्ञक. २ पाटणना मोदीना भंडारनी मो० संज्ञक. ३ पाटणना संघना भंडारनी सं० संज्ञक. आ त्रण प्रतोनी टुंकी संज्ञा क ३ राखवामां आवी छे.

१ गोघाना संघना भंडारनी गो० संज्ञक. २ पाटणना वाडीपार्श्वनाथना भंडारनी वा० संज्ञक. ३ खंभातना शेठ अम्बालाल पानाचन्दनी धर्मशाळाना पुस्तकसंग्रहनी खं० संज्ञक. आ त्रण प्रतिनी टुंकी संज्ञा गो ३ राखेल छे.

१ अमदावादना शेठ उमाभाइना भंडारनी उ० संज्ञक   २ खंभातना शांतिनाथना ताडपत्रीय भंडारनी शां० संज्ञक   आ प्रतोनी टूंकी संज्ञा उ २ राखेल छे

१ लींबडी संघाडाना स्थानकवासी मुनि श्रीमेघजीस्वामिनी मे० संज्ञक

उपर जणावेल चार प्रतो पैकी खंभातना शांतिनाथना भंडारनी प्रति ताडपत्रीय छे अने संवत् १३८१ मां लखायेल छे ते सिवायनी बीजी बधीये प्रतो कागळ उपर लखायेल तेमज उपरोक्त ताडपत्रीय प्रति करतां अर्वाचीन छे आ सर्व प्रतिओनो परिचय पाठान्तरोनो क्रम, प्रतमां वधती अशुद्धिओ तथा पाठान्तरोना प्रकारो अने कारणो आदि बाबतो अमे प्रथम खंडना द्वितीय अंशमां आपीशुं

अमारा संकेतो—

१ प्रस्तुत ग्रन्थमां अमने ज्यां ज्यां प्रतोमां अशुद्ध ज पाठो मळ्या छे त्यां त्यां अमे अमारी मतिकल्पनाथी ते ते पाठोने सुधारीने ( ) आवा गोळ कोष्ठकमां मूक्या छे जुओ पृष्ठ ९ पंक्ति २–१ –२ –२७ पृ १५ प ११–१४–२ इत्यादि

२ मूळ प्रतोमां ज्यां ज्यां पाठो खण्डित मळ्या छे तेवे स्थळे सम्बन्ध जोडवामाटे दाखल करेल पाठो अमे [ ] आवा कोष्ठकमां आपेल छे जुओ पृष्ठ १० पंक्ति २२, पृ १३ प २८ पृ ३४ प १

३ लिखित प्रतोमां जे पाठो अमने लेखकना प्रमादथी पेसी गएल जणाया छे ते पाठो अमे प्रारम्भमां [ ] आवा कोष्ठकमां आपी टिप्पणीमां 'कोष्ठान्तर्गतमिदं प्रामादिकम्' एम जणाव्युं छे जुओ पृष्ठ १६ पं २४ पृ २५ पं ९ परंतु आगळ चालतां आ पद्धतिने जती करी तेवा पाठोने अमे [-] आवा फूदडी सहित कोष्ठकमां मूक्या छे जुओ पृ ४२ प १६ पृ ५ प २

४ जे जे स्थळे अमने पाठो संदेहवाळा जणाया छे त्यां अमे आवुं (?) चिह्न मूकेल छे अने ज्यां लांबा फकराओ अव्यवस्थ जणाया छे त्यां तेना आरम्भ अने अंतमां आवुं (??) चिह्न मूकेल छे

५ पाठान्तरोमां प्रतिओना नाम साथे ज्यां सं० जोडायेल होय जेम के—कस० खस० गोस० आदि त्यां समजवुं के ते पाठो ते ते प्रतिना विद्वान् वाचके मार्जिनमां अगर अंदर सुधारेला छे

६ प्रस्तुत प्रकाशनमां घणे य स्थळे () कोष्ठकमां आपेल मींडारूप पूर्णविराम नजरे पडशे ते अमे एटलामाटे पसंद करेल छे के— वसुदेवेण भणियं- मए भणियं इत्यादि स्थळोमां ते ते व्यक्तिनुं कथन क्यां समाप्त थाय छे ए स्पष्ट रीते जाणी शकाय अर्थात् एक व्यक्तिनुं कथन पांच के दस वाक्यमां पूर्ण थतुं होय ते दरेक वाक्यने अंते । आवुं पूर्णविराम करवाथी केटलीक वार जे गोटाळो संभव रहे छे ते आ चिह्नथी दूर थाय छे ज्यां एक व्यक्तिना कथनमां बीजी बीजी व्यक्तिओनां कथनो घणे ज दूर सुधी चालतां होय त्यां अमे पेरेग्राफ पाडी चालु । आ जातनां ज पूर्णविराम मूक्यां छे

७ दरेक पानाना मार्जिनमां जे इंग्लीश अंको आपवामां आव्या छे ते पंक्तिओनी गणतरीमाटे छे

८ प्रस्तुत ग्रन्थमां स्थाने स्थाने जे श्लोकसंख्या नोंधवामां आवी छे ते हस्तलिखित प्रतोमां नथी, किन्तु अमारी अक्षर अक्षर गणीने करेल नवीन गणतरीने आधारे नोंधेल छे

प्रस्तुत ग्रन्थना संशोधनमां तेम ज पाठान्तरो लेवामां अमे गुरु शिष्ये सविशेष सावधानी राखी छे छतां य अमारा प्रज्ञादोषने कारणे स्खलनाओ थयेली कोइ वाचकोनी नजरे आवे तेओ अमने भ्रातृभावे सूचना करे तेनो अमे द्वितीय अंशमां योग्य रीते उल्लेख करवा चूकीशुं नहि

निवेदको—

पूज्यपाद प्रवर्तक श्रीकान्तिविजयजी शिष्य-प्रशिष्य

मुनि चतुरविजय-पुण्यविजय

प्रास्ताविकं निवेदनम् ।



प्रकाशनम्—प्रकृतोऽयं वसुदेवहिण्डिग्रन्थः "श्रेष्ठिवर्य देवचन्द्र लालभाई जैनपुस्तकोद्धार फण्ड" द्वारा प्रकाशनेच्छया तत्कार्यंचाहकैः "न्यायव्याकरणतीर्थ पण्डित बेचरदास जीवराज दोसी" महाशयाय सम्पादनार्थं समर्पित आसीत्। किञ्चाधिकद्रव्यव्ययादिकारणैस्तैरेतत्प्रकाशनं परित्यक्तमित्यस्माभिः पण्डित-श्रीबेचरदासपार्श्वात तत्प्रतिकृतिं (प्रेसकॉपी) गृहीत्वा तत्सम्पादनादिकः समस्तोऽपि कार्यभारः स्वीकृतः। अद्य वर्षचतुष्टयान्ते वयं तस्य प्रथमखण्डस्य प्रथममंशं विद्वत्करकमलेषु समर्प्य कृतार्थीभवामः।

वसुदेवहिण्डिस्तत्कर्त्तारश्च—ग्रन्थोऽयं खण्डद्वयेन लम्भकशतेन तत्प्रान्तोल्लिखितश्लोकसङ्ख्या-नुसारेणाष्टाविंशतिसहस्रप्रमितैः श्लोकैश्च पूर्णो भवति। आद्यखण्ड एकोनत्रिंशल्लम्भकात्मक एकादशस-हस्रश्लोकप्रमितश्च। द्वितीयः पुनरेकसप्ततिलम्भकात्मक सप्तदशसहस्रश्लोकप्रमाणश्च। ग्रन्थस्यास्य खण्ड-द्वय नैकाचार्यविनिर्मित किन्तु पृथक्पृथगाचार्यसूत्रितम्। आद्यखण्ड श्रीसङ्घदासगणिवाचकसन्दब्धः, द्वितीय. पुन श्रीधर्मसेनगणिमहत्तरविहित। अद्यावधिकृतास्मदवलोकनाधारेणैतज्ज्ञायते यत्—आद्य-खण्डो मध्ये प्रान्ते च त्रुटितः। एतत्खण्डप्रान्ते या एकादशसहस्रमिता श्लोकसङ्ख्योल्लिखिता वरीवृत्यते सा प्रत्यक्षरगणनाविहितास्मच्छ्लोकसङ्ख्यानुसारेण सहस्रश्लोकमिता न्यूना भविष्यतीत्येतदनुमीयते यत्—प्रथ-मखण्डमध्ये त्रुटितोंऽश एतावानेव स्याद् यावानस्मद्गणनायां त्रुटिष्यति।

साम्प्रत प्रकाश्यमानोऽय प्रथमोंऽश. श्रीसङ्घदासगणिवाचकविनिर्मितस्याद्यखण्डस्यांशः। एत-त्खण्डस्यास कर्तुश्च सविशेष परिचयं द्वितीयेंऽशे कारयिष्यामः। अत्र तावत् संक्षेपेणैतदेवावेदयाम., यत्—प्रथमखण्डविनिर्माताऽऽचार्यो भाष्यकारश्रीजिनभद्रगणिक्षमाश्रमणाच्चिरन्तन इति। एतच्च भाष्यकृ-द्विरचितविशेषणवतिग्रन्थान्तर्गतैनैतद्ग्रन्थाभिधानोल्लेखदर्शनेनावबुध्यते।

प्रथमोंऽशः—अधुना प्रसिद्धिं प्राप्यमाणोऽयमशो लम्भकसप्तकान्तो वर्त्तते। अर्थाद् ग्रन्थारम्भे (पृष्ठ १ पंक्ति १७) ग्रन्थकृद्भि. प्राधान्येन निर्दिष्टा ये षडर्थाधिकारा दरीदृश्यन्ते तानाश्रित्य 'कहु-प्पत्ती पेढिया मुह पडिमुह' इत्येते चत्वारोऽर्थाधिकारा, एकोनत्रिंशल्लम्भकात्मकस्य पञ्चमस्य 'सरी-रा'ऽऽख्यस्यार्थाधिकारस्य सप्त लम्भकाश्चास्मिन्नंशे समावेशिताः सन्ति।

धम्मिल्लहिण्डिः—यद्यपि ग्रन्थस्यास्याभिधान वसुदेवहिण्डिरित्यस्ति तथाप्यस्मिन् धम्मिल्लहि-ण्डिर्वसुदेवहिण्डिरित्येव हिण्डियुग्म व्यावर्णित दृश्यते। कहुप्पत्तीवर्णनानन्तर सद्य एव धम्मिल्लहिण्डि-र्वर्त्तते। किञ्च महान् ग्रन्थसन्दर्भो वसुदेवहिण्डिसम्बद्ध इति ग्रन्थस्यास्याभिधा वसुदेवहिण्डिरिति।

सञ्चिताः प्रतयः—ग्रन्थस्यास्य संशोधनकर्मणि विज्ञोद्धृताः प्रतय. सञ्चिता वर्त्तन्ते—

१ लीम्बडी-सङ्घभाण्डागारसत्का ली० संज्ञका। २ त्रिस्तुतिकोपाध्यायश्रीयतीन्द्रविजयजित्सत्का य० संज्ञका। ३ राजनगरीय (अमदावाद) डेलाभाण्डागारसत्का डे० संज्ञका।

एतास्तिस्रः प्रतय. परस्परमतिसमाना इति पाठान्तरग्रहणावसरे मा भूत् ली० य० डे० इति पुनःपुनर्लेखनश्रम इत्यस्माभिरासा तिसृणा प्रतीना संक्षिप्ताऽभिधा ली ३ कृतास्ति।

१ प्रवर्त्तक मन्नांशश्रीलाभविजयजित्सत्का क० संज्ञका। २ पत्तनीय मोदीसत्कज्ञानकोशगता मो० संज्ञका। ३ पत्तनश्रीसङ्घभाण्डागारसत्का सं० संज्ञका। आसां प्रतीनां संक्षिप्ताऽभिधा क ३ विहि-तास्ति।

१ गोघा-श्रीसङ्घभाण्डागारसत्का गो० संज्ञका। २ पत्तनस्थवाडीपार्श्वनाथभाण्डागारसत्का वा० संज्ञका। ३ स्तम्भतीर्थीय (खम्भात) श्रेष्ठिअम्बालालपानाचदसत्कधर्मशालापुस्तकसंग्रहगता खं० सं-ज्ञका। आसा संक्षिप्ताऽऽख्या गो ३ विहिताऽस्ति।

१ राजनगरीयशेठडोसाभाईभाण्डागारसत्का ड० संज्ञका । २ स्तम्भतीर्थीयश्रीशान्तिनाथप्रमुखसत्कताडपत्रीयभाण्डागारगता शां० संज्ञका । अनयोः संक्षिप्ताऽभिधा उ २ इत्यस्ति ।

१ लीम्बडीसङ्घाटकान्तर्गतस्थानकवासिमुनिश्रीमेघजीऋषिसत्का मे० संज्ञका ।

उपरि निर्दिष्टासु प्रतिषु मध्ये स्तम्भतीर्थीयश्रीशान्तिनाथभाण्डागारसत्का प्रतिस्ताडपत्रीया सं० १३८१ मितेऽब्दे लिखिताऽस्ति । एतद्व्यतिरिक्ता अन्या प्रतयः कागदोपरि लिखितास्ताडपत्रीयप्रतेरर्वाचीनतराश्च वर्तन्ते । आसां विशिष्टः परिचयः, पाठान्तराणां क्रमः ग्रन्थेषु वर्द्धमानानामशुद्धीनां पाठान्तराणां च प्रकाराः कारणानि चेत्यादिकं द्वितीयांशप्रकाशनावसरे सविस्तरं दास्यामः ।

अस्माकं संकेताः—

१ ग्रन्थेऽस्मिन्नस्माभिर्यत्र यत्र लिखितप्रतिष्वशुद्धा एव पाठा उपलब्धास्तत्र तत्र ते पाठा स्वकल्पनया संशोध्य (   ) एतादृग्वृत्तकोष्ठान्तः स्थापिताः सन्ति—पृष्ठ ५ पङ्क्ति २-१० २ २७ पृष्ठ १५ पंक्ति ११, १४-२ इत्यादि ।

२ हस्तलिखितप्रतिषु यत्र यत्र खण्डिताः पाठा आसादितास्तत्र तत्र सम्बन्धयोजनाय निवेशिताः पाठा [   ] एतादृक्कोष्ठान्तर्मुद्रिताः सन्ति—पृ १ प० २२, पृ १३ प २८ पृ० २४ प १५ आदि ।

३ हस्तलिखितप्रतिषु ये पाठा लेखकप्रमादादन्तः प्रविष्टा ज्ञातास्तान् यद्यपि प्रारम्भे [   ] एतादृक्कोष्ठान्तर्निवेश्य टिप्पण्यां कोष्ठान्तर्गतमिदं प्रामादिकम् इत्यस्माभिर्ज्ञापितम्—पृ १६ प० २४ पृ २५ प० ९ किन्त्वनन्तरमेवैतां पद्धतिं विहाय तादृशाः पाठा अस्माभिः [*] ईदृक्कुलिककोष्ठान्तर्दर्शिताः सन्ति—पृ० ४२ प १६ आदि ।

४ ग्रन्थेऽस्मिन् ये सन्दिग्धार्थाः पाठास्तदग्रेऽस्माभिः एतच्चिह्नं (?) विहितम् । यत्र च कियानपि ग्रन्थसन्दर्भ एव सन्दिग्धस्तस्याऽऽद्यावन्ते चापि एतच्चिह्नं (??) विहितमिति ।

५ पाठान्तरेषु प्रतिनामभिः सार्धं यत्र सं० योजितं स्यात् यथा—कसं० खसं० गोसं० आदि तत्र ज्ञातव्यम् यत्—ते पाठास्तत्तस्याः प्रतेः केनचिद्विदुषा वाचकेन मार्जनेऽन्तर्वा संशोधिता इति ।

६ मुद्रितेऽस्मिन् ग्रन्थे भूरिस्थलेषु ( ) कोष्ठकान्तर्दर्शितो बिन्द्वाकारः पूर्णविरामो द्रक्ष्यते, स चास्माभिरेतदर्थमङ्गीकृतो यत्—वसुदेवेण भणियं 'मए भणियं' इत्यादिकेषु स्थानेषु तत्तद्वक्तुर्वक्तव्यं क्व समाप्यत इति स्पष्टं ज्ञायेत । अर्थादेकस्य व्यक्तेर्वक्तव्यं पञ्चसु दशसु अधिकेषु वा वाक्येषु यत्र पूर्यते तत्र प्रतिवाक्यं । एतादृक्पूर्णविरामकरणे क्वचित्क्वचित् भ्रान्तिः सम्भवति साऽनेनाऽपाकृतेति । यत्र पुनरेकस्य व्यक्तेर्वक्तव्यान्तरपरापरव्यक्तिवक्तव्यं दूरं यावत् स्यात् तत्र भ्रान्तिनिवारणाय विभागं (पारिग्राफ) कृत्वा । एतादृक्प्रसिद्ध एव पूर्णविरामो विहित इति ।

७ प्रतिपत्र मार्जने ये भाङ्का अङ्का दृश्यन्ते ते तत्तत्पत्रगतपङ्क्तिसङ्ख्याद्योतनार्थमिति ज्ञेयम् ।

८ ग्रन्थेऽस्मिन् स्थाने स्थाने या श्लोकसङ्ख्या निर्दिष्टास्ति सा न हस्तलिखितपुस्तकादर्शगता किन्तु प्रत्यक्षरगणनाविहिताङ्कनानुसारिणीति ।

ग्रन्थस्यास्य संशोधनं पाठान्तरसंग्रहणं चाऽऽवाभ्यां गुरुशिष्याभ्यामतिसावधानतया कृतमस्ति तथाप्यस्मत्प्रमाददोषेण सञ्जाताः स्खलना यैः कैश्चिदपि वाचकैर्दृश्येरन् ते ज्ञापयन्त्वस्मान् भ्रातृभावेन । द्वितीयेंऽशे तदुल्लेखविधानमावां न विस्मरिष्याव इति ।

निवेदकौ—

पूज्यपादप्रवर्त्तकश्रीमत्कान्तिविजयशिष्य–प्रशिष्यौ
मुनी चतुरविजय–पुण्यविजयौ ।

आभार-प्रदर्शन.

आ वसुदेवहिंडी ग्रंथ जैनोना प्राचीनमां प्राचीन कथासाहित्यमांनुं एक अणमोलुं रत्न छे. तेनुं संपादनकार्य पूज्य प्रवर्तक श्रीमत्कान्तिविजयजी महाराजना विद्वान् शिष्य-प्रशिष्य मुनि श्रीचतुरविजयजी महाराज तथा मुनि श्रीपुण्यविजयजी महाराजे पोताना अमूल्य वखतनो भोग आपी अनेक प्रतिओ मेळवी घणी ज महेनते कर्युं छे.

आ संपूर्ण ग्रंथ छपावतां जे खर्च थवानो छे तेना प्रमाणमां अमोने जे सद्गृहस्थो तरफथी आर्थिक सहाय मळी छे ते ओछी छे. अने आजना समयमां वधारे मदद माटे कोइने कहेवुं घणुं अयोग्य लागवाथी सहायकोनी आज्ञाथी आ ग्रंथना उत्तरोत्तर भागो छपाय एवा उद्देशथी आ प्रथम खंडना प्रथम अंशनी पूरेपूरी किंमत राखवामां आवी छे. जे जे सखी सद्गृहस्थोए आ कार्यमां उदारता बतावी छे तेओनी शुभ नामावली नीचे आपीए छीए—

नामने नहिं इच्छनार एक सद्गृहस्थे कागळोनो खर्च आप्यो छे.

१००० नामने नहिं इच्छनार एक सखी गृहस्थ

१००० " "

१२०० पूज्यपाद आचार्य श्री १०८ श्रीविजयकमलसूरीश्वरना शिष्य मुनिवर्य श्रीनेमविजयजी तथा मुनि श्रीउत्तमविजयजीना उपदेशथी कपडवंजना शेठ मीठाभाई कल्याणचंदना उपाश्रय तरफथी. ह० शेठ प्रेमचंद रतनचंद तथा शा० न्यहालचंद केवळचंद.

५०० शा० हिम्मतलाल दलसुख नसवाडी.

५०० शा० जीवणलाल कीशोरदास वडोदरा.

५०० झवेरी मोहनलाल मोतीचंद पाटण.

२५० श्रीज्ञानवर्धक सभा वेरावल. ह० शेठ खुशालचंद करमचंद.

२५० शा० गोपाळजी दयाळ सीहोर.

२०० संघवी नगीनदास करमचंद पाटण.

२०० संघवी मणिलाल करमचंद पाटण.

२०० शा० मोहनलाल चुनीलालनी पत्नी बेन समुबाई पाटण.

१०० झवेरी बापुलाल चुनीलाल पाटण.

१०० सौभाग्यवती बेन पार्वतीबाई जामनगर.

आ प्रथम अंशने ऊंचा (कॉक्स्ली लायन लेजर) कागळोमां अने निर्णयसागर जेवा जगत्प्रसिद्ध मुद्रालयमां छपावी प्रगटकरी विद्वद्वर्गना करकमलमां मूकवा अमो भाग्यशाली थया छीए तेनो बधो जस पूज्य संपादको अने सहायदाता उदार सद्गृहस्थोने ज घटे छे.

ली.

सेक्रेटरी—

श्रीजैन आत्मानंद सभा भावनगर.

प्रथमांशस्यानुक्रमः ।



विषय	पत्रम्	विषय	पत्रम्
कहुप्पत्ती	१	२ सामलीलंभो	१२२
धम्मिल्लहिंडी	२७	३ गंधव्वदत्तालंभो	१२६
पेढिया	७७	४ नीलजसालंभो	१५६
मुह	१०५	५ सोमसिरिलंभो	१८१
पडिमुह	११०	६ मित्तसिरी धणसिरीलंभो	१९५
सरीर	११४	७ कविलालंभो	१९८
१ सामाविजयालंभो	११४		



प्रथमांशस्य शुद्धिपत्रम् ।



पत्रम्	पंक्तिः	अशुद्धम्	शुद्धम्
१९	२३ २४	[सोऊण]	०
२४	२९	अजुत्ता	व जुत्ता
२६	१०	°भविस्स	भविस्सति
२७	२६	धम्मिल्ल" इति	धम्मिल्ल इति
३९	२१ २२	चिंतिय—पुर्यं प सत्थ को	चिंतियं पुय— पुस यको
१५९	१६	नीलजलसा°	नीलजसा°
१६	१९	मेगाढ	रैयगा
१८१	२२	पूवमभे	पूवमभे



॥ अर्हम् ॥

॥ णमो त्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स ॥

सिरिसंघदासगणिवायगविरइआ

वसुदेवहिंडी ।

। पढमं खंडं ।

॥ ॐ नमो सुयदेवयाए । नमो वीतरागाय ॥

*जयइ नवनलिणिकुवलय-वियसियसयवत्तपॅत्तलदलत्थो[1] ।
उसभो गइंदमयगल-सुललियगयविक्कमो भयवं ॥ १ ॥
नमो विणयपणयसुरिंदविंदवंदियकमारविंदाणं अरहंताणं ।
नमो परिसुद्धनाणदंसणसमिद्धाणं सिद्धाणं ।
नमो जिणपणीयायारविहिवियक्खणाणं आयरियाणं ।
नमो सीसगणपरमसुयसंपयऽज्झावयाणं उवज्झायाणं ।
नमो सिद्धिवसहिगमणकारणजोगसाहगाणं साहूणं ।

पत्थावणा

एवं पंचनमोक्कारपरममंगलविहिविवड्डिउच्छाहो अणुओगधरे सिरसा पणमिऊणं विन्नवेमि—अणुजाणंतु मं, गुरुपरंपरागयं वसुदेवचरियं णाम संगहं वन्नइस्सं ॥

तत्थ इमे अहिगारा, तं जहा—कहुप्पत्ती १, पेढिया २, मुहं ३, पडिमुहं ४, सरीरं ५, उवसंहारो ६ ।

---

१ °पत्तछछहच्छो कसं० ॥ २ °च्छो कसं० सं० ली० य० ॥ ३ °रिंदवदिय° क ३ ॥ ४ °णप्प° उ० ॥ ५ °हणाणं उ० विना ॥ ६ °क्खलवि° ली ३ विना ॥

---

* उ० पुस्तके नास्तीयं मङ्गलगाथा । अस्माकमप्येषा प्रक्षिप्तैवाऽऽभाति, "एवं पंचनमोक्कारपरममंगल-" इत्यादिग्रन्थकृदुल्लेखदर्शनात्, ऋषभमङ्गलानन्तरं पञ्चनमस्कारमङ्गलोपन्यासस्यानौचित्यात् । बहुष्वादर्शेषु दृश्यत इति मूल आदृता । मङ्गलगाथा चेयं "उसभो" इति-स्थाने "वीरो" इति-परावर्तनमात्रा पादलिप्ताचार्यविरचितवीरस्तोत्रे मङ्गलरूपा दृश्यते, प्रक्षिप्ता चेय तत्रापि गीयते बुधै, उद्धुष्यत इदं स्तोत्रमञ्चलगच्छीयैस्तृतीयस्मरणरूपेण । तथा धर्मसेनगणिमहत्तरविनिर्मितवसुदेवहिण्डिद्वितीयखण्डे इत्थंप्रकारा मङ्गलगाथा वरीवृत्यते-"जयइ नवनलिणिकुवलयवियसियवरकमलपत्तलच्छो । उसभो सभावसुललियमयंगलगइललियपयाणो ॥" इति ॥

[कहुप्पत्ती]

तत्थ ताव 'सुहम्मसामिणा जंबुनामस्स पढमाणुओगे तित्थयर-चक्कवट्टि-दसारवंसप रूवणागयं वसुदेवचरियं कहियं' ति तस्सेव पभवो कहेयव्वो, तप्पभवस्स य पभवस्स त्ति ।

जंबुसामिचरियं

अत्थि मगहाजणवओ धणधन्नसमिद्धदाणसड्ढियगहवइकुलयहुलगामसतसन्निमहिओ, छायापुप्फफलभोजतरुगणसमग्गवणसडमडिओ, कमलकुमुदकुवलयसोहियतलागपुक्खरिणि धम्मसाहीणकमलानिलओ ।

तत्थ मगहाजणवए रायगिहं नाम नयरं दूरावगाढवित्थयसलिलखातोवगूढदढतर दुग्गपराणीयभयदपागारपरिगयं, बहुविहनयणाभिरामजलभारगरुयजलहरगमणविघातकरम धणभरियं, अणेगेवाहपरिमाणपन्नेयं(?), दिव्वाचारपभवं, भडसगहविणिओगखेमं, सुसील- माहणसमणसुसयणअतिहिपूयणनिरयवाणियजणोववेयं, पहुरयजणोघजणियरेणुगं, मयगल- मातंगदाणपाणियपसमियवित्थिन्नरायमग्गं ।

तत्थ रायगिहे नयरे सेणिओ नाम राया, 'पयासुहे सुहं' ति ववसिओ, पडिहयपडि वक्खपणयसामंतमउडमणिजुइरंजियसुपसत्थचरणकमलो, 'सीह-समुद्द-ससि-सूर धणदाण सत्त-गभीर-कंति दित्ति विहवेहिं तुल्लो' त्ति लोयंमुहसतविमलविभाइज्जमाणकित्ती । तस्स य रायणो पट्टमहादेवी चिल्लणा नाम । ताण पुत्तो कोणिओ नाम ।

तत्थ य *मगहापुरे पुव्वपुरिससमज्जियधणपग भो, विणयविन्नवियक्खणो, दयापरो, सच्चसंधो, दायवेक्कबुद्धी, अरहंतसासणरओ उसभदत्तो नाम इब्भो । तस्स य निरुवहयफलिहमणिविमलसभावा, सीलालंकारधारिणी धारिणी नाम भारिया । सा कयाइ सयणगया सुत्त-जागरा पंच सुमिणे पासित्ता पडिबुद्धा, तं जहा—विधूमं हुयवहं १, पउमसरं वियसियकमलकुमुदकुवलयउज्जलं २, फलभारनमियं च सालिवणं ३, गयं च गलिय जलयलाहकपंडुरं समूसियचउविसाणं ४, जंबूफलाणि य वण्णरसगंधोववेयाणि ५ त्ति । जहा दिट्ठा य णाए उसभदत्तस्स निवेइया । तेण वि भणिया—पहाणो ते पुत्तो भवि

१ शी १ गो ३ विनाऽन्यत्र—तस्सेसो प° मो सं । तस्स सो प° क । तस्सेसे प° उ ॥ २ °गाहा° शी य ॥ ३ ख विनाऽन्यत्र—°व्वयदिव्वाचार° क ख । °व्वयदिवाचार° शी ३ गो ३ मो सं ॥ ४ °भयभड° शी ३ क मो ॥ ५ °समसुसी° क मो ॥ ६ °गसुयति° शी ३ । °यासि° उ ॥ ७ °या° दे उ ॥ ८ लोगसुह° उ विना ॥ ९ °इन्भमा° मोस विना ॥ १ उ विनाऽन्यत्र—तस्स य राइणो चेल्लणा पट्टमहादेवी । ताणं पुत्तो कोणिओ नाम राया क ३ । तस्स य चेल्लणाए देवीए पुत्तो कोणिओ नाम राया शी ३ गो ३ ॥ ११ इब्भपुत्तो उ विना ॥ १२ समूसिय चउ° मो । समूसमू सियचउ° दे उसं ॥

* मगधपुरं राजगृहमित्यर्थः । तथाहि सुत्तनिपाते— "पावं च भोगनगरं वेसालिं मागधं पुरं । ५-१-३८ अत्र संक्षिप्तपदवण्णना— मागधं पुरं मगधपुर-राजगहं ।" इति ॥

स्सति जहा वागरिओ अरहया । तओ तीसे परितोसविसप्पियहियया[1] 'एवमेयं जहा भणिहि'–त्ति अहिलसिओ । आहूओ से गब्भो देवो बंभलोगचुओ । समुप्पन्नो य से दोहलो जिणसाहुपूयाए, सो य विभवओ सम्माणिओ ।

पुण्णदोहला य अतीतेसु नवसु मासेसु पयाया पुत्तं, सारयससि-दिणयराणुवत्तिणीहिं कंति-दित्तीहिं समालिंगियं, सुधंतवरकणगकमलकेण्णियार[2]सरसकेसरसवण्णं, अविसंन्नपुव्ववण्ण,[3] पसत्थलक्खणसणाहकरचरणनयणवयणं । कयजायकम्मस्स य से जंबुफललाभ-जंबुदीवा-धिवतिकयसन्नेज्झनिमित्तं कयं नाम 'जंबु'त्ति । धाइपरिक्खित्तो[4] य सुहेण वड्ढिओ । कलाओ य णेण अणंतरभवपरिचिताओ दंसिअमेत्ताओ गहियाओ । पत्तजोव्वणो य 'साणु-क्कोसो, पियंवओ, पुव्वाभासी, साहुजणसेवगो' त्ति जणेण परितोसवित्थिन्ननयणेण पस-सिज्जमाणो, अलंकारभूओ मगहाविसयस्स जहासुहमभिरमइ ।

तम्मि य समए भयवं सुहम्मो गणहरो गणपरिवुडो जिणो विव भवियजणमणप्पसा-दजणणो रायगिहे नयरे गुणसिलए चेइए समोसरिओ । सोऊण य सुहम्मसामिणो आगमणं, परमहरिसिओ वरहिणो इव जलधरनिनादं, जंबुनामो पवहणाभिरूढो निज्जाओ । नाइदूरे पमुक्कवाहणो परमसंविग्गो भयवंतं तिपयाहिणं काऊण सिरसा नमिऊण आसीणो ।

तओ गणहरो(रेण) जंबुनामस्स परिसाए य पकहिओ—जीवे अजीवे य; आसवं, बंधं, संवरं, निज्जरं, मोक्खं च अणेगपज्जवं । तं सोऊण भयवओ वयणवित्थरं जंबुनामो विरा-गमग्गमस्सिओ, समुट्ठिओ परं तुट्ठिमुव्वहंतो, वंदिऊण गुरु विन्नवेइ—सामि ! तुब्भं अंतिए मया धम्मो सुओ, तं जाव अम्मापियरो आपुच्छामि ताव तुब्भ पायमूले अत्तणो हियमा-यरिस्सं । भयवया भणियं—किच्चमेयं भवियाणं ।

तओ पणमिऊण पवहणमारूढो, आगयमग्गेण य पट्ठिओ, पत्तो य नयरदुवारं । तं च जाणजुयसंबाध[5] पासिऊण चिंतेइ—जाव पवेसं पडिवालेमि ताव कालाइक्कमो हवेज्जा[6], त सेयं मे अन्नेण नयरदुवारेण सिग्घं पविसिउं । एवं चिंतेऊण सारही पभणिओ—सोम ! परावत्तेहि रहं, अन्नेन दुवारेण पविसिस्सं । तओ सारहिणा चोइया तुरया, संपाविओ रहो जहासंदिट्ठं दुवारं । पस्सइ य जंबुनामो रज्जुपडिवद्धाणि सिला-सतग्घि-कालचक्काणि लव-माणाणि परबलपहणणनिमित्तं । ताणि य से पस्समाणस्स चिता जाया—'कयाइ एयाइं पँडेज्ज[7] रहोवरिं, तओ मे विसीलस्स मयस्स दुग्गइगमणं हवेज्ज' त्ति संकप्पिऊण सारहि भणइ—सारहि ! पडिपहहुत्तं रहं पयट्टेहिं, गुणसिलयं चेइयं गमिस्सं गुरुसमीवे । 'तह' त्ति तेण पडिवन्नं । गओ गुरुसमीवं, पयओ विन्नवेइ—'भयवं ! जावज्जीवं बंभयारी विहरिस्सं' त्ति गिहीतव्वओ रहमारुहिऊण नगरमागतो, पत्तो य नियर्गभवणं[8] ।

---

१ तीए परितोसवसविस° उ० ॥ २ °कण्णिया° उ० ॥ ३ °सण्णं पस° उ० । °सत्तपुव्ववन्नपस° क० । °सत्तपुन्नवन्नं पस° सस० ॥ ४ परिक° ली ३ ॥ ५ ली ३ उ० विनाऽन्यत्र–°जुयगासबाध गो०वा० । °जुगो-यसंबाध क०स० ॥ ६ क ३ उ० विनाऽन्यत्र °ज्ज ली ३ । °ज्जं गो ३ ॥ ७ पाडेज्ज क ३ गो ३ उ० ॥ ८ °गालयणं क ३ ॥

जंबुस्स अम्मा पिअरेहिं संवादो

धम्मो, पसन्नमुहवण्णो अम्मापियरं जंबुणामो भणइ—अम्मयाओ! मया अज्ज सुहम्मसामिणो समीवे जिणोवएसो सुओ। सं इच्छं, जत्थ जरा-मरण-रोग-सोगा नत्थि तं पदं गंतुमणो पव्वइस्सं। विसज्जेह मं।

ते य तस्स निच्छयवयणं सोऊण बाहसलिलपच्छाइअवयणाणि भणंति—सुट्ठु ते सुओ धम्मो, अम्हं पुण पुव्वपुरिसा अणेगे अरहंतसासणरया आसी, न य 'पव्वइय'त्ति सुणामो। अम्हे वि बहुं कालं धम्मं सुणामो, न उण एसो निच्छओ समुप्पन्नपुव्वो। तुमे पुण को विसेसो अज्जेव उवलद्धो जओ भणसि 'पव्वयामि'त्ति?। तओ भणइ जंबुनामो—अम्म-ताओ! को वि बहुणा वि कालेण कज्जविणिच्छयं वयइ, अवरस्स थेवेणावि कालेणं विसेसपरिण्णा भवति। पेच्छ, सुणह, साहुसमीवे जहा मया अज्ज अपुव्वमवधारियं—

विसेसपरिण्णाए इब्भपुत्तकहाणयं

एगम्मि किर नयरे का वि गणिया रूववती गुणवती परिवसइ। तीसे य समीवे महाधणा राया ऽऽणं इब्भपुत्ता उवगया परिभुत्तविभवा वयंति। सा य ते गमणनिच्छए पभणइ—जइ अहं परिचत्ता, निग्गुणओ ता किंचि सुमरणहेउं घेप्पउ। एवं भणिआ य ते हार ऽद्धहार-कडग-केऊराणि तीय परिभुत्ताणि गहाय वयंति। कयाइ च एगो इब्भपुत्तो गमणकाले तहेव भणितो। सो य पुण रयणपरिक्खाकुसलो। तेण य तीसे कणयमयं पायपीढं पवररयणमंडियं महामोल्लं दिट्ठं। तेण भणिया—सुंदरि! जइ मया अवस्सं घेत्तव्वं तो इमं पायपीढं तव पादसंसग्गिसुभगं, एएण मे कुणह पसायं। सा भणति—किं एएण ते अप्पमोल्लेण?, अन्नं किंचि गिण्हसु त्ति। सो विदियसारो, तीए वि दिन्नं, तं गहेऊण तओ सविसए रयणविणिओगं काऊण दीहकालं सुहभागी जाओ। एस दिट्ठंतो।

अयमुवसंहारो—जहा सा गणिया, तहा धम्मसुई। जहा ते रायसुयाई, तहा सुर-मणुयसुहभोगिणो पाणिणो। जहा आभरणाणि, तहा देसविरतिसहियाणि तवोवहाणाणि। जहा सो इब्भपुत्तो, तहा मोक्खकंखी पुरिसो। जहा परिच्छाकोसल्लं, तहा सम्मन्नाणं। जहा रयणपायपीढं, तहा सम्मद्दंसणं। जहा रयणाणि, तहा महव्वयाणि। जहा रयणविणिओगो, तहा निव्वाणसुहलाभो त्ति॥

एवं अवधारेऊण कुणह मे विसग्गं ति॥

तओ भणति—जाय! जया पुणो एहिति सुधम्मसामी विहरंतो तया पव्वइस्ससि। तओ भणइ, सुणह—

दुल्लहाए धम्मपत्तीए मित्ताणं कहा

इओ अईए काले किर केइ वयंसया पञ्चाण निग्गया। तेहि य पाइदूरे तित्थयरो

१ भणंतो की ३ ॥ २ °हूयव° कसं मोसं० ॥ ३ °णं न उ° उ० ॥ ४ के० विनाऽन्यत्र—जहा पायपीढं ग० । जहा रयणपीढं ली० य० क ३ गो ३ ॥

सुओ समोसरिओ। तओ कोऊहल्लेण पट्ठिया, पस्संति य विम्हियमणसा सीहचक्कज्झए[1] गगणतलमणुलिहंते, धम्मचक्कं च तरुणरविमंडलनिभं, छत्ताइच्छत्तभूसिअं च णभोभागं, चामराउ य हंसधवलाउ आगाससंचारिणीउ, चेइयपादवं च कप्परुक्खं पिव नयण-मणहरं। अइगया य देवा-ऽसुर-मणुयसोहियं समोसरणं, पस्संति य भयवंतं देवविणिम्मिए सिंहासणे सुहणिसन्नं। तओ वंदिऊण परमविम्हिया परिसामज्झे उववि[2]ट्ठा। सुणंति य भयवओ वयणं हियय-सुहहरं धम्मकहाँ[3]संसिअं। तं च सोऊण परितोसवियसियाणणा वंदिऊण गिहं पट्ठिया। तेसिं च अंतरा कहा समुट्ठिया।

तत्थेको भणइ—वयंस! अहो!!! अम्हेहिं मणुस्सजम्मस्स फलं सयलं गिहीयं[4] जं णे सायसओ[5] तित्थयरो दिट्ठो, सव्वभावविभावणं च परमकंतं सुयं भासियं, 'ण एत्तो अइरियं[6] दट्ठवं सोयव्वं च अत्थि'त्ति मे मैयी[7]। जो य संसारो तस्स य मुक्खोवाओ आमलगो विव करतले दंसिओ भयवया सो तहाभूओ, न एत्थ वियारो। तं दुक्खं एरिसी संपत्ती न होहिइ[8], तो पव्वयामो अविलंबियं तित्थयरपायमूले त्तिं[9]।

अवरेण भणियं—सच्चमेयं जं तुमं भणसि, तं सुओ[10] ताव णे धम्मो, जओ पुणो एतं अन्नं वा तित्थयरं दच्छामो तया पव्वइस्सामो।

इयरेण भणियं—अम्हेहिं कह वि (ग्रन्थाग्रम्-१००) तित्थयरो दिट्ठो, निरावरणो, विगतिविग्घो, दुग्गएहि व रयणरासी, तं कुणह ववसायं।

इयरेण भणियं—कओ तुमे संदेहो तित्थयरदंसणं पडुच्च, तं नियत्तामो, सव्वण्णू अरिहा छिंदिहिइ संसयं।

ते[11] गया, तित्थयरं वंदिऊण पुच्छंति—भयवं! अतीए काले तित्थयरा आसी, अणागया वा भविस्संति धम्मदेसगा? भयवया भणियं—भरहेरवएसु ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीणं दसमे दसमे कालभागे चउवीसं तित्थयरा समुप्पज्जंति। विदेहेसु पुण जहन्नपए चत्तारि चत्तारि जुगवं भवंति, उक्कोसपए बत्तीसं। तं एवं ताव तित्थयरदंसणं दुल्लभं, दंसणाउ वि दुल्लभं वयणं, तं पि सोऊण कम्मगरुययाए कोइ न सद्दहइ, जो य कम्मविसुद्धी[12]य सद्दहेज्जा सो संजमियव्वे निरुच्छाहो भवेज्जा। जो वा सचक्खुओ उदिए सूरिए मूढयाए निमीलियलोयणो अॅच्छति[13] तस्स निरत्थओ आइच्चोदयो, एवं जो अरहंतवयणं सोउं न इच्छइ, सुयं वा न सद्दहइ, सद्दहंतो वा सफलं न करेइ तस्स मोहमरहंतदंसणं। तो एवं भयवया समणुसट्ठा ते तत्थेव समोसरणे पव्वइया, तो[14] संसारंतकरा संवुत्ता॥

१ °पु काले गग° ली ३॥ २ °विसिय सुणंति ली ३॥ ३ °हामासिय क० मो०॥ ४ गहीयं ली० य०॥ ५ साइसओ कसं० मोसं० उ०॥ ६ अइरित्तं कस० मोस० उ०॥ ७ मई कसं० मोसं०। मती उ०॥ ८ °ती हो° ली ३ गो० उ०॥ ९ ले त्ति गो ३ सं०। °ल त्ति उ०॥ १० °ओ भावेण धम्मो क० सं० खं० उ०॥ ११ ते तित्थ° ली ३ गो ३ सं०॥ १२ °द्धीए स° क ३ उ०॥ १३ अच्छति ली ३ क ३ गो ३॥ १४ तो सं° उ० विना॥

एवं अम्मताओ! अहमवि सुधम्मसामिसंदेसं जइ सफलं न करेमि, तओ कालेण विस यवक्खित्तहिययस्स न मे धम्मे पडिवत्ती समविज्जा, तं विसज्जेह मं ॥

तओ भणइ उसभदत्तो—जाया! अत्थि ते विउलो अत्थो विसयसपायणहेउं, तं परि भुजिऊण पगामं पव्वइस्ससि। तओ भणइ, सुणह—

इंदियविसयपसत्तीए निहणोवगयवाणरकहा

एगम्मि किर वणे वानरो जूहवई सच्छंदपयारो परिवसइ। सो कयाइ परिणयवओ बलवता वानरेण अभिभूओ। तेसि च युद्धं लया लिट्ठु-कट्ठ-पासाण-दंतनिवाएहिं सपलग्गं। सो जूहवई पराजिओ पलाइउमाढत्तो। इयरो वि अणुवइऊण दूरं नियत्तो। जूहवती पुण चिंतेइ—'सो मे पच्छओ चेव वत्तइ' त्ति पहारविधुरो तण्हा-छुहाभिभूओ एक्कं पव्वयगुहं पत्तो। तत्थ य सिलाजउं परिस्सवति। सो भयभेलवियदिट्ठी 'जलं'ति मन्नमाणो 'पाहं'ति मुहं छुब्भेति। तं वद्धं, 'तं च मोएयव्वं' ति हत्थे पसारेइ। ते वि बद्धा, पाए छुभति। ते वि बद्धा, एवं सो अप्पाणं असत्तो मोएउं तत्थेव निधणमुवगतो। जइ पुण मुहमेत्तलग्गो पयत्तं सेसेण सरीरेण अवट्ठेण करेंतो ततो निस्सरंतो दुक्खमरणं॥

एवं अम्मयाओ! अहं सपयं बालभावेण भोयणाभिलासी जिभिंदियपडिबद्धो, सुहमोयगो मे अप्पा। जया पुण पंचिंदियविसयसपलग्गो भवेज्जा तया जहा सो वानरो दुहमरणं पत्तो, एवं अणेगाणं जम्म-मरणाणं आभागी भवेज्जं। ता मरणभीरुं विसज्जेह मं, पव्वइस्सं॥

एवं भणंतं कलुणं परुण्णा भणइ णं जणणी—जाय! तुमे कओ निच्छओ, मम पुण चिरकालचिंतिओ मणोरहो—कया णु ते वरमुहं पासिज्ज त्ति। तं जइ मम पूरेसि तो सपुण्णमणोरहा तुमे चेव अणुपव्वइज्जा। भणिया य जंबुनामेण—अम्मो! जइ तुम्हं एसोऽभिप्पाओ तो एवं भवउ, करिस्सं ते वयणं, ण उण पुणो पडियधेयव्वो त्ति कल्लाणदिवसेसु अतीतेसु। तओ तीए तुट्ठाए भणियं—जाय! जं भणसि तं सहं काहामो। अत्थि णे पुव्ववरियाउ इब्भकन्नगाउ। अत्थि इहं सत्थवाहा जिणसासणरया, तं जहा—समुद्दपिओ, समुद्ददत्तो, सागरदत्तो, कुबेरदत्तो, कुवेरसेणो, वेसमणदत्तो, वसुसेणो, वसुपालउ त्ति। तेसिं भारियाउ, तं जहा—पउमावती, कणगमाला, विणयसिरी, धणसिरी, कणगवती, सिरिसेणा, हिरिमती, जयसेणा य। तासिं धूयाउ, तं जहा—समुद्दसिरी, सिंधुमती, पउमसिरी, पउमसेणा, कणगसिरी, विणयसिरी, कमलावती, जसमती य। ताउ तुहाणुरूवाउ 'पुव्वपरियाउ'त्ति करेमो तेसिं सत्थवाहाणं विदितं। संदिट्ठं च तेसिं—पव्वइहिइ जंबुनामो कल्लाणे निव्वत्ते, किं भणह? त्ति। तेसिं च णं वयणं सोऊण सह घरिणीहिं

१ °क्खचित्तस्स उ॰ ॥ २ सिलाजउं कसं॰ ली ३ उ॰ विना ॥ ३ °ज्जमासि क॰ सं॰ गो ३। °मति उ॰ ॥ ४ से क ३ उ॰ ॥ ५ भा कसं॰ मो॰ ॥ ६ भणतो क ३ गो ३। भणिते उ॰ ॥ ७ ण ली ३ ॥ ८ तुम ली ३। तुब्भं उ० ॥ ९ एम भमि° उ॰ ॥ १० जाय! जइ भणसि सह तं का° उ० ॥

संलावो जातो विसण्णमाणसाणं 'किं कायव्वं'ति । सा य पवित्ती सुया दारियाहिं । ताओ एकेक(एक्क)निच्छयाउ अम्मापियरं भणंति—अम्हे तुम्हेहिं तस्स दिन्नाउ, धम्मओ सो ने य भवति, जं सो ववसिहीति सो अम्ह वि मग्गो त्ति । तं च तारिसं वयण सोऊणं सत्थवाहेहिं विदिण्णं कयं उसभदत्तस्स ।

पसत्थे य दिणे पमक्खिओ जंबुनामो विहिणा, दारियाउ वि सगिहेसु । तओ महतीए रिद्धीए चंदो विव तारगासमीवं गओ वधूगिहाणि । ताहिं सहिओ सिरि-धिति-कित्ति-लच्छीहि व निअगभवणमागतो । तओ कोउगसएहिं ण्हविओ सव्वालंकारविभूसिओ य अभिणंदिओ पउरजणेणं । पूजिया समणमाहणा, नागरया सयणो य पओसे वीसत्थो भुंजइ । जंबुनामो य मणि-रयणपईवुज्जोयं वासघरमुवगतो सह अम्मापिऊहिं, ताहि य नववहूहिं ।

पभवसामिसंबंधो

एयम्मि देसयाले जयपुरवासिणो विंझरायस्स पुत्तो पभवो नाम कलासु गहियसारो, तस्स भाया कणीयसो पहू नामं । तस्स पिउणा 'रज्ज दिन्न' ति पभवो माणेण निग्गओ, विंझगिरिपायमूले विसमपएसे सन्निवेसं काऊणं चोरियाए जीवइ । सो जंबुनामविभवमागमेऊण विवाहूसवमिलिअं च जणं, तालुग्घाडणिविहाडियकवाडो चोरभडपरिवुडो अइगतो भवणं । ओसोवितस्स य जणस्स पवत्ता चोरा वत्थाऽऽभरणाणि गहेउं । भणियो जंबुनामेण असंभंतेण—भो ! भो ! मा छिव निमंतियागयं जणं । तस्स वयणसमं थंभिया ठिया पोत्थकम्मजक्खा विव ते निचिट्ठा । पभवेण य वहुसहिओ दिट्ठो जंबुनामो सुहासणगतो तारापरिविओ विव सरयपुण्णिमायंदो ।

जंबु-पभवसंवादो

ते य चोरे थंभिए दट्ठूण भणिओ पभवेणं—भद्दमुह ! अहं विंझरायसुतो पभवो जइ सुतो ते । मित्तभावमुवगयस्स मे तुमं देहि विज्जं थंभिणिं मोयणिं च, अहं तव दो विज्जाओ देमि—तालुग्घाडणिं ओसोवणिं च । भणिओ जंबुनामेण—पभव ! सुणाहि जो एत्थ सब्भावो—अहं सयणं विभवं च इमं विच्छिण्णं चइऊण पभायसमए पव्वइउकामो, भावओ मया सव्वारंभा परिचत्ता, एवं च मे अप्पमत्तस्स न पभवति विज्जा देवता वा । न य मे सावज्जाहिं विज्जाहिं पओयणं दुग्गइगमणणाइगाहिं । मया सुधम्मस्स गणहरस्स समीवे संसारविमोयेणविज्जा गहिया । तं च सोऊण पभवो परमविम्हिओ उवविट्ठो 'अहो ! अच्छरियं !!! जं इमेणं एरिसी विभूई तणपूलिआ इव सव्वहा परिचत्ता, एरिसो महप्पा वंदणीउ'त्ति विणयपणओ भणइ—जंबुनाम ! विसया मणुयलोयसारा, ते इत्थिसहिओ परिभुंजाहि । साहीणसुहपरिच्चायं न पंडिया पसंसंति । अकाले पव्वइउं कीस ते कया बुद्धी ? ।

१ °या य ज° टे० ॥ २ रथ° उ० विना ॥ ३ क ३ विनाऽन्यत्र—°व त्ति ते नि° ली ३ । °व ति नि° गो ३ । °व नि° उ० ॥ ४ °च्छि° गो० मो० स० उ० ॥ ५ °यणीवि° उ० ॥ ६ अहो इति डे० उ० विना न ॥ ७ अइं इ° ली ३ ॥ ८ एरिसा उ० विना ॥

परिणयवया धम्मसायरत्तो न तरहिया । ततो भणिय जंबुनामेणं—पभव ! ज पत्तसरिं विसयसुह तत्थ सुणसु विट्ठंत—

विसयसुहोवमाए महुबिंदुदिट्ठंतं

कोइ पुरिसो बहुदेस-पट्टणवियारी अडविं सत्थेणं समं पविट्ठो । चोरेहि य सत्थो अब्भाहतो । सो पुरिसो सत्थपरिभट्ठो मूढदिसो परिब्भमतो दाणदुद्दिणमुहेण वणगएणाभिभूओ । तेण पलायमाणेण पुराणकूवो तेण-दब्भपरिच्छन्नो दिट्ठो । तस्स तडे महंतो वड पायवो, तस्स पारोहो कूवमणुपविट्ठो । सो पुरिसो भयाभिभूओ पारोहमवलंबिऊण ठिओ कूवमज्झे, आलोएइ य अहो—तत्थ अयगरो महाकाओ विदारियमुहो गसिउकामो त पुरिसमवलोएइ । तिरियं पुण चउद्दिसिं सप्पा भीसणा डसिउकामा चिट्ठंति । पारोह मुवरिं किण्ह-सुक्किला दो मूसया छिंदंति । हत्थी हत्थेण केसग्गे परामुसति । तम्मि य पायवे महापरिणाह महु ठियं । गयसंचालिए य पायवे वायविधूया महुबिंदू तस्स पुरिसस्स केइ मुहमाविसंति, ते य आसाएइ । महुयरा य डसिउकामा परियंयति समंतओ ॥

तस्स एवगयस्स जं सुहं मन्नसि त भणाहि ॥

चिंतेऊण पभवो भणइ—जंबुनाम[1] जे महुबिंदू अहिलसइ तत्तिय तस्स सुह तक्केमि, सेस दुक्ख ति ।

जंबुनामेण भणिअ—एवमेयं । उवसंहारो पुण विट्ठंतस्स—

जहा सो पुरिसो, तहा संसारी जीवो । जहा सा अडवी, तहा जम्म-जरा-रोग-मरणबहुला संसाराडवी । जहा वणहत्थी, तहा मच्चू । जहा कूवो, तहा देवभवो मणुस्सभवो य । जहा अयगरो, तहा नरगं तिरिअगईओ । जहा सप्पा, तहा कोह-माण-माया-लोभा चत्तारि कसाया दोग्गइगमणनायगा । जहा पारोहो, तहा जीवियकालो । जहा मूसगा, तहा काल-सुक्किला पक्खा राइ-दियदसणेहिं परिक्खिवंति जीविअं । जहा दुमो, तहा कम्मबंधणहेऊ अन्नाणं अविरति मिच्छत्तं च । जहा महुं, तहा सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधा इंदियत्था । जहा महुयरा, तहा आगंतुगा सरीरुग्गया य वाही ॥

तस्सेव भयसकडे वट्टमाणस्स कओ सुहं ?, महुबिंदुरसभायणओ केवलं सुहकप्पणा ॥

नइ पुण पभव ! कोइ रिद्धिम पभवंतो गगणचारी भणेज्जा—एहि सोम ! गिण्ह मे हत्थे, जा ते नित्थारेमि । पभव ! सो इच्छेज्जा ? । पभवो भणति—कह न इच्छिहिति दुक्खपंजराउ मोइज्जंतो ? । जंबुनामो भणइ—कयाइ सो मूढयाए मधुगाही पभणेज्जा—होउ ताव मे तित्ती मधुस्स, तो मे नित्थारेहिसि त्ति । कओ पुण तस्स तित्ती ? । परिच्छिन्नाधारो अयरस्स पडिहिति अयगरमुहे । पभव ! अहं उवलद्धसब्भावो न भविस्सं पमादी ॥

१ °णाड गो ३ मो ५० ॥ २ तिण° क ३ ॥ ३ महुगरो क ३ गो ३ ॥ ४ पारो° क ३ उ ॥ ५ °ओ ति दे विना ॥ ६ °भयाय° मो स० ॥ ७ °सासायणो क ३ उ ॥ ८ मधुमोही क ३ । मधुगेही उ ॥ ९ °सुहेसु प० दे ॥

तओ पभणइ पभवो—एवमेयं। को पुण तुब्भं[1] निव्वेओ? केण वा दुक्खेणं[2] वाहियत्थ? जओ अकंडे बंधुवग्गं परिच्चयह। जंबुनामो भणइ—पभव! गब्भवासदुक्खं वियाणं(ण)तो कुसलस्स किं बहुणा निव्वेयकारणेण?। एत्थ दिट्ठंतं सुविहिया वण्णयंति—

गब्भवासदुक्खे ललियंगयणायं

वसंतपुरे नयरे सयाउहो राया। तस्स ललिया देवी। सा किर[3] कयाइ ओलोयणगट्ठिया किंचि पुरिसं रूवस्सिं पस्समाणी चिट्ठइ। चेडी य से 'अब्भासवत्तिणि'[4] त्ति तहागइं दट्ठूण[5] चिंतेइ—किं मन्ने देवी पस्समाणी चित्तकम्मजुवई विव निच्चलच्छी ठिया?। तीय[6] वि अवलोइओ, दिट्ठो य णाए सो पुरिसो चक्खुरमणो। चिंतियं च णाए—असंसयं एयम्मि पुरिसे (ग्रंथाग्रं-२००) निवेसिया णाए दिट्ठी। विण्णत्ता य णाए देवी—तुब्भं दिट्ठीए सविम्हओ(यं) मया विन्नायं, जं आयरेण पुरिसं एयं पस्सह। कस्स व नाम चंदे दिट्ठी न रमेज्जा?। देवीए भणियं—साधु सव्वं, को पुण एस हवेज्ज धरणितलपुण्णचंदो देवो विज्जाहरो व? त्ति। सा भणइ—विसज्जेह मं, जाव णं जाणामि।

विसज्जिया, गहियत्था नियत्ता साहइ—इहेव नयरे समुद्दपियस्स सत्थवाहस्स पुत्तो ललियंगओ नाम कलाविहण्णू गुणवं च। तओ सा ललिया देवी तं वयणं सोऊण भणइ—हले! मंदभागयाए मे चक्खुपहे पडिओ, जओ अनिव्वुयं मे हिययं, एत्थ मे चक्खु अवरज्झति। चेडीए भणिया—देवी! मा विसायं वच्चह, अहं तुब्भ पियनिमित्तं केणय अविन्नायं आणेमि। तीए भणिया—करेहि जत्तं इमस्स सरीरस्स रक्खणनिमित्तं। 'एवं' ति वोत्तूण सा गया लेहं देविसदिट्ठं गहेऊण ललियंगयसमीवं। निवेदिओ अ णाए देवीए दंसणुब्भवो चित्तविगारो तओ सो तं वयणं सोऊण लेहगहियत्थो य चेडिं भणइ—सुयणु! अईव मे पसाओ, चंदलेहं पुण को धरणितलं गओ छिवेज्जा, अणिंदिओ[11] वा[12] सवं (सयं) पासेज्जा। ताए भणितो—'असहायस्स हत्थगतो वि अत्थो नासेज्ज[13], सुसहायस्स पुण न किंचि दुल्लहं, अम्ह एस भारो' त्ति वोत्तूण पडिनियत्ता देवीए सव्वं कहेइ।

ततो अभिगमणोवायं चिंतिऊण कोमुइयवारे 'देवी सरुय' त्ति तीसे विणोयहेउं लेप्पगपरंपरववदेसेणं पवेसितो देवीए वासघरं चेडीए[14]। तत्थऽसंकिओ सह देवीए परिवसइ विसंतोवभोगवक्खित्तो[15]। इओ य अतेउरमहत्तरएहिं रायविदियं च कयं। विसोहेउं पयत्ता। आगमितं च चेडीए निउणाए। तओऽनायं दोहि वि जणीहिं अप्परक्खणनिमित्तं वीसत्थो अमेज्झकूवे छुहा[16](ढो) मज्झे पविट्ठो(?)।

---

१ तुम ली ३। तुज्झं गो ३॥ २ °ण वावाहि° क ३ उ०॥ ३ किरि ली ३॥ ४ °वत्तणि उ० विना॥ ५ °ण विचिंते° क ३॥ ६ तीए वि क ३। °तीइ वि उ०॥ ७ °इय उ०॥ ८ °ण्णविता य डे०। °ण्णविया य उ०॥ ९ °वियण्णू उ० विना॥ १० °णिगओ ली ३ गो ३॥ ११ आणंदिओ कस० मोस० विना॥ १२ वासुओ पा° ली ३॥ १३ नासेज्जा ली ३ क ३। विणसेज्जा उ०॥ १४ °डीय उ०॥ १५ °सयोव° क ३ उ०॥ १६ ली० य० विनाऽन्यत्र—छुहामहामज्झे प° डे०। छुहामज्झए° गो ३॥

च० हिं० २

तं च परमासुइं दट्ठूण निंदतो नियगविण्णाणं परमदुक्खिओ चिंतेइ—जइ इत्तो मे निग्गमो होज्जा तो अलं मे परिसपज्जवसाणेहिं भोगेहिं ति। साओ य से अणुकंपणट्ठा भुत्तसेससाहारं पक्खिवति। तं च छुहावसेण परिचयवसेण य सब्भाविओ अहिलसति। पाउसकाले य मेहोदएण पुण्णो कूवो। निद्धमणोदयवायसवद्धो उग्घाडिओ पुरिसेहिं। सलिलवेगेण निच्छुब्भमाणो निग्गओ खाइतीरे। वाएण समाहओ मुच्छिओ, दिट्ठो य नियगधाईए, पक्खालिऊण संचारिओ य सघरं पवेसिओ। पडियरिओ कमेण लट्ठपोराणसरीरो जातो॥

एअस्स दिट्ठंतस्स उवसंहारो—जहा सो ललियंगतो, तहा जीवो। जहा देवीदरिसणसंबंधकालो, तहा मणुस्सजम्मं। जहा सा चेडी, तहा इच्छा। जहा वासघरे पवेसो, तहा विसयसंपत्ती। जहा रायपुरिसा, तहा रोग-सोग भय-सी-उण्हपरितावा। जहा कूवो, तहा गब्भवासो। जहा भुत्तसेसाहारपरिक्खेवो, तहा जणणिपरिणामियऽन्न-पाणा परिसवादाणं। जहा निग्गमो, तहा पसवसमतो। जहा धाई, तहा देहोपग्गहकारी कम्मविवागसंपत्ती॥

पभव! जइ तस्स देवी रूवविम्हिया पुणो पट्ठवेज्जा तो पविसेज्जा?। पभवो भणइ—कह पविसिहइ तहाणुभूयदुक्खो?। जंबुनामेण भणियं—अवि सो अन्नाणयाते विसयसोभग्गरययाए य पुणो पविसेज्जा, जहा अन्नाणिणो सत्ता विसयपडिबद्धा गब्भवासं। अह पुण गहियबंध-मोक्खसब्भावो पुणो राग-दोसवत्तिणिं न पवज्जिस्स॥

तओ पभवो भणइ—सोम! सुणह, जहा तुब्भेहिं कहियं तहा तं। एगं पुण विन्नवेमि—लोगधम्माणुवत्तिणा भत्तुणा भज्जातो पालणिया लालणिया य। तं कयवि संवच्छराणि एयाहिं समं बहूहिं सुहमणुहविऊण तओ सोमिहह पव्वयती। जंबुनामेण भणिओ—पभव! न एस नियमो संसारे—जा इह भवे भज्जा माया वा सा भवंतरे वि, किं पुण माया भगिणी भज्जा दुहिया वा हवेज्जा। एवं सेसविवज्जासो—भत्ता वि पुत्तो, पिया वि माया परो वा, तहा इत्थि(त्थी) पुरिसो नपुंसगो य कम्मवसगो जीवो। जा पुण माया भगिणी दुहिया वा जम्मंतरे आसी सा कह भज्जायारेण लालणीया भवइ?। [पभवो भणइ—] भवंतरगओ भावो दुविन्नेओ, वत्तमाणं पडुच्च भण्णइ—पुत्तो वि, पिया वि जओ। भणइ जंबुणामो—एवमादी अन्नाणस्स दोसा, जेण अकज्जे कज्जबुद्धीअ पवत्तइ जणो, अथवा भोगलोलुयाए संपइसुहमोहिओ अकज्जे पवत्तिज्ज जाणतो वि। तं अच्छउ ताव भवंतरगवीसंबंधो, एक्कभवयुत्ततमन्नाणमयं सुणाहि—

एगभवम्मि वि संबंधविचित्तयाए कुबेरदत्त–कुबेरदत्ताकहाणयं

महुराए नयरीए कुबेरसेणा गणिआ पढमगब्भदोहलखेदिया जणणीए तिगिच्छियस्स दंसिआ। तेण भणिया—जमलगब्भदोसेण एईसे परिवाहा, नत्थि कोइ वाहिदोसो दीसइ।

१ °पक्ले° उ ॥ २ भणिओ शी ३ मो १ ॥ ३ °तो दे मो स ॥ ४ °लोल शी ३ ॥ ५ पवरेखा शी ३ ॥ ६ °णगव सु° क १ ग ॥ ७ °अक्सेविया शी १ ॥ ८ न एस को° उ ॥

एवमुवलद्धत्थाय जणणीए भणिया—पुत्ति! पसवणकालसमए मा णे सरीरपीडा भवेज्जा, गालणोवायं गवेसामि, तओ निरामया भविस्ससि, परिभोगवाधाओ य न होहिति, गणियाण य किं पुत्तभंडेहिं? । तीए न इच्छियं, भणइ—जायपरिचायं करिस्सं । तहाणुमाग ये समए पसूया दारगं दारिगं च । जणणीए भणिया—उज्झिज्जंतु । तीए भणियं—दसरायं ताव पूरिज्जउ । तओ अ णाए दुवे मुद्दाओ कारियाओ नामंकियाओ— 'कुवेरदत्तो' 'कुवेरदत्ता' य ।

अतीते दसराइए डहरिकासु नावासु सुवण्णरयणपूरिआसु छोढूण जउणानेइं पवाहियाणि । वुज्झंताणि य भवियव्वयाए सोरियनयरे पच्चूसे दोहिं इब्भदारएहिं दिट्ठाणि । धरियाउ नावाउ । गहिओ एगेण दारगो, इक्केण दारिया । 'सधणाइं' ति तुट्ठेहिं सयाणि गिहाणि नीयाणि त्ति । कमेण परिवड्ढियाणि पत्तजोव्वणाणि । 'जुत्त संवंधो' त्ति कुवेरदत्ता कुवेरदत्तस्स दिन्ना । कल्लाणदिवसेसु य वट्टमाणेसु वहुसहीहिं वरेण सह जूयं पयोजितं । नाममुद्दा य कुवेरदत्तहत्थाओ गहेऊण कुवेरदत्ताए हत्थे दिन्ना । तीसे पेच्छमाणीए सरिसघडणनामतो चिंता जाया—'केण कारणेण मन्ने नाम-मुद्दाकारसमया इमासिं मुद्दाणं?, ण य मे कुवेरदत्ते भत्तारचित्तं, न य अम्हं कोइ पुव्वजो एयनामो सुणिज्जइ, तं भवियव्वं एत्थ रहस्सेणं' ति चिंतेऊण वरस्स हत्थे दो वि मुद्दाउ ठावियाओ । तस्स वि पस्समाणस्स तहेव चिंता समुप्पन्ना । सो वहूए मुद्दं अप्पेऊण माउसमीवं गतो । सा य णेण सवहसाविया पुच्छिया । तीए जहासुतं कहियं । तेण भणिया—अम्मो! अजुत्तं ते (भे) जाणमाणेहिं कयं ति । सा भणइ—'मोहिया मो, तं होउ पुत्त! वधूहत्थग्गहणमेत्तदूसिआ, न एत्थ पावगं । अहं विसज्जेहामि दारिगं सगिहं । तव पुण दिसाजत्तातो पडिनियत्तस्स विसिट्ठं संवंधं करिस्सं ।' एवं वोत्तूण कुवेरदत्ता सगिहं पेसिया । तीई वि जणणी तहेव पुच्छिया । तीए जहावत्तं कहियं ।

सा तेण निव्वेएण समाणी पव्वइया, पवत्तिणीए सह विहरइ । मुद्दा य णाए सारक्खिया पवत्तिणिवयणेण । विसुज्झमाणचरित्ताए ओहिनाणं समुप्पन्नं । आभोइओ अ णाए कुवेरदत्तो कुवेरसेणाए गिहे वत्तमाणो । 'अहो! अन्नाणदोसु' त्ति चिंतेऊण तेसिं संवोहणनिमित्तं अज्जाहिं समं विहरमाणी महुरं गया, कुवेरसेणाए गिहे वसहिं मग्गिऊण ठिया । तीए वंदिऊण भणिया—अज्जाओ! अहं नाम गणिया कुलवहूचिट्ठिया, असंकियाउ वसहिं ति । तीसे य दारगो वालो, सा तं अभिक्खं साहुणीसमीवे निक्खिवइ । तओ तेसिं रणं जाणिऊण अज्जा पडिवोहनिमित्तं दारगं परियंदेइ—

१ °स्सामि ली ३ ॥ २ य पसवसमए क० मो० उ० ॥ ३ °दत्ते गो ३ उ० ॥ ४ °नईए प° उ० ॥ ५ °द्दाओ दावि° टे० क० मो० । °द्दा च(द)वावि° गो ३ ॥ ६ ससवह साहिया । तीए ली ३ ॥ ७ °सुह क° गो ३ स० । सुय तहा क° उ० ॥ ८ तीए क ३ । तीय गो ३ ॥ ९ वसहिय म° ली ३ ॥ १० °ह त्ति उ० ॥

बालय! भाया सि मे, देवरो सि मे, [1]पुत्तो सि मे, सवत्तिपुत्तो [सि मे,] भत्तिज्जओ सि [मे,] पित्तिज्जो सि [मे,] जस्स आसि पुत्तो सो वि मे भाया, भत्ता, पिया, पिआमहो, ससुरो, पुत्तो वि, जीसे गब्भजो सि सा वि मे माया, सासू, सवित्ती, भाउज्जाया, पियामही, वधू ।

तं च तहाविहं परियदणयं सोऊण कुबेरदत्तो वंदिऊण पुच्छइ—अज्जे! कहं इमं च कस्स विरुद्धमसंबद्धकित्तणं[2] ? उदाहु दारगविणोयणत्थं अजुज्जमाणं भणियं ? । एवं पुच्छिए[3] अज्जा भणइ—सावग! सच्चं एयं । तओ य णाए ओहिणा दिट्ठं तेसिं दोण्ह वि जणाणं संबंधं कहियं, मुद्दा य दंसिया । कुबेरदत्तो य तं सोऊण जायतिव्वसंवेगो 'अहो! अन्नाणेण अपदं कारिओ' त्ति विभवं दारगस्स दाऊण, अज्जाए कयनमोक्कारो 'तुब्भेहिं मे कओ पडिबोहो, करिस्सं अत्तणो पत्थं' ति तुरियं निग्गओ, साहुसमीवे गहियलिंगा-ऽऽयारो, अपरिवडियवेरग्गो, तवोवहाणेहिं विसिट्ठेहिं खविअदेहो गओ देवलोयं । कुबेरसेणा वि गहियगिहिवासजोगनियमा साणुक्कोसा ठिया । अज्जा वि पवत्तिणीसमीवं गया ॥

पभव! तेसिं एवं पच्चयं[4] सोऊण विसयरागो होज्जा ? । पभवो भणइ—कह भविस्सइ ? । जंबुनामो भणति—अवि तेसिं 'मूवया' ऐको[5] तू इदाणीं 'परिहारो' त्ति पसत्तया होज्जा, न य मम गुरुसयासे सपच्चये विसयदोसे सोऊण भोगाभिलासो हवेज्जा ॥

---

१ तस विना सर्वेष्वादर्शेष्वयं पाठः—°पुत्तो सि भत्तिज्जओ सि जस्स आसि पुत्तो सो वि मे भाया भत्ता पिया पुत्तो वि जीसे गब्भओ सि सा वि मे माया सासू भगिणी भाउज्जाया इति ॥ २ °द्धकित्त° ली ३ गो ३ क ३ ॥ ३ °च्छिया अ° उ ॥ ४ एवं सपच्चयं सोऊण पुणो वि उ ॥ ५ गो ३ विनाऽन्यत्र— पुकोऽपय इ° कसं मोसं । पुको य इ° डे । पुको तत्थ इ° उ० ॥

---

* एतदर्थविकासका इमे हेमचन्द्रीयपरिशिष्टपर्वद्वितीयसर्गगताः श्लोकाः—

बुध्यते मे यथा जन्तुस्तथा बोधयेदिति । आर्या तत्प्रतिबोधाय तं बालमुदलापयत् ॥ २९३ ॥
भ्राताऽसि तनुजन्माऽसि वत्स देवरोऽसि च । भ्रातृव्योऽसि पितृव्योऽसि पुत्रपुत्रोऽसि बालक ! ॥ २९४ ॥
यश्च ते बालक ! पिता स मे भवति सोदरः । पिता पितामहो भर्ता तनयः श्वशुरोऽपि च ॥ २९५ ॥
या च बालक ! ते माता सा मे माता पितामही । भ्रातृजाया वधूः श्वश्रूः सपत्नी च भवत्यहो ! ॥ २९६ ॥
कुबेरदत्तः तच्छ्रुत्वा जगादाऽऽर्ये ! किमीदृशम् । परस्परविरुद्धार्थं भाषसे ? विस्मितोऽस्म्यहम् ॥ २९७ ॥
आर्योचे मम बालोऽयं भ्रातैकजननी यतः । भवानसि तनुजन्मास्य मत्पतिसूरिति ॥ २९८ ॥
मत्तु सोदर इति देवरोऽपि भवत्यसौ । भ्रातुस्तनय इति च भ्रातृव्य कीर्तयाम्यमुम् ॥ २९९ ॥
पितृव्यश्चैष भवति भ्राता मातृपतेरिति । पुत्रः सपत्नीपुत्रस्येत्यसौ पौत्रो ममोदितः ॥ ३०० ॥
योऽस्य पिता स मे भ्राता माता ह्येका यदावयोः । तस्य तातश्च मे तातो भर्ता मातुरभूदिति ॥ ३०१ ॥
पितृव्यस्य पितेत्येनमुदलापामि पितामहम् । परिणीताऽहममुना ह्यासीति पतिरेष मे ॥ ३०२ ॥
ममेष तनुजन्मा च सपत्नीकुक्षिभूरिति । देवरस्य पितेत्येष भवति श्वशुरोऽपि हि ॥ ३०३ ॥
याऽस्याम्बा सा ममाऽप्यम्बा यया जाताऽस्म्यहं यतः । पितृव्यकस्य मातेति मम साऽपि पितामही ॥ ३०४ ॥
भ्रातृजायाऽपि भवति मद्भ्रातुर्गृहिणीत्यसौ । सपत्नीतनयस्यैषा गृहिणीति वधूरपि ॥ ३०५ ॥
माता पत्युर्मदीयस्येत्यसौ श्वश्रूरसंशयम् । भर्तुर्भार्या द्वितीयेयमिति ज्ञाता सपत्न्यपि ॥ ३०६ ॥
१ पौत्रोऽसीत्यर्थः ॥

पुणो **पभवो** भणइ—देव ! सातिसएहिं ते वयणेहिं कस्स सचेतणस्स पडिवोहो न होज्जा ? तहा वि 'जुत्तं' ति भणामि—अत्थो महंतेण जत्तेणं संपाविज्जइ, सो तुब्भं विउलो अत्थि, तस्स परिभोगनिमित्तं संवच्छरं अच्छिज्जउ, छसुडुसु विणिजोए कए सुट्ठु कयं होज्ज त्ति, पच्छा जुत्तं पवइउं । जंवुनामो भणइ—**पभव !** अत्थस्स परिच्चायं पत्तेसु पंडिया पससंति, न कामहेउं । एत्थ सुणह अक्खाणयं—

अत्थविणिओगविरूवयाए गोवदारगोदंतं

अंगाजणवए गोवा[1] पभूयगोमहिसा परिवसंति । चोरेहिं गोट्ठं पेल्लियं[2] । एगा तरुणी रूवस्सिणी पढमपसूया दारगं छड्डावियाँ[3] हिया । सा तेहिं विक्कीया नगरे गणियाहट्टे । तीए वमणविरेयणादीहिं परिकम्मेहिं परिचरिया उवयारं च गाहिया लक्खभूया जाया । सो य से दारओ वयवड्ढिओ जोव्वणत्थो जातो, घयस्स सगडाणि भरेऊण चंपं गतो । विक्कीयं घयं । पस्सइ य तरुणपुरिसे गणियाघरे सच्छंदं कीलमाणे । तेण चिंतियं—मज्झ य धणेण किं जइ एवं न इच्छियजुवइसहिओ विहरामि ? त्ति । तस्स पस्समाणस्स गणियाउ माया[4] चेव रुइया । तेण इच्छियं सुंकं दिन्नं ।

सो सझाकाले ण्हायसमालद्धो पत्थिओ माउगणियासमीव । देवयाए य अणु(ग्रन्थाग्रं—३००)कंपियाए सवच्छं[5] गावीरूवं काऊण पुरओ से दंसिओ अप्पा । 'पादो से असुइणा विलित्तो' त्ति वच्छमुवरिं फुसिउमारद्धो । तेण वच्छेण माणुसीवायाए भणिया गावी—अम्मो ! एस को वि पुरिसो अमेज्झलित्तं मे (से) पायं उवरिं[6] फुसति । तीए भणियं—'पुत्त ! मा ते मन्नू भवउ, एस मंदभागो जणणीए समीव अकिच्चं सेविउं वच्चइ, न य एयस्स एयं गरुय गोवदारगस्स' त्ति अदरिसणं गया । तेण चिंतियं—'मम माया चोरेहिं हिया सुवए, किं मन्ने सा गणिया होज्ज ? त्ति नियत्तामि । अहवा पुच्छामि णं गतूणं' ति पत्तो गणियागिहं । तीए निमंतण-भोयण-गीय-वाइय-नच्चणेहिं[7] हिययगहणसादराए उवगिज्झमाणो सो कज्जनिच्छयपरो भणइ—चिट्ठउ ताव सव्वं, कहेहिं, तुज्झं कहमुप्पत्ती ? । सा भणइ—जंनिमित्तमागतो सि धणं दाऊणं ममं महिलागुणवित्थरं पुच्छ, किं ते कुलकहाए ? । सो भणइ—तुज्झ उप्पत्तीए पओयणं, तं अगूहमाणी कहेहि, कुणसु पसायं । तीए चिंतियं—कहेमि ?, से को वि दोसो हवेज्जा ? । ततो तीए सव्वं कहियं अम्मापिउसयणणामकालं साभिन्नाणं ॥

पभव ! देवयापडिवोहो जइ न होंतो तो केरिसो होंतो अत्थस्स उवओगो तस्स गोवदारगस्स ? । **पभवो** भणइ—नत्थि मे एत्थ किंचि वत्तव्वं, जहा भणह तहा तं चेवेति । [जंवुनामो भणइ—**पभव !**] एवं नायपरमत्थो भोगाभिलासी भवेज्जा ? । **पभवो** भणइ—अभावो एस । जंवुनामेण भणिओ—पडिवुद्धाणं एस विसओ, न सुत्ताणं, "सवत्थ नाणं परित्ताणं" ॥

१ °ए गोणविभूतए गोवा डे० ॥ २ °ल्लिय एगा ली ३ ॥ ३ °या गहिया क ३ ॥ ४ °या रु° डे०उ० विना ॥ ५ °च्छगा° ली ३ ॥ ६ °त्त पाय मम उवरिं सस० ॥ ७ निसंदण° ली ३ ॥

पुणो कयंजली विन्नवेइ पभवो—सामी! लोगधम्मो वि ताव पमाणं कीरउ, पिउणो उवयारो कओ होइ, तेसिं पुत्तपक्खय तित्तिं वण्णंति वियक्खणा—"निरिणो य पुरिसो सग्गगामी होइ"। ततो जंबुनामो भणइ—न एस परमत्थो, पुत्तो पिउणो भववरग यस्स अविजाणओ उवयारबुद्धीए अवगारं करिज्जा। न य पुत्तपक्खया तित्ती पिउणो, "सयकयकम्मफलभागिणो जीवा"। जं पुत्तो देइ पियरं उद्दिसिऊण सा भत्ती। जहा जम्मणं परायत्तं, तहा आहारो वि सकम्मनिविट्ठो(ट्ठो)। जे य खीणवसा ते निराधारा अतिच्छा सव्वमणागयकालं कहं वट्टिहिंति?। पुत्तसंदिट्ठं वा भत्तपाणं अवेयणं कहं पिउसमीवमेहिति?, तमुद्दिस्स वा न कयं पुण्णं?। जो पिता पितामहो वा कम्मजोगेण कुंथु पिपीलिया वा तणुसरीरो जातो होज्जा, तम्मि य पदेसे जइ पुत्तो उदगं तन्निमित्तं तस्स देज्जा, तस्स कहं एसंसि उवगारं अवगारं वा?। अहवा सुणाहि—

लोगधम्मासंगययाए महेसरदत्तक्खाणयं

तामलित्तीनयरीवे महेसरदत्तो सत्थवाहो। तस्स पिया समुद्दनामो वित्तसंचय-सारक्खण-परिवुड्ढिलोभाभिभूओ मओ मायाबहुलो महिसो जाओ तम्मि चेव विसए। माया वि से उवहि नियडिकुसला बहुला नाम चोक्खवाइणी पइसोकेण मया सुणिया जाया तम्मि चेव नयरे। महेसरदत्तस्स भारिया गंगिला गुरुजणविरहिए घरे सच्छंदा इच्छिएण पुरिसेण सह कयसंकेया पओसे तं उदिक्खमाणी चिट्ठइ। सो य तं पएसं सोढहो उवगतो महेसरदत्तस्स चक्खुभागे पडिओ। तेण पुरिसेण अत्तसरक्खणनिमित्तं महेसरदत्तो तक्किओ निवाडेउ। तेण लहुहत्थयाए गाढप्पहारीकओ नाइदूरं गंतूण पडिओ चिंतेइ—अहो!!! अणायारस्स फलं पत्तो अहं मंदभागो। एवं च अप्पाणं निंदमाणो जायसंवेगो मतो गंगिलाए उयरे दारगो जाओ। संवच्छरजायओ य महेसरदत्तस्स 'पिओ पुत्तो मिं' त्ति।

तम्मि य समए पिउकिच्चे सो महिसो णेण किणेऊण मारिओ। सिद्धाणि य वंजणाणि पिउमंसाणि, दत्ताणि जणस्स। बितियदिवसे त मंसं मज्जं च आसाएमाणो पुत्तमुच्छंगे काऊण तीसे माउसुणिगाए मंसखंडाणि खिवइ, सा वि ताणि परितुट्ठा भक्खइ।

साहू य मासखवणपारणए तं गिहमणुपविट्ठो, पस्सइ य महेसरदत्तं परमपीतिसंपउत्तं। सद्धत्थं च ओहिणा आभोएऊण चिंतिअमणेण—अहो!!! अन्नाणयाए एस सत्तुं उच्छंगेण वहइ, पिउमंसाणि य खायइ, सुणिगाए देइ मंसाणि। 'अकज्जं' ति य वोत्तूण निग्गओ।

महेसरदत्तेण चिंतियं—कीस मन्ने साहू अगहियभिक्खो 'अकज्जं' ति य वोत्तूण निग्गओ?। आगओ य साहुं गवेसंतो, विवित्तपएसे दट्ठूण, वंदिऊण पुच्छइ—भयवं! किं न गहियं भिक्खं मम गिहे?, जं वा कारणमुदीरियं तं कहेह। साहुणा भणिओ—सावग! ण ते मन्नु कायव्वो। पिउरहस्सं कहियं, मज्जारहस्सं सत्तुरहस्सं च साभिण्णाणं

१ °स्स कुसला नाम ली ३॥ २ सुया ली ३॥ ३ साढह ली ३ गो ३॥ ४ मंसं मज्जिय च ली ३॥

जहावत्तमक्खायं । तं च सोऊण जायससारनिव्वेओ तस्सेव समीवे सुयगिहवासो पव्वइओ ॥

पभव ! एरिसी लोगसुई, तं पमाणं करेंतो अन्नाणयाए माणिज्जं वा पीलेज्जा, अकज्जे कज्जवुद्धी निवेसिज्जा, कज्जं परिहरिज्जा, न पुण नाणी । तम्हा लोगदिट्ठी विसयाणुकूलवाइणी ॥

संसारं च दुक्खवहुलं चिंतंतेण कायव्वो मोक्खत्थमुज्जमो । तत्थ नरगेसु निरुवमनिप्पडिगाराणि निरंतराणि दुक्खाणि, तिरिएसु सी-उण्ह-छुहादीणि सपक्ख-परपक्खजणियाणि, मणुएसु य दारिद्द-दोहग्ग-नीअउच्चमज्झिमभाव-परवत्तव्व-पियविप्पओगादीणि, देवेसु किव्विसिया-ऽऽभिओग-परिड्ढिदंसण-चयणभयादीणि, तंभि उव्विअंतेण जिणवरसुंदिट्ठो निव्वाणपहो सेवियव्वो ।

तओ पभवो भणइ—सामि[1] विसयसुहस्स सिद्धिसुहस्स य किं अंतरं होज्जा ? । जंबुनामा भणइ—पभव ! सिद्धिसुहं निरुवमं, देवसुहाओ वि य अणंतगुणं अव्वावाहं ति वुच्चति । जाव य सरीरं ताव य तदस्सिया पीडा हवइ, जाव मणो ताव माणसीपत्तिजो य दुक्खसण्णिवाओ । 'लक्खे सरा णिवयंति' त्ति दिट्ठजा(दिट्ठता) य भोयण-पाण-विलेवणाऽऽसणादी(दि)परिभोए सुहवुद्धी जणो परिकप्पेइ ते दुक्खपडिकरेति योद्दव्वा ।

एत्थ य दिट्ठंतं सुणाहि—

दुक्खे सुहकप्पणाए विलुत्तभंडस्स वाणियगस्स दिट्ठंतं

एक्को किर वाणियओ कोडीभंडसगडाणि भरिऊण सत्थेण समं अडविं पविट्ठो । तस्स य एक्को वेसरो संववहारनिमित्तं पणाण भरिओ । तस्स य उप्पहपडिवन्नस्स फालिओ भरओ, परिगलिआ पणा । तेण दट्ठूण रुद्धाणि नियगसगडाणि, स मणुस्सा य पणा मग्गिऊणं पवत्तो(त्ता) । पत्ता य आइवाहिगा, तेहिं भणिओ—वच्चंतु सगडाणि, किं कागिणिनिमित्तस्स कए कोडीं परिच्चयउकामो सि ? किं वा चोराण न वीहेसि ? । सो भणइ—लाभो सदिद्धो, संतं कहं परिच्चइस्सं ? । गतो य सेसो सत्थो । तस्स वि चोरेहिं विलुत्तं भंडं ॥

एवं जो विसयलोभेण मोक्खसुहसाहणपमुक्कतत्ती सो संसारमावन्नो वहुं कालं सोइहिति, जहा सो वाणियगो विणट्ठभंडसारो ॥

तओ पभवो एवमादीणि सोऊण पडिओ जंवुनामस्स पाएसु, 'अहं तुज्झं सीसो, दंसिओ मे मोक्खमग्गो' । तेणावि 'तह' त्ति पडिवन्नं । विसज्जिओ निग्गओ वेभारगिरिं समस्सिओ ठिओ ।

---

१ नामो उ० सस० ॥ २ ति । जाव ली ३ ॥ ३ गो० वा० विनाऽन्यत्र—°साए त्ति जो सं० क ३ । °सीए त्ति जो ली ३ उ० ॥ ४ °वणासिणाणादी क ३ ॥ ५ °दीण परिभोए सुह बुद्धीभ जणो उ० ॥ ६ °कणपडिकार ति उ० ॥ ७ पत्ताइयाइवाहि° ली ३ गो ३ मो० सं० ॥ ८ °कभत्ती उ० विना ॥ ९ वणि° क ३ गो ३ ॥

* मकारोऽत्र न विभक्त्यर्थः किन्त्वागमिक ॥

निदितं काऊण पभाताए रयणीए पवज्जनिच्छियएहिं अम्मापिऊहिं ण्हाविओ विहीए, अलंकियविभूसिओ जंबुद्दीवाहिवंतियसकयसन्निज्झं पुरिससहस्सवाहिणी सीयमभिरूढो।

तओ कुलतिलओ विव जंबुकुमारो विम्हियमणेण जणेण पससिज्जमाणो मणि-कणगव रिस वेसमणो विव वरिसमाणो रायगिहपुराओ महतीए इड्ढीए पत्तो गणहरसमीवं। पइण्णो सिविगाओ, विसज्जियकेसाभरणो य पडिओ पाएसु सुहम्मसामिणो, 'भयवं! नित्थारेहिं मं सह सयणेणं' ति। तओ दिक्खियाणि विहिणा। जाओ वि य से भज्जाओ माया य सुव्वयाए अज्जाए समीवे सिस्सिणीओ। पभवो वि रायाणुण्णाओ दिन्नो सीसो जंबुनामस्स गुरुणा। सामाइयमाईयं च सुयं सपुव्वगयं नाणावरणखओवसमलद्धीए थोवेण कालेण गहियं जंबुनामेण। पभवो वि सामण्णमणुपालेइ॥

भगवं पि पंचमो गणहरो सगणो विहरमाणो गतो चंपं नयरिं। समोसरिओ पुण्णभद्दे चेइए। कोणिओ राया वंदिओ निज्जातो। कयपणामो य जंबुणामरूवदसणविम्हिओ गणहरं पुच्छइ—भयवं! इमीए परिसाए एस साहू ससिपरिसित्तो इव किसाणू दित्तो मणोहरसरीरो य, तं किं मन्ने एएण सीलं सेवियं? तवो वा चिण्णो? केरिसं दाणं वा तविहं दिन्नं? जओ से एरिसी तेयसंपयत्ति त्ति। तओ भयवया भणिओ—सुणाहि राय!, जहं तव पिउणा सेणिएण रण्णा पुच्छिएण महावीरसामिणा कहियं—

पसन्नचंद-वक्कलचीरिसंबंधो

तम्मि समए अरहा गुणसिलए चेइए समोसरिओ। सेणिओ राया तित्थयरदंसणसमूसुओ वंदिउं निग्गओ। तस्स य अग्गाणीए दुवे पुरिसा कोडुंबसंबद्धं कहं करेमाणा पस्संति एगं साहुं एगचलणपयट्ठियं समूसियबाहुजुगलं आयावेंतं। तत्थेगेण भणियं—अहो! एस महप्पा रिसी सूराभिमुहो तप्पइ, एयस्स सग्गो वा मोक्खो वा हत्थगओ त्ति। बीएण पच्चभिजाओ, तओ भणइ—किं न याणसि?, एस राया पसन्नचंदो, कओ एयस्स धम्मो?, पुत्तो णेण बालो रज्जे ठविओ, सो य मंतीहिं रज्जाओ मोइज्जइ, सो य णेण वंसो विणासिओ, अंतेउरजणो य न नज्जइ किं पाविहिति? त्ति। तं च से वयणं [सोऊण] झाणवाघायं करेमाणं सुतिपहमुवगयं। तओ सो चिंतिउं पयत्तो—अहो!!! ते अणज्जा अमच्चा, मया सम्माणिया निच्चं पुत्तस्स मे विपडिवन्ना। जइ हं होंतो, एवं च चिट्ठया, तो णे सुसासिए करेंतो। एवं च से संकप्पयंतस्स तं च कारणं वट्टमाणमिव जायं। तेहिं समं जुद्धाणि मणसा चेव काउमारद्धो।

१ °याए° क ३ गो ३॥ २ °अलंकिय क ३ विना॥ ३ °ओ क ३॥ ४ सिवियमारू° उ॥ ५ उपण्णो ली ३ विना॥ ६ °णिमरायया ली ३॥ ७ वंदिउं डे उ॥ ८ °ए एव महतीए परि उ॥ ९ °सी रूवसंपत्ति त्ति ली ३॥ १० °ईए क ३॥ ११ मणो इव क मो० गो ३। भणइ य सं॥ १२ ओमज्जइ क ३ गो ३॥ १३ °पहमवगं° ली ३। °पहमागं° उ॥ १४ त्ति ली ३॥ १५ महा चेव ली ३॥

* कोष्ठान्तर्गतमिदं प्रामादिकमाभाति॥

पत्तो य सेणिओ राया तं पएसं, वंदिओ णेण विणएणं, पिच्छइ णं झाणनिचलं। 'अहो! अच्छरीयं!!! एरिसं सव्वेसिं सामत्थं रायरिसिणो पसन्नचंदस्स' त्ति चिंतयंतो पत्तो तित्थयरसमीवं। वंदिऊण विणएणं पुच्छइ—भयवं! पसन्नचंदो अणगारो जम्मि समए मया वंदिओ जइ तम्मि समए कालं करेज्जा कं गतिं वच्चेज्ज? त्ति। भयवया भणियं—सत्तमपुढविगमणजोगो[3]। राया चिंतेइ—साहुणो कहं नरकगमणं? ति। पुणो पुच्छइ—भयवं! पसन्नचंदो जइ इयाणिं कालं करेज्ज, का से गई भवेज्जा?। भयवया भणियं—सव्वट्ठसिद्धिगमणजोगो इयाणिं ति। तओ भणइ—कहं इमं दुविहं वागरणं नरगाऽमरेसु (ग्रन्थाग्रं—४००) तवस्सिणो? त्ति। भयवया भणियं—झाणविसेसेणं तम्मि इमम्मि य समए एरिसी तस्स असात-सातकम्मादाणता। सो भणति—कहं?। भयवया भणियं—तव अग्गाणियपुरिसमुहविणिग्गयं पुत्तपरिभववयणं सोऊण उज्झियपसत्थझाणो तुमे वंदिज्जमाणो मणसा जुज्झइ भिन्नपराणीएण समं, तओ सो तम्मि समए अहरगइजोग्गो आसी। तुमम्मि य अवगए जायकरणसत्ती 'सीसावरणेण पहरामि परं' ति लोइए सिरे हत्थं निक्खिवंतो पडिबुद्धो, 'अहो!!! अहं सकज्जं पयहिऊणं परत्थे जइजणविरुद्धं मग्गमोइन्नो' चिंतेऊण निंदण-गरिहणं करेंतो, ममं पणमिऊण तत्थेव चेव आलोइयपडिक्कंतो, पसत्थझाई संपयं। तं च णेण कम्मं खवियं असुभं, सुभं अज्जियं, तेण कालविभागेण दुविहगतिनिद्देसो॥

ततो कूणिओ पुच्छइ—कह वा भयवं! बालकुमारं रज्जे ठविऊण पसन्नचंदो राया पव्वइओ?, सोयुमिच्छे। तओ भणति—

पोयणपुरे सोमचंदो राया। धारिणी देवी। सा कइयाइ तस्स रण्णो उल्लोयणगयस्स केसे रयंती पलियं दट्ठूण भणइ—सामि! दूओ आगओ त्ति। रण्णा दिट्ठी वियारिया, नेय पस्सइ अपुव्वं जणं। तओ भणति—देवि! दिव्वं ते चक्खुं। तीए पलियं दंसियं 'धम्मदूतो एसो' त्ति। तं च दट्ठूण परुण्णो राया। उत्तरीएण य से अंसूणि धरेमाणी देवी भणति—जइ लज्जह वुड्ढत्तणेण, निवारिज्जिहिति जणो। ततो भणइ—देवि! न एवं, 'कुमारो बालो असमत्थो पयापालणे होज्ज' त्ति मे मंतुं जायं, 'पुव्वपुरिसाणुचिन्नेण य मग्गेण न गओ हं' ति णे विचारो। तुमं पसन्नचंदं संरक्खमाणी अच्छसु त्ति। सा निच्छियंगमणा।

तओ पुत्तस्स रज्जं दाऊण धाइ-देवीसहिओ दिसापोक्खियतावसत्ताए दिक्खिओ चिरसुन्ने आसमपए ठिओ। देवीए य पुव्वाहूतो गब्भो परिवड्ढइ, पसन्नचंदस्स य चारपुरिसेहिं निवेइओ। पुण्णसमए य पसूया कुमारं, 'वक्कलेसु ठविओ' त्ति वक्कलचीरी। देवी सूइयारोगेण मया, वणमहिसीदुद्धेण य कुमारो वड्ढाविज्जइ। धाई वि थोवेण कालेण काल-

१ झाणि नि° क ३ गो ३॥ २ °वस्सि सा° क ३ गो ३। °वस्स सा° उ०॥ ३ °गो। ततो चिं° ली ३ उ० विना॥ ४ °त्थगओ चे° उ०॥ ५ कह क ३ उ०॥ ६ °रिभहि° ली ३। °रिज्जिहि° उ०॥ ७ °या गमणे कस० मोस० उ०॥

गया। कहिणेण वेहइ रिसी वक्कलचीरी। परिवड्डियो य आलिहिऊण दरिसिओ चित्तगारेहिं सो पसन्नचंदस्स। तेण सिणेहेण गणियादारियाओ रिसिरूविणीओ 'सडमयमोयय विविहफलेहिं ण लोभेह' त्ति पट्ठवियाओ। ताओ य ण फलेहिं महुरेहिं, महुरेहि य वयणेहिं, सुकुमार पीणुन्नयथणपीलणेहि य लोभेंति। सो कयसमवाओ गमणेण जावं उवगतो तावसभडग सठवेउ, ताव रुक्खाहिरूढेहिं चारपुरिसेहिं सन्ना दिन्ना 'रिसी आगतो' त्ति। ताओ दुतमवक्कताउ। सो तासिं पयवीहिमणुगच्छमाणो अन्नउ गतो। सो अडवीए परिब्भमतो रहगय पुरिस दहूण 'ताय! अभिवादयामि' त्ति भणतो रहिएण पुच्छिओ—कुमार! कत्थ गतव्व?। सो भणइ—पोयणपुर नाम आसमपय। तस्स वि पुरिसस्स तत्थेव गतव्व, तेण भणिय—समग वच्चामो। रहिणो भारिय 'तात' त्ति आलवइ। तीए भणिय—को इमो उवयारो?। रहिणा भणिय—सुदरि! इत्थिविरहिए नूण एस आसमपए वड्डिओ न याणइ विसेस, न से कुप्पियव्व। तुरगे य भणइ—किं इमे मिगा वाहिज्जति?। सारहिणा भणिय—कुमार! एए एयम्मि चेव कज्जे उवउज्जति, न इत्थ दोसो। तेण वि से मोदगा दिन्ना। सो भणइ—पोयणासमवासीहिं मे रिसिकुमारेहिं एयारिसाणि चेव फलाणि दत्तपुव्वाणि त्ति। वच्चताण य से इक्केण चोरेण सह जुज्झ जाय। रहिणा गाढप्पहारो कओ, सिक्खागुणपरितोसिओ भणइ—अत्थि विउल धण, त गिण्हसु सूर! त्ति। तेहिं तिहि वि जणेहिं रहो भरिओ।

कमेण पत्तो पोयणपुर नयर, मोल्ल गहाय (?) विसज्जिओ—'उडय मग्गसु' त्ति। सो भमतो गणियाघरे 'तात! अभिवादेमि, देहि इमेण मोल्लेण उडय' ति। गणियाए भणिओ—दिज्जइ, निवेसह त्ति। तीए य कासवओ सद्दाविओ। तओ अणिच्छतस्स कय नहपरिकम्म। अवणीयवक्कलो य वत्था ऽऽभरणभूसिओ गणियादारियाए पाणिं गिण्हाविओ। 'मा इम रिसिवेस अवणेहि' त्ति जपमाणो ताहिं भण्णइ—जे उडयत्थी इहमागच्छति तेसिं एरिसो उवयारो कीरति। तओ य गणियाओ उवगायमाणीओ वहू-वर चिट्ठति।

जो य कुमारोवेलोभणनिमित्त रिसिवेसेण जणो पेसितो सो आगतो कहेइ—कुमारो अडविमतिगतो, अम्हेहिं रिसिस्स भएण न तिण्णो सद्दावेउ। ततो राया विसण्णमाणसो भणति—'अहो! अकज्ज, न य पिउसमीवे जाओ, न इह, न नज्जइ किं पत्तो होहिइ?' त्ति चिंतापरो अच्छइ। सुणइ य मुयगसद्द, त च से सुइपहदूसण जाय। भणइ य—सए दुक्खिए को मन्ने सुहिओ गधव्वेण रमइ? त्ति। गणियाए य हिएण जणेण कहिय। सा आगया, पायवडिया राय पसन्नचद विन्नवेइ—देव! निमित्तिसदेसो मे—'जो तावसरूवी

१ घन्इ ली ३ ॥ २ फलेहिं महुरेहि वय को ३ उ ॥ ३ न अइगतो उ ॥ ४ ततो क ३ गो ३॥ ५ °णुसमगा° ली ३ विना ॥ ६ °वेह ली ३ ॥ ७ उडवय उ विना ॥ ८ तामो के उ ॥ ९ ली ३ उ० विनाऽन्यत्र—°रविलो° क मो ॥ १० मय° ली य ॥ ११ °रूवो क ३ गो उ ॥

* 'तीयार्थकमेतत् पदम् वल्कलचीरिणम्' इत्यर्थः ॥

तरुणो गिहमागच्छेज्जा ता तस्स संमागमेव[1] दारियं देज्जासि, सो उत्तमपुरिसो, तं ससिया विउलसोक्खभागिणी होहिइ' त्ति । सो जहा भणिओ नेमित्तिणा अज्ज मे गिहमागओ । तं च सदेस पमाणं करेतीए[2] दत्ता से मया दारिया, तन्निमित्तं उस्सवो, न[3] य णायं 'कुमारं(रो) पणट्ठं(ट्ठो)' । एत्थ मे अवराहं मरिसेह त्ति । रन्ना सदिट्ठा मणुस्सा जेहिं आसमे दिट्ठपुव्वो कुमारो, तेहि थ[4] गएहिं पच्चभिजाणिओ, निवेदितं च पिइं[5] । रन्ना परमपीइमुव्वहंतेण वहुसहिओ सगिहमुवणीओ । सरिसकुल-रूव-जुव्वणगुणाण य रायकन्नगाणं पाणिं गिण्हाविओ, कयरज्जसविभागो य जहासुहमभिरमइ ।

रहिओ चोरदत्तं[6] दव्वं विक्किणंतो रायपुरिसेहिं 'चोरो' त्ति गहिओ । वक्कलचीरिणा* मोइओ पसन्नचंदविदियं ति ।

सोमचंदो वि आसमे कुमारं अपस्समाणो सोगसागरावगाढो, पसन्नचंदपेसिएहिं नगरगयं वक्कलचीरिं निवेदिंतेहि कहवि[7] संठविओ, पुत्तमणुसरंतो अंधो जाओ । रिसीहिं साणुकंपेहिं कयफलसविभागो तत्थेव आसमे निवसति ।

गएसु य वारससु वासेसु कुमारो अद्धरत्ते पडिबुद्धो पियरं चिंतेउमारद्धो । 'किह मन्ने ताओ मया निग्घिणेण विरहिओ अच्छइ ?' त्ति पियदंसणसमूसुगो[8] पसन्नचंदसमीवं गंतूण पायवडिउ विन्नवेइ—देव ! विसज्जेहिं[9] मं, उक्कंठिओ हं तायस्स । तेण भणिओ—समगं वच्चामो, गया य आसमपयं, निवेइयं च रिसिणो 'पसन्नचंदो पणमइ' त्ति । चलणोवगओ अ णेण पाणिणा परामुट्ठो 'पुत्त ! निरामओ सि ?' त्ति । वक्कलचीरी पुण †अयथासिय चिरकालधरियं से बाहं मुयंतस्स उम्मिल्लाणि नयणाणि, पस्सइ य दो वि जणे परमतुट्ठो, पुच्छइ य सव्वकालकुसलं । वक्कलचीरी य कुमारो अइगतो उडयं, 'पस्सामि ताव तायस्स भंडयं अपेहिज्जमाणं[10] केरिसं जायं ?' ति । तं च उत्तरीयतेण[11] पडिलेहिउमारद्धो जई विव पायकेसरियाए[12] । 'कत्थ मण्णे मया एरिसं करणं कयपुव्वं ?' ति विहमणुसरंतस्स तयावरणखएण जायं जाईसरणं । सुमरति तं देव-माणुसभवे य सामन्नं पुराकयं, संभरिऊण वेरग्गमग्गमोइण्णो, ‡धम्मज्झाणविसयादीओ विसुद्धमाणपरिणामो[13] य बितियसुक्कज्झाणभूमिमइक्कंतो निट्ठवियमोहावरणविग्घो केवली जाओ, निग्गओ य । पकहिओ[14] य धम्मं जिणप्पणीयं पिउणो पसन्नचंदस्स य रण्णो । ते दो वि लद्धसम्मत्ता पणया सिरेहिं केव-

१ समागमे चेव कस० मोस० । समगमेव उ० ॥ २ करिंतीए क ३ ॥ ३ न याणं कु° उ० ॥ ४ य मणुएहिं प° क ३ ॥ ५ पिय उ० ॥ ६ °दत्तदव्वं डे० उ० विना ॥ ७ कसं० मोस० विनाऽन्यत्र—कट्ठे स° ली ३ । कहचि स° उ० ॥ ८ °मूसगो मोस० विना ॥ ९ °जेह ली ३ विना ॥ १० अणुपे° ख० विना ॥ ११ °रीयते° क ३ उ० ॥ १२ °ए । 'मया कस० मोस० उ० विना ॥ १३ °सुज्झमा° ली ३ उ० ॥ १४ °हिय ध° डे० उ० विना ॥

* प्रथमान्तमेतद् द्वितीयार्थकमिति "वल्कलचीरिणम्" इत्यर्थः ॥ † श्लिष्टा इत्यर्थः ॥
‡ धर्मध्यानविषयातीत इत्यर्थः ॥

लिग्गो 'सुट्ठु ते दरिसिओ मग्गो' त्ति । वक्कलचीरी पत्तेयबुद्धो गतो पियरं गहेऊणं महावीरवद्धमाणसामिणो पासं । पसन्नचंदो नियगपुरं ।

जिणो य भयवं सगणो विहरमाणो[1] पोयणपुरे मणोरमे उज्जाणे समोसरिओ । पसन्नचंदो वक्कलचीरिवयणजणियवेरग्गो परममणहरतित्थयरभासियामयवड्ढियउच्छाहो बालपुत्तं रज्जे ठविऊण पव्वइओ । अहिगयसुत्तत्थो तव-संजमभावियमती मगहापुरमागओ सह पिउणा सायरं वंदिओ आयावंतो—एवं निक्खंतो ॥

जाव य भगवं नारगामरगतीसु उक्कोसट्ठिईजोग्गयं झाणपवयं पसन्नचंदस्स धम्मेइ ताव य देवा तम्मि पएसे ओवइया । पुच्छिओ य अरहा सेणिएण रण्णा—किंनिमित्तं एस देवसंपाउ ? त्ति । सामिणा भणियं—पसन्नचंदस्स अणगारस्स णाणुप्पत्तीहरिसिया देवा पवेंयंति ॥

ततो पुच्छइ—एतं महाणुभावं केवलणाणं कत्थ गमे वोच्छिज्जिहिति ? ।

तं च समयं बंभिंदसमाणो विज्जुमाली देवो चउहिं देवीहिं सहितो वंदिउं भयवंतमुवागतो उज्जोवितो दसदिसाओ । सो दरिसिओ भगवया, 'एयम्मि वोच्छिज्जिहिं' त्ति ॥

राया पुणो वि पुच्छइ—कहं देवो केवली होहिति ?, मणुस्से तब्भवचरिमे केवलसंभवो तुब्भेहिं वण्णिओ विसुद्धचारित्ते । भयवया भणियं—एस देवो सत्तमे दिवसे चुओ मणुस्सविग्गहलाभी । तओ पुच्छति—चवणसमए देवा परिहीणजुतयो भवंति, एस पुण अभिभवइ तेयसा सूरे, तं कहमेयं ? । भयवया भणियं—एस संपइ परिहीणजुई, पुव्वं पुण अणंतगुणविसिट्ठा से तेयलेसा आसी । राया पुच्छति—कहं पुण एएण कयं पुव्वभवे जेण एरिसी से तेयसंपया ? । भयवं कहेइ—

जंबुसामिपुव्वभवकहाए भवदत्त भवदेवजम्मसंबंधो

इहेव जंबुद्दीवे सुग्गामो नाम गामो । अज्जवो नाम रट्ठउडो आसि । तस्स रेवती नाम भारिया । तेसिं पुत्ता भवदत्तो भवदेवो य । तत्थ जेट्ठो जोव्वणमुदए सुट्ठियस्स अणगारस्स समीवे पव्वइओ, गुरुसमीवे विहरइ ।

एगेण साहुणा आयरिया विण्णविया—णायवसहिं गच्छिउमिच्छे तुब्भेहिं अब्भणुण्णाओ । तत्थ मे कणीयसो भाया मयि अईव सिणेहसंबद्धो, दट्ठूण पव्वयहि त्ति । तेहिं विसज्जिओ बहुस्सुयसाहुसहाओ । दट्ठूण नायओ पडिनियत्तो गुरूणं आलोएइ—तस्स दारसंगहं काउकामा अम्मापियरो, लद्धा य से दारिया, तओ न पव्वइओ । भवदत्तेण भणियं—रे कहं भाउगो बरकोडगे वि अइमाणो भाउगं दट्ठूण चिरस्स पच्छओ न लग्गो ? त्ति । इयरेण साहुणा भणियं—दच्छामि तुब्भ (ग्रन्थाग्रम्—५००) भाउगं पव्वयंतं । भवदत्तेण भणियं—जइ खमासमणा तओ विहरंति तओ भाउगं मे वच्छिह पव्वयंतं ।

१ °णं मइ° के० उ० विना ॥ २ °णो गणो के० उ० विना ॥ ३ °वसम्बरयो क ३ गो ३ ॥ ४ °बगय रि के० उ० ॥ ५ °जम्बुद्दए की ३ । °णसुरए कस० उ० ॥ ६ °मसो मयि के० उ० कसं० विना ॥

* मकारोऽऽगमिकः ॥

विहरंता आयरिया य मगहाजणवयं गया, विन्नविया भवदत्तेणं—भयवं[1] नायओ दट्ठुमिच्छामि त्ति । ससहाओ तेहिं विसज्जिओ। भवदेवस्स य तं समयं नागदत्तस्स दुहियाए वासुगीए अत्तिगाए नाइलाए सह विवाहो[2] वत्तो । भवदत्तो य नायसमीवं गओ। परितुट्ठा नायओ भवदत्तागमेण[3] । तेण य कुसलं पुच्छिया, आपुच्छिया य 'वच्चामि, तुब्भे आउल' त्ति । निबंधे कए पडिलाभिओ विउलेणं भत्तपाणेणं । निवेइयं च भवदेवस्स जेट्ठस्स भाउणो आगमणं । सो य सहिसहियं वहुं पसाहेइ । गुरुआगमणं सोऊण च ससंभममब्भुट्ठिओ सहीहिं भणिओ—न ते अद्धपसाहिय वधुं मोत्तूण जुत्तं गंतुं । सो भणति—वालिया! गुरुपणिवायं काऊण आगयमेव ममं दच्छिहह त्ति । सो निग्गओ भवणातो, वंदिओ अ णेण जेट्ठो भाया । तेण से[4] घियभरियं भायणं हत्थे दिन्नं । पत्थिया साहवो । सो[5] णे अणुयाइ पत्तहत्थगतो । पढमं इत्थिजणो नियत्तो, पच्छा पुरिसा थोवंतरं गंतूण, 'साहू सावज्जं वयणं न भणई[6]' त्ति नियत्तइ । भवदेवो उण 'अविसज्जिओ कहं नियत्तामि?' इति उवायपुव्वं दंसेइ से वप्पिण-पोक्खरणि-वणसंडे नियए पैराए[7] य । सो वि भणइ 'सुमरामि, जाणामि' त्ति गतो गामसीमंतं, आसन्नो य गामो । ण भणई ण भवदत्तो 'नियत्तसु' त्ति । एएण कमेण वच्चमाणो पत्तो गुरुसमीवं । दिट्ठो य वरनेवत्थिओ । खुड्डेहिं भणियं—जेट्ठज्जेहिं जहा भणियं तं कयं । आयरिएहिं पुच्छियं—किं इमो आगओ तरुणो? । भवदत्तेण भणियं—'पव्वइउं[8]' ति । गुरूहिं भणिओ—एवं? 'मा भाउगस्स ओहावणा होउ[9]' त्ति तेण 'एवं' ति पडिसुयं । पव्वाविओ य साहुसंघाडएण सह विसज्जिओ । आगतो य सयणो, 'कहिं गतो?' त्ति पुच्छिएण भवदत्तेण भणियं—[10]सो पत्तमित्तो चेव नियत्तो । ते एवं वुत्ता 'धुवमन्नेण मग्गेण गओ होहिति' त्ति सिग्घं नियत्ता । भवदेवो अकामयो[11] वंतवं (वंभवं) चरइ भज्जं हियएण परिवहतो । बहुणा य कालेण भवदत्तो कयभत्तपरिच्चाओ कालगतो समाहीए सक्कसमाणो देवो जाओ ।

इयरो वि 'सा मम भज्जा, अहं पि तीसे भत्ता पिओ, वच्चामि से वट्टमाणिं वोढुं[12]' ति थेरे अणाउच्छिय गओ । सुग्गामवहिया य आययणं सवरियदुवारं, तस्साऽऽसन्ने 'वीसमामि' त्ति सठितो[13] । तत्थ य एगा इत्थिया गंध-मल्लं गहाय एगाए माहणीए सह आगया । तीए 'साहु' त्ति वंदितो । तेण पुच्छिया—साविए! तुब्भमवस्स जाणिहिह इह वसतीओ, जीवइ अज्जवरट्ठउडो, रेवई वा? । तीए भणियं—तेसिं[14] बहू[15] कालो कालगयाणं । ततो विमणो जातो पुणो पुच्छइ—भवदेवस्स वहू नाइला जीवइ[16]? त्ति । तीए चिंतियं—

---

१ °वयव गया ली ३ ॥ २ °हो पारद्धो ली ३ ॥ ३ °गमणे डे० । °वासे उ० ॥ ४ कस० सस० विनाऽन्यत्र—सघियमरिय मो० । समक्खमरिय उ० । से मरियली ३ गो ३ ॥ ५ से णे क ३ गो ३ डे० ॥ ६ °इ विसि° गो ३ । °इ नि° ली ३ । °इ, जइ नि° उ० ॥ ७ कस० विनाऽन्यत्र—परायए य उ० । परा य ली ३ मो० स० गो ३ ॥ ८ °इ इण भव° क ३ ॥ ९ होइ त्ति उ० विना ॥ १० सोम! पत्तमे° ली ३ ॥ ११ °यं व्रतं उ० ॥ १२ ति वो थेरे ली ३ ॥ १३ °ठितो ली ३ ॥ १४ तीसे ब° उ० विना ॥ १५ बहुका° ली ३ उ० ॥ १६ °वत्ति ली ३ ॥

होज्ज एसो भवदेवो, पुच्छामि ताव णं। तओ भणति—तुब्भे भवदेवं कओ जाणह?, किमत्थं वा इहं आगया? । सो भणइ—अहं अज्जवपुत्तो कणिट्ठो, घघुमणापुच्छिय जेट्ठस्स चित्ताणुवत्तीए पव्वइओ। भाउगम्मि उवरए 'मा अणभिजाओ होहं' ति त दट्ठुमागतो। तीए भणियं—अहं सा नाइला, तुब्भेहिं पुण बहुं कालं तवो चिण्णो, तं दट्ठुं जमेत्थ इहमागया, मम वा केरिसं बहुत्तणं इमेण कालेणं। सुणह इदं—तुब्भेसु पव्वइएसु साहुणो साहुणीओ य गुरुजणेण पूइज्जमाणाइ अयंति, संगिहे वसंति। तेहिं कयाइ कहियं अक्खाणयं—

पमत्तयाए लद्धमहिसजम्मणो माहणदारयस्स कहा

एगो किर माहणो उवरयभज्जो डहरगं दारगं गहेऊण निग्गओ गेहाओ, सुद्धमोक्खमग्गमन्नेसमाणो साहुसमीवे उवलद्धसब्भावो पव्वइओ। सो पुण दारगो सीयभोअणं विरसपाणग-अणुवाहण(वाणह)-कक्खडसेज्ज-असिणाणाइसु सीयमाणो सतेण जयणाए किंचि कालं वड्ढाविओ। अन्नया भणइ—वचामि खतं[1], अगारवासं वसामि त्ति। तेण परिचत्तो, 'अलं मे तुमे निद्धम्मेण'। सो गतो सहवासं, तत्थ पव्वभियोणियाओ[2], उवस्सिओ य एगस्स माहणस्स ठिओ घरे। केणय कालेण य से दारिया दत्ता, कुणइ कम्मं भोगपिवासितो। विवाहकाले य चोरेहिं मिहुणगं चेव वहियं। सो भोगपिवासिओ अट्टज्झाणविसए वट्टमाणो कालगतो महिसो जाओ।

सो वि पिया से कयदेहघातो गतो देवलोगं। तेण पलोइओ पुत्तसिणेहेण महिसो जाओ। सोयरियरूवं च काऊण कीओ णेण गोवहत्थाओ। तओ लउडेण हणमाणा णिंति णं सोयरिया[3]। एतरूवं च काऊण देवो दसेइ से पुरओ अप्पाणं। तं च पस्समाणस्स चिंता जाया 'कत्थ मन्ने एरिसं रूवं दिट्ठपुव्वं?' ति, तदावरणिज्जखओवसमेण जाइस्सरणं समुप्पन्नं। तओ 'तत[4] परित्तायसु ममं' ति रवति। सतेण भणिया समतिवियप्पिया सोयरिया— एस मे सुहगो, सोयरिका[5] मा णं पीडेह। तेहिं भणिओ—एस तुज्झ न सुणइ, अवसरसु। जाहे णेण जाणियं 'पडिवज्जइ मग्गं' ति ताहे अ भत्थिएहिं मुक्को। अणुसासिओ देवेण। दिट्ठभओ पडिवन्नो वयाणि। कयभत्तपच्चक्खाणो सोहम्मे कप्पे देवो जाओ॥

पिउणा नित्थारिओ तिरियदुग्गईओ। तुज्झ पुण जेट्ठो भाया सुरलोगं गतो, तुज्झ साहुरूवे दट्ठूण न पुण पडिबोहणे चित्तं काहिइ? । तुब्भे य पमत्ता अणियते जीविए कालं काऊणं मा संसारं भमिहह, नियत्तह गुरुसमीवं॥

एयम्मि देसयाले तीए माहणीए दारगो पायसं भुजिऊण आगतो भणइ—अम्मो! आणेह कोलालं जाव पायसं वमामि, तओ पुणो भुजीहं अइवमिट्ठो, पुणो दक्खिणाहेउं अन्नत्थ भुजामि। तीए भणियं—पुत्त! वंतं न भुजइ, पुणो अलं ते दक्खिणाए, वच्छ! अच्छसु सुहं ति।

१ से गि° क्री ३ ॥ २ °याणिओ क्री ३ ॥ ३ °इयरिका° ली ३ उ ॥ ४ °तेहिं ह° उ ॥ ५ °र्ण। संतप्पमा° क्री ३। °र्ण। तस्स पस्समा° उ ॥ ६ °हणगार° संमे उ विना ॥

तं पि से वयणं सोऊण बुद्धी जाया—सुट्ठु भणइ माहणी 'वंतासी दुगुंछिओ होहिइ' त्ति । तओ भणइ नायलं[1]—वच्चामि गुरुसयासं अणुसासिओ तुमए, काहं परलोगहियं, पस्सामि ताव सयणं ति । तीए भणिओ—किं सयणेणं मे दिट्ठेणं वाघायकरेणं? , वच्चह[2], सकज्जे निच्छिओ होहि । अहं पि साहुणिसमीवे पवइस्सं ति । तं च वयणं पमाणं कुणंतो वंदिऊण जिणबिंबाणि पडिनियत्तो । गुरुसगासे आलोइयपडिक्कंतो निव्वियारो सामण्णमणुचरेऊण कालगतो सक्कस्स देवरण्णो सामाणिओ जातो ॥

सागरदत्त-सिवकुमारभवसंबंधो

भवदत्तो ठिइक्खएणं चुओ पोक्खलावइविजए पोंडरगिणीए नयरीए वइरदत्तस्स चक्कवट्टिणो जसोहराए देवीए गब्भं[3] उववन्नो । तीए य समुद्दमज्जणडोहले समुप्पन्ने । ततो राया महया इड्ढीए सीयं महानइं समुद्दभूयं[4] गतो । तत्थ य जसोहरा देवी मज्जिआ विणीयडोहला तत्थेव पुण्णे पसवणसमए पसूया कुमारं पसत्थलक्खणोववेयं । तस्स य डोहलगुणसूइयं कयं नामं 'सागरदत्तो' त्ति । सो सुहेण वड्ढिओ गहियकलाकलावो[5] य पत्तजोव्वणो तरुणजुवइविंदसहितो वणगओ इव करेणुपरिकिन्नो अभिरमइ ।

पासायगओ य कयाइ पस्सइ मेरुसरिसप्पमाणं वलाहगं नयणमणोहरं । जइ कहिज्जइ रिसीहिं मेरू तारिसो इमो जलहरो । जइ य एरिसो मेरू तो सच्चं देवरमणो । सो य तेण सपरियणेण दीसमाणो जलबुब्बुओ इव खणेणं विलीणो । तं च उवसतो चिंतेइ—'एरिसी नाम सोहा नयणासयभूया खणेण विणट्ठा, मणुस्साणं पि नूणं एरिसीओ रिद्धीओ विणासपज्जवसाणाओ । जो वि इमो सरीरसमुदाओ सो वि न नज्जइ, कम्मिइ समए पडिहिइ । तं जाव देहो निरुवद्दवो ताव परलोयहिअं कायव्वं' निच्छियमती अम्मा-पियरमापुच्छइ । तेहिं कहिंचि विसज्जिओ अणेगरायसुयसयपरिवारो अमयसागरस्स अणगारस्स[6] समीवे पवइतो, गतो य सुओयहिस्स[7] पारं । विसुज्झमाणचरित्तस्स य से ओहिनाणं समुप्पण्णं ।

भवदेवो वि देवलोयाओ चइऊण तत्थ विजए वीयसोगाए नयरीए पउमरहस्स रण्णो वणमालाए देवीए पुत्तो जाओ सिवो नाम । कमेण परिवड्ढिओ, जोव्वणत्थो य रायसुयाहिं सरिसजोव्वण-लायन्नाहिं सहिओ पासायगओ अभिरमइ ।

सागरदत्तो य अणगारो गणपरिवुडो विहरमाणो वीयसोगाए नयरीए उज्जाणे समोसरिओ । मासखवणपारणए य कामसमिद्धेण सत्थवाहेण गिहागओ पडिलाहिओ । तओ तस्स दव्व-भाव-पडिगाहगसुद्धिनिमित्तं वसुहारा पडिया । सुयं च सिवकुमारेण । सो सायरं वंदिउं निग्गओ । सागरदत्तो य चउद्दसपुव्वी सिवकुमारस्स सपरिवारस्स केवलिपणीयं धम्मं आयक्खइ । ससयतिमिराणि य जणस्स जिणो विव विसोहेइ ।

कहंतरे य सिवकुमारो भणइ—भयवं! तुब्भं मे पस्समाणस्स सिणेहो वड्ढइ, हिय-

१ नाइलं उ० ॥ २ वच्चेह ली ३ ॥ ३ गब्भे उ० ॥ ४ °भूइ उ० विना ॥ ५ °कलाविहूणो य उ० ॥ ६ अणगारस्स इति कस० विना न ॥ ७ सुयउय° क ३ ॥

थस्स परा निवुई, त किं मन्ने अत्थि कोइ पुव्वभविओ सयणसंबंधो तुभ मम य होज्जा ? । ततो सागरदत्तेण ओहिणा आभोएऊण भणिओ—सिवा ! इओ तइयभवे जंबुद्दीव॰ भरहे मगहाजणवए तुम सि मे भाया कणिट्ठो आसी, पाणेहि वि पिययरो । मया वि सिणेहेण मदसड्ढो वि होऊण पव्वाविओ । देवलोगे वि णे अणंतरभवे तहेव पीई आसी । इयाणिं पुण वीयरागयाए न मे विसेसो सयणे परजणे वा ।

त च सोऊण सिवकुमारो भणइ—'भयवं ! एवमेयं, जहा भणह तुब्भे अवितहवा॰ इणो । रोयइ मे जिणवयणं, भीओ म्हि संसरियव्वस्स, तं जाव ताव अम्मा पियरो आ पुच्छामि, तओ तुब्भ पायमूले हियसप्पणो करिस्सं' ति वंदिऊण सगिहमागतो, अम्मा-पियरो आपुच्छइ—सुवो मे धम्मो सागरदत्तस्स अणगारस्स समीवे । विसज्जेह मं, पव्वइस्सं । तेहिं भणिओ—पुत्त ! किह तुमं अम्हे विसज्जेहामो, तुमायत्ता मे (ने) पाणा, मा मे (ने) परिच्चयसु । तओ सो तेहिं निरुंभमाणो कयनिच्छयमणो मणसा परिचत्तगिहवासो 'सीसो हं सागरदत्तस्स अणगारस्स' त्ति सव्वसावज्जजोगविरओ मोणेण ठिओ । पसत्थ ज्झाणो बहुप्पयारं छंदिओ भोयणेण । जाहे न कस्सइ वयणं करेति ताहे सविग्गेण पउम रहेण रण्णा सीलयणो दढधम्मो इब्भपुत्तो समणोवासओ सद्दाविऊण (भयाम—६०७) भणिओ—पुत्त ! सिवकुमारेण पव्वज्जाभिलासिणा अम्हेहिं अविसज्जिएण मोणं पडिवन्नं, सपयं भोत्तुं न इच्छति, तं जहा जाणसि तहा णं भोयावेहि, एवं करेतेण 'अम्ह जीवियं दिन्नं' मणे ठविऊण पत्तसुविहुभूमिभागो असकियं ववसप्पसु णं ति ।

ततो सो पणओ 'सामि ! करिस्सं जत्त' ति उवगतो सिवकुमारसमीवं । निसीहियं काऊण, इरियापडिक्कंतो 'थारसावत्त' ति किइकम्मं काऊण, पमज्जिऊण 'अणुजाणह मे' त्ति आसीणो । सिवकुमारेण चिंतियं—एस इब्भपुत्तो अगारी साहूण विणयं पउंजिऊण ठिओ, पुच्छामि ताव णं । तेण भणिओ—इब्भपुत्त ! ओ मया गुरुणो सागरदत्तस्स समीवे साहूहिं विणओ पउज्जमाणो दिट्ठो सो तुमे पउत्तो, त तुमं कहेह, किह न विरुज्झति ? । दढ धम्मेण भणिओ—कुमार ! आरहए पवयणे विणओ समणाण सावयाण च सामन्नो । 'जिण वयणं सच्चं' ति जा दिट्ठी सा वि साधारणा । समणा पुण महव्वयधरा । अणुव्वइणो सावगा, जीवाऽजीवाहिगम बंध-मोक्खविहाण च आगमे त्ति । सुए वि साहवो सम्मत्तसुयसागर पारगा । तवे दुवालसविहे के विसेस ? ति । तं अहं सावगो तुब्भं समीवमागतो, कहेह किंनिमित्तं भोत्तुं न इच्छह ? त्ति । सो भणइ—सावग ! मम अम्मापियरो न विसज्जंति निक्खमिउमणं, ततो मया परिचत्तो भावओ गिहावासो, जाव जीवामि ताव पव्वइओ हं । तेण भणिओ—कुमार ! जइ तुब्भे मुक्कगिहावासा वा सुट्ठु, कयकज्जस्स अजुत्ता निराहारया,

१ सिव शां॰ मो॰ स॰ ज॰ ॥ २ भीओ हिं गिह शां॰ १ ॥ ३ °च्छामो कसं॰ विना ॥ ४ °परमा° क ३ उ॰ विना ॥ ५ °रुज्झमा° शां॰ च॰ दं॰ ॥ ६ जयकसं॰ संमं॰ उ॰ ॥ ७ साहुवि° ध॰ ॥ ८ पउंज° शां॰ ३ विना ॥ ९ °ज्झते से ? । दुद° धी ३ ॥ १० °व्वयणा सा' क ३ ॥ ११ आवमो हवि कसं॰ उ॰ विना ज ॥

साहगस्स पुण सरीरं धम्मस्स[1] साहण[2]हेतुं, तं आहारेण विणा विणसेज्जा, तेण अणवज्जो आहारो जइजणस्स अविरुद्धो, तं तुब्भे[3] फासु[4]एसणिज्जं जवणमेत्तं[5] भुंजमाणा निव्वाणफल-साहगा भविस्सह। ततो भणति—इब्भपुत्त! कहमहं इहगए फासुएसणिज्जं आहारिस्सामि? । दढधम्मेण भणिओ—कुमार! तुब्भे साहुभूया, अहं अज्जप्पभिइ तुब्भं सीसो इह अणवज्जेणं पाण-भोयणेणं वेयावच्चं करिस्सं, कुणह[6] मे विसग्गं । तओ सिवकुमारेण भणिओ—तुमं सि जिणवयणविसारतो कप्पा-ऽकप्पविहिण्णू, तं जइ 'मया अवस्स[7]भोत्तव्वं' मन्नसी तो छट्ठस्स भत्तस्स आयंबिलं पारणं होउ । 'तह' त्ति दढधम्मेण पडिसुयं । सो य से बंध-मोक्खकहं कहेइ । पारणगकाले य जहाभणियं भत्त-पाणमुवणेति ।

तस्सेवं [सिवकुमारस्स] अंतेउरमज्झगयस्स सारयगगणदेसस्सेव विमलसहावस्स अपरिवडियधम्मियववसायस्स दुवालस वासाणि वि[8]यक्कंताणि । तओ समाहीए कयदेहप-रिच्चाओ बंभलोगे[9] कप्पे इंदसमाणो देवो जाओ । जारिसी य बंभस्स देवरण्णो जुई तारिसी तस्स वि आसि । एस दससागरोवम[10]परिक्खएण चुओ तो सत्तमे दिवसे उसभ-दत्तस्स इब्भस्स धारणीए[11] पुत्तो भविस्सति । एएण तवतेएण जुईसंपदा एरिसि त्ति ॥

एवं[12] च भयवओ सोऊण वयणं अणाढिओ जंबुदीवाहिवई देवो परमपरितोसविय-सियहिययकमलो उट्ठिओ, तिवई[13] वंदिऊण, अप्फोडेऊण, महुरेण सद्देण भणति 'अहो! मम कुलं उत्तमं' ति ॥

तस्स य कुलपसंसावयणं सोऊण सेणिओ राया पुच्छइ—भयवं! एस देवो[14] सकुलपसंसणं कुणइ केण कारणेणं? ति । भगवया भणियं, सुणाहि—

अणाढियदेवस्सुप्पत्ती

इहेव नयरे गुत्तिमई नाम इब्भपुत्तो[15] आसि । तस्स दुवे पुत्ता, उसभदत्तो जिण-दासो य । तत्थ जेट्ठो सीलवं, कणिट्ठो पुण जिणदासो मज्ज-वेस-जूयप्पसंगी । उसभद-त्तेण सयणविदितं काऊण परिच्चत्तो 'अभाया अज्जप्पभिइं मे' त्ति। सो अन्नया बलवइणा जूयकारेण सह रममाणो आयं[16] विसंवायंतेण आउहेण आहओ। उसभदत्तो सयणेण[17]ऽणु-णीतो—जिणदासं वसणदोसदूसियं परित्तायसु, तओ जसभागी भविस्ससु त्ति । सो गतो तस्स समीवं। तेण य तदवत्थेण भणितो—अविणीयस्स[18] मे अज्ज! खमसु, परलोगपत्थियस्स उवएससहातो होहि त्ति । उसभदत्तेण आसासिओ—जिणदास! मा विसायं वच्च, अहं तह जत्तं करिस्स जहा जीवसि।सो भणइ[19]—'न मे जीवियलोभो, भत्तं पच्चक्खाइस्सं' ति कए

१ °म्मस्साह° उ २ ॥ २ गो ३ उ २ विनाऽन्यत्र—°णाहेत्तु त क ३। °णत्थं त ली ३ ॥ ३ तुज्झे ली ३ ॥ ४ °सुय ए° क ३ ॥ ५ उ २ विनाऽन्यत्र—°जमित्तं भुंजह, निव्वा° ली० य० ॥ ६ कुण मे कस० उ० ॥ ७ °स्सं भोत्तव्व ति मन्नेसी उ २ ॥ ८ विइक्क° उ २ ॥ ९ °वाक° ली ३ ॥ १० °भकालपरि° उ २ ॥ ११ °ए भारियाए पु° उ २ ॥ १२ एयं उ २ ॥ १३ °वतिं छिंदिऊण कस० उ २ ॥ १४ °वो कुल° उ २ ॥ १५ इब्भो ओ° उ २ ॥ १६ जाय क ३ ॥ १७ °णऽणु° शा० ॥ १८ °यय मे ली ३ ॥ १९ °इ अज्ज! न मे उ २ ॥

‡ कोष्ठान्तर्गतोऽयं पाठ 'टिप्पनकमन्त प्रविष्टमाभाति' ॥

निवधे मोसहारंभपरिग्गहो विहीए आराहियपइन्नो कालं काऊण जंबुद्दीवाहिवई जातो। 'जेट्ठस्स मे भाउगस्स चरमकेवली पुत्तो भविस्सइ'त्ति बुद्धीए कुलप्पसंसणं काऊण गतो त्ति ॥

विज्जुमालीदेवे य गते देवीओ पसन्नचंदं केवलिं पुच्छंति—भयवं! अम्हं इओ विज्जुमालिणा देवेण विउत्ताणं होज्ज पुणो समागमो? त्ति । तेण भणियाओ—'तुब्भे इहेव नयरे वेसमण-धणद-कुबेर-सागरदत्ताणं इब्भाणं धूयाओ भविस्सह, तत्थ भे एतेण य देवेण मणुस्सभूएण सह समागमो भविस्सइ, सह तेण य संजममणुपालेऊण गेविज्जेसु देवा भविस्सह'त्ति वागरिए वंदिऊण गयाओ ॥

वसुदेवचरियउप्पत्ती

तवविभूइं च से सेणिओ राया सोऊण पुच्छइ—भयवं! केवइया जीवा तवं इहं काऊण तब्भव एव फलमणुभविंसु?, परभवे वा केवइया सुकयफलं? ति । भयवया भणिओ—'इहलोगफलतवस्सिणो धम्मिल्लाइणो अणेगेऽइक्कंता, परलोगे सुर-मणुयसुहं तवमोल्लकीय ओसप्पिणिकाले वसुदेवाइ' त्ति भणिए समुप्पन्नकोऊहल्लो पणतो पुच्छति—कहं भयवं! वसुदेवेण सम्मत्तं लद्धं? कहं वा तवो चिन्नो? कहं तस्स फलं सुर-नरेसु पत्तं? ति कहेह । ततो भगवया सेणियस्स रण्णो सवभुमग्गेण वसुदेवचरियं कहियं ।

तं च पयाणुसारीहिं अणगारेहिं अभयाईहि य धारियं। ततो धम्म-अत्थ-काम मोक्खे उवदसयतेहिं कहियं जहाधरियं अज्ज वि धरइ त्ति ॥



१ °पयचो (वो) कस उ २ विना ॥ २ वि तुहीए उ २ ॥ ३ °स्स ति प° मो विना ॥ ४ °हादी अणेगा अइ° उ २ ॥ ५ मुप उ २ ॥ ६ °क्खेहिं उवदसेय तेहिं उ २ विना ॥ ७ °त्ती सम्मत्ता उ २॥



धम्मिल्लहिंडी।

ततो भयवं सेणियस्स रन्नो सवण्णुम[1]ग्गेण धम्मि[*]ल्लच[2]रियं कहेउमारद्धो। तं ताव तुमं पि अवहिओ मुहुत्तागं निसामेहि त्ति—

धम्मिल्लचरियं

अत्थि कुसग्गपुरं नाम नयरं वहुदिवसवन्नणिज्जं। तत्थ य जियस[3]त्तू नाम राया। तस्स य देवी धारिणी नाम। तत्थ य नयरे[4] अन्नकुडंविजणमणोरहपत्थणिज्ज[5]वित्थिण्णविहवसारो, धण-सील-गुण-सुएहि य सकम्मवित्थारियकित्ती, सुरिंदसारसरिसरूवविहवो सुरिंददत्तो नाम सत्थवाहो। तस्स य भज्जा कुलाणुरूवसरिसी धम्म-सीलसपण्णा नामओ सुभद्दा नाम। तीसे य किल उउकालविसेसेण गब्भो सभूओ। कमेण य से दोहलो जातो—सव्वभूतेसु अभयप्पयाणेणं, धम्मियज[6]णेण वच्छल्लया, दीणाणुकंपया वहुतरो य दाणपसगो।

ततो सो नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्ठमाण य राइंदियाणं वितीक्कंताणं जातो। णामधेयं च से कयं, जं से मा[7]ऊए धम्मे दोहलो जातो तेण होउ 'धम्मिल्लो' त्ति। ततो पंचधावीपरिग्गहिओ सुहंसुहेणं[8] वड्ढिओ। कालेण य लेहाइयासु गणियप्पहाणासु सउणरुयपज्जवसाणासु बावत्तरीसु कलासु अभिगमो णेण कतो।

उवारुहंतनवजोव्वणस्स य से अम्मापिऊ[9]हिं कुल-सीलसरिसाणुरूवा तम्मि चेव नयरे धणवसुस्स सत्थवाहस्स भज्जाए[10] धणदत्ताए धूया नियय[11]मेहुणया जसमती नाम दारिया सिरी विव पउमरहिया, सिरिसमाणवेसा। तीसे सह कल्लाणं से वत्तं। ततो माणुस्सयभोगरइपरम्मुहो सत्थ[12]गहणरत्तहियओ कमेणं कालं गमेइ।

ततो अन्नया कयाइ सस्सू से धूयदंसणत्थं सुयाघरमागया। सम्माणिया य घरसामिणा विहवाणुरूवेणं संबंधसरिसेणं उवयारेण। अइगया य धूयं दट्ठू[13]ण, पुच्छिया अ णाए सरीरादिकुसलं। तीए वि प[14]गतिविणीयलज्जोणयमुहीए लोगधम्मउवभोगवज्जं सव्वं जहाभूयं कहियं। तं जहा—

१ °मएण ली ३ ॥ २ °चलिय शा० ॥ ३ °त्तू रा° उ २ विना ॥ ४ °रे इब्भकुडुं° ली ३ ॥ ५ °ज्जविह° उ २ विना ॥ ६ °जणे व° स० उ २ ॥ ७ माऊये शा० ॥ ८ °ण संव° उ २ ॥ ९ °ऊण कुल° उ २ ॥ १० °जाए धूया उ २ विना ॥ ११ नियकम्मेघुणया शा० ॥ १२ °त्थाराहण° उ २ विना ॥ १३ °ट्ठु, पु° उ २ ॥ १४ पगतिवि° उ २ ॥

* सर्वेष्वादर्शेषु क्वचिद् "धम्मिल्ल" क्वचिच्च "धम्मिल" इति पाठो दृश्यते। अस्माभिस्तु सर्वत्र प्रसिद्ध "धम्मिल्ल" इत्येव पाठ उपन्यस्त ॥

निबधे वोसट्टारमपरिग्गहो विहीए आराहियपइन्नो काल काऊण जबुद्दीवाहिवई जातो। 'जेट्ठस्स मे भाउगस्स चरमकेवली पुत्तो भविस्सइ'त्ति बुद्धीए कुलप्पससण काऊण गतो त्ति ॥

विज्जुमालीदेवे य गते देवीओ पसन्नचद केवलिं पुच्छति—भयव! अम्ह इओ विज्जुमालिणा देवेण विउत्ताण होज्ज पुणो समागमो? त्ति । तेण भणियाओ—'तुब्भे इहेव नयरे वेसमण धणद्-कुबेर-सागरदत्ताण इब्भाण धूयाओ भविस्सह, तत्थ भे एतेण य देवेण मणुस्सभूएण सह समागमो भविस्सइ, सह तेण य सजममणुपालेऊण गेविज्जेसु देवा भविस्सह'त्ति वागरिए वदिऊण गयाओ ॥

वसुदेवचरियउप्पत्ती

तवविभूइ च से सेणिओ राया सोऊण पुच्छइ—भयव! केवइया जीवा तव इह काऊण त भव एव फलमणुभविंस?, परभवे वा केवइया सुकयफल? ति । भयवया भणिओ—'इहलोगफलतवस्सिणो धम्मिल्लाइणो अणेगेऽइक्कता, परलोगे सुर-मणुयसुह तवमोल्लकीय ओसप्पिणिकाले वसुदेवाइ' त्ति भणिए समुप्पन्नकोऊहलो पणतो पुच्छति—कह भयव! वसुदेवेण सम्मत्त लद्ध? कह वा तवो चिण्णो? कह तस्स फल सुर-नरेसु पत्त? ति कहेह । ततो भगवया सेणियस्स रण्णो सवक्षमग्गेण वसुदेवचरिय कहिय ।

त च पयाणुसारीहिं अणगारेहिं अभयाईहि य धारिय। तत्तो धम्म-अत्थ-काम मोक्खे उवदसयतेहिं कहिय जहाधरिय अज्ज वि घरइ त्ति ॥



१ °भयवतो (वो) कस उ २ विना ॥ २ त्ति बुद्धीए उ २ ॥ ३ °स्स ति प° शां विना ॥ ४ °हादी अणेगा अइ° उ २ ॥ ५ सुच उ २ ॥ ६ °यतेहिं उवदसिय तेहिं उ २ विना ॥ ७ °ती सम्मत्ता उ २॥

पाँसि केंपि चउरसियं रेवाय(प)यपुण्णिय, सेडिय च गेण्हेप्पि ससिप्पभवण्णिय।
मइ सुय पि एक्कल्लिय सयणि निवण्णिय, सव्वरत्ति घोसेइ समाणसवण्णिय ॥

[3]तो सा एय सोऊण आसुरुत्ता रुट्ठा कुविया चडिक्किया मिसिमिसेमाणी इत्थीसहाव वच्छल्लयाए पुत्तिसिणेहेण य माऊए से सगास गतूण सव्व साहिउ पयत्ता। जहाभूयत्थ च सोऊण से माया आकपियसरीर हियया माहसुपप्पुयच्छी णिरुत्तरा तुण्हिक्का ठिया। पच्छा य णाए ससवह पत्तियाविया। ततो सा त धूय आसासिऊण अप्पणा नियघर गया।

माया य से पइणो मूल गतूण सव्व जहाभूय परिकहेइ। तेग य भणिया—अजाणुए[5]! जाव बालो विज्जासु य अणुरत्तबुद्धी णणु ताव ते हरिसाइयव्व, किं विसाय वच्चसि? । अहिणवसिक्खियया विज्जा अगुणिज्जती णेहरहिओ विव पईवो विणास वच्चइ, त मा अयाणुगा होही। जाव बालो ताव विज्जाउ गुणेउ। तीए पुत्तवच्छलाए भणिय—किं वा अइबहुएण पढिएण?, माणुस्सयसुह अणुभवउ। 'उवभोगरइवियक्खणो होउ' त्ति चिंतेऊण पइणा वारिज्जतीए वि ललियगोट्ठीए पवेसिओ। सो य अम्मा पिउसलावो धाईते से सव्वो कहिओ। तओ सो गोट्ठियजणसहिओ[8] उज्जाण-काणण-सभा-वणतरेसु विन्नाण-नाणाइसएसु अण्णोण्णमतिसयतो बहु काल गमेइ।

वसततिलयागणियापसगो

इओ य सो सत्तुदमणो राया केणइ कालेण वसतसेणागणियाधूयाए वसततिलयाए पढम नट्टविहिदसण पेच्छिउकामो गोट्ठियजणमहत्तरए भणइ—वसततिलयाए नट्टविहिद सणविणिच्छय दट्ठुकामो, पासणिए देह त्ति। तेहि य धम्मिल्लो नट्टपासणितो दिन्नो। अन्ने य रण्णो आयरिया(?)। ततो सहोवविट्ठेसु राया उवविट्ठो। ततो तम्मि मणोरहदसणीए नट्टपसत्थे भूमिभाए केयलायण्णसिंगाराभरणविलासावेसमहुरभणियणट्टपसत्थ, सत्थो वविट्ठपयनिक्खेव, वण्णपरियट्टय हत्थसुहासुह, विब्बोय-णयणसचारणजुत्त, पसत्थनाइ अबब्भुअ, हत्थकरणसचारणविहियविहत्त, तती-सर-ताल-गीयसद्दसम्मीस सा पणच्चिया वसत तिलया। तहिं च दिवसमाणे नट्टावसाणे णच्चिए सव्वपासणिएहिं 'अहो!!! विम्हउ' त्ति सहसा उक्कुट्ठ। रण्णा य पुच्छिओ—धम्मिल्ल! केण पगारेण णच्चिय? त्ति। तेण य नट्टगुणेण (ग्रथाग्र—७००) पससिऊण विन्नविओ—देव! सुरवहुणट्टसमाण णच्चिय त्ति।

१ कप्प उ २ विना॥ २ °सिउ सोयवपु° उ २॥ ३ ली ३ उ विनाऽन्यत्र—सो सा पुण सोऊ° शा। स सोऊ° वा ॥ ४ पवण्णो क ॥ ५ अजाणए ली ३॥ ६ उ २ विनाऽन्यत्र— हिये ड° क ३ गो ३। °हिय ड° ली ३। ७ थ रिउभाय° शा ॥ ८ °गोहरसुहवस° उ २॥ ९ कयरूयला° उ २॥ १ °वाहि° ली ३॥ ११ °भसुह ली ३॥ १२ °सुर° गो ३॥ १३ सव्वपासत्थ(त्थ)पासिएहिं गो ३॥ १४ °ल्लो उ ॥

* पार्श्वे कल्पयित्वा (स्थापयित्वा) चतुरस्त्रिकां (पट्टिका) रेवापथपूर्णिकाम् (?)
सेटिकां च गृहीत्वा शशिप्रभवर्णिकाम्।
मां सुताम् एकाकिनीं शयने निर्विण्णाम् अपि
सर्वरात्रिं घोषयति समानवर्णितम् (समान-सवर्णिकम्) ॥ इति च्छाया ॥

ततो राइणा परितुट्ठेण रायाणुरूवेणं पूआभिसक्कारेणं संपूइया वसंततिलया विसज्जिआ 'सयं भवणं वच्चसु' त्ति ।

तीए धम्मिल्लो सविणओवयारं विण्णवेऊण पवहणे आरुहाविओ, अप्पणा वि य आरूढा, गतो य तीए घरं । तओ सो तीए हसिय-भणिय-गीय-रमिय-कलागुणविसेसेसु य कलागुणे अणुभवमाणो, नवजोव्वणगुणे य सोवयारे अणुभवमाणो अइक्कतं पि कालं न याणइ । ततो से अम्मा-पियरो नियगचेडीए हत्थे पइदिवस अद्धसहस्स वसंततिलयामाऊए विसज्जंति । ततो से अणेगपुव्वपुरिससमज्जियविउलो कुडुंबसारो तस्स भवियव्वयाए सुक्क-सण्ह-वालुयामुट्ठी विव घिप्पंतो चेव ओसरिओ ।

सुरिंददत्त–सुभद्दाणं परितावगब्भो आलावो

ततो सा पुत्तवच्छला अम्मया दीहं निस्ससिऊण 'हा पुत्त! हा पुत्त!' विलविता परुण्णा । सत्थवाहेण भणिया—पुत्तवच्छले! किमिदाणि रोदसि?, ममं तदा न सुणेसि भणमाणी । ततो सा रुवती भणइ—मया पुत्तवच्छलअइरित्तहिययाए न नायं, अहो! मे वंचिओ अप्पा । तओ तेण भणिया—अइ पुत्तवच्छले! उज्जुया सि, तओ तणभारयं गहेऊण पलित्तं अभिगम्मइ, मा सतप्पसु । अप्पणा चेव य ते कओ दोसो, जहा तेण कोंकणएण बंभणएण कयं । ततो तीए सलत्तं—किं वा कोंकणएण बंभणेण कयं? । ततो तेण लविआ, सुणसु—

सकयकम्मविवागे कोंकणयबम्भणकहा

अत्थि मगहा नाम जणवओ । तस्सतिए पलासगामो नाम गामो । तत्थ कोंकणओ नाम बंभणो परिवसति । तेण य खेत्तब्भासे समिरुक्खो रोविओ । तत्थ य तेण देवया ठविया । सो य बंभणो वरिसे वरिसे तम्मि देवयाए रुक्खमूले बंभण-किवण-वणीमगाणं पमूयमन्न-पाणं देइ, छगलं च निवेदेति । एवं च सो कालेण बहुएण कालगतो । ततो गिद्ध-गढित-मुच्छित-अज्झोववण्णो तव्वत्तियाए य तिरिक्खजोणियनिवत्तियाउओ अप्पणो चेव घरे छगलियापुत्तो जातो ।

ततो केणइ कालंतरेण तस्स पुत्तेहिं 'अम्हाणं उवरओ ताओ' त्ति काऊणं भोयणं सज्जावियं । ततो ते मित्त-बंधवसहिया उवाइउं जेइउं गया । छगलो वि य मंडेउं तरथेव नीओ । गंध-पुप्फ-मल्ल-पूयाविसेसेण य अच्चिया देवया । धरमहत्तरएहिं य भणियं—छगलओ उवणिज्जउ । ततो तस्स पुत्तो देवयदिण्णो णाम छगलयं आणेउं गतो । सो य तं गलए बंधिऊणं वेवयंतं आणेइ ।

---

१ परमतुट्ठे° उ २ विना ॥ २ °रासिय° ली ३ ॥ ३ पयट्टि° डे० ॥ ४ अट्टुस° डे० उ २ ॥ ५ °ज्जिओ वि° उ २ ॥ ६ भार ग° उ २ विना ॥ ७ °भणेण ली ३ शा० ॥ ८ विसरुक्खो शा० ॥ ९ जजियं उ २ ॥ १० °स्स देव° उ २ विना ॥ ११ °णा कुब्बुयंत शा० विना ॥

पाँसि केप्पि चउरसियं रेवाय(प)यपुण्णिय, सेडिय च गेण्हेप्पि ससिप्पभवण्णिय।
मइ सुय पि एक्कल्लिय सयणि निवण्णिय, सबरत्ति घोसेइ समाणसवण्णिय ॥

[3]तो सा एय सोऊण आसुरुत्ता रुट्ठा कुविया चंडिक्किया मिसिमिसेमाणी इत्थीसहाववच्छल्लयाए पुत्तिसिणेहेण य माऊए से सगास गंतूण सव्व साहिउ पयत्ता। जहाभूयत्थ त सोऊण से माया आकंपियसरीर हियया बाहजलपप्पुयच्छी णिरुत्तरा तुण्हिक्का ठिया। पच्छा य णाए ससवह पत्तियाविया। ततो सा त धूय आसासिऊण अप्पणा नियघर गया।

माया य से पइणो मूल गंतूण सव्व जहाभूय परिकहइ। तेग य भणिया—अजाणुए[5] जाव बालो विज्जासु य अणुरत्तबुद्धी णणु ताव वे हरिसाइयव्व, किं विसाय वच्चसि?। अहिणवसिक्खियया विज्जा अगुणिज्जती णेहरहिओ विव पईवो विणास वच्चइ, त मा अयाणुगा होही। जाव बालो ताव विज्जाउ गुणेउ। तीए पुत्तवच्छलाए भणिय—किं वा अइबहुएण पढिएण?, माणुस्सयसुह अणुभवउ। 'उवभोगरइवियक्खणो होउ' त्ति चिंतेऊण पइणा वारिज्जतीए वि ललियगोट्ठीए पवेसिओ। सो य अम्मापिउसलावो धाइते से सव्वो कहिओ। तओ सो गोट्ठियजणसहिओ[8] उज्जाण-काणण-सभा-वणतरेसु विमाण-नाणाइसएसु अण्णोण्णमतिसयतो बहु काल गमेइ।

वसंततिलयागणियापसंगो

इओ य सो सत्तुदमणो राया केणइ कालेण वसंतसेणागणियाधूयाए वसंततिलयाए पढम नट्टविहिदिवसम्मि पेच्छिउकामो गोट्ठियजणमहत्तरए भणइ—वसंततिलयाए नट्टविहिदसणविणिच्छय दट्ठुकामो, पासणिए देह त्ति। तेहि य धम्मिल्लो नट्टपासणितो दिन्नो। अन्ने यं रण्णो आयरिया(?)। तवो सहोवविट्ठेसु राया उवविट्ठो। ततो तम्मि मणोरहदसणीय नट्टपसत्थे भूमिभाए कयलायण्णसिंगाराभरणविलासावेसमहुरभणियणट्टपसत्थं, सत्थोवविट्ठपयनिक्खेव, वण्णपरियट्टय हत्थभंसुहासुह, विब्बोय-णयणसंचारणजुत्त, पसत्थनाइअब्भुअ, हत्थकरणसंचारणविहविहत्त, तती-सर-ताल-गीयसद्दसम्मीस सा पणच्चिया वसंततिलया। तहिं च दिवसमाणे णट्टावसाणे णच्चिय सव्वपासणिएहिं 'अहो!!! विम्हउ' त्ति सहसा उक्कुट्ठ। रण्णा य पुच्छिओ—धम्मिल्ल! केण पगारेण णच्चिय? त्ति। तेण य णट्टगुणेण (ग्रन्थाग्र—७००) पसंसिऊण विण्णविओ—देव! सुरवहूणट्टसमाण णच्चिय त्ति।

१ कप्प उ २ विना ॥ २ °सिउ सोयमणु° उ २ ॥ ३ ली ३ उ विनाऽन्यत्र—तो सा पुण सोऊ° वा । त सोऊ° वा ॥ ४ पमणो दे ॥ ५ अजाणए ली ३ ॥ ६ उ २ विनाऽन्यत्र— हिये उ° क ३ गो ३। °हिय उ° ली ३। ७ य रिउआय° शां ॥ ८ °णोहरसुहदस° उ २ ॥ ९ कयरूयला° उ २ ॥ १ °वाहि° ली ३ ॥ ११ °भसुह ली ३ ॥ १२ °सुर° ली ३ ॥ १३ सव्वपासव्व(त्थ)पासिएहिं ली ३ ॥ १४ °छो उ ॥

* पार्श्वे कल्पयित्वा (स्थापयित्वा) चतुरस्रिकां (पट्टिका) रेवापय-पूर्णिकाम् (?)
सेटिकां च गृहीत्वा शशिप्रभवर्णिकाम्।
मां सुताम् एकाकिनी शयने निवेश्य अपि
सर्वरात्रि घोषयति समानसवर्णितम् (समान-सवर्णिकम्) ॥ इति च्छाया ॥

ततो रइणा परितुट्ठेण रायाणुरूवेणं पूआभिसक्कारेणं संपूइया वसंततिलया विसज्जिआ 'सयं भवणं वच्चसु' त्ति ।

तीए धम्मिल्लो सविणओवयारं चिण्णवेऊणं पवहणे आरुहाविओ, अप्पणा वि य आरूढा, गतो य तीए घरं । तओ सो तीए हसिय-भणिय-गीय-रासिय-कलागुणविसेसेसु य कलागुणे अणुभवमाणो, नवजोव्वणगुणे य सोवयारे अणुभवमाणो अइक्कंतं पि कालं न याणइ । ततो से अम्मा-पियरो नियगचेडीए हत्थे पइदिवस अद्धसहस्सं वसंततिलयामाऊए विसज्जंति । ततो से अणेगपुव्वपुरिससमज्जियविउलो कुडुंबसारो तस्स भवियव्वयाए सुक्क-सण्ह-वालुयामुट्ठी विव विप्पंतो चेव ओसरिओ ।

सुरिंददत्त-सुभद्दाणं परितावगब्भो आलावो

ततो सा पुत्तवच्छला अम्मया दीहं निस्ससिऊण 'हा पुत्त! हा पुत्त!' विलवित्ता परुण्णा । सत्थवाहेण भणिया—पुत्तवच्छले! किमिदाणिं रोदसि?, मम तदा न सुणेसि भणमाणी । ततो सा रुवती भणइ—मया पुत्तवच्छलअइरित्तहिययाए न नायं, अहो! मे वंचिओ अप्पा । तओ तेण भणिया—अइ पुत्तवच्छले! उज्जुया सि, तओ तणभारयं गहेऊण पलित्तं अभिगम्मइ, मा संतप्पसु । अप्पणा चेव य ते कओ दोसो, जहा तेण कोंकणएण बंभणएण कयं । ततो तीए सलत्तं—किं वा कोंकणएण बंभणेण कयं? । ततो तेण लविआ, सुणसु—

सकयकम्मविवागे कोंकणयबम्भणकहा

अत्थि मगहा नाम जणवओ, तस्सतिए पलासगामो नाम गामो । तत्थ कोंकणओ नाम बंभणो परिवसति । तेण य खेत्तब्भासे समिरुक्खो रोविओ । तत्थ य तेण देवया ठविया । सो य बंभणो वरिसे वरिसे तम्मि देवयाए रुक्खमूले बंभण-किवण-वणीमगाणं पभूयमन्न-पाणं देइ, छगलं च निवेदेति । एवं च सो कालेण बहुएण कालगतो । ततो गिद्ध-नादित-मुच्छित-अज्झोववण्णो तवत्तियाए य तिरिक्खजोणियनिवत्तियाउओ अप्पणो चेव घरे छगलियापुत्तो जातो ।

ततो केणइ कालंतरेण तस्स पुत्तेहिं 'अम्हाणं उवरओ ताओ' त्ति काऊणं भोयणं सज्जावियं । ततो ते मित्त-बंधवसहिया उवाइउं जेट्ठुं गया । छगलो वि य मंडेउं तत्थेव नीओ । गंध-पुप्फ-मल्ल-पूयाविसेसेण य अच्चिया देवया । परमसहचरएहि य भणियं—छगलओ उवणिज्जउ । ततो तस्स पुत्तो देवयदिण्णो णाम छगलयं आणेउ गतो । सो य तं गलए बंधिऊणं वेवयंतं आणेइ ।

१ परमतुट्ठे° उ २ विना ॥ २ °रासिय° ली ३ ॥ ३ पयदि° डे० ॥ ४ अट्ठस° डे० उ २ ॥ ५ °ज्झिओ वि° उ २ ॥ ६ भारं ग° उ २ विना ॥ ७ °भणेण ली ३ शां० ॥ ८ विसरुक्खो शां० ॥ ९ वज्जियं उ २ ॥ १० °स्स देव° उ २ विना ॥ ११ °ण छुब्भुयंत शां० विना ॥

तेण य समएण समणा समियपावा साहुजोगदेसमाए रुक्खाभासे वीसमंति। सो य तेण पएसेण आणिज्जइ। ततो अइसयसमावण्णेण तत्थ साहुणा भणिओ—

सयमेव य रुक्ख रोविए, अप्पणियाए वितड्डि कारिया।
उवाइयलद्धया य से, किं छगला! 'बे बिं' त्ति वाससे?॥

तं च साहुणो वयणं तस्स पुत्तेण सुयं। सो य छगलओ तुण्हिक्को ठिओ। ततो से पुत्तो साहुसगासे उवगतूण भणति—किं भयवं! तुब्भेहिं एस छगलओ भणितो जेण तुण्हिक्को ठितो? । ततो तेण साहुणा अणलियवयणपरमत्थेण भणिओ—देवाणुप्पिया! एस छगलओ तुब्भ पिया भवति। एयं तुब्भं साहति—अहं ते पिया, मा मं मारेह त्ति। तुब्भे न परियच्छह। ततो तेण बंभणपुत्तेण साहू भण्णति—किहं पुण अम्हेहिं पत्तियव्वं? जहा 'एस अम्हं पिया भवति' त्ति। ततो सो साहू पुव्ववुत्तं साहइ, सहेउयं सकारणं साभिण्णाणं से परिकहेइ।

ततो से पुत्तो तद्दरिसाविओ पायवडिउट्ठिओ य, तेसिं भाउयाण सव्वं जहाभूअत्थं साहइ। ततो ते परमविम्हयसमावण्णा साहुणो पायमूलं गतूण वंदित्ता, मित्त-बंधव-सयण-परियण सहिया सव्वे संवेगसमावण्णा सीलव्वयाइं घेत्तूण छगलयं च सयराइं गया। छगलओ वि साहुपसाएण मुक्को। ताणं चिय तप्पभिइं अरहंतदेवया, साहुणो य दक्खिणेया॥

तं एयं जहा तेण कोंकणयबंभणेण सयंकयकम्मविवागजणियं दुक्खं संसारो य संपत्तो, एवं तुमए वि अप्पणो पुत्तो सयमेव संसारमहाकडिल्ले छूढो॥

ततो सीए बाहभरंतनयणाए सगग्गरकंठाए महयादुक्ख-सोगाभिभूयाए भण्णति—न मए नाय, जहा वसुभूयस्स बंभणस्स पज्जतो भविस्सइ त्ति। ततो गहवइणा भणिया—को वा वसुभूयस्स बंभणस्स पज्जतो त्ति? । ततो सा भणइ—सुणसु अज्जउत्त!—

चिंतियत्थविवज्जासे वसुभूइबंभणक्खाणयं

ते णं काले णं ते णं समए णं नंदपुरं नाम नयरं। तत्थ वसुभूई नाम बंभणो अज्झावओ परिवसइ। भज्जा य से जन्नदत्ता नाम। तीसे य दो पुत्तभंडाणि—सोमसम्मो पुत्तो, धूया य से सोमसम्मा। रोहिणी य से गावी। सो य बंभणो दरिद्दो। तस्स य इक्केण धम्मसइणा गिहिणा खेत्तनियत्तणं दिण्णेल्लयं। तेण य तहिं साली रुत्तो। रोवेऊण य पुत्तं संदिसइ—पुत्त! अहं नयरं गच्छामि, चंदग्गहणं भविस्सइ। तत्थ किंचि साहुपुरिसं दव्वनिमित्तं पत्थेमि। तुमं पुण एयस्स सोहणं परिरक्खणं करेज्जासि। ततो एएण धण्णेण, जं च आणेहामि, तेण तुब्भ सोमसम्माए य विवाहधम्मो कीरिहि त्ति। रोहिणी य वियाइस्सइ त्ति। एवं वदित्ता गतो सो।

१ °क्को दे° उ २॥ २ अयस° क ३ गो ३॥ ३ तुण्हिय सा ॥ ४ °भणति की ३॥ ५ °इ भण उ २ विना॥ ६ °हाउच सा° उ २॥ ७ तयप्प° उ २॥ ८ °भतेण ली ३॥ ९ °तो स सं° शां ॥ १० वि अहुउ छुयाए अप्प° उ २॥ ११ °भूताए ली ३॥ १२ °भूइस्स उ २॥ १३ गिह° ली ३॥ १४ °भूइय° उ २॥ १५ °सम्मयाए गो ३ क ३॥ १६ कीरइ त्ति उ २ विना॥

तत्थ य अन्नया कयाइ नडो आगतो । सो य तस्स पुत्तो नडसंसग्गीए नडो जातो । धूया य से वंठेण पडिवण्णा गुव्विणी जाया । रोहिणीए[1] वि उक्कंतगहाए[2] गब्भो पडिओ खेत्तसाली वि अक्कमिऊणं असोहिज्जंता तणा जाया । सो वि य[3] वंभणो अकयपुन्नयाए रित्तओ चेव आगओ सालिखेत्तस्स रोहिणीए य आसाए । वंभणी य दीणवयणा परितप्पंती अच्छइ । वंभणेण घरं पविट्ठेण दिट्ठा । सा अब्भुट्ठिया, दिण्णासण-पायसोएण पुच्छिया वंभणी—कीस दुम्मण ? त्ति । ततो ताए नीससिऊण जहाभूयत्थो परिकहिओ । ततो णेण विसण्णहियएण वंभणी भणिया—पिच्छसु कयंतस्स परतत्तीतत्तिल्लस्स, अम्हं च भवियव्वयाए अण्णहा चिंतिया अत्था अण्णहा परिणामिया ।

'साली रुत्तो तणो जातो, रोहिणी न वियाइया ।
सोमसम्मो नडो जाओ, सोमसम्मा वि गब्भिणी ॥'

ततो सो एवं भणिऊण सुवहुयाणि य चिंतेऊण ठितो तुण्हिक्को ॥

एवं मए वि अत्था अण्णहा चिंतिया अण्णहा होय[4] त्ति—जहा वसुभूइवंभणस्स ॥

ततो सा गहवइणा भणिया—भद्दे ! पुव्वकयाणं निययाणं कम्माणं सुभाऽसुभ[5]फलविवागो होति । ततो सो गहवती पुत्तविओगसोगसतत्तहियओ कालगतो । माया वि य पुत्तविओयदुहट्टिया पइमरणेण य वलिययरं सोयदुक्खसतत्तहियया पइमग्गगामिणी जाया ।

जसमई वि घरं विक्केऊण कुलहरं गया । सव्वाभरणाणि य पडलए काऊण णियदासचेडीए हत्थे सेयर[6]वत्थपच्छादिते गणियाघरं विसज्जेइ । दिट्ठा य ते वसंतसेणाए । पुच्छिया य णाए दासचेडी[7]—'ए ! किमेयं ?' ति । तीए भणियं—धम्मिल्लस्स भज्जाए पेसियं । [8]ततो ताए विचिंतियं—एत्तिओ धम्मिल्लस्स वरसारो त्ति । 'किं मे आभरणेणं ?' ति दासचेडी भणइ—व[9]च्च, तहेव धम्मिल्लस्सेव भज्जाते घरं । ततो अंगपडियारेण पल्लवएणं धम्मिल्लस्स वित्त[10]परिक्खयनिमित्तं, पिउमाउविपत्तिकारणं, घरविक्कयं, जसमईए कुलघरगमणं, आभरणपेसणं च वंसततिलयाए सिट्ठं । [11]पच्छा धम्मिल्लेण सुयं ।

वसंतसेणाए वसंततिलयासण्णवणं

तओ अन्नया कयाइ गणियामाया वसंततिलयं भणइ—पुत्ति ! निप्फलं दुमं पक्खिणो वि परिच्चयंति, परिसुक्के य नइ-दह-तलायादी हंस-चक्कवायप्पभिय[12]ओ सउणगणा परिच्चयंति, किं पुण अम्हाणं गणियाणं निद्द[13]वेणं पुरिसेणं ? । ता एस धम्मिल्लो खीणविहवो जातो परिच्चइज्जउ त्ति । ततो तीए लवियं—[14]अंबो ! मम अत्थेण न कज्जं, तम्मि गुणाणुगतो

१ °ए च उ° क ३ गो ३ उ २ ॥ २ °गब्भाए उ २ ॥ ३ य ण व° डे० ॥ ४ हूय शां० ॥ ५ °भविवागा होंति त्ति शां० ॥ ६ °वसणप° ली ३ ॥ ७ °डी 'किं° ली ३ उ.२ ॥ ८ ताहे ताए ली ३ । ततो तीए गो ३ ॥ ९ °च्च णेहिं ध° उ २ ॥ १० क ३ डे० विनाऽन्यत्र—चित्तपरिक्खयनि° ली० य० गो ३ । चित्तपरिक्खणनि° उ० ॥ ११ एत्तो ध° ली ३ ॥ १२ °भितओ उ २ ॥ १३ निद्धणेण क ३ ॥ १४ अब ! क ३ । अम्मो ! उ २ ॥

अधिकतरो य सिणेहो मे। सेल-काणण-वणसंडमंडियाए पुहवीए एयस्स सरिच्छय अहमन्नं न पेच्छामि। किं वा अत्थेण मलसमेण?। अज्जउत्तमंतरेण य मा मं किंचि पुणो भणेज्जासि, जइ ते मए जीवंतीए कज्जं। एयस्स विप्पओगेण हसिय भणिय रमिय-चंकमितं यं सें सुमरमाणी न जीविज्जा हं। एएण य विरहियाए मम जीविउवाय चिंतेहि त्ति। गणिया भणइ—होउ पुत्ति!, अलाहि, मज्झ वि य परमो मणोरहो, 'जो तुज्झ पियो सो मज्झ पिययरउ'त्ति वायाए सकलुसा भणिऊण, हियतेण बहुनियडि-कयड-मायाकुसला छिद्दोवायाइं मग्गमाणी विहरइ।

ततो य काले वच्चमाणे अण्णया कयाइ वसंततिलया ण्हाया सुइपयाया भवित्ता आदंसणहत्थगया अप्पाणं पसाहेइ। माया य णाए भणिया—अम्मो! आणेहि ताव अलत्तयं ति। ततो सो तीसे निंव्वुसणलत्तओ पणामिओ। ततो सा भणइ—अम्मो! किं एस अलत्तओ नीरसो?। ततो सा भणइ—पुत्ति! किं एएण कज्जं न कीरइ?। तीए भणिअं—आम, अम्मो!। तओ सो भणइ—पुत्ति! जहा एस नीरसो एवमेव धम्मिल्लो वि, नत्थि तेण कज्जं ति। ततो तीए लवियं—अम्मो! एएण तुमं न जाणसि किं पि कज्जं कीरइ? त्ति। [सा भणइ—] आम, न याणामि। तीए भणिया—अयाणिए! एएण वत्ती वलिज्जइ, ततो दीवओ बोहिज्जइ, मा अयाणिया होह, किह न कज्जं? ति। एवं भणिया निरुत्तरवयणा तुण्हिक्का ठिया।

ततो कइयएसु दिवसेसु गएसु सुहासणवरगयाए वसंततिलयाए पउच्छुक्खंडे पीलेऊण उवणेइ। ताए य गहिया, खाइउं पयत्ता, नत्थिं य सिं कोइ रसो। ततो सा भणइ—अम्मो! किं एए नीरसा?। ततो तीए लवियं—जहा एए नीरसा एवमेव धम्मिल्लो वि। ततो तीए भणिया—अम्मो! एएहिं ताव कज्जं कीरति। [सा भणति—] किह कीरइ? त्ति। ततो णाए भणिया—देवकुल-घराईण लिप्पणत्थं चिक्खल्लो ससोहिज्जइ, तत्थ उवओगं वयति त्ति। एवं भणिया निरुत्तरवयणा तुण्हिक्का ठिया।

ततो पुणो वि काले वच्चमाणे तिलपूलयं सुज्झोडिय काऊण उवट्ठाइ। ततो सा तं गहेऊण उच्छगे झोडेइ, नत्थि एक्को वि तिलकणओ। ततो मायरं भणइ—अम्मो! नत्थि तिला, कीस ते एस तिलपूलओ आणिउ? त्ति। तीए भणियं—जहा एस पूलओ झोडियपप्फोडिओ वि, एवमेव धम्मिल्लो वि। नत्थि एएण किंचि कज्जं, वा अलाहि एएण। ततो सा भणइ—मा एवं भण, अम्मो! एएहिं वि कज्जं कीरइ (ग्रन्थाग्रम्–८००)। तीए भणियं—कहं?। सा भणइ—अग्गिणा डहिचा खारो कीरइ, ततो वत्थादीण सोहणनिमित्तं उवउज्जइ।

१ जीवंतीए क्ती ३ ॥ २ °हूणि नियं° उ २ ॥ ३ °सयइ° कसं उ २ ॥ ४ निच्छूस° उ २ ॥ ५ सा एविअ° उ २ ॥ ६ °त्थि पुसिं कं ३ ॥ ७ सुज्झाडि° खं ॥ ८ झाडे° क्ती ३ उ २ ॥ ९ ततो सा भणति जहा उ २ ॥ १ झाडि° उ २ विना ॥

ततो एवं भणिए पडिभणइ—किं तव पुरिसा न भविस्संति ?। वसंततिलयाए भणिया—अहो तुमं सि कयग्घा, जहा वायसा तह त्ति । ततो तीए लवियं—कहं वायसा कयग्घ ? त्ते । ततो वसंततिलयाए भणिअं—अम्मो! सुणसु लोइअसुई—

कयग्घयाए वायसक्खाणयं

इओ य किर अतीते काले दुवालसवरिसिओ दुभिक्खो आसी । तत्थ वायसा मेलयं काऊण अण्णोण्णं भणंति—किं कायव्वमम्हेहिं ?, वड्डो छुहंसारो उवट्ठिओ, नत्थि जणवएसु वायसपिंडियाओ, अण्णं वा तारिस किंचि न लब्भइ उज्झणधम्मियं, कहियं वच्चामो ? त्ति । तत्थ वुड्ढवायसेहिं भणियं—'समुद्दतडं वच्चामो. तत्थ कायंजला अम्हं भायणेज्जा भवंति, ते अम्हं समुद्दाओ मच्छए उत्तारिऊणं दाहिंति. अण्णहा नत्थि जीवणोवाओ' सपहारेत्ता गया समुद्दतडं । ततो तुट्ठा कायंजला, सागय-ऽब्भागएण य सम्माणिया, कयं च तेसिं पाहुण्णयं । एवं ततो तत्थ कायंजला मच्छए उत्तारित्ता देंति । वायसा तत्थ सुहेण कालं गमेति ।

ततो वंते बारससंवच्छरिए दुब्भिक्खे जणवएसु सुभिक्खं जायं । ततो तेहिं वायसेहिं संपहारेत्ता वायससंघाडओ 'जणवयं पलोएह' त्ति पेसिओ, 'जइ सुभिक्खं भविस्सइ तो गमिस्सामो' । सो य संघाडओ अचिरकालस्स उवलद्धी करेत्ता आगतो । साहति य वायसाणं, जहा—जणवएसुं वायसपिंडिआओ मुक्कमाणीओ अच्छंति, उट्ठेह, वच्चामो त्ति । ततो ते सपहारेंति—किह गंतव्वं ? ति । 'जइ आपुच्छामो नत्थि गमणं' एवं परिगणेत्ता कायंजले सद्दावेत्ता एवं वयासी—भागिणेज्जा! वच्चामो । ततो तेहिं भणियं—किं गम्मइ ?। ततो भणंति—न सक्केमो पइदिवसं तुम्हं अहोभागं पासित्ता अणुट्ठिए चेव सूरे । एवं भणित्ता गया ॥

एवमेयं तुमं पि वायससरिसी. जाणामि, धम्मिल्लसंतिएण अत्थेण उड्डुया समाणी भणसि 'छड्डेह धम्मिल्लं' ति । एवं च तीए भणिया लज्जिया तुण्हिक्का ठिया ।

ततो तीए धुत्तीए अइरागरत्तं वसंततिलयं जाणिऊण 'न तीरइ मोएउं' ति परिगणेऊण कव्वडदेवयानिमित्तं काऊण घरे आणंदो सद्दाविओ । वसंततिलयाए य सव्वो सहिजणो निमंतिओ—गणियाओ दारियाओ य । आमंतियाओ य गणियाओ । ततो गंध-धूव-पुप्फ-भत्तेणं जहेसुं घरदेवएसुं पच्छा धम्मिल्लो ण्हाओ पयओ, परमसुइभूओ, सव्वालंकारभूसियसरीरो लट्ठे भोयणमंडवे खज्ज-पेज्ज-भोज्जावसाणे सज्जिए (?) सहियाजणपरिवारिओ वसंततिलयाए सहिओ पाणं अणुभवति ।

धम्मिल्लनिवासणं सच्चिंता य

ततो अइपाणपसंगेण अचेयणभूओ जाओ, परिदुब्बलएगवत्थो य नयरबाहिरियाए अ-

१ °इयं सुई शा० ॥ २ °ते दुवा° कसं० उ १ विना ॥ ३ °हासा° उ २ ॥ ४ वासपिं° ली ३ ॥ ५ ली ३ विनाऽन्यत्र—कहिं व° च० । कह व° क ३ गो ३ ॥ ६ °डुकागेहिं ली३ विना ॥ ७ °उ त्ति सं° उ २ ॥ ८ च सिं ली ३ शां० ॥ ९ वित्ते क ३ ॥ १० °स जाणामि ली ३ ॥ ११ °यविलया तु° उ २ ॥ १२ गो० वा० विनाऽन्यत्र—कव्वडदे° कस० सस० ख० उ २ । कडदे° ली ३ मो० ॥ १३ सजावि° उ २ ॥ १४ °यादा° उ २ ॥

दूरसामते नेऊण छड्डिओ । पाभाइयसीयलेण वाएण आसासिओ समाणो परिबुद्धो अप्पाणं भूमीए पडिअं पेच्छइ । तओ य उट्ठिओ समाणो चिंतिउमारद्धो—अहो[1] मुहुत्तवररमणीयं गणियाहिययं विसमिव विवागफलं सा नाम तारिसी पीई, सा महुरया, अणुयत्तणा, मणओवैयारो य सव्व कैयतवं अवि य—

वेसविलयाण एसो, जाणासि कुलक्कमागओ धम्मो ।
धवलं खणेण काउं, खणेण मसिकुच्चयं वेंति ॥
आसीविससप्पैं य भुय-गमस्स रण्णे य मच्छपोयस्स ।
महुस्स हुयवहस्स य, वेसाण य को पिओ नाम? ॥
चोप्पडधडय मसिमं क्खिअं पि रामेंति अत्थलुद्धाओ ।
सिरिवच्छलंछियंग, मुहाए विण्हुं पि नेच्छंति ॥
अत्थस्स कए जाओ, वेसाणे वि नियमुहाइ अप्पंति ।
अप्पा जाण वेसो, परो णु किह वल्लहो तासिं? ॥

एवं चिंतिऊण पच्छा गंतुं पयत्तो । बहुकालेण पुव्वदिट्ठेण मग्गेण किह वि निययघरं गतो । तत्थ वि अण्णाणयाए दारनिउत्तं पुरिसं पुच्छति—भाय[2] कस्स इमं घरं? । तेण लवियं—कस्स तुमं जाणसि? । [सो भणइ—] धम्मिल्लस्स त्ति । ततो सो पडिभणइ—

माया सोएण मया, पिया य गणियाघरे वसंतस्स ।
धम्मिल्लसत्थाहसुय-स्स कामिणो अत्थनासो य ॥

ततो सो तं वयणं सोऊण वज्जाहओ विव गिरिसिहरपायवो 'धस' त्ति धरणियलें पडिओ । मोहावसाणे य उट्ठेऊण चिंतिउं पयत्तो—'पिउ-माउविप्पओगदुक्खियस्स विमवरहियस्स का मे जीविए आस?' त्ति हियएण सामत्थेऊण नयराओ निग्गओ । जीवपरिचागकयमईओ एकं जिण्णुज्जाणं नाणादुम-लया-गुच्छ-गुम्मगहणं, विविहविहगणादियं, परिसडिय-भग्ग-ओसरियभित्तिपासं मरियव्वनिच्छियमती तं अइगओ । ततो अयसिकुसुमसन्निकासेण तिक्खेण असिणा अप्पाणं विवाडेउं पयत्तो । तं च से आवहं देवयाविसेसेण हत्थाओ धरणियले पाडियं । 'न वि सत्थमरणं मे' त्ति चिंतिऊण बहुएं दारुए साहरित्ता अग्गिं पविट्ठो । सो वि महानदिदहो विव सीयलीभूतो । तत्थ वि न चेव मओ । ततो तेण विसं खइअं । तं पि य सुक्कतिणरासी विव हुयवहेण उदरग्गिणा से दड्ढं । पुणरवि चिंतेउं पयत्तो—'सत्थ-ऽग्गि विसभक्खणेण नत्थि मरणं' ति तरुसिहरं विलग्गामि । ततो य से अप्पा मुक्को, तूलरासिपडिओ विव उवविट्ठो ठिओ । ततो केण वि अविण्णायरूवेण अंबरवायाए भणिओ 'मा साहसं, मा साहसं' ति । ततो दीहं निस्ससिऊण 'नत्थि एत्थ विवाओ' त्ति चिंतापरो झियायंतो चिट्ठइ । एवं च ताव एयं ।

१ परिबु° उ० ॥ २ °ओ उव° उ २ ॥ ३ कइत° उ १ ॥ ४ °स्स भूयं° शां विना ॥ ५ °ज य नि° उ २ विना ॥

वसंततिलयाए पइण्णारुहणं

इयरी वि वसंततिलया पभायकाले उट्ठिए दिणयरे तेयसा जलंते मएण विप्पमुक्का समाणी मायरं भणति—अम्मो! 'कहिं सो धम्मिल्लो?' त्ति । तओ तीए लवियं—को तेर्सि जुण्णवंठाणमंतगमणं करेइ? त्ति. पुत्ति! न याणामि 'कहिं गतो' त्ति । ततो तीए नायं, जहा—'एयनिमित्तं चेवं अउव्वो ऊसवो कतो, तो एतीए एस दोसो' त्ति चिंतिऊण विमाणिआ संती पइण्णमारुहइ—

एसो वेणीवंधो, कओ मए घणियसप्पइण्णाए ।
मोत्तव्वो य पिएणं, मत्तूण य आवयंतेणं ॥

एवं च वदित्ता ववगयगंध-मल्ला-ऽलंकारगुणा, णवरं सरीरअणुपालणत्थं सुद्धोदयविच्छलिअंगी कालं गमेइ ।

धम्मिल्लस्स अगडदत्तमुणिसमागमो

ततो धम्मिल्लो वि उट्ठेऊण तहिं जिण्णुज्जाणे हिंडिउं पयत्तो । तत्थ य घणपत्तल-विसाल-गंभीर-तरुणपत्तपल्लवनिवद्धनिंडरंवभूयस्स, कुसुमभरोनमंतसंचयस्स, भमरमुहरोवगुंजियसिहरस्स, वायवसपकंपमाणतबंतपल्लवग्गहत्थस्स असोगवरपायवस्स हिट्ठा निविट्ठं, जिणसासणसारदिट्ठपरमत्थसब्भावं, बहुगुणमणंतसुमणं, समणवरगंधहत्थिं पेच्छति । तेण य सिद्धमहुरसुवाभिंल(भा)सिणा भणिओ—धम्मिल्ल! अबुहजणो विव किं साहसं करेसि? ।

तो वंदिऊण देविं-दवंदियं तवगुणागरं साहुं ।
वेइ दुहिओ मि भयवं!, पुव्विं धम्मं अकाऊणं ॥

ततो साहुणा लवियं—किं ते दुक्खं ति । [तओ धम्मिल्लेण भणियं—]

जो य न दुक्खं पत्तो, जो य न दुक्खस्स निग्गहसमत्थो ।
जो य न दुहिए दुहिओ, तस्स न दुक्खं कहेयव्वं ॥ ति ।

ततो साहुणा भणिओ—

अहयं दुक्खं पत्तो, अहयं दुक्खस्स निग्गहसमत्थो ।
अहयं दुक्खसहावो, मज्झ य दुक्खं कहेयव्वं ॥

ततो तेण भणियं—किं पुण भयवं! तुब्भेहिं ममाओ वि अइरित्तं दुक्खं पत्तं? ति । साहुणा भणियं—आमं । तओ धम्मिल्लेण जहावत्तमप्पणो सव्वं परिकहियं । ततो साहुणा लवियं—सुणसु धम्मिल्ल! अणन्नहियओ सुह-दुक्खं जारिसं मए अणुभूयं तं ते परिकहेमि त्ति—

अगडदत्तमुणिणो अप्पकहा

अत्थि पमुइयजणसव्वसारबहुविहनिप्पज्जमाणसव्वधण्णनिचओ विज्ञाविणीअविण्णाणणा-

१ °व एस ऊसवो कओ उ० । °व एस च्छेडुओ कओ शा० ॥ २ तो तीए शां० विना ॥ ३ °राणव° शा० ॥ ४ °निकुरुंव° शा० ॥ ५ °गुणगण सवण सम° उ० । °गुणमणसुमण सम° शा० ॥ ६ °भिकासि° ली ३ ॥

णबुद्धी अवती णाम जणवओ । तत्थ य अमरावइसरिसलीलाविलंबिया उज्जेणी नाम नयरी । तत्थ य जणवए पयाण परिपालणेसमत्थो, सपुण्णकोस-कोट्ठागारविभवो, बहुसोहणवाहणो, अणुरत्तमति मित्तवग्गो राया जियसत्तू नाम । तस्स य सारही ईस त्थ-सत्थ-रहजुद्ध निजुद्ध-तुरगपरिकम्मकुसलो अमोहरहो नाम नामेण । तस्स य कुलस रिसाणुरूवा भज्जा जसमती नाम । ताण य अहं पुत्तो अगडदत्तो नाम नामेण ।

ततो मम भवियव्वयाए गुरुययाए य दुक्खाण बालभावे चेव पिया उवरओ । भत्तुमरणदुक्खिया मम य सोयमाणी माया मे सुक्कोटररुक्खो इव वणदवेण सोयग्गिणा अंतो अंतो डज्झइ । तं च सहादुक्खियं सरीरेण परिहायमाणीं अभिक्खणं अभिक्खणं च रोवमाणीं पासित्ता पुच्छामि—अम्मो ! कीस रोवसि ? त्ति । ततो मम निबंधे कए समाणे कहिउमारद्धा, जहा—एस अमोहप्पहारी नाम रहिओ, एस ते पिउउवरयमेत्तस्स संतियं सिरिं पत्तो जइ ते पिया जीवंतो, तुमं वा ईस-त्थ-सत्थकुसलो होंतो तो न एस परिससिरीए भायणं होंतो, एवं वा सिंघाडग तिय-चउक्क-चच्चर-रच्छामुहेसु उवलळंतो विहरेज्ज त्ति तं एयं पच्चक्खकलुयं दट्ठुं पिउउवरमं च ते सुमरमाणी अतो अतीव डज्झामि । ततो मया माया भणिया—अत्थि अम्मो ! अम्हं कोइ वयंसओ अण्णो ईस-त्थ-सत्थ कुसलो ? । ततो ताए कहियं—अत्थि कोसंबीए पिउस्स ते परममित्तो 'दढप्पहारि' त्ति नाम पंसुलेहसालिओ य, तमहं एक्कं जाणामि । ततो मया माया भणिता—अम्मो ! गच्छामि कोसंबिं दढप्पहारिस्स रहियस्स पायमूलं, ईस-त्थकलाओ सिक्खिउणागच्छामि । ततो तीए महया विमद्देण अब्भणुण्णाओ ।

ततो हं गतो, पविट्ठो य कोसंबिं । तत्थ य मया दढप्पहारी 'ईस-त्थ-सत्थ-रहच रियसिक्खाकुसलो आयरिउ' त्ति विणउणएण उवगतूण पणमिओ । पुच्छिओ अहं तेण—पुत्त ! कओ आगओ सि ? । ततो से मया कुलपरादीतो सव्वो पवघो, पिउणो य नामधिज्जं, अत्तणो य आगमणं सव्वं परिकहियं । ततो अहं तेण पिउणा पुत्तो विव समासासिओ, भणिओ य—वच्छ ! अहं ते जहासिक्खियं सव्वं निरवसेसं सिक्खावेमि त्ति । मया य विण्णविओ—धन्नो मि, अणुगिहिओ मि त्ति । ततो सो भणइ—नवरं धिंतिं करेहि त्ति । ततो सोहणंसि तिहि-करण-नक्खत्तदिवसमुहुत्ते सचण-कोउएहिं ईसत्थाखविट्ठो आरंभो कओ । कड्ढिआ सिलागा, गहिओ चउव्विहो मुट्ठी, जियं पुंण्णागं, लद्धो मुट्ठिबंधो, ठिया य आयलक्खसिग्घया, दढप्पहारिव्व च, दुविहे ईस त्थे पंडि(ग्रन्थाग्रम्—९००)यगो जवमुक्के य निप्फण्णो, अण्णेसु य तरपडण-छेज्ज भेज्ज-जतफारचरियाविहाणेसु अवधा रिउयदिट्ठासु सत्थविहीसु ।

१ °छावक° शां ॥ २ °णास° ली १ ॥ ३ °सासण° शां विना ॥ ४ °गळह° उ २ विना । एवमग्रेऽपि ॥ ५ °यापु कम्मगुरु° शां० विना ॥ ६ मया भणि° ली ३ उ २ ॥ ७ सिरिं कु° शां विना ॥ ८ °रयाउ उह° उ २ विना ॥ ९ पुणाग ली ३ ॥ १ पविपत्तो ली ३ ॥

अगडदत्तस्स सामदत्ताए परिचओ

ततो अहं अण्णया कयाई आयरियगिहरुक्खवाडियाए अइगंतूण जोगं करेमि । तस्स य गुरुभवणस्स सएज्झयभवणे एगा वरतरुणी दिवसे दिवसे फल-पत्त-सुमण-पुप्फदामखिवण-लेट्ठुएहि य मे पहरेइ । ततो तं गुरुसंकाए विज्जागहणलोभेण य इच्छंतो वि न तत्थ अणुरागं दंसेमि ।

ततो कइवएसु दिवसेसु अइक्कंतेसु जोगं करेंतस्स मे तत्थेव रुक्खवाडियाए पलंबलंबंत-कसण-रत्ततरपल्लवस्स,[2] कुसुमभरोणमियअग्गसालस्स, भमर-महुकरिकुलोवगिज्जंतमहुलउवसद्दकुहरस्स,[3] रत्तासोयवरपायवस्स हेट्ठा साहं वामहत्थेण अवलंबिऊण एगुक्खित्ततरुक्खंधचिट्ठितचलणा णवसारभूयं जोव्वणयं वहंती दिट्ठा मे तरुणजुवती । सा य नवसिरीससरसकुसुमोवमाणकंचणकुम्मसरिसएहिं चलणएहिं, अइविब्भमंचकिल्लएणं[4] कयलीखंभसमाणएणं ऊरुजुयलेणं, महानदीपुलिणसंघसाकारएणं[5] जंघएणं फालियमज्झमज्झंतरत्तंसुयसन्निभं[6] वत्थं नियत्था, हंसायलिसद्दसन्निभेणं[7] रसणाकलावएणं, [8]ईसिसजायमाणरोमराई, कामरइगुणकरेहिं उरतडसोभाकरेहिं सघंसयपरिवड्ढमाणेहिं सज्जणमेत्ति व्व निरंतरेहि य पओहरेहिं, पसत्थलक्खणाहिं रोमोवचियाहिं बाहुलेतियाहिं, रत्ततलकोमलेहिं नाइरेहावहुलेहिं अणुपुंव्विसुजातंगुलीरत्ततंबनहेहिं[10] अग्गहत्थेहिं, नाइपलंब-रत्ताधरा, सुजाय-सुद्ध[11]-चारुदंतपंती, रत्तुप्पलपत्तसन्निगासाए जीहाए, जच्चुण्णयतुंगएणं नासावंसएणं, पसइपमाणतिरियायतेहिं[12] नीलुप्पलपत्तसच्छहेहिं नयणएहिं, संगयएणं भुमयाजुयलएणं, पंचमिचंदसरिसोवमेणं निडालपट्टएणं, कज्जल-भमरावलीसन्निभेणं मिउ-विसय[13]-सुगंधिनीहारिणा सव्वकुसुमाहिवासिएणं केसहत्थएणं सोभमाणेणं, सव्वंगोवंगपसत्थ-अवितण्हपेच्छणिज्जरूवा दिट्ठा मए ।

चिंतियं च मे—किं नु एयस्स भवणस्स देवया होज्ज? उदाहु माणुसि? त्ति । ततो मए उवरिं होंती निज्झाइया, नवरि नयणा से णिमेसुम्मेस करेंति, ततो मए नाया 'न एस देवया, माणुसी एस' त्ति । पुच्छिया य मे—भद्दे! कासि तुमं? कस्स वा? कुओ वा एसि? त्ति । ततो तीए ईसीसिहसिय[15]दीसतरूवलट्ठसुद्धदंतपंतीए वामपायंगुट्ठएणं भूमितलं लिहंतीए अहं भणिओ—अज्जउत्त! एयस्स[16] सएज्झयभवणस्स गहवइजक्खदत्तस्स धूया हं सामदत्ता[17] नाम. दिट्ठो य मया सि बहुसो जोगं करेमाणो, समं[18] च मे हियए पविट्ठो, तप्पभिइं[19] च अहं मयणसरपहारदूसियहियया रइं अविंदमाणी असरणा तुमं सरणं पवन्ना.

१ °एहि हियय से क ३ ॥ २ °ल्लवतस्स उ २ विना ॥ ३ °वपिज्ज° ली ३ । °वरिज्जं° क ३ गो ३ ॥ ४ °मविलक्खलएण उ० । °मचक्खिल्लएणं ली ३ क ३ गो ३ ॥ ५ °णसंघसाका° क ३ गो ३ ॥ ६ °भ नियं° कस० शां० विना ॥ ७ °सावलि° क० उ २ ॥ ८ ईसिं उ २ ॥ ९ °लया° उ २ विना ॥ १० °पुव्व° उ २ ॥ ११ °द्धयारु° मो० स० गो ३ ॥ १२ °णातिरेयाऽऽय° उ २ ॥ १३ °विततसु° शां० ॥ १४ °दाहो उ २ ॥ १५ °सिऊण य दीसं° ली ३ । °सियं दीसं° उ २ ॥ १६ °स्स महेब्भयभ° शां० विना ॥ १७ प्रतिषु क्वचित् सोमदत्ता क्वचिच्च सामदत्ता इति पाठान्तरं दृश्यते । अस्माभिस्तु सर्वत्र सामदत्ता पाठ आदृतः ॥ १८ समं च से हिय° शां० विना ॥ १९ तयप्प° उ २ ॥

मा य मे समागम इम अवमण्णेज्जासि अवमाणिया तुमे अह तुह विरहदुक्खिया खण पि हुं न समत्था जीवितु ति । एव भणमाणी पाएसुं मे पडिया । ततो मए उट्ठावेऊण भणिय—सुयणु ! णणु एस अत्तिणओ अयसो य, गुरुकुलपा(वा)से न खमो विणयाविक्कमो त्ति । सा य मे पुणो भणति—भट्टिदारय ! न किर सो कामी वुच्चइ, जो जा य कुले सीले य पच्चपाय च रक्खति । मया भणिया—एवमेय ति, किंतु मम सरीरेण जीविएण सोथिया कइवए ताव दिवसे पडिक्खाहि, जाव उज्जेणीए गमणोवाय चिंतेमि । ततो कहे कह वि ससवह पत्तियाविया गया नियगभवण । अहमवि त तीइ रूवाइसय हियएण वहतो अणगपरिसोसियसरीरो य त चेव मणेण वहतो तीए समागमोवाय चिंतयतो कइ वि दिवसे गमेमि, गुरुजणलज्जाए अणायारं गूहेंतो अच्छामि ।

तओ अण्णया कयाइ गुरुजणाणुण्णाओ सिद्धविज्जो सिक्खादसण काउ रायकुल गतो । तत्थ य असि-खेडयगहण, हत्थिखेल्लावण, ममवच्छ, गत्ततरगाय, माउज्झवेयविज्झयादीय सिक्खिय सन्न जहा पेगर्य दाइय । ततो पेच्छयजणो सव्वो विम्हाविओ हयहियओ जाओ, मज्झ सिक्खागुणे आयरिए य पससति । राया भणइ—'नत्थि किंचि अच्छेरय' ति णेव विम्हितो । भणइ य—किं ते देमि ? त्ति । ततो मया विण्णविओ—सामि ! तुब्भे मम साहुक्कार न देह, किं ते अण्णेण दाणेण ? ति । ततो भणति—

किं सिक्खिएण तुज्झ ?, मज्झ सिक्ख तु अवहिओ सुणसु ।
इह चेव अह नयरे, सिंहलिसुय नदणो आसी ॥
सिरिओ दूयावत्ती, आसवित्ती य कुलघरविणासो ।
तिगमण खाइयाए, जा दुप्पइतप्पणा बोही ॥

एव च यदित्ता साहिउं पयत्तो सो तीत भवग्गहण । सुणसु देवाणुप्पिया !—

जियसत्तुरायपुव्वभवसबंधो

अत्थि इहेव कोसबीए नयरीए हरिसेणो नाम राया । तस्स य अग्गमहिसी धारणी देवी । तस्स य रण्णो अमच्चो सुबुद्धी नाम । तस्स य भज्जा सिंहली नाम । तीसे य पुत्तो आणदो नाम, सो य अहं आसी । तत्थ य मम असुहकम्मोदएण कुट्ठरोगो जातो । ततो तेण रोगेण सतप्पमाणो अप्पाण च निंदतो आउ अणुपालेमि ।

ततो अण्णया केणइ कालेण जवणविसयाहिवेण सपेसिओ दूओ आगतो इम नयरं । रायकुल च पविट्ठो दूयाणुरूवेण सक्कारेण महतेण सक्कारिओ । ततो अण्णया कयाइ अम्ह पिउणा समयण्णं नेऊण नाम विभवसरिस सपूइओ, उवविट्ठा य आलाव-सकहाहिं राय

१ °वमाणेज्जा° च । °वगणेज्जा° की ३ ॥ २ हू क ३ गो ३ ॥ ३ °सु निवडि° उ २ विना ॥ ४ साहिया शां विना ॥ ५ किह किह शां ॥ ६ °पदिसो° क ३ गो ३ ॥ ७ °यमह° मो से० स शां ॥ ८ °यवेज्झया° उ २ ॥ ९ °यहागय उ २ ॥ १० सीह° उ २ । एवमग्रेऽपि ॥ ११ °सवेप्प° शां ॥ १२ °हिय ए° शां ॥ १३ सो भीय भ° उ २ विना ॥ १४ °ण तज्जायरोगो शां० ॥

देस-कुसलवट्टमाणीहिं अच्छंति। अहं च णेण नियघरं पविसंतो दिट्ठो । तेण य पुच्छियं—कस्सेस दारओ? । तातेण भणियं—ममं ति । ततो तेण लवियं—किं इह विसए ओसही नत्थि? वेज्जा वा नत्थि? त्ति। तातेण भणिओ—अत्थि ओसहीउ, वेज्जा वि[2] त्ति एयस्स पुण मंदभागया अणोसहं चेव भवइ. नत्थि[3] य से उवसमो । ततो तेण लवियं—जो नवसंजातजोव्वणो आसकिसोरो तस्स रुहिरे मुहुत्तं पक्खित्तो[4] अच्छउ । एवं वदित्ता गतो सो ।

मम पिउणा पुत्तनेहेणं राउलओ आसो मारेऊणं जहाभणियं सव्वं कयं। ततो पच्छा रण्णा सुयं, जहा—सुबुद्धिणा आसो मारिओ । तओ राइणा रुट्ठेणं सारीरो निग्गहो सव्वकुलस्स आणत्तो । तं च सोऊण अहं खाईए पडिओ पलायमाणो पण्णियवाडं अइगतो । तेण य पण्णवाडसामिणा दिट्ठो, पुच्छिओ य—को[5] तं सि? कहिं वा वच्चसि त्ति? कस्स वा तुमं?। ततो से मया सव्वं जहावत्तं परिकहियं । ततो हं तेणं साणुकंपेणं घरं नीओ, आवासिओ य अच्छामि पिउ-माउ-सयण-परियणविप्पओगपरितप्पमाणसरीरो ।

तत्थ य इरिया-भासासमिता इह-परलोए य निरवकंखा फासुयं उंछं गवेसमाणा समणा भगवंतो घरं पविट्ठा, पणमिया य तेण घरसामिणा । वंदिया ततो मया, धम्मं पुच्छिया । कहिओ य तेहिं धम्मो अहिंसालक्खणो । उवगयं च मे जिणवयणं । ततो तेसिं सगासाओ सिक्खावया गहिया अणुव्वया य । गहियाणुव्वय-सिक्खावओ य कालगतो इह चेव पुरवरीए राया जाओ 'जियसत्तु'[6] त्ति । साहवो य दट्ठूण जाई सरिय त्ति । ततो अहं एत्तियाए सिक्खाए रायसिरिं पत्तो ॥

अस्सिं च देसकाले सपुर-जणवएणं सो राया जियसत्तू विण्णविओ—देवाणुपियस्स पुरे असुयपुव्वं संधिच्छेयं, संपयं च दुव्वहरणं परिमोसो य केणइ कओ. तं अरिहंतु णं देवाणुप्पिया! नयरस्स सारक्खणं काउं ति। ततो आणत्तो राइणा नगरारक्खो—सत्तरत्तस्स अब्भंतरे जहा चोरो घेप्पति तहा कुणसु त्ति। तं च रण्णा भासियं सोऊण मया चिंतियं—'एयं पसत्थं......को मम गमणस्स' त्ति परिगणेऊणं पुणो वि रण्णो पायवडिउट्ठिओ विण्णवेमि—जइ देवाणुप्पिया आणवेंति, पसादेण वा वट्टंति, ततो अहं सामिस्स पसादेण सत्तरत्तस्स अब्भिंतरे चोरं सामिपादमूलं उवणेमि । तं च वयणं राइणा पडिसुयं, अणुमण्णियं च 'एवं कुणसु' त्ति ।

अगडदत्तस्स चोरगहणववसाओ

ततो हं हट्ठमाणसो रण्णो चलणेसु पणमिऊण निग्गओ रायकुलाओ । चिंतियं च मया सत्थनिद्दिट्ठेहिं उवाएहिं—पाएण दुट्ठपुरिस-तक्करा पाणागार-जूयसालासु कुल्लरियावण-पउंग-

१ °कुल° क ३ गो ३ ॥ २ वेत्ति क ३ गो ३ । व त्ति उ २ ॥ ३ °त्थि आमओवस° ली ३ ॥ ४ पक्खित्तो कस० उ० । परिक्खित्तो शा०॥ ५ कओ सि ली ३ विना ॥ ६ °सत्तो त्ति कस०उ २ विना ॥ ७ आय स° कस० उ २ विना ॥ ८ °च्छेवा सं° ली ३ विना ॥ ९ °हउ ण,ली ३ ॥ १० °ली ३ विनाऽन्यत्र—एय पय पसत्थको क ३ गो ३ । एसवक्को उ० । एसव्वक्को शा० ॥ ११ रायणा डे० उ० ॥ १२ च तयी ली ३ ॥ १३ ली ३ उ० विनाऽन्यत्र—कुल्लरि° क ३ गो ३ । कुल्लूरि° शा० ॥ १४ °पदरत्त° ली ३ विना ॥

परिव्वायगावसह-रत्थर-चट्ट-कोट्टय-दासीघर-आरामुज्जाण सभा-पवासु सुण्णदेउल-विहारेसु ससिया अच्छंति तत्थ य चोरा उम्मत्तपरिव्वायगनाणाविहलिंगिवेसपरिच्छण्णा, धमणवे सधारिणो, विविहसिप्पकुसला य विणयविसारवयाए य भमति। ततो अहं एयाइं ठाणाइं अप्पणा चारपुरिसेहि य मग्गावेमि[3] चारावेमि। चारावेऊण य उवायकुसलो निग्गओ। निहाइऊण ईकओ चेव अहं एकस्स नवहरियपल्लवबहुसाहसीअलच्छायस्स सहयारपायवस्स हेट्ठा निविट्ठो दुब्बल-मइलवत्थो चोरगहणोपायं चिंतयंतो अच्छामि। नवरि य धाउरत्तव त्थपरिहिओ, एगसाडियाउत्तरासंगो, सत्थलट्ठियबद्धपरिकरो, तिदंड-कुंडिओलइयवामहत्थ खंधपदेसो, गणेत्तियावावडदाहिणकरो, नवरइअकेस-मंसुकम्मो, किं पि गुणगुणायंतो त चेव सहयारपायवच्छायमुवगतो परिव्वायओ। विवित्तभूमिभागे तिदंडयं अवलंबेऊण, अव पल्लवसाहं भंजिऊण उवविट्ठो। पेच्छामि[5] य णं पदीहरुंदणासं, उक्कुडुयसिरावेढियचलणं, उव्वद्धपिंडियावीहजंघं। आसंकियं च मे हियय स दट्ठूण—तक्करजणपावकम्मसूयगाइं च से इमाइं जारिसयाइं लिंगाइं दीसंति, नूणमेस चोरो पावकारि त्ति। भणइ य ममं—वच्छ! को सि तुमं अधितिमलसंतत्तो? किंनिमित्तं हिंडसि? कत्तो वासी? कहिं वा वससि? त्ति। ततो मया तस्स हिययहरणदक्खेण भणिओ—भयवं! उज्जेणीओ हं परि-क्खीणविहवो हिंडामि त्ति। ततो तेण परचित्तहारिणा भणिओ हं—पुत्त! मा बीहेहिं, अहं ते विउलं अत्थसारं दलयामि। मया भणिओ—अणुग्गिहीओ मि पिउनिव्विसेसेहिं तुब्भेहिं ति। जाव य एवं अण्णमण्णं सलवामो ताव य लोयसक्खी अदरिसणं गतो दिणयरो। अइकंता य संझा। तेण य तिदंड (ग्रन्थाग्र—१०००) गाउत्तत्थयं कड्ढिऊण बद्धो परियरो। उट्ठिओ य भणइ ममं—अइ! नगरं गच्छामो त्ति। ततो अहमवि ससंकिओ छेयबुद्धीप-यारेण तमणुगच्छामि। चिंतियं च मए—एस सो नयरपरिमोसओ तक्करो त्ति। पविट्ठा मो य नयरं। तत्थ य उत्ताणणयणपेच्छणिज्जं कस्सइ पुण्णविसेससिरिसूयगं भवणं। तस्स य आरामुहेण नहरणेण संधिं छिंदिउ पयत्तो सुहच्छेदभूमिभागे निविट्ठो। सिरिवच्छसं-ठाणं च छेत्तूण अइगतो मज्झ वि य जणियसंको। णीणिआओ य णेण णाणाविहभंडभरि-याओ पेडाओ। तत्थ य मं ठवेऊण गतो। ततो चिंतियं च मे—अत्तागमणं से करेसि, मा ण विणासेइ म ति। ताव य सो आगतो जक्खदेउलाओ सत्थिउए दरिद्दपुरिसे घेत्तूण। ते य ताओ पेडाउ गेण्हाविया, निग्गीया मो नगराओ। भणइ य ममं—पुत्त! एत्थ जिण्णु ज्जाणे मुहुत्तागं ताव निद्दाविणोयं करेमि[5], जाव रत्ती गलइ ताव गमिस्सामि त्ति। ततो

१ °वासेसहरथवडवट्ठ° क २ विना॥ २ °चासुण्ण° क १ उ २॥ ३ °मि चारावेऊण° ली० य विना॥ ४ इत्थाओ कस० उ० विना॥ ५ °थवसलपड्° उ २॥ ६ °मि जाणपदी° क २ विना॥ ७ उक्कुडुय° उ २ विना॥ ८ मम भणइ य दुक्खति, वच्छ! क २ विना॥ ९ कत्तो तुमं क १। कत्तो तुम गो ३ उ २॥ १० °व य पु° ली ३॥ ११ ममं नगरं अइग° उ २॥ १२ °द्धीय प° क २ विना॥ १३ °सओ। एवं पवि° उ २ विना॥ १४ °सेसि मं ति शां० विना॥ १५ मिरगइ° उ १ विना॥ १६ °रेम शां०। °रेमो उ०॥ १७ ततो ग° उ २॥

मया लवियं—तात! एवं करे[1]मो । ततो णे एक्कपास अइक्कता। ततो तेहिं पुरिसेहिं ठवियाउ पेडाउ, निद्दावस च उवगया। सो य अह च सेज्जं[2] अच्छरिऊण अलियसइयं काऊण अच्छामि।

ततो अहं सहर उट्ठेऊण अवक्कंतो रुक्खसछण्णो अच्छामि। तेण य निद्दावसगए जाणिऊण वीसभघाइणा निग्घिणहियएण ते पुरिसा मारिया। तो पच्छा मज्झ समीवमागतो, ममं र[3]त्तच्छयकुसुमपत्तसत्थरे अपेच्छमाणो मग्गिउं पयत्तो। ततो मया तरुगहणसाहपच्छाइअसरीरेण पहाइऊण सिग्घयाए चक्खुं हरिऊण मम अहिवडंतो अंसदेसे असिणा आहतो। ततो सो अद्धच्छिण्णसरीरो ढढप्पहारीकओ पडिओ। पच्चागयसन्नेण य अहं भणितो—वच्छ! मह इमो असी, एय च घित्तूण वच्च मसाणस्स पच्छिमभाग. गंतूण सति[4]ज्जघरस्स भित्तिभाए सद्दं करेज्जासि त्ति तत्थ भू[5]मिघरे मम भगिणी वसइ ताए एय असिं दाएज्जासि. सा ते भज्जा भविस्सइ, सव्वदव्वस्स य सामी भविस्ससि, अण्णं च तं भूमिघर. अहं पुण गाढप्पहारो अइक्कंतजीविओ त्ति।

ततो अहं असिलट्ठिं गहाय मसाणब्भासे[6] सण्णिविट्ठं सतिज्जघरं गतो। कतो य मे सद्दो। निग्गया य ततो भवणातो भवणवासि[7]णी भवणवणदेवया पेच्छणिज्जरूवा। सा भणइ—कतो सि तुमं? ति। ततो मया से असिलट्ठी दाविओ। विसण्ण[8]वयण-हिययाए य सोयं निगूहंतीए ससभमं अंतिनीओ[9] सतिज्जघर, आसण च मे दिन्नं। सुहवीसत्थोवायं[10]चारुकुसलो ससकियं से चरियं अ[11]वलक्खेमि। सा य मम अ[12]च्चादरेण कूरहियया सयणिज्जं रयइ। भणइ य—एत्थ सरीरवीसामं करेसि त्ति। ततो अहं तत्थ निद्दालक्खमुवगतो। वक्खित्तचित्ताए य अण्ण ठाणं गंतूण ठितो पच्छण्णं। तहिं च सयणिज्जे पुव्वजंतजोगसज्जिया सिला सा तीए पाडिया, चुण्णिया य सा सेज्जा। सा य हट्ठ-तुट्ठमणसा भणति—हा! हा! हतो भायघायउ त्ति। ततो अहं निद्दा(द्दा)इऊण तं वालेसु घेत्तूण भणामि—दासि! को मं घाएहि त्ति? । ततो सा मम पाएसु पडिया 'सरणागया मि' त्ति भणति। महिलासहावभयविब्भला मए आसासिया 'मा भाहि' त्ति। ततो तं घेत्तूण रायकुलं गतो। सव्वं च रण्णो जहावत्तं परिकहियं। सो य चोरो विवण्णसरीरो र[14]ण्णा आइट्ठेण णयरजणेण दिट्ठो। भगिणी से रायकुलं पवेसिया। जहासन्निहिअं च दव्वजायं जणस्स समप्पावियं। ततो र[15]ण्णा जणवएण य पूइतो हं। ततो पूया-सक्कारलद्धविहवो कयजयसद्दो पुरीए अच्छामि।

अगडदत्तस्स सामदत्ताए सद्धिं सदेसगमणं

ततो सामदत्ताए अगसुस्सूसकारिया दा[16]रिया सगमकारिया संगमिया नाम। सा य

१ °रेमो। ततो णे एक्कपास णेसो। ततो णे एक्क° ली० य० शा० विना॥ २ °ज्ज रइऊण ली ३॥ ३ सत्तच्छदपत्त° शा०॥ ४ °ज्झाघ° उ २। एवमग्रेऽपि॥ ५ भूमिगृहे मम उ २ विना॥ ६ °सेण णिवि° उ २ विना॥ ७ °णीव भव° शा०॥ ८ °ण्णहिय° ली ३॥ ९ अयनी° शा०॥ १० °ययारु° ली ३॥ ११ उवल° शा०॥ १२ सव्वाद° शा०॥ १३ °पुत्ति उ २ विना॥ १४ रण्णो उ २ विना॥ १५ °ण्णा पुरजण° उ २॥ १६ °रिगा आगया संगम° उ २॥

मम उवगतूण भणइ—अज्जउत्त ! मयणसरपहारदूमियहिययाए सामदत्ताए नेवसमागमसुसग्गीसंभोगसलिलोदएण आसासेहि सरीरयं किं बहुणा ? इच्छामहल्लकल्लोले असाररागभंगपउरे कामसमुद्दे निबुड्डमाणीए समागमउत्तारणपोतो होहित्ति असरणयाए सरणं। ततो सा मए करतलसंपुडेण घेत्तूणं हियए निवेदएण (?) तीए अग्गहत्थे भणिया—'सुयणु ! सज्जो हं सदेसं गंतुं ति आणेह सामदत्तं' ति भणिया। ततो सा गया, आगता य सामदत्ता। तं च अहं दट्ठूण नवपाउसकालकुसुमियकलंबरुक्खो विव कंटइयसव्वरोमकूवो जातो। ततो रूवविम्हयमयणसरसंतत्तहियएण धणियं उवगूहिया। सा वि य अणंगसरतावसोसियसरीरा दहमिव अंगमंगेहिं मे अतिगया। ततो सूरायवतत्तमिव वसुहं आसासेंतो तीय विम्हयणीयरूवं पेच्छंतो न तिप्पामि। समासासेऊण सामदत्तं दढवणेमीयं, पसत्थलक्खणतुरयजुत्तं, सच्छत्तं, गमणजोगं, सव्वोवगरण-पहरणसज्जं रहं घेत्तूण आगओ। आरुहिया य मे सामदत्ता रहवरं। ततो मे नियगबलदप्पमसहमाणेण जणस्स कित्तिविवरं मग्गंतेण नामं पगडियं—'जो भे देवाणुप्पिया ! नवियाए माऊए दुद्धं पाउकामो सो मम पुरओ ठाउ त्ति एस अहं अगडदत्तो सामं घेत्तूण वच्चामि' त्ति भणित्ता पत्थिओ उज्जेणिं विविहदव्वगहियपाहेओ। निग्गया य मो नयरीओ, कतो य मे दिसादेवयाण पणामो, चोइया तुरया, तुरयवेग-रहलहुयाए य दूरं गया मो। तत्थ य तुरगवीसामणनिमित्तं एगते सीयलजलब्भासे [* आसे *] वीसमंतो सरीरजवणत्थं आहारं थोवं थोवं च अहिलसंतो सामदत्ताचित्तरक्खणनिमित्तं। सा वि य सामदत्ता चयणविप्पओगदूहियहियया मम अणुरागेण सोयं निगूहमाणी कह कह वि आहारं आहारेइ। ततो एवं वच्चामो। पत्ता मो अंतियगामं वच्छाजणवयस्स। तस्स य गामस्स अदूरसामंते पाणियसमीवे वासेऊण तुरए चारेमाणो अच्छामि।

पिच्छामो य गामसमीवे महंतं जणसमूहं। तओ दुवे पुरिसा आगतूण मम भणंति—सागयं सामि !, कत्तो आगमणं ? ति, कत्तो वा गम्मइ ? त्ति। ततो मया लवियं—कोसंबीओ आगच्छामि, उज्जेणीं वच्चामि त्ति। ते भणंति—अम्हे वि तुब्भेहिं समं वच्चामो उज्जेणिं जइ पसाओ अत्थि। मया भणियं—वच्चह त्ति। ततो ते पुणो वि मम भणंति—सामि ! सुणह, इत्थ किर पंथे हत्थी मारेति, दिट्ठीविसो सप्पो, दारुणओ वग्घो, अज्जुणओ चोरसेणावई पंचहिं निउंजसएहिं सद्धिं सपरिवुडो सत्थे घायमाणो अच्छइ त्ति किह गंतव्वं ? ति। ततो मया भणियं—नवरि मम छंदेण वच्चह त्ति, नत्थि मे पहुभयं ति। एवं भणिया सत्था 'जहा आणवेह' त्ति भणिउं गया। तेहि य तेसिं सत्थेल्लयपुरिसाण जहाभणियं परिकहियं। 'तहं' त्ति ते भणिऊण सव्वे गमणसज्जा जाया।

---

१ सवग° उ २ विना ॥ २ मवंस° मो गो ३ ॥ ३ °ण हियए निवेवेऊण तीए शां । °ण तीए उ० ॥ ४ समास° शां ॥ ५ कलुह° क ३ ॥ ६ °सरसो° शां० विना ॥ ७ °र्ण दट्ठूण मम° उ २ ॥ ८ °यामो य नं° उ २ विना ॥ ९ °हित्ति उ २ विना ॥ १० निगुहस° उ २ ॥ ११ ते (मे) प°-शां विना ॥

इत्थंतरे य तिदंड-कुंडियवग्गहत्थो एगो परिव्वायगो तेसिं पुरिसाण समीवे आगंतूण भणति—पुत्त! कत्थ भे गंतव्वं? ति । तेहिं भणियं—उज्जेणिं त्ति । ततो सो भणइ—अहं पि तुब्भेहिं समं उज्जेणीं वच्चेज्जा । तेहिं भणियं—सामि! अणुग्गहो णे, वच्चेह । ततो से एगं पुरिसं सत्थमहत्तरयं उस्सारेऊण भणति—'पुत्त! ममं एगेण भिक्खायरेण देवस्स धूवमुल्लं पंचवीस दीणारा दिन्ना' पर्व[1] भणिऊण धुत्तीए कूडदीणारे तस्स दाइए[2] । ततो सो सत्थमहत्तरओ भणति—भयवं! मा बीहेह, अम्ह बहुतरा[3] दीणारा अत्थि, जं अम्हं होहिति तं तुब्भं पि होहिति । ततो सो परितुट्ठो समाणो आसीस पउंजिऊणं मम सगासं आगंतूण तं चेव सव्वं परिकहेइ, कहित्ता[4] य गतो । ततो चिंतियं मया—'न सोहणं एएण समं गमणं. निच्छएण एस तक्करो परिव्वायगो. जत्तं करेयव्वं, अप्पमाओ य' एवं परिगणेऊण दिवससेसं खवेमि ।

अगडदत्तस्स अडवीए गमणं

ततो सूरत्थमणवेलाए तुरए पाणियं पाएऊणं जोइओ रहवरो । सामदत्ता य कयसरीरपाणियकज्जा रहं विलग्गा । ततो मे तुरया दुयं विलंबिया । ततो य मे अडविदेवयाणं[5] पणामो कतो, विलग्गो रहवरं, सगहियाँ[6] आसरासीओ, चोइया तुरया, पयट्टिओ रहवरो गंतुं पयत्तो । ततो ते सत्थेल्लयपुरिसा तेण सह परिव्वायएणं पभूयगहियभत्त-पाहेज्जा रहवरं मे समेंहेंति[7] । समइक्कंता यं[8] तो जणवयं, पविट्ठा य मो अडविं, अप्पसुहाहिं वसहीहिं वसमाणा वच्चामो । पत्ता[9] य मो णाणादुम-लयगहणसंछण्णपायवुद्देस एगं गिरिनदिं । तत्थ मे ठविओ रहवरो रहपरिहिंडणसुहे भूमिभागे । सो वि य सत्थेल्लजणवओ अप्पणा जहिच्छियासु रुक्खच्छायासु आवासिओ ।

ततो सो परिव्वायओ ते[10] भणइ—'पुत्त! अहं भे अज्ज सव्वेसिं पाहुण्णयं करेमि. एत्थ य अडवीते गोउलं. तत्थ मैया[11] पयागं गच्छंतेण उज्जेणीओ आवंतेण परिसारत्तो कओ. ते य मे गोवा परिचिया, तत्थ वच्चामि. तं तुब्भे अज्ज मा रंधण-पयणं करेज्ज' त्ति भणिऊण[12] गतो । तओ मज्झण्हदेस-काले पायस-दहि-दुद्धभंडए य विससजुत्ते काऊणं आगतो । ते भणइ—पुत्त! एह, देवसतियं भत्त-पाणं भुंजह । ततो तेहिं मम समीवं एगो पुरिसो पेसिओ—सामि! एह, भुंजह त्ति । ततो मया भणियं—सीसं मे दुक्खइ त्ति. तुब्भे पुण एयं अण्ण-पाणं[13] मा भुंजेह[14] जइ मे सुणह । ततो सो पडिसेहिओ । कहियं च णेण तेसिं पुरिसाणं, तस्स य परिव्वायगस्स । ततो परिव्वायगो आगंतूण भणति—देवाणुप्पिया! गेण्ह देवकियं सेसं ति । मया भणियं—सविसेस मे ण जीरइ त्ति । तत्तो सो 'महादुट्ठो[15] अय'

---

१ एय भ° क ३ गो ३ ॥ २ दाएइ उ २ ॥ ३ °रया दी° उ २ ॥ ४ कहेत्ता उ २ ॥ ५ °वाण उ २ विना ॥ ६ °या य मे रस्सीओ शा० ॥ ७ °ह्लति क ३ ॥ ८ य मो ज° कस० उ २ ॥ ९ पस्स° शा० विना ॥ १० ते उ २ विना ॥ ११ °या गता ग° ली ३ ॥ १२ भाणि° उ २ ॥ १३ भत्तपाणं उ० ॥ १४ °ह त्ति जइ ली० य० क ३ गो ३ ॥ १५ °ट्ठा इम चिं° शा० विना ॥

त्ति चिंतेऊण गतो, तेसिं पुरिसाण सुहासणवरगयाण त भत्तमप्पणा एव परिकरबद्धो परिवेसण करेइ। ततो ते अण्णाणयाए विससंजुत्त भत्त पाणं सुहसुहेण उवभुजंति। ताव य सूरो अवरदिसिं [1]अहिल्लसइ। ततो ते विसपरिगयसरीरा अचेयणा ठिया। ततो विदड्डहाओ असिं कड्डिऊण तेसिं सीसाइ छिंदित्ता असिहत्थो मम मूल धायमाणो आगतो। मम खधे असिं निसिरंतो मया खेडएण वंचिऊण खग्गेण निसिट्ठमुट्ठिएण रोसेण आहतो, जहा से ऊरुजुयलो घर[2]णिवट्ठे पडितो।

[3]ततो सो भणइ—पुत्त! अह धणपुजतो (ग्रन्थाग्रम्–११००) नाम चोरो, न केणइ छलियपुव्वो साहु तुम सि सुपुरिसो एक्को माऊए जातो त्ति। पुणो य मे सलवइ—'वच्छ! एयस्स पव्वयस्स पुरिच्छिमिल्ले [4]फोलंबे दोण्ह नतीण मज्झदेसभाए अत्थि महइमहालिया पत्थरसिला तत्थ भूमिघरं तत्थ मया सुप्पभूय धण विढत्त थव, गेण्हसु त्ति मम य अग्गिसक्कारं करेहि' त्ति भणित्ता कालगतो। ततो अह दारुते साहरित्ता झामेमि झामेत्ता, हत्थे पाए य पक्खालेत्ता, रहवर जोएत्ता पट्ठिओ। चिंतिय च मया—किं मे धणेण? त्ति।

ततो मे पय समोयारिया तुरया। सामदत्ताए सद्धिं वयामि त्ति। पत्ता य मो णाणाविहरुक्खगहण, [5]वेल्लि-लयाबद्धगुच्छ-गुम्म, गिरिकंदरनिज्झरोदरियभूमिभाग, णाणाविहसउणरडियसद्दाणुणाइय, अईवभीसणकरं, भिंगारविरसरसियपउरं, [6]कत्थइ थम्घ ऽच्छभल्लधुरुधुरेंतसुहल, वानर-साहामिएहिं रवमाणसद्द, पुक्कारिय दुदुयाइएण य कण्णसद्दालभीसणकरं, पुलिंदवित्तासिएहि य वणहत्थिविंदएहिं गुलगुलेंतबहुल, कत्थइ मडमडस्सभज्जतसल्लइवण, कत्थइ [7]वोच्छडियससिमिति-[8]बहुल-मास भिण्णभयघडिया कूरऊसलीओ य पविरलतेल्लभायणे य बहुविधपयारे [9]छत्तयउवाहणाउ य छड्डियाउ पासिऊण चिंतिय मया—इत्थिघोरभयवित्तासियस्स सत्थिल्लयजणस्स इह विद्दवो नूणमासि त्ति। तत्थऽब्भासे पेच्छता अडवीए वयामो। पेच्छामि य जूहपरिभट्ठ पकल्लमहतपलयघालप्पमेयग पुरओ (?) मग्गब्भासे ठिय वणहत्थिं। त च दट्ठूण सामदत्ता भीया। आसासिया य मए सामदत्ता, भणिया य—भीरु! अम्ह रहसद्द सोऊण आलइयकण्णो रोसवसाइद्धो आहाइउकामो अइउग्गयाए य भूमिनिसण्णेण जहणेण बद्धो विव दीसइ। ततो सो सवेल्लियग्गसोंडो, निद्दारियच्छिजुयलो विरस आरसिऊण अग्गहत्थेण भूमितल आहतूण मम वहाए दुक्समागतो। ततो मेए आहावतस्स सिग्घयाए अमूढयाए य तिण्णि सायगा कुम्भीभागम्मि लाइया। तेहि य सो गाढपहारदूमियसरीरो खरं आरसिऊण गरुसाहाउ [12]भंजतो विपलातो। ववगयभयाए य भणिय सामदत्ताए—गतो सो गयवरो? त्ति। मया भणिया—सुयणु! गतो त्ति।

१ अहिवस° खी १ ॥ २ °णिवट्ठे क १ गो १। णियले खी १ ॥ ३ सो सो खी १ गो १ ॥ ४ काल° उ २ विना ॥ ५ वेल्लियाव° शां ॥ ६ °गत्थइ° उ २ विना ॥ ७ वोच्छिदितससि° शां ॥ ८ बहुल° शां विना ॥ ९ °छ महत च २ ॥ १ मे आवत° शां ॥ ११ णिण ताणा साय° च ॥ १२ भंजितो च २ विना ॥

ततो पट्टिया मो, गया य थोवंतरं, सुणामि य लोहाकरधम्ममाणधमधमेंतसद्दं । आसंकिओ णे हियएणं—सप्पेण य भवियव्वं ति । पेच्छामो य पंथम्मि ठियं पुरतो, अंजणपुंजनिगरप्पयासं, निल्लालियजमलजुयलजीहं, उक्कड-फुड-वियड-कुडिल-कक्खड-वियडफडाडोवकरणदच्छं, तिभागूसियसरीरं, महाभोगं नागं । भीया य सामदत्ता, परिसंठविया य मे । तुरग-रहसद्दसंजणियरोसो आहाइओ भुयंगमो । आधावंतस्स य मया आयतजंतेपमुक्केणं अद्धयंदेणं[3] सभोगं से सिरं धरणियले पाडियं । तओ तं परलोयपाहुणयं काऊण वच्चामो ।

पेच्छामो य अपरितंतकयंतनिव्वडियदुक्खं, पुरतो पलंबंतकेसरसढं, महल्लविफालियनंगूलं, रत्तुप्पलपत्तनियरनिल्लालियग्गजीहं, आभंगुर-कुडिल-तिक्खदाढं, ऊसवियदीहनंगूलं, अइभीसणकरं वग्घं । अइभीसणं च तं दट्ठूण सामदत्ता अदिट्ठपुव्वभया भीया थरथरायमाणसव्वंगी उव्विग्गचित्ता वग्घं पलोएइ । भणिया य मे—सुंदरि! मा बीहेह त्ति । सो वि उच्छरंतो विव आहाइतो वग्घो । तस्स य मे आहावमाणस्स कणवीरपत्तसत्थसफला पंच बाणा मुहे छूढा । ततो सो तेहिं बाणेहिं गाढप्पहारीकतो विपलाओ ।

ततो पुणो य पिच्छमाणं णाणाविहपहरणावरणसंकुलं, उक्किट्ठिपडिहत्थेल्लियरवुम्मीसं विविहपहरणावरणगहियसन्नाहं परबलं च पत्तं । चिंतियं च मया—एए चोरा अम्हे परिमुसिउकामा इओ आगच्छंति । ते दट्ठूण विविहवेसधारिणो पकंपमाणसव्वसरीरा ममं मग्गहिउं पयत्ता सामदत्ता । भणिया य मया—मा विसायं गच्छाहि, पेच्छ, मुहुत्तंतरे एते पउरचोरे सव्वे जमनिलयं नेमि त्ति । ततो सा पयइकायरहियया मम वयणेण परिसंठविया । अहमवि तेहिं समंतओ परिवारिओ । मए वि अत्थ-सत्थनिउणत्तणेण पडुयत्तणेण य सरप्पहारवित्तासिया भग्गा समंततो विपलाया । ततो तेसिं सेणावती वायामकढिणगत्तो धणुविकड्डणपलंबदीहबाहुजुयलो चोरे आसासितो रहप्पहारजोगे भूमिभागे सण्णद्धोवट्ठिओ अज्जुणओ नाम । अहमवि तुरए आसासेऊण सव्वाउहपरिहत्थ अप्पाणं काऊण वाहिओ मे रहवरो ततोहुत्तो । तेण वि य ममंहुत्तो पयट्टाविओ तुरओ । तओ सरपहकर-चडगर-परपराहिं अण्णोण्णस्स छिद्दं मग्गमाणा जुज्झामो । ततो से अंतरं अलभतेणं चिंतियं मए—समत्थो एस चोरो. न एस सक्कइ एवं पराजिणित्ता. एस रहजुज्झकुसलो अण्णहा छलेउं न तीरइ. अत्थसत्थे य भणियं—

"विसेसेण मायाए सत्थेण य हंतव्वो अप्पणो विवड्ढमाणो सत्तु" त्ति ।

'इमं च एत्थ जुत्तं' ति एसा सामदत्ता सव्वालंकारविभूसिया रहतुंडे पसिढिलअहोवत्था ठायउ, एईए रूवावेसियचक्खू हंतव्वो । ततो मे ठविया सामदत्ता रहतुंडस्स पुरतो । ततो सो रूव-जोव्वण-विलासविम्हियहियतो तत्थगयदिट्ठी । ततो से मया विहलं [11]दिट्ठिं

१ °वयो त्ति सप्पे° शा० विना ॥ २ °ता पमु° उ २ ॥ ३ °द्धचंदे° ली ३ ॥ ४ पडि° उ २ विना ॥ ५ °रथरा° उ २ ॥ ६ °माणो उ २ ॥ ७ च एत उ २ ॥ ८ समं परि° उ २ विना ॥ ९ °द्धो व्विट्ठि° उ २ विना ॥ १० °भमाहु° उ २ ॥ ११ दिट्ठं आणित्त नी° उ २ विना ॥

जाणिऊण नीलुप्पलसन्निगासेण आरामुहेण थणपएसे आहतो । ततो सो तुरगाओ उयरिऊण भणइ—

नाहं बाणेण हओ, हओ मि बाणेण मगरकेउस्स ।
जो भडणे पयत्तो, महिलाण मुहं पलोएमि ॥

एवं च सो वदित्ता कालगओ । ततो तस्स ते चोरपुरिसा सेणावइं मारियं दट्ठूण विवण्णपहरणावरणा पलाया ।

अगडदत्तस्स गिहागमणमाइ

तो हं निब्भियसत्तू अज्जुणयं हतूण सामदत्तं च समासासेऊण पत्थिओ उज्जेणिं, पत्तो य कमेण, पविट्ठो य माऊए घरं । निद्धाइया य मम आगमणं सोऊण पुत्तवच्छला मे माया । रोवमाणीए य रहाओ उइण्णो अवयासिओ अग्घाइओ य सीसे । सा वि य सामदत्ता ध्यारिया रहातो, पडिया अम्मोपाएसु । आणंदियहिययाए य अवयासिया, अविहवमंगलेहिं य अहिनंदिया, घरं च णाए पवेसिया । सयण मित्त-बंधुवग्गो य पियपुच्छतो आगतो जहाविहवं सपूइओ । पेसजणेण य तुरया रहो य जहाठाणं पवेसिया ओरुभिया य । सव्वत्था आउह-पहरणोपकरणाणि य घरं पवेसियाणि ।

ततो अवरदिवसे मज्जिय-जिमिय पसाहिओ रायकुलं रायदरिसणनिमित्तं गतो । तओ पडिहारसंविओ पविट्ठो । दिट्ठो य मे राया पणमिओ य । कहियं च से 'अमुगपुत्तो' त्ति । ततो परितुट्ठेण राइणा सव्वं मे पिउसतियं कम्ममणुण्णायं, दुगुणो य पूयासक्कारो कओ । ततो अहं लद्धरायसक्कारो नियगघरं गतो माउसुस्सूसणपरायणो सामदत्ताए समं कालं गमेमि ।

ततो अण्णया कयाइ रन्ना पुरस्स उज्जाणजत्ता आणत्ता । निग्गओ राया । जणवओ य जहाविहव-इड्ढि-सक्कारविसेसेहिं अण्णोण्णं अइसयमाणो नियगविहवं-रूयए दायंतो निग्गतो । अहमवि नियगमित्त-बंधुवग्गपरियरिओ सविभवविया़णरूएण इड्ढिविहवेण सामदत्ताए सद्धिं उज्जाणं गओ । तत्थ य विविहखज्ज-पेज्ज-गीय-वाइय-हासरवसद्दवोमीसेण उज्जाणे पीइसुहं जणो अणुहवति, अम्हे वि ।

ततो जहासुहं अणुहविऊण परियणसहिओ अवरण्हवेलाए तओ अइगतु पयत्तो पुरजणो । अम्हे वि य सज्जा नयरं पविसिउं, ताव य सामदत्ता अइमुत्तयवल्लिदोलाए खेलती काकोदरेण सप्पेण खइया । ततो धुणती सा अग्गहत्थे आहाविऊण मम उच्छंगे पडिया 'अज्जउत्त[1] परित्तायह, अवरद्धा मि' त्ति भणति । ततो मया ससंभमहियएण 'मा माहि' त्ति भणिया, उवगूढा य । विसवेगपुण्णा खणेण य अचेयणा जाया । तं च दट्ठूण जीयविप्पमुक्कं मोहमुवगतो हं । पच्छाऽऽगतो य बहुं विलवामि, ताव य अत्थगतो दिवसयरो । विसज्जिओ मे परिजणो घरं अम्माए मूलं । अइकता य संझा । अहमवि तस्स उज्जाणदेवकु-

१ °साहिओ शां० ॥ २ °राइणो क ३ गो ३ ॥ ३ °वसूय° ली ३ य विना ॥ ४ °वामी° ली ३ उ०

लस्स तं घेत्तूण दुवारमूले अच्छामि विलवंतो 'हा सामदत्ते! बहुदुक्खसहाइए! कीस ममं परिच्चयसि?' त्ति सोयपुण्णहियतो ।

तत्थ य अद्धरत्तवेलाए अइक्कमंतविज्जाहरजुयलस्स अम्हं चेव भवियव्वयाए अणुकंपा जाया । उवइयं च मिहुणयं । भणिओ य णेहिं अहं—केण एसा विवण्ण? त्ति । ततो मया भणियं—अहिणा खइया । ततो तेण साणुकंपेण सहत्थेण छित्ता 'किं सुवसि?' त्ति भणंतेण ततो सा उट्ठिया । मया वि सो विज्जाहरतरुणो पणमिओ, गतो अद्दंसणं गयणमग्गेणं ।

अम्हे वि देवउलं उवगया । भणिया य मे सामदत्ता—मा बीहेसि, अच्छ मुहुत्तं जाव मसाणाओ अग्गिं आणेमि । ततो हं अग्गिं घेत्तूण आगतो, पेच्छामि य तम्मि देवकुले उज्जोवं । पुच्छिया य मे सामदत्ता—किमेस उज्जोवो? त्ति । ततो तीए लविअं—हत्थगयस्स ते अग्गिस्स देवउले उज्जोओ सकंतो दीसइ । ततो मया लविअ—असिलट्ठिं ताव गिण्हसु जाव उज्जोवं करेमि त्ति । गहिया य तीए असिलट्ठी । ततो अहमवि अग्गिं उज्जालेउं पयत्तो । अग्गओ य मे असिलट्ठी पडिया । ससंभंतेण य पुच्छिया—किमेयं? ति । ततो तीए लविअ—संभमो मे जातो, जेण मे असिलट्ठी हत्थाओ भट्ठ त्ति । ततो अग्गिं जालेऊण पविट्ठा मो देवकुलं, वसिया य । गया य सा रयणी । विमलं पभायं जायं । तओ य पभायकाले[1] मित्त-बंधव-सयण-परिजणो य सोऊण 'अणहयसरीरा जाया सामदत्त' त्ति आणंदियाँ[3] । हरिसिया यँ मो देवउलाओ घरमागया । अम्मा य ममं सामदत्तासहियं दट्ठूण परं परितोसमुवगया । विसयसुहं च अणुहवंतो सामदत्ताए सद्धिं अच्छामि ।

अह अण्णया कयाइ रॅइणा आणत्तो—वच्च दसपुरं अमित्तदमणस्स रन्नो दूयत्तणेणं ति । ततो हं तं आणं पडिच्छिऊणं नियगपरिवारसपरि(ग्रन्थाग्रम्–१२००)वुडो गओ दसपुरं, पविट्ठो य, पडिहारसॅविओ य रायसगासं उवगतो । दिट्ठो य मे राया । पणमिऊण य जहासदेसं विण्णविओ । उवणीयाणि पाहुडाणि । दिण्णावसह-लद्धसक्कारो य अच्छामि ।

तत्थ य मज्झण्हदेस-याले सुत्तोवदिट्ठेण विहिणा तस-पाण-बीयरहिएणं पंथेणं जुगंतरदिट्ठी तवतणुइयसरीरो समणसंघाडगो आवासं मे भिक्खानिमित्तं अइगतो, साहुजोगे य पएसभागे ठितो । ततो मया पणमिऊण जहोववण्णसाहुजोगेणं फासुयदाणेण पडिलाभितो, निग्गतो य । तयणंतरं च पुणरवि बिइओ संघाडगो आगतो, दिण्णा य से भिक्खा, ततो ते वि णिग्गया । मुहुत्तंतरस्स पुणरवि तइओ संघाडगो पविट्ठो । चिंतियं च मया—किं मण्णे मग्गपरिभट्ठा, उदाहु मंदभिक्खयाए, घरगंभीरत्तणविवज्जासेण वा पुणो पुणो आगच्छंति इमे साहू? । ततो मे भिक्खं दाऊण विन्नविया—भयवं! कहिं परिवसह? । तेहिं भणियं—उज्जाणे त्ति । एवं भणिऊण पडिगया । अहमवि मुहुत्तंतरेण कयभत्त-पाणा-ऽऽव-

१ हे उ २ विना ॥ २ °ले मे सव्वबं° उ २ विना ॥ ३ °यह° उ २ विना ॥ ४ क० सो० विनाऽन्यत्र—य, माइघर°, ली ३ गो० शां० । य, मो घर° उ० ॥ ५ रायणा शां० । रण्णा ली ३ ॥ ६ °साहिओ शां० ॥ ७ °वासघरे भि° शां० विना ॥

स्सए जाणिऊण एक्कओ चेव गओ उज्जाणं। पेच्छामि य ते तवसा सूरो इव दिप्पंते। उवगम्म पणमिया मे, उवविट्ठो य तेसिं पायमूले। पुच्छिया य मे—भगव! भगवतो को धम्मो?। ततो तेहिं अहिंसादिलक्खणो साहुधम्मो सावयधम्मो गुत्तिमूलो य संखेवेण कहिओ। ततो मे अमयमिव कण्णजलीहिं पाउ विम्हियहियएण पुच्छिया—कसोवया भयव! तुब्भे? किह या पवज्जाभिमुहा जाया?, सरिसरूवधारिणो य पढमजोव्वणे वट्टमाणा दीसह, परमो य मे विम्हओ तुब्भे दट्ठूण जाओ त्ति। ततो ताण जेट्ठेण लविय। सुण सावय! अवहिओ—

दढधम्माइमुणिछक्कसंबंधो

अत्थि विंझगिरिसंनिविट्ठा अमयसुंदरा नाम चोरपल्ली। तत्थ य चोरसेणावती अणेगपल्लिगयप्पयावो अज्जुणओ णाम। सो य बहुसमरलद्धलक्खो पल्लीजणमणुपालेंतो परिवसइ।

अह ऽण्णया कयाइ कोइ रहेण तरुणीसमग्गो तरुणो अडवीए अइक्कमति। ततो तेण सेणावइणा अभिभूओ। तेण य रहचरियाकुसलेण विवाडिओ, सो य अम्ह जेट्ठो भाया। ततो अम्हे छ ज्जणा भाउसोयसतत्तहियया, विसेसओ य इत्थिजणेण नेम्मच्छियता त रहमग्गेण अणुसरंता उज्जेणिं गया भाउघायय मारेउं। 'एसो से' त्ति तस्स य छिद्दाइं मग्गंता अणुगच्छामो।

ततो अण्णया कयाई उज्जाणजत्तं गतो। चिंतियं च अम्हेहिं— एत्थ वीसत्थो हंतव्वो त्ति। उज्जाणं गया मो, तत्थ य कणिट्ठो मे भाया अहिमरो पउत्तो, अम्हे वि एगंते अच्छामो। ततो सव्वजणे नियत्ते तस्स भज्जा सप्पेण खइया, उवरया य सा। तेण य सव्वो नियगजणो विसज्जिओ। एक्कओ चेव देवउलदुवारमूले घेत्तूण विलवंतो अच्छइ। अम्ह य भाया दीवसमुग्गयहत्थो पुव्वपविट्ठो तम्मि देवउले तं मारेउं कयववसावो। ततो तहिं विज्जाहरेण अइक्कमंतेण जायाणुकंपेण सा जीवाविया, उट्ठिया य। ततो य से तरुणो तं तरुणिं देवउले ठवेऊण अग्गिकारणा गतो। ताव य अम्ह भायणा अग्गिसमुग्गो उग्घाडितो। सा य भणिया—अहं ते भत्तारं विवाडेऊण तुमं घेच्छामि जइ य रहस्सभेयं करेसि ता तुमं पि नत्थि त्ति। तीए भणियं—अहं चेव णं मारयामि। ततो तेण अम्ह भाउणा लवियं—किह तुमं मारेहिसि?। तीए भणियं—एस अग्गिं घेत्तूण एहिति, मम य हत्थे असिलट्ठिं वाहिर, ततो अहं तस्स अग्गिं जालिंतस्स सीसं छिंदामि त्ति। तओ अम्ह भाउणा अब्भुवगयं। आगओ य सो अग्गिं घेत्तूण। भणइ य—किं देवउले उज्जोव? त्ति। ततो तीए लवियं—तुहं हत्थगयस्स अग्गिस्स एस उज्जोउ त्ति। ततो तेण लविया—एयं ताव असिलट्ठी गिण्हसु त्ति, जाव अग्गिं जालेमि त्ति। गहिया य ताए असिलट्ठी। सो य अग्गिं जालेउं पयत्तो। सा य असिलट्ठिं कड्ढिऊण आहंतु पयत्ता। ततो अम्ह भाउणा चिंतियं—'अहो!!! साहसं महिलाणं' ति हियए चिंति-

१ सूरा उ २ ॥ २ पीओ से ली ३ विना ॥ ३ सो हु त्ति उ ॥ ४ °ठे बार° ली ३ क ३ गो ३। °ठे दुवार° उ ॥ ५ °ससगं क° शां ॥

ऊण हत्थे आहया । पडिया य सा भूमीए असिलट्ठी । संभंतो सो तरुणो पुच्छइ—किमेयं? ति । ततो तीए लवियं—मोहो मे जाओ, तेण असिलट्ठी हत्थाओ भट्ठ त्ति । ततो ते रत्तिं खवेऊण णाइप्पभाए घरं गया ।

सो य मे भाया पडिमापडिच्छादितसरीरो रत्तिं गमेऊण आगतो अम्ह पासं सव्वं जहावत्तं साहइ । ततो अम्हे छ वि जणा इत्थिजणसाहसं दट्ठूण विरत्तघरवासा, इत्थिजणं च निंदंता, निव्विन्नकामभोगा पव्वइया जिणसासणधम्मं सोऊण दढचित्तस्स पायमूले । तेणं य गुरुणा संवेगं जाणिऊण नामाणि कयाणि, तं जहा—दढधम्मो, धम्मरुई, धम्मदासो, सुव्वओ, दढव्वओ, धम्मपिउ त्ति ॥

ततो तेहिं साहूहिं एवं कहिए धम्मिल्ल! मया पणमिऊणं विण्णविया—'भयवं! अहं सो तुब्भं भायघायओ म्हि. जहाकहियं च तुब्भेहिं सव्वं मए अणुभूयं. जं तीए साहसं तुज्झ समीवाओ उवलद्धं, इत्थीजणसद्धा य मे नट्ठा. तं मम पसीयह, संसाराडवीकडिल्ले पणस्संतस्स जिणमग्गदंसणेणं अणुघेत्तुं सहत्थनित्थारणं करेह' त्ति वोत्तूण चलणेसु निवडितो । ततो तेहिं अहं धम्मे ठविओ । दिण्णा य[3] मे महव्वया, धम्मोवगरणं च ॥

एवं मया संसारवाससुलहं सुह-दुक्खमणुभूयं. तं मा अबुहजणपत्थणिज्जासु बुहजण-परिवज्जियासु महिलासु अतीव रइपसत्तो होहि अवि य—

गंगाए वालुयं सा-यरे जलं हिमवतो य परिमाणं ।
जाणंति बुद्धिमंता, महिलाहिययं न याणंति ॥

तं एवंगुणजाइयासु वेसविलासिणिमहिलियासु को ते एत्तिओ अणुराओ? जं अप्पाणं परिखयसि. विरमसु महिलाजणवग्गाओ 'इह-परलोएँ वि दुहावहाउ' त्ति परिगणेऊणं ॥

ततो धम्मिल्लेण अगडदत्तो विण्णविओ—भयवं! न सव्वो इत्थिजणो एवंगुणजाइओ त्ति. सोहणाओ वि अत्थि, जहा सा धणसिरी परपुरिसविद्देसिणी अप्पाणं सारक्खमाणी बारस वरिसाणि अच्छिया तारुण्णए वि वट्टमाणीए न चेव सीलवयाणि खंडियाणि । ततो भयवया अगडदत्तेण भणितो—का सा धणसिरी? किह वा बारस संवच्छराणि अप्पाणं सारक्खमाणी अच्छिय? त्ति । तेण भणियं—सुणह भयवं!—

दढसीलयाए धणसिरीणायं

अत्थि अवंती नाम जणवओ । तत्थ उज्जेणी नाम नयरी रिद्धित्थिमियसमिद्धा । तत्थ राया जियसत्तू नाम । तस्स रण्णो धारिणी नाम देवी । तत्थ य उज्जेणीए नयरीए वसदिसिपयासो इब्भो सागरचंदो नाम । भज्जा य से चंदसिरी । तस्स पुत्तो चंदसिरीए अत्तओ समुद्ददत्तो नाम सुरूवो । सो य सागरचंदो परमभागवउदिक्खासं-

---

१ °ववित्तिस्स डे० गो ३ । °वधितिस्स शां० ॥ २ °णेय णे गुरु° उ २ ॥ ३ से उ २ विना ॥ ४ °लुयाण य सायरजलहिमव° क ३ ॥ ५ °ए य अहितावहाउ शां० ॥ ६ °हणो वि क ३ ॥

पत्तो भगवयगीयासु सुत्तओ अत्थओ य विदितपरमत्थो। सो य त समुद्ददत्त दारग गिहे परिव्वायगस्स कलागहणत्थे ठवइ, 'अन्नेसालासु सिक्खतो अण्णपासडियदिट्ठी हवेज्जा'।

ततो सो समुद्ददत्तो दारगो तस्स परिव्वायगस्स समीवे कलागहण करेमाणो अण्णया कयाइ 'फलग ठवेमि' त्ति गिह अणुपविट्ठो। नवरि च पासइ नियगजणणी तेण परिव्वायगेण सद्धिं असब्भमायरमाणीं। ततो सो निग्गतो इत्थीसु विरागसमावण्णो 'न एयाओ कुल सील वा रक्खति' त्ति चिंतिऊण हियएण निब्बध करेइ, जहा—न मे वीवाहेयव्व ति। ततो से समत्तकलस्स जोव्वणत्थस्स पिया सरिसकुल-रूव विहवाओ दारियाओ वरेइ। सो य ता पडिसेहेइ। एव तस्स कालो वयइ।

अण्णया तस्स सम्मएण पिया सुरट्ठमागतो ववहारेण। गिरिनगरे धणसत्थवाहस्स धूय धणसिरिं पडिरूवेण सुकेण समुद्ददत्तस्स वरेइ। तस्स य अन्नायमेव तिहिग्गहण काऊण नियनगरमागओ। ततो तेण भणितो समुद्ददत्तो—'पुत्त! मम गिरिनयरे भड अच्छइ, तत्थ तुम सवयसो वच्च ततो तस्स भडस्स विणिओग काहामो' त्ति वोत्तूण वयसाण य से दारियासबध सविदित कय। तओ ते सविभवाणुरूवेण निग्गया, कहावि सेसेण य पत्ता गिरिनयर। बाहिरओ य ठाइऊण धणस्स सत्थवाहस्स मणुस्सो पेसिओ, जहा 'ते आगओ वरो' त्ति। ततो तेण सविभवाणुरूवा आवासा कया, तत्थ य आवासिया। रत्तीए आगया भोयणववएसेण धणसत्थवाहगिहे, धणसिरीए पाणिग्गहण कारिओ। ततो सो धणसिरीए वासगिह पविट्ठो। ततो णेण पइरिक्क जाणिऊण तीसे धणसिरीते चेल्लमहिं दाऊण निग्गओ, वयसाण य मज्झे सुत्तो। ततो पभायाए रयणीए सरीरावस्सकहेउ सवयसो चेव निग्गतो बहिया गिरिनयरस्स। तेसिं वयसाण अविहतो चेव नट्ठो। ततो से वयसेहिं आगतूण [*सागरचदस्स*] धणसत्थवाहस्स य परिकहिय 'गतो सो'। तेहिं समततो मग्गिओ, न दिट्ठो। ततो ते दीणवयणा कइवयाणि दिवसाणि अच्छिऊण धणसत्थवाहमापुच्छिऊण गता नियगनयर।

इयरो वि समुद्ददत्तो देसतराणि हिंडिऊण केणइ कालेण आगंतो गिरिनयर कप्पडियवेसछण्णो परूढनह-केस-मसु रोमो। दिट्ठो णेण धणसत्थवाहो आरामगतो। ततो तेण पणमिऊण भणिओ—अह तुब्भ आरामियकम्मकरो होमि। तेण य भणिओ—पणट्ठ, का ते भती दिज्जउ? त्ति। ततो तेण भणिय—न मे भईए कज्ज अह तुज्झ पसादाभिकखी मम हुट्ठीदाण देज्जाह त्ति। एव पडिस्सुए आरामे कम्ममारद्धो काउ। ततो सो रुक्खाउव्वेयकुसलो त आराम कइवएहिं दिवसेहिं सव्वोउयपुप्फ-फलसमिद्ध करेइ। ततो सो धणसत्थवाहो तं आरामसिरिं पासिऊण

१ ली ३ विनाऽन्यत्र—°त्थे ठवणइ अस° क ३ गो ३। °त्थे उवणीओ अस° उ २॥ २ °वासिप्पेसु ली ३॥ ३ नियवधरमा° उ २॥ ४ °णसारय° उ २॥ ५ चम्मडिं दा° शां॥ ६ °ण सागरचदो गतो निय° कस विना॥ ७ °तो नियगनयर शा विना॥ ८ °मकारो उ २ विना॥ ९ से विरिड पि° शां विना॥ १ छविय च २॥

परं हरिसमुवगतो। चिंतियं च णेणं—किंमेएणं गुणाइसयभूएण पुरिसेण आरामे अच्छंतेण ?. घर मे ओ(अँ)वारीए अच्छउ त्ति । ततो ण्हविय-पसाहिओ दिण्णवत्थजुयलो ठवितो आवणे । ततो तेण आय-वयकुसलेणं गंधजुत्तिनिउणत्तणेणं पुरजणो उम्मत्तिं गाहितो । ततो पुच्छितो जणेणं—किं ते नामधेयं ? । पभणइ य—'विणीयओ' ति मे नामधेयं । एवं सो विणीयओ विणयसंपन्नो सव्वनयरस्स वीससणिज्जो जातो । ततो तेण सत्थवाहेण चिंतियं—न खमं मे एस आवणे य अच्छंतो. मा एस रायसंविदितो (ग्रंथाग्रम्—१३००) हवेज्ज, ततो रायणा हीरइ त्ति. घरमेस गिहे भंडारसालाए अच्छंतो । ततो तेण सगिहं नेऊण परियणं च सद्दावेऊण भणियं—एस वो विणीयओ जं देइ तं मे पडिच्छियव्वं, न य से आणा कोवेयव्व त्ति । ततो सो विणीयओ घरे अच्छइ, विसेसओ य धणसिरीए जं चेडीकम्मं तं सयमेव करेइ । ततो धणसिरीए विणीयको सव्ववीसंभट्ठाणितो जातो ।

तत्थ य नयरे रायसेवी एको य डिंडी परिवसइ । इओ य सा धणसिरी पुव्वाव्ररण्ह-समए सत्ततले पासाए अट्टालगवरगया सह विणीयगेणं तंबोलं समाणयंती अच्छइ । सो य डिंडी ण्हाय-समालद्धो तस्स भवणस्स आसण्णेण गच्छति । धणसिरीए तंबोलं निच्छूढं पडियं डिंडिस्सुवरिं । डिंडिणा निज्झाइया य, दिट्टा य णेणं देवयभूया । ततो सो अणंगवाणसोसियसरीरो तीए समागमुस्सुओ संवुत्तो। चिंतियं च णेणं—एस विणीयओ एएसि सव्वप्पवेसी, एयं उवंतप्पामि. एयस्स पसातेणं एतीए सह समागमो भविस्सइ त्ति ।

ततो अण्णया तेण विणीयगो नियगभवणं नीओ । पूया-सक्कारं च काउं पायपडिएण विण्णविओ—तहा चेट्ठसु, जेण मे धणसिरीए सह सजोगं करेसि त्ति । ततो सो 'एवं होउ' त्ति वोत्तूण धणसिरीते सगासं गतो । पत्थावं च जाणिऊण भणिया णेणं धणसिरी डिंडियवयणं । ततो तीए रोसवसगयाए भणिओ—केवलं तुमे चेव एयं सलत्तं, अण्णो ममं न जीवंतो त्ति। ततो सो बिइयदिवसे निग्गतो, दिट्ठो य डिंडिणा । भणितो णेणं—किं भो वयंस ! कयं कज्जं ? ति । ततो तेण तव्वयणं गूहमाणेण भणियं—घत्तीहं ति । तओ पुणरवि तेण दाण-माणेणं संगहियं करेत्ता विसज्जिओ । ततो सो आगंतूण धणसिरीए पुरतो विमणो तुण्हिक्को ट्ठितो अच्छति । ततो तीए धणसिरीए तस्स मणोगयं जाणिऊण भणिओ—किं ते पुणो डिंडी किंचि भणइ ? । तेण भणियं—आमं ति । तीए निवारितो—न ते पुणो तस्स दरिसणं दायव्वं ।पुणो य पुच्छिज्जमाणो तहेव तुण्हिक्को अच्छइ। ततो तीए तस्स चित्तरक्खं करेंतीए भणिओ—वच्च, देहि से संदेसं, जहा—असोगवणियाए तुमे अज्ज

१ °मेवगुणा° उ २ विना ॥ २ आवणे अच्छ° ली ३ ॥ ३ °य सव्वो विणी° उ २ विना ॥ ४ °मोसुओ शा० ॥ ५ °णिय° उ २ विना । एवमग्रेऽपि क्वचित् क्वचित् ॥ ६ ली ३ विनाऽन्यत्र—°वसप्पा° उ २ कस० मोस० ॥ ७ °सिरिए उ २ विना । एवमग्रेऽपि क्वचित् क्वचित् ॥ ८ °यमत्तरेण । ततो ली ३ उ २ ॥ ९ °णो तु° उ २ विना ॥

* अवारीए आपणे इत्यर्थः । तथाहि—"आवणे अवारो अवारी अ" देशीनाममाला १-१२ ॥

पओसे आगतव्वं ति । तेण तहा कयं । ततो सा असोगवणियाए सेज्जं पत्थरेऊण जोग्गं मज्जं च गिण्हिऊण विणीयगसहिया अच्छइ । सो आगतो । ततो तीए सोवयारं मज्जं से दिण्णं । सो य तं पाऊण अचेअणसरीरो जाओ । ताते तस्सेव य सतियं असिं कड्ढिऊण सीसं छिण्णं । पच्छा विणीयगो भणिओ—तुमे अणत्थं कारिया, तुज्झ वि सीसं छिंदामि त्ति । तेण पायवडिएण मरिसाविया । विणीयगेण धणसिरिसदिट्ठेण कूवं खणित्ता निहिओ ।

ततो अन्नया सुहासणवरगया धणसिरी विणीयगेण पुच्छिया—सुंदरि! तुमं कस्स दिन्ना ? । तीए भणियं—उज्जेणिगस्स समुद्ददत्तस्स दिण्णा । तेण भणियं—'वच्चामि, अहं तं गवेसित्ता आणेमि' त्ति भणिउं निग्गओ । सपत्तो य नियगभवणं पविट्ठो, दिट्ठो य अम्मापिऊहिं, तेहि य कयसुपाएहिं उवगूहिओ । ततो तेहिं धणसत्थवाहस्स लेहो पेसिओ 'आगतो मे जामाउओ' त्ति । ततो सो वयसपरिग्गहिओ माता पितीहि य सद्धिं ससुरकुलं गतो । तत्थ य पुणरवि वीवाहो कओ । ततो सो अप्पाणं गूहेंतो धणसिरीए विणीयगवेसेण अप्पाणं दरिसेइ । रयणीए य वासघरं गतो दीवं विज्झवेऊण तीते सह भोगे भुंजइ । ततो तीए तस्सं रूवदंसणनिमित्तं पच्छण्णदीवं ठवेऊण तस्स रूवोवलद्धी कया । दिट्ठो य णाए विणीयओ । ततो तेण सव्वं संवावियं ॥

तं भयवं! अणेगतो एस महिलाणं ति ॥

धम्मिल्लस्स तवासेवणं तवफलपत्ती य

मम पुण माउ पिउ-विभवविओगविहुरियस्स दुक्खियस्स उवायं साहिउं पसीयह, जेण अहं विभवं पावेमि अवितिण्हकामभोगो इहलोइयसुहाइं इच्छामि त्ति । ततो तेण लवियं—'अत्थि जिणसासणे बहवे उवाया दिट्ठा विज्जाफल-देवयप्पसाया य तत्थ देवयाओ उववासेहिं भत्तीए य आराहियाओ जहाचिंतियं फलं देंति विज्जाओ य पुरच्चरण बलिविहाणेहिं सिज्झंति उववासविहीओ य बहुविहप्पयाराओ, जा इहलोए परलोए य फलं देंति तत्थ पुण अमोहं उववासं साहुणो भणंति जो छम्मासे आयंबिलं करेइ तस्स इहलोइया इच्छियफलसंपत्ती होइ' त्ति भणिए तेण भणियं—भयवं! अहमायंबिलं करेमि त्ति । ततो सो तेण दव्वलिंगं गिण्हाविओ, अणुरूवं च उवगरणं दत्तं । ततो उववासं (आयंबिलं) काउं पयत्तो । फासुएणं भिक्खा पाणएण अइक्कता य से छम्मासा ।

ततो तेण तवच्चरणेण किलामियसरीरो परिक्खीणसरीरो अगडदत्तस्स पाए वंदिऊण निग्गओ । वच्चंतेण य एगं भूयघरं दिट्ठं, तत्थ य पविट्ठो अच्छइ, ताव य सूरो अत्थमिओ । तवकिलामियसरीरो पसुत्तो । देवयाए य लवियं—

आसस वीसस धम्मिल्ल!, लब्भिसि माणुस्सए सुहं भोए ।

बत्तीसं कण्णाओ, विज्जाहर-राय-कन्नाए ॥

१ कहियं शां ॥ २ सो अप्पाणं न दरिसेइ । रयणी° उ २ विना ॥ ३ °स्स रूवसस्स्वं° उ २ विना ॥ ४ °विरहिय° शां विना ॥ ५ पावामि उ २ ॥ ६ भत्तीय च शां ॥ ७ °विपय° उ २ ॥ ८ °बिले शां ॥ ९ °यणघर उ २ विना ॥ १० लहिहसि क ३ ॥

ततो सो तं अमयमिव आसासकरं देवयाए वयणं सोऊण पडिबुद्धो विगयसोग-परिस्समो जाओ । परिमुहुत्तंतरस्स य ततो पासइ रहवरं अवगुंठियपहरणं, तत्थ आगयं, धवलतुरग-सुसंपउत्तं । ततो रहवराओ एगा इत्थिया ओयरिऊण पुच्छइ—एत्थ धम्मिल्लो? त्ति । ततो तेण लवियं—इमो त्ति । ततो तीए भणियं—एहि एहि त्ति । ततो सो निग्गओ । दिट्ठा य णेणं रहतुंडनिविट्ठा कुप्पासयपिहियकाया तोत्तयगहियवावडग्गहत्था । तो तीए भणितो—आरुह रहवरं, पयट्टेहि य । ततो सो विलग्गो, पेच्छइ य एगं तत्थ वरतरुणिं सियदुगूलसंवरियदेहं । ततो तेण पयट्टाविओ रहवरो, वच्चति य सुहेणं चंपापुरिमग्गमोइण्णो । ततो सा तरुणी धम्मिल्लस्स रूवदंसणकोऊहल्लुस्सुयहियया रयणीए खयं उवेहमाणी वच्चइ । पभायं च खणदाए । एगत्थ पदेसे दगसमीवे तुरगवीसामणनिमित्तं परिसंठियाइं, मोइया तुरया धम्मिल्लेण, वीसामिऊण पयत्तो । दिट्ठो य तीए तरुणीए तवसोसियसरीरो, दट्ठूण य तं विरागमावन्ना । अवि य—

तवसा सुसियसरीरं, पागडसिरजाल-ण्हारुपरिणद्धं ।
दट्ठूण किलामिययं, लुक्कविलुक्कं च लोएणं ॥

भणइ य—किं ते अम्मो! पिसाओ विलइओ रहं?, दट्ठूणं पि मे अणिट्ठो, किं पुण एएण परिभोगो?। ततो सा भणइ—हा हा! कुलदूसणी ! न जुज्जइ ते नियत्तणं ति. 'जाव-जीवं च ते पिउ-माउ-बंधवजणाओ परिभवो भविस्सइ' त्ति वर ते अन्नदेसगमणं, न य ते पिउघरगमणं. किं अन्नत्थ पुरिसा नत्थि तो नियत्तेसि?. वच्चामो एएण समं अप्पणो कज्जनिमित्तं चिंतयंता. अइक्कंतकंताराए य जइ न रुच्चिहिइ ततो अप्पणो ज इच्छियं तं करेहिसि त्ति । तं च धम्मिल्लेण सुणंतेणं तुण्हिक्केण जोइया तुरया । ततो ताओ आरूढाओ, पयट्टाविओ रहवरो, पत्ता य अंतिमगामं । रहवरं च बाहिं ठवेउं वसहिमग्गणहेउं धम्मिल्लो गंतुं पयत्तो ।

तस्स य गामस्स अब्भासे पुरिसपरिवारिओ गामसामी आसं गहाय अच्छइ । ततो तस्स सयासे गंतूण कओ णेण अंजली, पुच्छिओ य—किमेस आसो अच्छइ? त्ति । ततो सो भणइ—मम कूवं गयस्स एस आसो कंडेण विद्धो, अंतस्सल्लो न य से दीसइ त्ति । तेण लवियं—किं इहं विज्जा नत्थि? । 'नत्थि' त्ति भणिते तेण भणियं—पेच्छामो ताव णं । गामसामिणा भणियं—पेच्छ, पसायं मे करेह जहा जीवइ त्ति । तओ तेण निज्झाइओ, दिट्ठो य गूढसल्लो । तओ खेत्तमट्टियं आणावेऊणं सव्वो आलित्तो । मुहुत्तंतरस्स य सो सल्लपएसो सुक्को । तओ तं पएसं फालेऊणं कड्ढिओ सल्लो । घयमहुणा तस्स मुहं भरेत्ताणं कयं से वणरोहणं । सत्थो जाओ । परितुट्ठो गामसामी भणइ—कहिं गंतव्वं? ति । तेण भणियं—

---

१ एहि णीहि त्ति शा० विना ॥ २ °रुहह र° शा० विना ॥ ३ °हल्लुस्सुया रय° उ० । °हल्लसहिया रय° ली ३ क ३ गो ३ ॥ ४ °ह च उ २ ॥ ५ आसइ उ २ ॥ ६ उ २ विनाऽन्यत्र—कूवियागय° कसं० । कवियागय° ली ३ गो ३ ॥ ७ क ३ विनाऽन्यत्र—°साय च तह करे° शा० ॥ ८ °हुत्तमतर° उ २ ॥ ९ °हुस्स भरे° क ३ विना ॥

अह समाणुसओ चेय वसामि त्ति । ततो तेण परितुट्ठेण दवाविया वसही, पवेसिओ य रहवरो, ओइण्णाओ य ताओ, मोइया य तुरया जवसजोग्गासणे य लभिया । ततो गामसामिणा तेसिं सामिसरिसो उवयारो कओ[1] । तओ सा तरुणी इच्छियजणस्स अलभेण पच्छाताव-परिस्समेण य चिरं जग्गिऊण निद्दावसमुवगया । सो वि य ताए महत्तरियाए[2] समं उल्लावेउं पयत्तो । सा भणइ, सुणह अज्जउत्त!—

विमलसेणापरिचओ

अत्थि इहेव नयरे अमित्तदमणो नाम राया । तस्स य धूया विमला[3] नाम । सा य पुरिससंसग्गिं परिहरइ, कहाए[4] य रोसं गच्छइ । तवो राइणा[5] परिचिंतिऊण रायमग्गस्स अब्भासे पासाओ कारिओ । तत्थ य बहूहिं वयणकारियाहिं मए य सद्धिं अच्छइ बहुरूववेससंछन्ने पुरिसे पिच्छती । चेडीहि य उल्लावियंतं सुयं, जहा—इह नगहापुरे बहुरूवगुणसंपण्णो धम्मिल्लो नाम सत्थवाहदारओ परिवसइ । सो य तीए अन्नया कयाई रायमग्गेण वच्चतो अवलोइओ, पुच्छिओ य 'को एसो?' त्ति । ताहिं कहियं—सामिणि! एस सो धम्मिल्लो । तओ[6] एयं सोऊण पेसिया दासचेडी, पडिनियत्ता य गयसंदेसा भणइ—सामिणि! मया जहावत्तं सव्वं भणिओ सो इह नयरे विच्छिन्नविहवस्स समुद्ददत्तस्स सत्थवाहस्स पुत्तो धम्मिल्लो तेण य भूयघरे[7] संकेओ कओ त्ति । एसा य मम भणति—कमलसेणे! किं एत्थ जुत्तं? ति । मया चिंतियं—एस अच्छेरयं, जं एयाए पुरिसो वरिओ । 'पावउ ताव इच्छियपुरिससमागमं' ति परिगणेऊण मया भणिया—सुंदरि! एवं भवउ वच्चामो, जत्थ तेण संगारो कओ । ततो अम्हे दो वि जणीओ रहवरमारूढाओ भूयघरसागयाओ[8] । भयहरओ य णे नक्खेवपुव्वं विसज्जिओ, नियत्तो य । तत्थ य अम्हेहिं तुमं दिट्ठो । ततो एसा पुव्वगयनेहाणुरागेण 'सो एस' त्ति पमाए दट्ठूण विरागमुवगया ॥

तं अज्जउत्त! एस जियसत्तुस्स रण्णो धूया विमला नाम तहं ते अणुणएयव्वा जहा मए समं आणत्तिकारिया होहि त्ति । ततो धम्मिल्लेण करयलसंपुडं रएऊण भणिया—कमलसेणे![10] तुज्झायत्तो मणोरहो तहा कुणसु जहा से ममोवरिं चित्तोवसमो समारुहइ अहं पि से आराहणपरो त्ति । ततो तेसिं उल्लाव-(ग्रन्थाग्रम्--१४००)समुल्लावेण गया सा रयणी ।

कमेण य विमलं पभायं । तओ पभाए पुच्छिओ गामसामी । कयपाणीयकज्जेण य चोइओ रहवरो, आरूढो य गंतुं पयत्तो । अवक्कंता गामाओ अडविं संपत्ता अणेगभीम-अज्जुणरुक्खगहणं, बहुसावय-सच्छणगणसेवियं, बहुसरजलाउलं । ततो थोवंतरागया य पेच्छंति पयब्भासे महाभोगं, गुंजद्धरागरत्तनयणं, वायपुंजमिव गुमगुमायंतं, निल्लालियजमलजुयलजीहं

१ °ओ । तरुणी य इच्छि° ड २ विना ॥ २ °त्तरियं प° शां ॥ ३ विमलसेणा नाम क ३ ॥ ४ पुरिसकहाए ड २ ॥ ५ रायणा शां ॥ ६ °ओ ताएयं की ३ विना ॥ ७ °डा य भू° ड २ विना ॥ ८ °घरं ग° ड ३ ॥ ९ महत्तर° ड २ ॥ १० °लसेणा की ३ गो ३ ॥

भुयंगमं । दट्ठूण य कमला विमलसेणा य भीयाओ । धम्मिल्लेण य आसासिऊण साहुजणपरंपरागयाहिं उस्सारणीहिं मग्गाओ दूरमुस्सारिओ ।

अयकंता पेच्छंति नर-मियसोणियमंसरसंलुद्धं[1], जिब्भाए उट्ठं पलिहंतं, विफालियवयणं, तिक्खदाढं वग्घं । पुणो वि ताओ भीयाओ महिलासहावहियया‌ओ । तओ पुणरवि समासासेऊण मंतप्पभावेण वग्घो उसारिओ । गंतुं पयत्तो ।

पुरओ य पेच्छंति—कालमेघमिव गुलगुलायंतं(तो), नवपाउसदुद्दिणेण विय पच्छापउरदाणसलिलेणं भूमिं आसासेंतो, आलइयदंतमुसलग्गहत्थो हत्थी पंथं रुंभिऊण अच्छति । दट्ठूण य तं गयवरं भणिया णेणं कमला—सुंदरि! पेच्छह मुहुत्तंतरं जाव णं खेल्लावेमि त्ति । एवं च भाणिऊण उइण्णो रहवराओ । तओ य विमलाए चित्तहरणं करेंतो पोत्तवेंटलियं काऊण हक्कारिओ णेण हत्थी । तओ सो ऊसवियवालो पलाइऊण पाएण भूमिं अग्गहत्थेण य ओ[2]हंतूणं[3] तुरियत्तग्गहत्थो तस्स वहाए हधमागतो । ततो तेण तस्स पुरओ उत्तरिज्जं अवक्खडियं, तत्थ सो निवडिओ । तओ य से लहुयत्तणसिग्घयाए य दंतमुसले पाए काऊण खंधे आरूढो । ततो सो परिकुविओ आरडइ, धावइ, विधुणइ[4], निवडइ, अग्गहत्थेण उसुंभिउं इच्छइ । सो य णं सिक्खालाघवेणं खेल्लावेइ । तओ पाय-दंतमुसल-अग्गहत्थ-वालेहिं पहंतुं इच्छंतो न चएइ तं घाएउं । ततो सच्छंदवणविचरणसुकुमालियसरीरो पमुक्को गयवरो खरं उरसिऊणं[5] तरुगहणं भंजंतो पलाओ । सो वि हसिऊण रहवरं समारूढो । कमलसेणा-विमलसेणाओ वि य परं विम्हयं गयाओ ।

तओ पयट्टिओ रहवरो । पेच्छंति य पुरओ महं[6]तमासरासिसंकासं, विसमतडवम्मीयं[7]-घायतिक्खग्गसिंगं, पुरओ अयक्खुरायंतं, महंतकायं, पासिल्लियदिट्ठीयं महिसं । तओ चिंतियमणेण—तुरयपहरणत्थं जाव एस इमं भूमिभागं न पावइ ताव उयरिऊण एयस्स पलायणोवायं चिंतेमि । उइन्नो य रहाओ । गंतूण रुक्खंतरेहि तस्स पच्छिमभाए विसमभूमितरुगहणेगदेसभाए संठिएणं महंतो सीहनाओ मुक्को । तओ सो[8] सीहसद्दसंजायभओ गुम्म-वल्लि-लयागहणेहिं लग्गंतअग्गसिंगो पलाओ । सो वि रहवरब्भासमागओ ।

पेच्छइ य बहुपहरण-खग्ग-सत्ति-फलए, णाणाविहदेसभासाविसारए, दवदवस्स इंते, दट्ठूण य कमला विमला य तक्करे वेविउं पयत्ताओ । ततो तेण आसासियाओ 'मा बीहेह' त्ति भणिऊण मग्गब्भासे ठितो । लउडं च णेण गहाय फलय-सत्तिहत्थो धाविऊण एक्को तक्करो एक्केणं लउडपहारेण पाडिओ । तंफलय-सत्ती अणेण गहिया । तं च गेहियाउहं[9] च दट्ठूण सहसा सूरभडा भडवायं वहंता आवडिया । तेण वि य फरचरियसिक्खागुणेणं मज्झमभि-

१ °सनिद्धं फ ३ ॥ २ आगतू° क ३ गो ३ ॥ ३ °णा तुरिय...च्छह° ली ३ । °ण तुरियगच्छजाह° फ ३ । °ण तुरियग्गत्थह° गो ३ ॥ ४ °णाइ उ २ विना ॥ ५ °ण वणगह° ली ३ शां० विना ॥ ६ °तमसिरा° ली ३ ॥ ७ °यपाय तिक्खसिंग उ २ विना ॥ ८ सो संजायसीहसद्दभओ उ २ विना ॥ ९ ली ३ विनाऽन्यत्र—गहिय हय च क ३ शां० । गहियाहय च गो ३ ॥

गतूण पइया दिसोदिसिं विकिण्णा, फलह-सत्ति-तोमर-आउहाइ छड्डेऊण पलाया तक्करा। तेसु य पलायंतेसु चोरसेणावती गज्जतो आगओ 'पहर पहर' त्ति नाम सावेंतो[1]। सो वि तेण जियकरणेण मायाए जलमिव भमिऊण, छिद्दं च लहिऊण, एक्काए चेव सत्तिपहाराए घाइओ। तं च दहूण पडिय पलाया हयसेणावइया चोरा। ततो सो पडिनियत्तो रहब्भासमागतो, आरूढो य रहवरं। थुणइ य पुलयायमाणसरीरं कमलसेणा(ण) गुणपरिकित्तणं करेमाणी। ततो विमलसेणाए लविय—

मा मे दमगस्स कहं, कहेसि मा गेण्ह नाममेयस्स।
जाणामि अहं अम्मो[2], तुमं पि अच्छीहिं मा पेच्छ॥

एवं वोत्तूण तुण्हिक्का ठिया। तेण वि य पयट्टिओ रहवरो। पुरओ य पडह-भमारव-संख-सद्दवोमीसं[5], विजयवेजयंतीय सोहियं, भडकिलिकिलरवोमीसं उक्कट्ठिसद्दं सुणेइ। चिंतियं च णेण—नणु हयपडियाण चोराण अणुमग्गं आगयं ति। ततो तं च दहूण दुगुणतरागं भीया रायधूया विमलसेणा कमलसेणा य। तेण य समासासियाओ[6]—"न मए जीवंतेण परस्स परभवणिया होहिं" त्ति जाव ताउ परिसंठवेति ताव ताउ परबलाउ बहुपरिकरो, एको मज्झिमो, पडिभणियवयणउत्तरकुसलो, विणीयवेसगहणो, विक्खित्तपहरणो पुरिसो तस्स सयासमागओ। तओ तेण चिंतियं—नूणं एस दूओ होहिइ त्ति। तेण य दूरट्ठिएण विणयरइयजलिणा विण्णविओ—अज्जउत्त[7] अम्हं सेणावती अजियसेणो णाम अजणगिरिदरिसन्निविट्ठाए असणिपल्लीए अहिवई विण्णवेति जहा, सुयं मए—तुमए किर अज्जुणओ नाम चोरसेणावती मारिओ, बहुभयजणणो य इमो मग्गो खेमीकओ अहो[8] परितुट्ठो मि सो य अज्जुणओ मम वेरिओ होइ तओ अहं अच्छेरयं मन्नतो तुज्झ दंसणेसत्थकसिरो[9] इहमागतो कोऊहल्लेण मे जाओ, तं अभयं ते, मा बीहेहि, वीसत्थो होहि इति। ततो सो तं वयणं सोऊण हट्ठतुट्ठमाणसो गतो तदोहुत्तो। तेण वि य पत्तो इओ तुरओ, पच्चुण्णो[10] आसाओ। ततो सो वि रहवराओ उयरंतो चेव अवयासिओ। मत्थए अग्घाइऊण भणिओ—वच्छ[11] अहो[12] ते साहसं कयं, जं एस अम्हेहिं अवाहियपुत्तो, अण्णेहि य बहूहिं, मग्गो ते वाहिओ खेमो य कओ अज्जुणयमारणेण त्ति। ततो तेण भणियं—तुब्भं पादप्पभावेणेति। अभिनंदिओ य तं घेत्तूण पल्लिं पविट्ठो। दिण्णाव सद्दं-भत्तयाविसेसो य तत्थ सुहं परिवसइ। सा य तओ कमलसेणा विमलसेणं गमेइ तस्स गुणकित्तण-पसंसणाहिं। तओ सा लवइ—

मा मे दमगस्स कहं, कहेहि मा गेण्ह नाम एयस्स।
अच्छीहिं वि तेहिं अलं, जेहि उ दमगं पलोएमि॥

१ सावेंतो शां॥ २ °यसेसिया शां॥ ३ पलोएइ य शां॥ ४ °यहो रह° उ २ विना॥ ५ °वोम्मी° उ २ विना॥ ६ धयविस° उ २॥ ७ °ओ भणिआओ म उ॥ ८ °हिइ त्ति उ २॥ ९ °णसब्भापु कं° क ३ गो ३। °णसब्भपु कं° की३॥ १० लविय उ २॥ ११ °प्पसाएणं ति उ २॥ १२ °हभसमूयावि° शां। °हपूयावि° उ॥

तओ कइसु वि दिवसेसु गएसु तेण [1]पल्लिसामी विण्णविओ—वच्चामि चंपं नयरिं, विसज्जेह मं ति । ततो तेण पूया-सक्कारिओ विसज्जिओ विमल-कमलसेणा[2]सहिओ पत्थिओ चंपापुरिं । ततो सुहंसुहेणं गामंतरवसहीसुं वसता संपत्ता चंपानयरी[3]ए अब्भासं । तत्थ य नाइजणाइ[4]ण्णे उज्जाणब्भासे रहं ठवेऊण भणिया णेण कमलसेणा—अच्छह तुब्भे [5]इहं, जाव अहं चंपं गंतूणं आवसहं गवेसित्ता आगच्छामि । ततो कमलसेणाए भणिओ—अज्जउत्त! पाएणं पुर-नयर-जणवएसुं अइसधओ जणो परिवसइ, तं कय-विक्कयलुद्धो विव सागडिओ जहा न [6]छलेज्जासि तहा अपमत्तो होज्जासि त्ति । ततो तेण [7]भणिया कमलसेणा—कहं कय-विक्कयलुद्धो सागडिओ? । तओ सा भणइ—सुणह अज्जउत्त!—

नागरियछलिअस्स सागडिअस्स उदंतं

अत्थि कोइ कम्हिइ गामेल्लओ गहवती परिवसइ । सो य अण्णया कयाइं सगडं धण्णभरियं काऊणं, सगडे य तित्तिरिं पंजरगयं बंधेत्ता पट्ठिओ नयरं । नयरगतो य गंधियपुत्तेहिं दीसइ । सो य तेहिं पुच्छिओ—किं एयं ते पंजरए? त्ति । तेण लवियं—तित्तिरि त्ति । तओ तेहिं लवियं—किं इमा सगडतित्तिरी विक्कायइ? । तेण लवियं—आमं, विक्कायइ । तेहिं भणिओ—किं [10]लब्भइ? । सागडिएण भणियं—काहावणेण ति । ततो तेहिं काहावणो दिण्णो, सगडं तित्तिरं [11]च घेत्तु पयत्ता । ततो तेण सागडिएणं भण्णति—कीस एयं सगडं नेहि?-त्ति । तेहिं भणियं—मोल्लेण लइययं ति । ततो ताणं ववहारो जाओ, जितो सो सागडिओ, हिओ य सो सगडो तित्तिरीए समं ॥

तं अज्जउत्त! एवं जाणिऊण अवहितो होज्जासि त्ति ।

सागडिअस्स कुलपुत्तदंसियपगारेण नागराणं छलणं

ततो णेण कमलसेणा भण्णइ—कमलसेणे! सो सागडिओ हियसगडोवगर[12]णो जोग-खेम-निमित्तं आणिए[13]ल्लियं बइल्लं घेत्तूणं विक्कोसमाणो गंतुं पयत्तो, अण्णेण य कुलपुत्तएणं दीसइ, पुच्छिओ य—कीस विक्कोससि? । तेण लवियं—सामि! एवं च एवं च अइसधिओ हं । ततो तेण साणुकंपेण भणिओ—वच्च ताणं चेव गेहं, एवं च एवं च भणाहि त्ति । ततो सो तं वयणं सोऊण गओ, गंतूण य तेण भणिआ—सामि! तुब्भेहिं मम भंडभरिओ सगडो हिओ ता इमं पि बइल्लं गेण्हह मम पुण तप्पणादुया(पा?)लियं देह, जं घेत्तूण वच्चामि त्ति. न य अहं जस्स व तस्स व हत्थेणं सत्तुयादुया(पा?)लियं गेण्हामि, जा तुज्झ घरिणी पाणेहि वि पिययरी सवालंकारभूसिया तीए दायवा, ततो मे परा तुट्ठी भविस्सइ. जीवलोगब्भंतर व अप्पाणं मन्निस्सामि । ततो तेहिं सक्खी आहूया, भणियं च—एवं होउ त्ति । ततो ती[14]णं पुत्तमाया सत्तुयादुया(पा?)लियं घेत्तूण निग्गया, तेण सा हत्थे गहिया, घेत्तूण य तं

१ पडियासा° शा० ॥ २ °णाए स° ली ३ गो ३ ॥ ३ °रीअ° उ २ विना ॥ ४ °इण्णि शा० ॥ ५ इहेव उ २ ॥ ६ छलिज्जासि शा० ॥ ७ लविया उ २ ॥ ८ °रइ त्ति उ २ विना ॥ ९ °विओ शा० ॥ १० किह ल° ली ३ । कित्तिएण ल° उ० ॥ ११ चाऽऽयाउ प° उ २ विना ॥ १२ °णो एगं रूवय बइल्लए य घेत्तू° ली ३ ॥ १३ °णियल्लिय बयल्ल° उ २ विना ॥ १४ ताणं तुज्झ मया सत्तु° उ २ कसं० विना ॥

पड्डिओ। तेहिं वि भणिओ—किमेयं करेसि?। तेण भणियं—सत्तुंदुया(पा?)लियं नेमि। ततो ताण सद्देण महाजणो समाहिओ, पुच्छिया—किमेयं? ति। ततो तेहिं जहावत्तं सव्वं परिकहियं। समागयजणेण य मज्झत्थेण होऊण ववहारनिच्छओ कओ, पराजिया य ते गंधियपुत्ता। सो य किलेसेण य तं महिलियं मोयाविओ, सगडो अत्थेण सुबहुएण सह परिदिण्णो॥

तं कमलसेणे! पुरिसओ अवरो जो होहिइ सो किहं वंचिजिहिइ? त्ति। ततो कमलसेणा य सोऊण पहसिया। भणिओ य णाए—वषह पुणरागमणाए विजएण वि। ततो कमलसेणा विमलसेणं भणइ—विमले! पेच्छसु इमस्स पुरिसस्स विण्णाणं ति। ततो विमलाए सलविया—

वेसा मे पेसकहा, पेसस्स य जंपियं च मे वेस्सं।
जत्थ वि य ठिओ पेसो, सा भूमी होइ मे वेसा॥

ततो सो तं वयणं सोऊण गंतुं पयत्तो।

चंपाए नयरीए अब्भासे चंदा नाम नदी, तहिं जलब्भासे मुहुत्तरं निविट्ठो, ततो य नलिणिपत्ताइं घेत्तूण अणेगविहिप्पयारं पत्तच्छेज्जं च काऊण सुकलकलछलिणावियाए नदीए छूढा, वुज्झमाणा (ग्रन्थाग्रम्—१५००)य गंगं संपत्ता। तं च छोढूण नाणाविहाइं छेज्जाइं करेंतो अच्छइ, ताव य नदीतडेण तुरियं तुरियं दोण्णि जणे इज्जंते पिच्छइ। ते य तस्स समीवमागंतूण पुच्छंति—सामि! केण एयं पत्तच्छेज्जं कयं?। ततो तेण भणियं—मए त्ति। ततो तेहिं लवियं—सामि! अत्थि इह नयरीए कविलो नाम राया तस्स पुत्तो जुवराया रविसेणो णाम सो वि ललियागोट्ठीए समं गंगाए खेलइ तेण य खेलंतेण पत्तच्छेज्जं दिट्ठं तं च दट्ठूण अम्हे पेसिया—जाणह, केण इमं पत्तच्छेज्जं निउणेण कयं? ति तं अम्हेहिं दिट्ठो सि, पसीयह रायपुत्तसयासं गंतुं। ततो सो गतो, पुव्वाभासिणा य ससंभमं आभासिओ। तेण वि सविणयजलिउडेण संपूइओ। ततो तेण पुच्छिओ—कत्तो ववति अज्जमिस्स? त्ति। धम्मिल्लेण विण्णवितो—कुसग्गपुराओ सपरियणो अहं ति। तओ तेहिं गोट्ठिएहिं आणत्तो सिग्घं आवसहो से सज्जिओ त्ति। तओ गोट्ठियमहत्तरएहिं 'सज्जो आवसहो' त्ति निवेइओ। तओ परितुट्ठेण य सो भणिओ—उट्ठेह, वच्चामो माणुसगाण सगासं, पच्चुगच्छामो त्ति। तओ सो सव्वगुट्ठिसपरिवुडो धम्मिल्लेण सद्धिं हत्थिखंधमारूढो गतो माणुसगाण सगासं। आणियाओ य कमल विमलसेणाओ, पविट्ठा आवसहं। ततो सो जुवराया गोट्ठियमहत्तरए संदिसिऊण 'सव्वं से कज्जं करेह, जहा य एस दारगो दुक्खिओ न होइ' त्ति भणिऊण नियगभवणं गओ। गोट्ठियमहत्तरएहिं जं जं कायव्वं तं तं सव्वं कज्जं काऊण सए सए आवासए गया। सो वि य तत्थ सुहसुहेण अच्छइ। भणिओ य कमलसेणाए—अज्जउत्त!

---

१ °सिय उ २ विना॥ २ °युयालि° क्षी ३॥ ३ होइऊ° शां ॥ ४ किर व° शां विना॥ ५ °पान° उ २॥ ६ °णद पज° क. ३॥ ७ °ज्जिअव सि शां०॥ ८ सम शां ॥

हिज्जो तुब्भे एज्जंते दट्ठूण विमला भणइ—के एते आगच्छंति ? त्ति. मया भणिया—धम्मिल्लो एस आगच्छइ. ततो भणइ—

मा मे दमगस्स कहं, कहेहि मा गेण्ह नाम दमगस्स ।
अच्छीणि ताणि मा हो-ज्ज जेहिं दमगं पलोएमि ॥

ततो मए उवालद्धा. एवं च तीए पसादिज्जंतीए दिवसा वच्चंति ।

अह अन्नया कयाइ रायपुत्तेण गोट्ठियसहिएण तस्स परिक्खणनिमित्तं 'ईसालुओ' त्ति उज्जाणजत्ता समाणत्ता, जहा—सव्वेहिं गोट्ठिएहिं सकलत्तेहिं निग्गच्छियव्वं ति । ततो तेण कमलसेणा भणिया—कमलसेणे ! किं कायव्व ? ति. एए मम निमित्तं उज्जाणं वच्चंति, 'किं एसा एयस्स भज्जा होइ ? उयाहु न होइ ?' त्ति. तं जाणह 'कि कायव्वं ?' ति ।

ततो सा कमलसेणा एवं भणिया तस्स सयासाओ उट्ठिया तीए सगासं गंतूणं अणुमुहुत्तस्स आगया भणइ—सुणह अज्जउत्त !, मए भणिया—विमले ! हिज्जो किर रायउत्तो ललियगोट्ठीए समग्गो उज्जाणजत्तं णीहिइ. वच्चामो अम्हे वि तत्थ उज्जाणं मा अयाणुगा होहि अणुणिज्जंती त. जइ ते एसो न रोयइ ततो तत्थ उज्जाणे अप्पणो हियइच्छियं वर वरेहिसि. अवि य—

अप्पच्छंदमईया, पुत्तय ! मा होह मा विणस्सिहिहि ।
जह नट्ठा वसुदत्ता, असुणंतो वा वि रिवुदमणो ॥

ततो सा एयं सुणिऊण भणइ—अम्मो ! का सा वसुदत्ता ? किह वा नट्ठ ? त्ति. तओ सा मए भणिया—सुण सुयणु !—

सच्छंदयाए वसुदत्ताआहरणं

अत्थि उज्जेणी नाम नयरी । तत्थ य वसुमित्तो नाम गहवई परिवसति, भज्जा से धणसिरी नाम, पुत्तो से धणवसू, धूया से वसुदत्ता । तेण य वसुमित्तसत्थवाहेण कोसंबीवत्थव्वस्स धणदेवसत्थवाहस्स वाणिज्जपसगेण आगयस्स धूया वसुदत्ता दिण्णा । सो य वत्तकल्लाणो तं घेत्तूण कोसंबिमागओ, पिउ-माउसहिओ सुहं परिवसइ ।

तस्स य कालेणं धणदेवस्स वसुदत्ताए दोन्नि पुत्ता जाया । तइएण य गब्भेणं आसण्णप्पसवा । भत्ता य से पवसिओ । सुयं च णाए—उज्जेणिं सत्थो वच्चइ । सा य पिउ-माउ-बंधवाणं उक्कंठिया गंतुमणा सस्सू-ससुरमापुच्छइ—उज्जेणिं वच्चामि त्ति । ततो तेहिं भणिया—पुत्ति ! एक्कल्लिया कहिं वच्चिहिसि ?, भत्ता य ते पवसियओ, पडिच्छ जाव आगच्छइ, ततो गच्छसि । सा भणइ—वच्चामि, किं मम भत्ता [11]कहेहि ? त्ति । तेहिं पुणो वि [12]वारिज्जंती [13]निच्छइ सोउं । सच्छंदा गुरुजणाइक्कमकारिया पुत्ते [14]घेत्तूणं पत्थिया । ते वि य

१ अध शा० ॥ २ °पुत्त उ २ ॥ ३ °हइ उ २ विना ॥ ४ रिवद° उ २ ॥ ५ एन सोऊण शा० । एयं सोऊण उ० ॥ ६ णगरी उ २ ॥ ७ °बीए व° उ २ विना ॥ ८ °देववसु° उ २ विना ॥ ९ पुत्त शा० ॥ १० कह शा० ॥ ११ करिहिति शा० ॥ १२ धारि° शा० ॥ १३ णेच्छति उ २ ॥ १४ °ण गया उ २ ॥

परिहीणकुटुंब विहवा 'अम्हं न करेइ वयणं' ति तुण्हिक्का ठिया । सा वि य भद्दमग्गा गया, ताव सत्थो दूरमतिक्कतो । सा वि सत्थपरिब्भट्ठा अन्नेण मग्गेण गया । भत्ता य से तद्दिवसं चेव आगओ । पुच्छिया तेण माया—अम्मो! कहिं वसुदत्ता गय? त्ति । तीए य भणिओ—पुत्त! उज्जेणीसत्थेण समं अम्हेहिं वारिज्जमाणी वि गय त्ति । ततो सो 'अहो! अकज्जं कयं' ति भणेऊण पुत्त-कलत्तबद्धनेहाणुरागो गहियपत्थयणो मग्गंतो अन्ने सव्वो गतो । अणुसरतेण य सा अडवीं अइवी विद्धा भममाणी । तोसिया अणेण पुणरवि अणुणेउं, पत्थिया पविट्ठा य अडविं महइं, अत्थमिए दिणयरे आवासिओ ।

तम्मि य समए वसुदत्ताए पोट्टे वेयणा जाया । ततो धणदेवसत्थवाहेण रुक्खसाहापल्लवे भंजिऊण मंडवो से कओ । तत्थ य वसुदत्ता पसूया दारयं पयाया । तत्थ य अंधकारे रत्तिं रुहिरगंधेण मिगमसाहारो अडवीसावयखयकरो महापइभओ वग्घो आगतो । तेण य सो धणदेवो वीसत्थो चेव गलए घेत्तूण नीओ । सा वि य पइवियोगजणियदुक्खा भय-कलुण-सोगसवसहियया रोयमाणी 'तं जायमेत्तयं अमहो' त्ति भणती मोहं गया । ते वि य कलुणा असरणा भयवेवियसव्वंगा बाला मोहं गया । सो वि य तद्दिवसं जायओ दारओ थण्णं अलभमाणो उवरओ । सा वि य चिरेण पच्चागयचेयणा समाणी परिदेवंती पभाए पुत्ते घेत्तूण पत्थिया । अकालवरिसेण गिरिनदी पुण्णा । सा य तं दट्ठूण एगं पुत्तं उत्तारेऊण बितियं उत्तारेंती विसमसिलातले निसिरियचलणा पडिया । दारओ य से हत्थाओ पभट्ठो । सो य अवरो दारओ उदगब्भासे ट्ठिओ तं मातं पाणिए पडियं दट्ठूण तेण वि य जले अप्पओ छूढो ।

सा वि य तवस्सिणी चंडवेगवाहिणीए गिरिनदीए दूरं वूढा, तत्थ य नदीकूले पडियस्स पायवस्स साहाए लग्गा, मुहुत्तरस्स य आसत्था सेइरं उट्ठिया । तत्थ य सा अच्छती नदीतडे वणगोयरेहिं तक्करपुरिसेहिं गहिया, पुच्छिया य आणीया सीहगुहं नाम पल्लिं, अल्लिया य चोरसेणावइस्स कालदंडस्स । तेण य सा 'रूवस्सिणि' त्ति काऊण भज्जा कया, अइनीया य अंतेउरं । सा य सव्वाण सेणावइमहिलाण अग्गमहिसी जाया ।

तओ ताओ तक्करमहिलाओ पइणो सरीरपरिभोगमलभमाणीओ उवायं चिंतिंति—किह मेयं परिवज्ज? त्ति । तस्स य तीसे कालेण पुत्तो जाओ, सो य माउसरिसओ । तओ ताहिं सेणावई विण्णविओ—सामि! तुमं अइवल्लभाए इमाए चरियं न याणसि एसा परपुरिसासत्तहियया एस य से पुत्तो अन्नेण जायओ त्ति जइ ते विपच्चओ, अप्पाणं एयं च पेच्छह त्ति । तेण कलुसहियएण खग्गं कड्ढिऊण अप्पा जोइओ, दिट्ठं च[13]णेण मुहं ।

---

१ °या य गेण्ह शां० ॥ २ ताए उ भ° उ २ विना ॥ ३ °णिं स° शा ॥ ४ °गतो उ २ ॥ ५ °डविं उ २ ॥ ६ भयती शां ॥ ७ वीयं उ २ विना ॥ ८ छूढा क्षी क शां विना ॥ ९ सयरं उ २ विना ॥ १० भयणीया शां ॥ ११ °अए स° उ २ विना ॥ १२ क ३ विनाऽन्यत्र—°छ सेणं इमा° क्षी ३ । °छमेण इमा मो ३ उ २ ॥ १३ चाणे° क ३ ॥

विच्छिन्नं, महंतविहत्तगंडलेहं, रत्तायंबविसालनयणं, [2]विगित-दुग्गम-चक्कनासं, वि[3]प्फालिय-थूल-लंबोट्ठं अप्पणो मुहं दट्ठूण तं च दारयं 'एवमेयं' ति भणति। ततो तेण य अपरिच्छिय-बुद्धिणा पावेण तेण य खग्गेणं दारओ मारिओ। सा वि य वेत्त-कसप्पहाराभिहया मुंडेऊण तक्करे [4]समादिसइ—वच्चह, भो! एयं रुक्खे बंधह त्ति। ततो ते तक्करपुरिसा तं गहाय दूरं गया। तत्थ य ते पंथब्भासे एगस्स सालरुक्खस्स मूले र[5]ज्जुए वेढिऊण कंटयसाहा समं-ततो परिक्खिविऊण नियत्ता। सा वि वराई पुव्वकम्मनिव्वत्तियं दुक्खमणुभवंती बहूणि य हियएणं चिंतयंती अणाहा असरणा य अच्छति।

तत्थ य तीए भागधे[6]ज्जेहिं उज्जेणिगमणीओ सत्थो तत्थेव तम्मि चेव दिवसे पाणि-यसुलभे पएसे आवासिओ। ततो सत्थाओ तण-कट्ठ-पत्तहारया केइ दूरं गया। तेहि य सा कंटकसाहाहिं रुद्धा रज्जुपरिवेढियसरीरा रुक्खमूले एक्कलिया दिट्ठा, पुच्छिया य। तीए य सकलुणं रोयंतीए सव्वा अण्णहदुक्खपरंपरा परिकहिया। ततो सा तेहिं जायाणु-कंपेहिं मुक्का, तं च घेत्तूण सत्थं गया, सत्थवाहस्स जहावत्तं परिकहियं। ततो सत्थवाहेण समासासेऊण दिण्णऽच्छायण-भोयणा भणिया—पुत्त! सत्थेण समं वच्चसु वीसत्था, मा बीहेह त्ति। ततो सा आसासिया वीसत्था तेण सत्थेणं समं उज्जेणिं वच्चइ। तेण य सत्थेण समं बहुसिस्सिणिपरिवारा जिणवयणसारदिट्ठपरमत्था सुव्वया नाम गणिणी [8]जीवंतसामिवंदिया वच्चइ। सा य तीसे पायमूले धम्मं सोऊण सत्थवाहेणाणुन्नाया पव्वइया, नामं च से 'कंटियज्जय' त्ति। ततो सा ताहिं अज्जाहिं समं उज्जेणिं पत्ता, पिउ-माउ-बंधुवग्गेण य सहमल्लीणा। कहेऊण य अप्पणो दुक्खं दुगुणजायसंवेगा सज्झाए तवे य उज्जुत्ता धम्मं करेइ॥

ततो हं सुंदरि! तुमं भणामि—एयाणि अण्णाणि य अप्पच्छंदमइया बहूणि दुक्खाणि पावेंति ता मा तुमं अयाणिया होहि ममं सुणसु—मा ते वसुदत्तापज्जंतो भविस्सइ त्ति

ततो सा भणइ—एवं ताव वसुदत्ता नट्ठा, रिउदमणो उण कह नट्ठो?. ततो सा मए भणिया—सुण सुयणु!—

सच्छंदयाए रिवुदमणनरवइणायं

अत्थि तामलित्ती नाम नयरी। तत्थ रिवुदमणो नाम राया, भज्जा य से पियमती नाम। तस्स य रन्नो सहपंसुकीलियओ महाधणो धणवती नाम सत्थवाहो। तत्थ य नयरीए धणओ नाम कोट्टाओ परिवसइ। तस्सऽण्णया कयाइ पुत्तो जातो। ततो सो धणओ परिदरिद्दो, भज्जा य से परिखीणविभवा, चिंताए दो वि कालगया। सो वि य

१ °तायतवि° शा०॥ २ विभिंदवुग्गमहुक्कनास ली ३ गो ३। विसिट्ठवुग्गसंडुक्कनासं क ३॥ ३ विसालि° उ २ विना॥ ४ सदि° शा०॥ ५ °ज्जुणा वधिऊण ली ३॥ ६ °ज्जाहिं उ २ विना॥ ७ पुच्छि शा० विना॥ ८ जीवसा° सस० शां० विना॥

से पुत्तो धणवइस्स घरे सवड्डिओ कडियसालाए कुक्कुसे खायमाणो अच्छति, नाम च से कयं 'कोक्कासो' त्ति । एवं च सो सवड्डिओ ।

अण्णया य धणवतिसत्थवाहस्स पुत्तो धणवसू नाम । तस्स य जाणवत्तं जैवणविसयगमणजोग्गं सज्जियं । तेण य पिया विण्णविओ—एस मे कोक्कासो विइज्जउ, मए समयं जैवणविसयं वच्चउ त्ति । ततो तेण विसज्जिओ । सपत्थिओ वहणेो समुद्दवायाणुवायणेण इच्छियं पट्टणं संपत्तो । लवियाउ नगराओ दिसासु, ओसारिएसु सियवडेसु उइण्णा सजत्तयवाणि(ग्रन्थाग्रम्—१६००)यया । अंतेवासिणो य भंडयं उयारिंयं, दिण्णा य रायदाणा । तत्थ य संजत्तयवाणियया ववहरिउं पयत्ता ।

अह सो कोक्कासो सपक्खयस्स सत्थ-सजत्तयकुलस्स कोट्ठागरस्स घरं गंतूण दिवसं खवेइ । तस्स य पुत्ता णाणाविहाइं कम्माइं सिक्खति । तेण य पिउणा सिक्खाविज्जंता न गेण्हति । तवो तेण कोक्कासेण भणिया—एवं करेह, एवं होउ त्ति । ततो तेण आयरिएण विम्हियहियएण भणिओ—पुत्त! सिक्ख उवएसं ति अहं ते कहेहामि । तओ तेण भणिओ—सामि! जहाऽऽणवेह त्ति । ततो सिक्खिउं पयत्तो । आयरियसिक्खागुणेण सव्वं कट्ठकम्मं सिक्खिओ। निप्फण्णो य गुरुजणाणुण्णाओ पुणरवि सो वहणमारुहिऊण तामलित्तिं गतो ।

तत्थ य खामो कालो वट्टइ । ततो तेण अप्पणो जीवणोवायनिमित्तं रण्णो जाणावणत्थं सज्जियं कपोतजुयलयं । ते य कपोइया गंतूण पइदिवसं आयासतले सुक्कमाणं रायसंतियं कलमसालिं घित्तूण एंति । ततो रक्खवालेहिं धण्णं हीरमाणं दट्ठूण रण्णो सत्तुदमणस्स निवेदितं । तेण य अमच्चा आणत्ता—जाणह त्ति । ततो तेहिं नीइकुसलेहिं आगमियं, निवेदितं च रण्णो—देव! कोक्कासयरस्स जंतकवोयमिहुणयं घेत्तूण णेइ । राइणा आणत्ता—आणेह त्ति । आणीओ य सो पुच्छिओ । कहियं च णेण सव्वं रण्णो अपरिसेसं । तओ राइणा परितुट्ठेण सपूइओ कोक्कासो, भणिओ य—आगासगमं जंतं संजेहि त्ति तेण दो वि जणा इच्छियं देसं गंतुं एमो त्ति । ततो तेण रण्णो आणासमकालं जंतं सज्जियं । तहिं च राया सो य आरूढो इच्छियं देसं गंतूण एंति । एवं च कालो वच्चइ ।

तं च दट्ठूण राया अग्गमहिसीए विण्णविओ—अहं पि तुब्भेहिं समं आयासेण देसंतरं काउमिच्छामि । ततो राइणा कोक्कासो वाहरिऊण भण्णइ—महादेवी अम्हेहिं समं वच्चउ त्ति । ततो तेण लवियं—सामि! न जुज्जइ तइयस्स आरोढुं, दोन्नि जणे इमं जाणवत्तं वहइ त्ति । ततो सा निब्बंधं करेइ वारिज्जंती वि अप्पच्छंदिया, राया य अबुद्धो तीए सह समारूढो । ततो कोक्कासेण लवियं—'पच्छायावो मे, खलियमवस्सं भविस्सइ' त्ति भणि

---

१ कुकुसे ली ३ उ २ ॥ २ सर्वेषु लिखितपुस्तकादर्शेषु क्वचित् कुक्कुसो क्वचित् कुक्कसो क्वचित् कुक्कासो क्वचित् कोक्कसो क्वचित् कोकसो क्वचित् कोकासो क्वचित् कोक्कोसो क्वचित् कोक्कासो एतान्यभिधानपाठान्तराणि दृश्यन्ते अस्माभिस्तु कोक्कास इत्येव पाठ आदृतः ॥ ३-४ आणव° ली ३ गो ३ ॥ ५ °हिऊण अ° क ३ विना ॥ ६ °यमहागुणे° उ २ ॥ ७ °जुयल° उ २ ॥ ८ °वालपुरिसेहिं उ २ विना ॥ ९ सज्जिहि शां ॥

ऊण आरूढेण कड्डियाओ तंतीओ, आहया जंतकीलिया[1] गगणगमणकारिया, तो उप्पइया आयास । वच्चंताण य बहुएसुं जोयणेसुं समइक्कंतेसु अइभरक्कंताउ छिन्नाओ[2] तंतीओ, भेत्तुं[3] जंतं, पडिया कीलिया, सणियं च जाणं भूमीए ट्ठियं । सो य राया देवीसहिओ असुणंतो पच्छायावेण संतप्पिउं पयत्तो । ततो सो कोक्कासो रायं भणइ—'मुहुत्तंतरं एत्थ अच्छह, जाव अहं तोसलिं नगरिं अइगंतूणं जंतसंघाडवगरण मग्गामि' त्ति भणिऊणं गतो । राया देवीए सहिओ अच्छइ ।

सो य वड्डइघरं गंतूण वासिं मग्गति । णाओ य णेण 'सिप्पियपुत्तो' त्ति । तेण य सो भणिओ—सुतुरिएण रण्णो[4] रहो सज्जेयव्वो, तेण वासी नत्थि त्ति । कोक्कासेण य भणिओ—आणेहिं, सेज्जामि[5] त्ति । ततो तेण तस्स वासी अप्पिया । गहिया य णेण वासी । जाव य सो वक्खित्तचित्तो ताव य मुहुत्तंतरेण संजोइया दो वि चक्का । ततो सो विम्हिओ जाओ, नाओ य णेण 'कोक्कासो' त्ति । तेण य सो भणिओ—मुहुत्तंतरं ताव पडिक्खह जाव घराओ आगच्छामि अन्नं वासीं[6] गहेऊण, तओ वासिं घेत्तूणं वच्चिहह ।

ततो सो काकजंघस्स रण्णो समीवं गंतूण सव्वं परिकहेइ । गहितो कोक्कासो रन्ना, पूइओ य विउलाए पूयाए । पुच्छिओ य रण्णा—कहिं तुमं एहि? त्ति । तेण सव्वं रन्नो परिकहियं । आणिओ य राया अमित्तदमणो सह देवीए । ततो रायं बंधेऊण देवी अंतेउरे[7] पवेसिया । कोक्कासो वि भणिओ—कुमारे सिक्खावेहि त्ति । ततो तेण लवियं—किं कुमाराणं एयाए सिक्खाए? त्ति । तओ राइणा वारिज्जंतेण वि बलाकारणं काराविओ । सो य ते सिक्खाविउं पयत्तो । घडिया णेण दो घोडगजंता, सज्जिया य आगासगमा । ततो तस्स काकजंघस्स रण्णो दो पुत्ता जाव आयरिओ सुत्तओ[8] ताव जंतघोडए आरूढा, ते य उप्पीलियजंततुरया आगास उप्पइया । आगएण कोक्कासेण पुच्छिया—कहिं अच्छंति कुमारा? । ततो तेहिं लविय—कुमारा आरुहिऊणं गया । ततो तेण भणियं—अकज्जं कयं, विणट्ठा कुमारा, पेरायत्तणकीलियं[9] न याणंति त्ति । राइणा सुयं, पुच्छियं च—कहिं ते कुमारे?[10] त्ति । ततो तेण भणियं—गया सह घोडएहिं ति । रुट्ठेण रण्णा कोक्कासस्स वहो आणत्तो । तं च तस्स एगेण कुमारेण परिकहियं ।

ततो तेण तं वयणं सोऊण चक्कजंतं सज्जियं । भणिया य णेण कुमारा—सव्वे तुब्भे आरूढा अच्छह, जाहे अहं संखसद्दं करेमि ततो तुब्भे समगं मज्झिमखीलयस्स पहार देज्जह, ततो आगासं उप्पिहिइ जाणं ति । ततो ते 'एवं' भणित्ता चक्कजंतमारूढा अच्छंति । कोक्कासो मारेउं नीओ । मारिज्जंतेण य संखो आपूरिओ । ततो तेहिं सखसद्दं सोऊण आहओ मज्झिमखीलओ । भिण्णा ते य सव्वे सूलेसु । कोक्कासो य मारिओ । पुच्छियं च रन्ना—कहिं ते कुमार? त्ति । किंकरपुरिसेहिं से परिकहियं—सव्वे चक्कजंते सूले

१ °खीलि° उ २ । एवमग्रेऽपि ॥ २ भिन्ना° ली ३ ॥ ३ भग्गं जतं ली ३ ॥ ४ रन्नो शा० ॥ ५ सज्जेमि उ २ ॥ ६ वासिं उ २ ॥ ७ °उरं ली ३ उ २ ॥ ८ °णाओ शा० ॥ ९ परिय° उ २ ॥ १० °मार उ २ ॥

भिण्णा। ततो सो राया कागवण्णो सुणो 'हा हा ! ! ! अकज्जं' ति भाणिऊण सोयसतचाहिं यओ विलवंतो चेव कालगओ॥

सो य सत्तुदमणो राया कुमारा य अप्पच्छंदेण विणट्ठा ता तुमं पि विमले ! अप्पच्छंदिया मा होहि, मा एवं विणस्सिहिसि एस य सव्वकलापसट्ठो नवजोव्वणो तरुणो, अन्नो को एत्तो छट्ठयरो धम्मिल्लो ? त्ति सव्वं च णाए पडिवण्णं।

ततो धम्मिल्लो हट्ठ-तुट्ठमणसो सव्वं जहावत्तं सोऊण। अइक्कंते य तम्मि दिवसे, समं इच्छियाए रयणीए, पभाए विमले, सव्वलोयसक्खिम्मि उग्गोए दिवसयरे जुवराया ललियगोट्ठीए समग्गो निग्गतो सफलत्तो उज्जाणं। ततो सोऊण धम्मिल्लो वि णाणाविहमणिरयणपवरोवियाभरणो, विविहरागवत्थवेसधारी अप्पाणं काऊण कमलं विमलसेणाए समं रहवरं समारूढो उज्जाणं गतो, पविट्ठो य उववणं। ताव य किंकरजणेण ऊसवियाओ दूसकुडीओ, विरइयाऽतुला मंडवा, परिवेढिया य अप्पणो पच्छायणानिमित्तं पडिसरा, पडिवोक्खिया य कुलवधूसयणिज्जा। जुवरण्णो य आणत्तीए विरइओ भोयणमंडवो सुभूमिभाए, कुंभग्गसो विरइओ कुसुमोवयारो, रइया य जहारिहं आसणा, गहियगंध-वत्थ-मल्लाऽऽभरणा गोट्ठीए अप्पणो अप्पणो सविभवेण जहाणुण्णायं जुवरण्णा णिविट्ठा मणिभूमिगाविट्ठरेसु, कणग-रयण-मणिनिम्मियाणि दिण्णाणि य भायणाणि। ततो धम्मिल्लो वि पियाए विमलाए समं निविट्ठो, पासे य से कमलसेणा। तओ पकए हत्थसोए णाणाविहं खज्ज-भोज्ज-पेज्जं विज्जउमाढत्ता। एवं च ते अण्णोण्णेण समं पीइविसेसं अणुभवंति। जुवराया समं गोट्ठियेहिं धम्मिल्लं विमलाए समं पेच्छंतो न तिप्पति, परं च विम्हयमुवगओ। तओ य तत्थ मदभिमलस्स जुवईजणस्स नच्चिय-गीय-वाइयायसोणं पेस्सिऊण धम्मिल्लं च अभिनंदंतो गोट्ठीए सहिओ उट्ठितो जुवराया, जाण-वाहणारूढो य पत्थिओ सभवणं।

ततो सो विमल-कमलसेणाए समं रहवरारूढो सभवणं गतो। पढमसमागमसमुस्सुएण य हियएण विमलसेणाए सह दिवसावसेसं गमेइ। ततो अइच्छिए दिवसयरे, समं इकयाए सञ्झाए पज्जालिएसु पईवेसु, रइए य सयणिज्जे, गहिए रइजोग्गे कुसुम-गंध-मल्लाऽलंकारे, तओ कमलाए विमलसेणाए नववहूवेसाऽलंकारो कओ। तओ सा लज्जोणयमुहिं गहाय धम्मिल्लसगासमइगया। भणिओ य णाए—अज्जउत्त ! रायधूया ते पालणिज्ज त्ति। एवं भाणिऊणमवक्कंता। ततो तेण देवाधिदेवाण पणामं काऊण दाहिणेण हत्थेण हत्थं से दाहिणं घेत्तूण अंके निवेसिया, उवगूढा य भणिया। सा वि सव्वंगेण कण्णंतिवरोमकूवा नवपाउसमेघधाराहिहया इव धरणी सहावमउयगी अंगेहिं से समं हिययमइगया। तओ तेण

१ °ततो हा हा कसं° उ २॥ २ रायकु° उ २ विना॥ ३ °तुहो सव्वं° उ २ विना॥ ४ °सक्खम्मि क ३ गो ३ ॥ ५ °णाए सूरे शां विना॥ ६ °पमूसणो ली ३॥ ७ °रणा य आणत्तो विर° उ २ विना॥ ८ °रयतम° शां ॥ ९ °साणे क ३ गो ३॥ १० पसिद्द° क ३ कसं विना॥ ११ उ २ विनाऽन्यत्र— कमलविमलाए ली ३ गो ३। कमलाविमलाए क ३॥ १२ °ज्जणेज्ज ली ३ मो ३॥ २१ भवत° क २॥

रइरसायणतण्हाइएणं पाविया रइसुहं रायकन्ना। एवं च तेसिं रइपसत्ताणं अइक्कंता सा रयणी। अन्नोन्ननेहाणुरागरत्ताण य सुहेण अइक्कमइ कालो।

अह अन्नया कयाइ रइरसायणपणयसंधिविग्गहकुवियं विमलं पसायंतेण भणिया—पिए वसंततिलए! मा अइरूसणा होहि[1], भत्ते जणे अणुग्गहं पसायं च करेहि त्ति। ततो सा अपुव्ववयणो ईसारोससंजायवेविरंसव्वंगी 'अणज्जव! कहिं सा ते वसंततिलय?' त्ति। बाहा-गयलोयणाए य पुन्नसगग्गरहियया[2], ईसिंदंतग्गदट्ठाहराए, तिवलितरंगभंगुरं निडाले भिउडिं रएऊण अव्वत्तक्खरं भणंतीए, आकंपिउत्तमंगाए, वियं[3]ण्णकेसहत्थाए, पडंतउक्कायंतकुसुमाए, समोसरंतरत्तंसुयविलग्गंतमेहलादामकलावाए, विविहमणिविचित्तमुत्तियाउत्तजालोवसोहिएणं, [4]ससद्दरुंदंतनेउररवेणं, अणुपुव्वसुजायअंगुलीदलेणं[5],कमलदलकोमलेणं, रत्तासोयथवयसन्निभेणं[6], चंगालत्तयरसोल्लकोववससंजायसेएणं चलणेणं आहओ। रोसपरायत्तहिययाए य भणिओ—वच्चह ता, सा चेव वसंततिलया ते परित्तायउ त्ति।

ततो सो तीसे ईसारोसवक्खेवजणियतुट्ठी अब्भिंतरासुहेणं हियएण हसिऊण निग्गओ घराओ, उवट्ठिओ रायमग्गं, अपच्छिमजामवेलाए य पेच्छइ रायपहब्भासे अद्धपिहिय-कवाडदुवारं दीवलंवंत-सुरहिडज्झंतकालागुरुपवरधूयं नागघरं। तओ सो तहिं पविट्ठो पण-मिऊण नागदेवयाणं निविट्ठो अच्छति हियएण बहुविहाइं चिंतयंतो। पेच्छइ य गहियप-डलग्गहत्थं पडियारियाए समं इंतिं तरुणिं सरसुब्भिज्जंतनवजोव्वणं दारियं। सा य देवउले अचेलमागया, धोयहत्थ-पाया य पविट्ठा नागघरयं, अच्चिओ य णाए नागिंदो, पणमिऊण य भणिओ—भयवं! सुपसन्नो होहि त्ति। ततो तेण भणिया—सुंदरि! हियइच्छिया ते मणोरहा पूरंतु[7] त्ति। वट्टिया य ससंभंता, पेच्छइ य धम्मिल्लं। तेण वि य दिट्ठा (ग्रंथाग्रम्—१७००) नव-जोव्वणसालिणी, समुब्भिज्जंतरोमराई, आपूरंतपरिवड्ढमाणपओहरा, तुंगायतेणं नासावंसएणं, अभिनवनीलुप्पलपत्तसच्छहेहिं नयणेहिं, बिंबफलसुजायरत्ताधरेणं, सुद्धदंतपंतिएणं, समत्तपु-न्निमायंदसरिसेणं वयणेणं। तं च दट्ठूण परं विम्हयमुवगतो। तीए य भणिओ—कत्तो अज्ज-मिस्सा एंति?। ततो तेण लविया—सुंदरि! कुसग्गपुराउ त्ति। ततो सा सविम्हयं तं पेच्छि-ऊण हरिणवधुसरिसनयणा नीससिऊण अहोमुही वामंगुट्ठएणं भूमिं विलिहमाणी संठिया। भणिया णेण—सुंदरि! कस्स तुमं? ति। ततो तीए महुरभासिणीए[13] भणियं—'अज्जउत्त! अत्थि इह नगरीए सत्थवाहो नागवसू नाम, भज्जा य से नागदिण्णा, तीए[14] धूया हं नागदत्ता नाम, भाया य मे नागदत्तो. अहं च नागेदाओ हियइच्छियं वरं पत्थेमि, [15]इहइं च अच्चणं काउं पइदिवसमागच्छामि. ततो मम भागधेज्जेहिं तुब्भे इहमागया, दिट्ठ-

१ होहि उ २॥ २ °नई° ली ३ उ २॥ ३ °वियस° उ २॥ ४ शा० विनाऽन्यत्र—विद्दण्ण° उ० । विवण्ण° ली ३ क ३ गो ३॥ ५ उकुयत्त° क ३ गो ३॥ ६ समद्दरुद्दद्दत्तनेउर° उ २ विना॥ ७ °लीएण उ २॥ ८ °यपलवचयस° ली ३॥ ९ उव्वट्टिय रा° शा० विना॥ १० पूरउ त्ति उ २ विना॥ ११ °पवि-वड्ढमा° उ २ विना॥ १२ °रेणं अधरेण सुद्ध° उ २॥ १३ °रवयणभासिणीए लवियं उ २॥ १४ तीसे य अह सुया नाग° उ २ विना॥ १५ अह च ली ३। इह च क ३ गो ३॥

मेत्तं चेय मे हियय पविट्ठा पुण्णो य मे मणोरहो' त्ति भाणिऊण नियघरं गया। तत्थ य णाए माऊए सव्वं परिकहियं। परितुट्ठा य से माया पिति सयण-परियणो य। वित्तं से कल्लाणं णगरीए पगासं।

तत्थ य नयरीए कविलस्स रन्नो धूया कविला नाम, सा य नागदत्ताए वयसिया। ताए य सुयं, जहा—नागदत्ताए वरो लद्धो, कल्लाणं च से वत्तं ति, सो य किर पुरिसगुणनिहाणभूओ नवजोव्वणो य। ततो ताए मयणसरसोसियहिययाए माया भणिया—अम्मो[1] पसायं करेह, सिग्घं मे सयवरं पयच्छह त्ति। ततो तीए वि धूयवच्छलाए राया विण्णविओ—कविलाए सयवरो दिज्जउ त्ति। ततो तेण लवियं—एवं कीरउ। तओ रण्णा सोहणदिणे आणत्तो सयवरो कविलाए। ठविया य सविभववेसालंकिया ईसर-कुडुंबियपुत्ता, अण्णे य जहाविभववेसधारिणो इब्भपुत्ता, धम्मिल्लो वि य विणीयवेसाहरणो तहिं गतो। ततो सा रायकन्ना पउमसंडवत्थव्वा विव लच्छी जणस्स रूव-कंतीहिं दिट्ठिं सारुधमाणी व आगया सयवरामंडवं। दिट्ठा य धम्मिल्लेण रूवाइसयसपन्ना रायकण्णा। तीय वि य देवकुमारोवमसिरीओ धम्मिल्लो निद्ध-महुराए दिट्ठीए अवलोइओ। ततो सा मदणसराहयहियया तस्स सगासं गया। ततो से सुरभिपुप्फदामं 'सेवासं(?) उरे उलएइ, अक्खए य से सीसे छुहइ। तओ सं दट्ठूण परं विम्हयं जणो उवगओ। ततो य सयवरो, रण्णो य आणत्तीय अइणीओ भवणं। तओ रायकुलाणुरूवं वत्तं से कल्लाणं। एवं च ताव एवं(य)।

तओ विमलसेणा तस्स विओगेण परिदुब्बलखामकवोला सोगसागरसंपविट्ठा अच्छइ।

तओ सो बिंतियदिवसे रण्णो सम्मएण सह कविलाए परियणेहिं हिंडाविओ। सो य सविड्ढि-सविभवेण हिंडमाणो विमलसेणाए घरस्स अग्गदारं संपत्तो। ततो भिच्च-परियणो 'से रण्णो धूया केण परिणीया?' त्ति सोऊण निग्गओ, नवरि य धम्मिल्लं पेच्छवि, सरंभमं तेण य गतूण विमलाए कहियं—सामिणि! धम्मिल्लो रण्णो जामाउओ जाओ। तओ सा तं वयणं सोऊण ईसावसवेविरसरीरा सुपरिगणियं हियए काउं 'किं मम इह अच्छियव्वेण?' ति हत्थे पाए य पक्खालेऊण सुद्धवासाभोगा सोवण्णेण गयमुहेण भिंगारेण अग्घं घेत्तूण निग्गया। पयक्खिणं जाणयं काऊण ततो णाए तस्स दाहिणो हत्थो ऊसवेऊण भणिओ—भट्टिदारग! विट्ठा ते! विहि त्ति। ततो तेण सा तम्मि चेव हत्थे घेत्तूण जाणयं विलईया, पत्तो य रायघरं, उईण्णो जाणाओ, कयकोऊयमंगलो य कमलाए विमलाए य समं सुहं सुहेण अणुभवंतो चिट्ठइ।

अह अण्णया कयाई रण्णो आसो उवणीओ। सो य तं दमेउं पयत्तो। ततो य आसपडियारगेहिं दिण्णे मुहंसडणे, समारोविए खलिणे, सेवसअत्तयपट्टे पल्लाणे, उप्पीलिए

१ °सित्ता य सुमे शां विना॥ २ ३ °रीये शां ॥ ४ सवारं उरे शा ॥ ५ पडिसु° उ २ विना॥ ६ वितइयदि° शां विना॥ ७ रायधूया ली ३॥ ८ °वेस° ली ३॥ ९ वियस° उ २॥ १० ते विहि त्ति शां०॥ ११ पचा क ३ विना॥ १२ °हूण्णा क ३ विना॥ १३ °हमडणे उ २ विना॥ १४ सत्तसंजुत्त° शां ॥

उरंपट्टए, लंबियासु कणयासु, बद्धासु सुहसोहियासु चामरासु, कए पंचत्थासकमंडणामंडिए, तओ सो कुप्पासयसंवुयसरीरो, अद्धोरुयकयवाहिचलणो, सुरहिकुसुमवद्धसेहरो, विचित्त-सोभंतसव्वंगो, कयवायामलघुसरीरो विहगो विव लीलाए आरूढो। गहिओ य णेणं वाम-हत्थेणं वग्ग रज्जुमंडियं(?), विसदमउय(?)दाहिणेणं कसा, उप्पीलिय आसणं, संगहिओ-रुज्जुयलेणं सवाहिओ थोवंतरं। कुलिणयाए य सारहिचित्तरक्खीए णायं च से तेण चित्तं। ततो अक्खित्तो तालिओ य कमेणं पयट्टो य महुरसंदाइऊणं(?) अइक्कंतो य पंचमधारं अप्पडि-यारो आसायणो जाओ। ततो तेण चिंतिऊणं तस्स वसाणुवत्तणं कयं। सो वि दूरं गंतूण विसम-समभूमिभाए अइक्कमेऊण कणगवालुयाए नदीए अदूरसामंते अप्पणो छंदेणं परि-संठिओ। ततो सो सइरमोइण्णो, छोडियं च से पडताणं, ऊसासिया से जहाजंतिया पएसा, विसज्जिओ सो तुरओ, आलइयं रुक्खसाहाए सव्वं तुरयभंडयं।

ततो सो अणवेयक्खंतो य पट्ठिओ दक्खिणं दिसाभायं। अइक्कमिऊण य कणगवालुया-नदीप्पएस, पेच्छइ रुक्खसाहालंबियं सुवद्धमणिविचित्तलट्ठमुट्ठिं गेवेज्जाविचित्तितं पक्कबदरस-च्छविं कमलोगुडियं असिं। चिंतियं च णेणं—कस्स इमो होहि? त्ति। दिसावलोयं च काऊण गहिओ णेण असी, घेत्तूणं विकोसीकओ। दिट्ठा य तिलतिल्लधारासच्छभा, अय-सिकुसुमअच्छिनीलसप्पभा, अच्छेरयपेच्छणिज्जा, भमति व पसण्णयाए, उप्पयति व लहु-ययाए, विज्जुसिव दुप्पेच्छा दरिसणिज्जा य। दट्ठूण य असिरयणं विम्हिओ जाओ। चिंतियं च णेणं—तिक्खयं च से परिक्खामि त्ति। आसण्णो य कढिण-परूढ-निरंतरमूलवद्धअइकु-डिलजालपउरो दिट्ठो वंसगुम्मो, अन्नोन्नसवट्टियघणवंसो, पलंबसाह-पत्तोछाइयपेरंतो। तस्स अब्भास गंतूणं वइसाहट्ठाणट्ठिएणं वद्धघणमुट्ठिणा वाहिओ असी। कयलिगंडिया इव सट्ठि वंसा असिलट्ठिणा अइप्पमाणप्पएसा, ते य छिण्णा दट्ठूणं विम्हिओ जाओ। 'अहो!!! एयस्स असिस्स तिक्खया, अवि भंगे वि अपडिहय' त्ति चिंतेऊण पयाहिणं च वंसीकुडंगं करेंतो गंतुं पयत्तो। पिच्छइ य कस्सइ पुरिसस्स सकुंडलं सरुहिरं सीस छिण्णं, तस्स वंसीकुंड-गस्स मज्झदेसभाए धूमकुंडं। ततो तेण चिंतियं—'अहो! अकज्जं कयं' ति हत्थे धुणिऊण, असिलट्ठिं च पवधिऊण 'अहो! असिजंतस्स बहुदोसकारग' त्ति भाणिऊण अइक्कंतो।

पेच्छति य पुरओ हरियपत्त-पल्लव-साहं बहुरुक्खोवसोहियं वणप्पएस, नाणाविहविहग-मुहलसद्दालं कमल-कुमुदोप्पलोवसोहियं पसण्ण-सच्छ-सीयलजलपाणियं वावीं, तस्स य तीरे अच्छेरयपेच्छणिज्जरूवं दारियं। ततो चिंतियमणेणं—किं इमस्स वणसंडस्स देवया होज्ज? त्ति। एवं चिंतयंतो उवागतो तीए सगासं। दिट्ठो य तीए। पुच्छिया य णेणं—सुयणु! का सि तुमं? कत्थ वा अच्छसि? कओ वा एसि?। ततो तीए महुर-मिउभासिणीए भणिओ—सुण अज्जउत्त!—

१ °पट्टए उ २ विना॥ २ °सद मउयवाहणेण क ३ उ २॥ ३ °णाए उ २ विना॥ ४ °रमदा° गो ३ उ २॥ ५ असायणो उ २॥ ६ °ममाए उ २ विना॥ ७ फेडि° उ २॥ ८ सव्वं आसमंड° उ २॥ ९ °वएक्खं° ली ३॥ १० पसत्थस° शा०॥ ११ °यलपाणियं उ २॥ १२ दिट्ठा य णेण, पुच्छिया य—सुंदरि! का सि उ २ विना॥

अत्थि इह दाहिणिल्लाए विज्जाहरसेढीए सरलउर नाम विज्जाहरनयरं। तत्थ य राया पुरिसाणंदो नाम, तस्स भज्जा सामलया, तीसे पुत्तो कामुम्मत्तो नाम, तस्स य दो धूयाओ—विज्जुमती विज्जुलया य। ततो किर अण्णया कयाइ विज्जाहरसेढीए कणग गिरिसिहरे समोसढो धम्मघोसो नाम चारणसमणो, सो य अइसयनाणोवगतो। ततो तस्स आगमणं सोऊण सव्वे विज्जाहरा वंदया निग्गया। तत्थ य धम्मवच्छल्लयाए कोऊहलेण य विज्जाहरी सामलया गया। सा य भयवंतं दमियराग-दोस-मोहं वंदिऊण धम्मं सोउं पयत्ता। कहावसाणे य पुणरवि वंदिऊण चारणसमणं पुच्छइ—भयवं! धूयाते मे भत्ता को भविस्सइ? त्ति। ततो तेण अइसयनाणविसेसेण आभोएऊण लवियं—जो ते कामुम्मत्तविज्जाहरं घाएहिति तस्स भारियाओ भविस्संति। ततो सा साहुवयणं सोऊण हरिस-विसायवयणा वंदिऊण नियगभवणं पडिगया। सो य विज्जाहरो भगिणीहिं समं विज्जाउवचरणत्थं इहागओ वणसंडे। कणगवालुयापडिवेसेण एत्थ य तेण विज्जाए भवणं विउव्वियं। ततो खेड-नयर-पट्टणे हिंडतो राय-सेट्ठि-इब्भ-सत्थवाहसुयाओ सोलस जणीओ आणेइ। 'सिद्धविज्जो य एयासिं पाणिग्गहणं काहामि' त्ति अम्हे इह ठवियाओ। अण्णया य इह अम्ह सुहोवइट्ठाण भगिणीय से विज्जुमतीय सव्वं निरवसेसं परिकहियं, एवं ते अज्जउत्त! मए सिट्ठं।

अम्हाण य सव्वाण पढमा सिरी विव रूवेण सिरिचंदा नाम १ सव्वंगसुंदरी वियक्खणा २ सिरीसेणा [य] ३ गंधव्वगीयकुसला सिरी ४ नट्ट-गीय-वाइयवियाणिया सेणा नाम ५ गंधव्वरयणकुसला विजयसेणा ६ मल्लसंजोयणकुसला सिरीसोमा ७ देवसुस्सूसणरया सिरिदेवा ८ सेज्जारयणवियाणिया सुमंगला ९ अक्खाइयपोत्थयवायणकुसला सोमंमित्ता १० कहाविण्णाणअइसयनट्टचित्तवियाणिया मित्तवई ११ सयणोवयारनिउणा जसमती १२ विविहवक्खाणयवियाणिया गंधारी १३ पत्तच्छेज्जरयणवियक्खणा सिरीमई १४ उदग परिकम्मकुसला सुमित्ता १५ अहं च मित्तसेणा १६। तओ अज्जउत्त! अम्हे इह भवणे अच्छामो। 'जया किर तेण विज्जाओ साधियाओ होहिंति तया अम्हं पाणिग्गहणं काहिति' त्ति भगिणीओ से एवं भणति। अम्हे वि य सव्वाओ नवजोव्वणाओ, ईसीसिसमुभिज्जमाण

---

१ °गिरिं समो° उ २ विना ॥ २ वइया आगया की ३ गो ३। वंदिउं आगया क ३ ॥ ३ °उहल्लेण उ २। °ऊहलेण की ३ ॥ ४ °धाय मे उ० ॥ ५ °स्सति त्ति शां ॥ ६ °हयूया उ २ ॥ ७ °मदत्ता उ २ विना ॥

---

* आसां षोडशकन्यकानामभिधानान्याऽऽञ्चलिकजयशेखरसूरिविहिते धम्मिल्लचरित्रे एवम्—

सद्वीप्यखेचरक्ष्मापवश्या° कन्याः स षोडश। मेकयित्वाऽत्र सभीका विद्यादेवीरिवाद्भुताः ॥

श्रीचन्द्रा श्रीश्च गान्धारी श्रीसोमा च विचक्षणा। सेना विजयसेना च श्रीदेवी च सुमङ्गला ॥

सोममित्रा मित्रवती श्रीमती च यशोमती। सुमित्रा वसुमित्राऽथ मित्रसेनाऽपि षोडशी ॥

तथाऽन्यदीयलघुधम्मिल्लचरित्रे एवम्—

एकैकत्र गोष्ठ्यां मे विद्युन्मत्यवीविदिति। कन्यकानि चैतानि समस्तानि विदांकुरु ॥

श्रीचन्द्राऽऽख्या सुनन्दाऽथ श्रीसेना च सुमङ्गला। सेना विजयसेना च श्रीः सोमा च यशोमती ॥

श्रीदेवी च सुमित्रा च श्रीमती मित्रवत्यपि। सोमप्रभा च गान्धारी मित्रसेनाऽन्तिमा ॥

रोमराईओ, समुण्णमंतथणजुयलाओ, कामरइरसायणकंखियाओ तस्स विज्जाहरस्स सिद्धिं कंखमाणीओ अच्छामो । सो य एत्थ वंसीकुडंगे अच्छइ ।

तओ धम्मिल्लेण चिंतियं—सो चेव विज्जाहरो जो मए मारिओ त्ति । ततो (ग्रन्थाग्रम्–१८००) तेणं सा लविया—सुयणु! मए सो छिज्जकोऊहल्लेण छिण्णो मारिओ य । ततो सा तं सोऊण विसण्णा-दीणमणसा मुहुत्तागं विसायमुवगया । लवियं[1] च णाए—नत्थि पुव्वविहियाणं कम्माणमइक्कमो त्ति । ततो तेण लवियं—सुंदरि! मा विसायं गच्छाहि[2] । तीए लवियं—'अहो!!! अपडिक्कमणिज्जं[3] साहुवयणं, न अण्णहा होहिति त्ति; तं अज्जउत्त! अहं वच्चामि, इमं वुत्ततं तस्स भगिणीणं निवेदेमि. तओ जइ तुज्झ अणुरत्ताओ होहिंति ततो अहं भवणस्स उवरिं रत्तं पडागं उस्सवेहामि, अह किंचि विरागं वच्चिहिंति ततो सेयं पडागं उस्सवेहामि, ततो तुमं अवक्कमिज्जासि' त्ति भाणिऊणं गया । ततो सो तीइ पडागपरियत्तिपरायणो भवणाभिमुहो अच्छति । मुहुत्तंतरस्स य दिट्ठा [4]सेता पडागा ।

ततो सो 'तातो ममोवरिं विरत्तभावाउ' त्ति जाणिऊणमवक्कंतो कणगवालुयनदिमणु[5]सैरंतो संपत्तो संवा[6]हणाम अडविकव्वडं । तत्थ य सुदत्तो नाम राया चंपेज्जयस्स रन्नो भाया कविलाए अत्तओ परिवसति, भज्जा य से वसुमती, धूया य से पउमावई नाम । तं च सो कव्वडं पविसइ, पेच्छइ य—एगा इत्थिया सूलरोगेण परिवेवंती अच्छति । तं च दट्ठूणं जायाणुकंपेणं वायँ[7]-पित्ताणुलोमियं जाणिऊणमणुकुलमोसहं दिण्णं । तेण य सा परिनिव्वुया जाया । ततो पविट्ठो तं नयरिं । सुयं च रण्णा पुव्वतरागं तस्स कम्मावदायं । ततो राइणा भवणं नीओ, नेऊण य अप्पणो धूया पउमावती तज्जायरोगेण विरूविय[8]सरीरा तस्स समप्पिया, लविओ य—अज्जउत्त! एयं तुमे चोक्खीकरेहि[9] त्ति । ततो तेण सुंदरतिहिकरण-मुहुत्ते समाढत्ता किरिया । अप्पणो कम्माणमुवसमेणं दव्वजणिएणं च पोराणयसरीरा सिरी विव रूवस्सिणी जाया । ततो तेण राइणा तुट्ठेणं तस्स चेव दिण्णा । सोहंणे[10] दिवसे पाणिग्गहणं कयं । ततो तीए समं इट्ठे सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणो अच्छइ ।

तओ अन्नया कयाइ सो राया भणइ—को मे भाउणा सद्धिं संधिं करेज्ज[11]? त्ति । ततो तेण विण्णविओ—सामि! अहं करेमि साम-भेदोवप्पयाणेहिं उवाएहिं. वीसत्थो होहि त्ति । ततो राइणा परितुट्ठेण मत्थए अग्घाइऊण विसज्जिओ, पियजणदंसणू[12]सुओ पत्थिओ । तओ गामंतरवसहीहिं वसंतो संपत्तो चंपं नयरिं । ततो सुसउणपूइज्जमाणहियओ अइगतो नगरिं, रायमग्गमोगाढो वच्चइ ।

१ भणिय की ३ ॥ २ °च्छ त्ति ली ३ ॥ ३ °ज्जा साहुवयणा ण अण्णहा होंति त्ति उ २ ॥ ४ सेयपडा° शां० विना ॥ ५ °सरिंतो क ३ गो ३ ॥ ६ °वास नाम शां० विना ॥ ७ वायुपि° उ २ विना ॥ ८ विउरू° उ २ विना ॥ ९ °हित्ति शां० ॥ १० °हणंदि° उ २ विना ॥ ११ °ज्जं ति उ २ विना ॥ १२ °सणसमुस्सुओ क ३ गो ३ ॥

तत्थ य जणकोऊहल्लुच्छलंकुट्ठिसीहनादिय च पुरओ निसामेति। पुच्छियो य णेण एगो नयरजुवाणो—वयस! किं एस सद्दो ? त्ति। ततो तेण लविय—एस रण्णो मत्तकरी इह अच्छति, आलाणखंभ भंजिऊण य पत्तो। ततो सो त सोऊण वीसत्थो पयाओ, पेच्छइ य तत्थ एगस्स नायरजुवाणयस्स इब्भपुत्तस्स अट्ठहिं इब्भकुलबालियाहिं समं मंगलेहिं कोऊयसयविसिट्ठेहिं ण्हाणय कीरइ। पुच्छियं च णेण—कस्स इमो वीवाहो ? त्ति। ततो एकेण वियाणएण भणिओ—इद्दमसत्थवाहपुत्तस्स सागरदत्तस्स पिउणो मणोरहेहिं[3] इब्भकुलकन्नगाहिं समं वीवाहो कीरइ, त जहा—देवईए १ धणसिरीए २ कुमुदाए ३ कुमुदाणंदाए ४ कमलसिरीए ५ पउमसिरीए ६ विमलाए ७ वसुमतीसि ८ त्ति। जाव य सो परिकहेइ ताव य बाहयकोलाहलरवेण जुगतकालपुरिसो विव संपत्तो मत्तहत्थी त पएस। विपलाओ य समंतओ सो वेवाहियजणो। सो वि य वरो ताओ दारियाओ छड्डेऊण पलाओ। ताओ वि य रूवस्सिणीओ वागुरपविट्ठाओ विव हरिणीओ समंतओ उव्विग्गमाणसीओ, जीवियस्स निरासाओ, पलोएमाणीओ, भयभीयसमुप्पिलियहिययाओ, गतुं अचायमाणीओ तत्थेव ठाणे ठियातो। हत्थी य ताण अब्भासमागतो। ततो तेण लवियाओ—मा बीहेह त्ति। हत्थे य घेत्तूण सय घरमुवणीयाओ। ठविऊण य ताओ पुणरवि निग्गओ, दिट्ठो य णेण गयवरो, त च हत्थिसिक्खाकुसलो खेल्लावेऊण उवरिमारूढो गतो सयपएस। ततो हत्थी धुणिय पयत्तो, तेण य आसणथिरयाए कठम्मि से रज्जु छूढा, गहिओ अंकुसो, आणिओ य वसं। उवगयो य गणिया य गणियारीउ च हत्थिग्गहणनिमित्त। तओ सो बाहयकणेरुनायो(यओ) परिसंठिओ, आरूढो सिरारोहो। ततो धम्मिल्लो उइण्णो। राइणा य सुय—सामि! गहिओ मत्तहत्थी अकालचहो धम्मिल्लेण वि। ततो विम्हय गतो राया नायरजणो य 'अहो!!! अच्छेरय'-भणतो पुणो पुणो अहिनंदति। ततो राइणा पूइय-सम्माणितो विसज्जितो सभवण गतो विमल-कमलवसणुसुओ। समागमणेण परो आणदो घरजणस्स जातो।

ततो तेण पच्छा सुय—तेहिं किर वेरइत्तएहिं पुणो परिणेऊण आढत्ताओ पुव्ववरस्स ताओ वहूओ। ताहिं किर भणिय—अम्हे परिचत्ताओ एएण, छड्डेऊण ण पलाओ त अलाहि अम्ह एएण नाममेत्तपदिणा जेण मे(ने) जीविय दिन्न सो णे भत्ता होउ त्ति। ततो किल ताण ववहारो रायकुले जातो, जिंत च ताहिं। ततो राइणा धम्मिल्लगिहं विसज्जियातो, सव्वो य तासिं सयण-परियणो आगतो, वत्त च ताहिं समं कल्लाण। जुवराया गोट्ठियमित्तजणो य सव्वो आणंदिओ।

तओ धम्मिल्लेण सबाहयइणो रन्ना सह संधी काराविया। ततो तेण पउमावती पेसिया, तीए य सह समागमो जाओ। तओ धम्मिल्लेण विमलाए पायसालणी णिग्ग

१ उक्किट्ठसीहनाय च २ विना ॥ २ °विसेसेहिं उ ॥ ३ °हिं भइकुल° शां ॥ ४ °णाण समं उ २ विना ॥ ५ °रयेण ये° उ २ विना ॥ ६ °याउ गणियारीओ हत्थि° शा विना ॥ ७ °वारत्तएहिं उ २ विना ॥ ८ सो अम्हाण भत्ता क ३ ॥ ९ जित ली ३ उ ॥ १ °हयप° उ २ विना ॥ ११ शां विनाऽन्यत्र—°णातप्पिणमा° क ३ गो ३ उ । °णतप्पिणमा° ली ३॥

मणप्पभिइं सव्वं निरवसेसं पुणरागमणं च वयंसयाणं परिकहियं । एवं च सो चंपापुरीए राइणा कविलेण सुपरिग्गहिओ सुहं भोए अणुभवंतो अच्छइ ।

अण्णया कयाइ आगासतलए सुहनिविट्ठस्स एक्का आगासतलेण विज्जाहरदारिया आगया । सा य से पुरतो ठिया विज्जुलया विव दुप्पेच्छणिज्जा तेय-रूवसंपयाए । ताते य भणियं—अज्जउत्त ! उवलद्धं तत्थ मे—किर अम्हं भाया विज्जाहरो नियमत्थो अणवराहो चेव विणिघाइओ, तं जुत्तं नाम तुज्झं साणुक्कोसस्स पयइवच्छलहिययस्स अणवराहं हंतुं ? । ततो तेण लविया—सुंदरि ! अकामकारणेणं अयाणयाए य वसगोच्छो छिण्णो, तत्थ य सो तुम्हं भाया मारिओ. तत्थ ममं नत्थि दोसो, भवियव्वयाए कम्माणं सो विवन्नो । ततो तीए लवियं—'अज्जउत्त ! एवमेयं. मम वि य दारियाए सव्वं निवेदितं ततो सा अम्हेहिं भणिया—सुंदरि ! आणेहि णं ति. ताए य तुज्झं पुव्वदिण्णसण्णाए हरिसतुरियाए सेया पडागा ऊसविया. ततो तुमं दट्ठूण लंपक्कंतो. तओ 'अइचिरायसि' त्ति काऊण अम्हाहिं सव्वाहिं ससंभंताहिं मग्गिओ, न चेव दिट्ठो. ततो ताहिं अहं पट्ठविया—वच्च तस्स पुरिसस्स मग्गण-गवेसणं करेहि त्ति. ततो हं तुब्भं गामा-ऽऽगर-नगर-खेड-कव्वड-मडंबेसु उत्थाय त्थाणमग्गण-गवेसणं करेमाणी इमं चंपाउरिं संपत्ता दिट्ठो सि मया पुव्वसुकयावसेसेणं. आणत्तिकारिगा य ते अहं सह भगिणीए, ताओ य सोलस कन्नयाउ' त्ति भाणिऊण नीलुप्पलदलसन्निगासं आगास उप्पइया । गंतूण य मुहुत्तंतरेण पडिनियत्ता तस्स सगासमागया । ताहि य सव्वाहिं समं वत्तो वीवाहो । वत्तकल्लाणो य ताहिं समं पीइसुहमणुहवंतो अच्छइ ।

ततो अन्नया कयाइ विज्जुमतीए परिहासपुव्व विमला लविया—जुत्तं नाम विमले ! तुमे अज्जउत्तो ईसारोसमुवगयाते पाएणं आहतुं ? । ततो तीए लवियं—हला विज्जुमती ! किं व न जुत्तं अण्णमहिलाकित्तणं करेमाणस्स ? । ततो विज्जुमतीए लवियं—जुत्तं वल्लभस्स सुहयस्स जणस्स नामं घेत्तुं. तुज्झं पुण पायतालणाणुरूवो दंडो कीरउ त्ति । ततो विमलाए हसिऊणं भणइ—हला विज्जुमति ! जइ मे अज्जउत्तो पाएण न तालिओ होंतो तओ तुम्हे अज्जउत्तरइरसायणपाणयं कत्तो पाविंताओ ? त्ति. तं तुब्भे सव्वाओ वि ममं पायस्स पूया-सक्कारं करेह त्ति । ततो ताओ सव्वाओ हसिऊण तुण्हिक्काओ ठियाओ । ततो वित्ते परिहासे विज्जुमतीए लवियं—अज्जउत्त ! का सा वसंततिलया नाम ? । ततो तेण लवियं—विज्जुमइ ! बीहेमि तीए नामं गेण्हमाणो. रूसणो इहं जणो परिवसति । ततो हसिऊण विमलाए भणियं—अइभीरुओ इयाणिं, सुहयजणो कयावराही होहिइ ता मा बीहेह. अभयं ते वीसत्थो साहेहि । ततो तेण विज्जुमई लविया—सुण सुयणु !—

---

१ °सेण वि° उ २॥ २ °रिसियतु° शा०॥ ३ °मद्दक° उ २ विना॥ ४ °राइयासि शा० । °राएसि उ० ॥ ५ करेह त्ति उ २ विना ॥ ६ शा० विनाऽन्यत्र—उत्थाय मग्ग° क ३ गो ३ । उट्ठाणमग्ग° ली ३ । उत्थाय उत्थाय मग्ग° उ० ॥ ७ आहतो क ३ ॥ ८ °णमय शा० ॥ ९ पावतीओ उ २ ॥ १० वत्ते उ २ ॥ ११ °या क ३ ॥ १२ °रू इ° उ २ ॥

अत्थि कुसग्गपुरे नयरे अमित्तदमणस्स रन्नो गणिया वसंतसेणा नाम । तीए धूया वसंततिलया नाम रूव-लायण्ण विण्णाणोवयारेहिं समति (समत्ते) चेव कामभोग-रइवि सेसे जाणइ। ततो विज्जुमतीए लविय—वच्चामि तीसे अज्जाए वट्टमाणीं वोढु, जइ अज्जउत्तस्स सा रोयइ। ततो तेण भणिया—रोसणो जणो पुच्छियव्वो त्ति । ततो तीए लविय— किं पभायं सुप्पेण छाइज्जइ ? त्ति । ततो गया आगया य आगासपरिकम्मेण ।

अज्जणुवइओ य राया अहय जोवण्णदरिसणीय जुवाणरूव संसट्ठवित्थरोववण्ण गणियासु जोग्गं काऊण अइगया ताए भवणं। दिट्ठा य वसततिलया उम्मुक्कसव्वाभरणा, पियविरहदुब्बलंगी, मइल-परिजुण्णवसणा, तंबोलपरिवज्जिएण, बाहभरंतनयणा, खामकवोला, परिपंडुरेण वयणेण, एगवेणिबद्धेण केसहत्थेण जुण्णभुयंगमायमाणेण, केवल मगलनिमित्त वाहिणहत्थेण खुड्डएण । समासिया य मे 'सुह ति ?' त्ति । चित्तकम्मालिहिया विव जक्खपडिमा एक्कचित्ता अच्छइ । चिंतियं च मे—'अज्जउत्तगयहियया एस तवस्सिणि त्ति पुरिससकित्तणं पि न सम्मण्णइ' त्ति भाव से जाणिऊण पुरिसवेसं विप्पजहाय परिणतमहिलारूववेसधारिणीए पुणो वि से समासिया—वसततिलए !, सुदरि !, धम्मिल्लो ते खेमकुसले वट्टमाणी पुच्छइ त्ति । ततो सा संजायहरिसरोमकूवा, पवेवमाणगायलट्ठी, हरिसागयबाहप्पुतच्छी, तुज्झे चेव चिंतयती सहसा अब्भुट्ठिया, सगग्गरं 'पियसहे !'—त्ति भणती धाविऊण घणियं मं अवगूहिऊण एवं परुण्णा जहा णाए मम वि आकंपियं (ग्रथाग्रम्—१९००) हियय । सुचिर च रोयइत्तूण पुच्छति मं सा हरिसिया—सामिणि ! कहिं सो जणहिययहरो अइसोहग्गभतो अज्जउत्तो अच्छइ ? त्ति। ततो से मया परिकहियं—चंपापुरीए अच्छइ त्ति। ततो तीए मम अज्जउत्तगयं विप्पजोगजणियं दुक्खं परिकहियं ।

ततो सो विज्जुमईए त वयण सोऊण दसणसमुस्सुओ जाओ । ततो विज्जुमतीए ऊसुयहियय जाणिऊण भणिओ—'अज्जउत्त ! कुसग्गपुरंगमणुस्सुओ दीससि ?' त्ति । ततो तेण लविय—सुदरि ! एवं मे मणो परिसठिओ जइ तुमं पसन्ना । ततो विज्जुमतीए सव्वपिया जण-परिजणसहिओ आमंतियसज्जणो अप्पणो विज्जारिद्धिविसेसेण विउव्विएण जाणविमाणेण मुहुत्ततरेण कुसग्गपुरं नीओ, पवेसिओ य वसंतसेणाए भवण । राइणा य अमित्तदमणेण सव्व सुयं। ततो रन्ना परितुट्ठेण तिभाओ रज्जस्स दिण्णो, भवणं च सव्वविभवसपन्नं कारियं, जाणवाहण परियणो य जहाविभवाणुरूवो दिण्णो । ततो सव्वपियासहिओ य पविट्ठो भवणं। धणवसुसत्थवाहो पहट्ठो धम्मिल्लस्स आगमणेण वि, तेण वि सा जसमती आणिया । ततो सो सव्वपियाजणसहिओ आयंबिलतवफलविसेसे इहलोए चेव अणुहवंतो अच्छइ अमरजुवाणो विव अमरभवणेसु ।

१ °वयारोहिं की १ क १ गो १। °वगारेहिं शां ॥ २ य से परिकम्मेण ली ३ गो ९ शां । य से परिकहियं कम्मेण उ ॥ ३ विसुक्क° उ २ विना ॥ ४ °लपरि° उ १ ॥ ५ °मायमा° शां ॥ ६ °माणं शां । °माणि उ ॥ ७ °हुयप्पु° उ २ विना ॥ ८ °रयसमुस्सुओ उ २ विना ॥ ९ °से ण सुह° शां विना॥

अन्नया कयाइ पियजणसहिओ अब्भितरिल्ले चाउसाले अच्छइ । वसंततिलयाए भणिओ—अज्जउत्त ! अपुव्वो हु ने[1] दिव्वो वेसालंकारो इह अइंतेण कामभोगरमणीओ कओ त्ति । ततो तेण चिंतिऊण आसंकियहियएण भणिया—सुंदरि ! तुम्हं विम्हावणनिमित्तं ति । एयं च भणंतो निग्गओ । ततो तेण चिंतियं—नूणं खु अण्णपवेसो इहं भवणे नत्थि, तओ मज्झ[2] पडिरूववेसधारी विज्जाहरो भविस्सति । तस्स य वहणोवायं चिंतेउं सव्वभवणप्पएसेसुं[3] सिंदूरो विकिन्नो, गहियपहरणो य तस्सागमणं पडिच्छमाणो अच्छति । ततो मुहुत्ततरस्स दिट्ठो य णेणं तस्स पयसंचारो । ततो य पयमग्गमणुसरतेण वाहिया असिलट्ठी । ततो छिण्णो दुहाकओ पडिओ धरणियले, दिट्ठो य विज्जाहरो विसज्जाविओ, सक्कारिओ य सो भूमिप्पएसो ।

तओ धम्मिल्लो पुरिसवधासंकियहियओ रइं अविंदंतो अण्णदिवसे अप्पणो उववणं पविट्ठो, उवविट्ठो य सहलेसच्छमे[4] असोयसमल्लीणे पुढविसिलापट्टए पच्छातावसतत्तहियओ तं चेव चिंतयंतो अच्छइ । तत्थ य असोयमंजरीहिं सोपच्छाइयसरीरा, नवजोव्वणसालिणी, थणभरोनमियगायलट्ठी, पीवरजहणभर समुव्वहमाणी, सणियं चलणे समुक्खिवमाणी, रत्तंसुयएकवसणा, अच्छेरयपेच्छणिज्जरूवा, थेव-महग्घाभरणा उवागया तस्स समीवं । दिट्ठा य णेण अविइण्हपिच्छणिज्जरूवा-ऽतीवगरत्तविवाहर-सुद्धचारुदंतपंती पसन्नदंसणा । सा पुण—'अज्जउत्त ! अवहियो सुण—अत्थि इहं चेव वेयड्ढपव्वयस्स दाहिणिल्लाए सेढीए सन्निविट्ठं विज्जाहरनयरं असोगपुरं । तत्थ य विज्जाहरराया मेहसेणो नाम, भज्जा से ससिप्पभा नाम, ताण य दुवे पुत्तभंडाणि—मेहजवो पुत्तो, अहं च मेहमाला । तओ विज्जाहरराया अम्ह माऊए सह संपहारेइ—को मम इह अवसाणे राया भविस्सइ ? । आभोएऊणं विज्जाए दट्ठूण भणिया णेण अम्मा—'एस अविणीओ मेहजवो मेहमालाए भत्तारेण विणासिज्जिहि त्ति अण्णो य इहं राया भविस्सइ' त्ति भणिए अम्मा विसण्णा । सो वि मेहजवो मज्झं नेहाणुराएण उज्जाण-काणण-नदि-गिरिवरे रमणीयाणि खेल्लणयाणि पइदिवसमाणेइ, मुहुत्तं पि मम विरहं नेच्छइ । अहमवि भाउणो नेहाणुरत्तहियया तस्स विरहे सुदंसणूसुया होमि । एवं[6] च णे वच्चइ कालो । ततो अज्ज सो ततिए दिवसे निग्गतो ममं पुच्छिऊण 'मेहमाले ! कुसग्गपुरं वच्चामि' त्ति । ततो अहं तस्स अणागमणलोभेण इहमागता । सुयं च मे, जहा—विज्जाहरो धम्मिल्लेणं मारिओ त्ति । ततो अहं संजायरोसा इहं असोयवणियमुवगया । ततो तुमं मए दिट्ठो, दिट्ठे य समाणे णट्ठो से रोसो, लज्जा य मे संजाया, तं पसीयह, ममं असरणाए सरणं होहि' त्ति भाणिऊण चलणेसु से निवडिया । सा य णेणं वरहत्थीहत्थसण्णिभाहिं बाहाहिं छित्ता गंधव्वेणं[7] विवाहधम्मेण विवाहिया, रतिविणोएण य घणियं उवगूढा । तो सा ववगयभाउसोगा जाया, पाविया य मणुस्सयसोक्खसारं । ततो तं गहाय नियगभवणं पविट्ठो ।

---

१ ने विव्वो वे° ली ३ ॥ २ मम प° शा० ॥ ३ °व्वेसु भ° क ३ ॥ ४ °लच्छलस° शां० विना ॥ ५ सगास उ २ ॥ ६ एवं ताण म° ली ३ ॥ ७ °णं य विवाहेण विवाहधम्मे° उ २ बिना ॥

तओ तत्थ सव्वपियाजणसहिओ अविंतण्हमोइयवो कालं गमेइ। बहुए वि काले समइक्कंते विमलसेणाए रायधूयाए पुत्तो जाओ, नामं च से कयं 'पउमनाहो' त्ति। सो य कमेण सवड्ढिओ, गहियविज्जो य पिउणा पुव्वकम्मपुण्णोदयनिविट्ठ(इ) अप्पणो य सुकयकम्मविसेसो इय अणुहवंतो अच्छइ। एवं च से मित्त-बंधु-पुत्त पियाजणसहियस्स सुहेण कालो वोलेइ।

अह अन्नया कयाई बहुजणवएसु विहरमाणो जिणोवइट्ठेण विहिणा, सव्वजगजीवसारणीओ, सुओवइट्ठेण विहिणा धम्मं उवदिसंतो, बहुसीसपरिवारो, समणगणगामणी धम्मरुई नाम अणगारो कुसग्गपुरं नाम नगरं आगओ, वेभारसेलसिहरे समोसढो, साहुजोग्गे फासुए देसभागे अहापडिरूवं उग्गहं ओगेण्हित्ता संजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणो विहरइ। सुयं च रण्णा आमित्तदमणेण—अज्ज किर चउनाणोवगओ भयवं मेघदुंदुभिसमनिग्घोसो धम्मरुइमणो धम्मरुई नाम अणगारो इह समोसढो त्ति। तओ हरिसवससमुल्लसियरोमकूवो धम्मरागमती कोऊहल्लेण गतो राया णगरजणो य। धम्मिल्लस्स वि य तस्स भयवओ आगमणं कोडुंबियपुरिसेहिं निवेइयं। तओ सो हट्ठमणसो समंतो नियगपरिवारसंपरिवुडो पत्तो वेभारगिरिसमीवं, पेच्छइ य तव-चरण-करणोवसोसियसरीरेहिं उवसोहियं गिरिसिहरपायमूलकंदरं समणगणेहिं, ते य भयवंतो पणमंतो पणमंतो अइक्कमति, पेच्छइ य पुरओ समणगणगंधहत्थिं मिव विसद-महुर-मणहरेहिं वयणेहिं धम्मं परिकहेंतं, उवगंतूण य णेणं पणमिओ। तओ तेहिं भयवंतेहिं समणासन्नासोवाणभूएहिं धम्मेण पडाभिओ, कहिओ य णेहिं सव्वजगसुहावहो धम्मो। कहावसाणे य धम्मिल्लेण वंदिऊण सविणयं पुच्छिओ भयवं तीय-पडुप्पन्नम-ऽणागयजाणओ—किं मया पुव्वभवे कयं जेण अहं सुह-दुक्खपरंपरं पत्तो मि?। तओ साहुणा भणियं—

धम्मिल्लपुव्वजम्मकहाए सुनंदभवो

धम्मिल्ल! तुमं इओ य तईयभवे—इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे भरुयच्छं नाम नयरं। तत्थ य राया जियसत्तू नाम, भज्जा से धारिणी नाम। तत्थ य नगरे गहवईकुल-रूवाणुविहवो महाधणो नाम जिणसासणसुइपरिभज्जियमईओ, तस्स य भज्जा सुनंदा नाम, तीए पुत्तो—सुनंदो नाम नामतो आसी। कमेण य परिवड्ढिओ सातिरेगअट्ठवासआयओ अम्मा-पिऊहिं कलायरियस्स उवणीओ। तत्थ य जहाणुरूवो कलासु अब्भासो कओ।

तओ केणइ कालंतरेण तस्स दारयस्स अम्मा पिऊण पुव्वसंगया पियपाहुणया आगया। तओ तेहिं ससंभमं उवगूढा, आभासिया य निद्ध-महुरेहिं वयणेहिं, कुलघराइण्णायखेम-कुसलेण संपूइया, विदिण्णाऽऽसणा य उवविट्ठा, दिण्णपायसोया य सुहसुहेण वीसत्था अच्छंति। तओ सो दारओ पिउणा भणिओ—पुत्त! सोयरियपाडयं गंतूणमामिसं आणेहि त्ति। तओ सो पाहुणयपुरिससहिओ मोल्लं गहाय गओ सोयरियपाडयं। तत्थ य तद्दिवससंपत्तीए

१ °विरइमो° व १ विना॥ २ °ओइ भणण्णियमणोरहपलण्णाहरे असमुदयसुहो। अह अन्नया घा ली ३॥ ३ °भूयं घ° उ २॥ ४ पत्तो त्ति उ २॥ ५ °गयसोहिया पि° शां॥

आमिसं न जायं । ततो सो पाहुणयमणुस्सो तं दारगं भणइ—सामि! केवट्टवाडयं वच्चामो त्ति । तेण य पडिस्सुयं । तत्थ पंच मच्छया जीवंता चेव लद्धा । ततो तेण पाहुणगमणुस्सेणं वारिज्जंतेण वि गहिया । घेत्तूण य मच्छए पडिनियत्ता जहागयमग्गेणं । ततो सो जलब्भासे तं दारगं भणइ—एए मच्छए घेत्तूण वच्च, ममं अग्गओ पडिवालेज्जासि, जाव अहं सरीरोवरोहं वच्चामि । ततो सो दारओ ते मच्छए जलब्भासे फडफडायंते दट्ठूणं जायाणुकंपो भवियव्वयाए कम्मोवसमस्स पाणिए विसज्जेति । ते वि य मच्छए निव्वाणं पिव खीणकम्मंसा लहुयाए गया । सो य पुरिसो आगतो तं दारगं पुच्छइ—कहिं ते मच्छय? त्ति । ततो तेण पडिभणिओ—पाणिए छूढ त्ति । तओ तेण भणियं—सामि! 'अकज्जं कयं' ति पिया ते रूसिहि त्ति । ततो ते दो वि जणा घरं गया । ततो सो पिउणा पुच्छिओ—आणीयं आमिसं? ति । ततो तेण कम्मगरपुरिसेण भणिओ—आमिसस्स अभावे जीवंतया मच्छा आणीया, ते य एएणं आणंतेणं पाणिए छूढ त्ति । ततो सो दारगो भणिओ—किं तुमे मच्छया मुक्क? त्ति । ततो तेण भणियं—अणुकंपा मे जाया मच्छएसु फडफडायंतेसु, तो पाणियम्मि मुक्का. करेह जं इदाणिं कायव्वं ति । ततो सो एवं भणिओ मिच्छत्तोवहयबुद्धी आसुरुत्त-कुविय-चंडिक्किओ तिवलितं भिउडिं निडाले काऊण निराणुकंपो तं दारगं लयाए हंतुं पयत्तो, वारिज्जंतो वि मित्त-बंधव-परियणवग्गेणं नेव विरओ, नवरि अप्पओ कम्मेणं विरओ हंतव्वाओ । ततो सो दारगो सारीर-माणसदुक्खसंतत्तो, तेण बहूहिं तज्जण-निब्भच्छणा-ऽवमाणणाहिं निब्भच्छिज्जंतो, परिहायमाणसरीरो कालगओ ।

धम्मिल्लपुव्वजम्मकहाए सरहभवो

ततो सकम्मनिव्वत्तियाउओ विसमगिरिकडयनिविट्ठा[इ]महल्लदुग्गकंदरापरिखित्ते, रुक्खलया-वंसगुम्मगहणे, पावजणावासकम्मनिलए, एगस्स वि य दुग्गमो होइ सपवेसो, तत्थ सन्निविट्ठा अत्थि विसमकंदरा नाम चोरपल्ली । तत्थ य पल्लिगणगामकूडो चोरसेणावती सकम्मवित्थारियपयावो मंदरो नाम नामेणं, तस्स य भज्जा वणमाला नाम, तीसे उदरे आयाओ । कालेण य पुण्णेण जातो, णामं च से कयं पिउणा 'सरहो' त्ति । ततो सो सुहंसुहेण परिवड्ढिओ वाहपुत्त(ग्रंथाग्रम्–२०००)परिवारिओ य सकम्मनिरओ अच्छइ । ततो सो अण्णया कयाइ तस्स पिया आसुक्कारमरणरोगेणं कालधम्मुणा सजुत्तो । पुत्तेण य मित्त-बंधवसहिएणं सक्कारिओ, लोइयाणि य किच्च-करणिज्जाणि कयाणि । ततो सो दारओ पल्लिमहत्तरएहिं पल्लिसेणावई अहिसित्तो, परिवारिओ य सयण-परियणेणं पल्लिजणमणुपालयंतो सुहंसुहेण कालं गमेइ ।

अह अण्णया कयाई तस्स सुहोवविट्ठस्स चिंता समुप्पन्ना—बाहिं ता निग्गच्छामि । ततो सो एगवत्थो धणुं गहाय पल्लीए नाइदूरं गतो, पेच्छइ य परिदुब्बलसरीरे केणावि वावडग्गहत्थे मग्गपरिब्भट्ठे पुरिसे परिभमंते । चिंतियं च णेणं—के एते भविस्संति?

१ °तयाओ उ २ विना ॥ २ °क्कारमणारोगेण उ २ विना ॥

त्ति । ते अणाउहहत्थे परिकलिऊण अणायरो से जाओ, अब्भासं च गओ । तओ तेहिं भगवंतेहिं सग्गमग्गसोवाणभूएहिं हिय सिव-सुह-नीसेसकरेहिं महुर-पुव्वभासीहिं धम्मलाभिओ । ततो पणमिऊण पुच्छिया अणेण—के तुब्भे ? कओ वा ? कहिं वा वच्चह ? त्ति । तेहिं भणियं—सव्वारम्भविरया धम्मट्ठिया 'समण' त्ति वुच्चामो । तेण य भणिया—को धम्मो ? त्ति । तेहिं भणियं—परस्स अदुक्खकरणं । ततो तेण ते समणा पहं समोयारिया गया य । सो वि य पल्लिं पविट्ठो ।

ततो कयवएहिं दिवसेहिं वइक्कंतेहिं चोरवन्दपरिवारितो गामघायं काउं निग्गओ, गओ जणवयं । तत्थ य गामब्भासे दिवसावसेसवंचणनिमित्तं एगम्मि विसम-दुग्गमग्गगहणे अच्छति । चिंतियं च णेण—'अहम्मो परदुक्खस्स करणेण, धम्मो य परस्स सुहप्पयाणेण' त्ति समणा एवं भणंति तओ 'किं मम परस्स दुक्खकरणेण दिण्णेण ?, तं मे होउ जं परस्स सुहप्पयाणेण' त्ति चिंतिऊण सव्वप्पहरणाणि परिचइऊण जणवयं सो उवगतो ।

ततो सुहसीलसमुदायारो साणुक्कोसो अमच्छरी सव्वसत्तेसु साणुकंपो कालगतो समाणो इहं कुसग्गपुरे नयरे सुरिंददत्तस्स सत्थवाहस्स सुभद्दाए कुच्छिंसि पुत्तत्ताए पच्चायाओ । ततो तुज्झ गब्भगयस्स समाणस्स धम्मकरणे माऊए दोहलो जातो । ततो तुमं विणीयदोहलाए माऊयाए णवण्हं मासाणं अद्धट्ठमाण यं राइंदियाणं सुरूवो दारओ जातो । ततो तुज्झ अम्मा-पिऊहिं निव्वत्तबारसाहस्स इमेयारूवं गोण्णं गुणनिप्फन्नं णामधेयं कयं—जम्हा णं अम्हं इमम्मि दारए गब्भगए धम्मदोहलो आसी, तं होउ णं एयस्स दारगस्स नामधेयं 'धम्मिल्लो' त्ति । तमेयं तुमे धम्मिल्ल ! पुव्वभवे जीवस्स रक्खणबीएण इमा एरिसी मणुयरिद्धी लद्ध त्ति ॥

ततो तस्स धम्मिल्लस्स साहुसगासाओ तं वयणं सोउं ईहा-ऽपूह-मग्गण-गवेसणं करेमाणस्स खणिस्स पुव्वजाईसरणे समुप्पण्णे । ततो सो समारियपुव्वजाईसरणो दुगुणाणियतिव्वसंवेगजायसड्ढो आणंदसुपुण्णनयणो अणिच्चयं बहुदुक्खयं च माणुस्सं संजोगविप्पओगे य चिंतिऊण निव्विण्णकामभोगो तस्सेव पायमूले पव्वइओ, सामाइयमाइयाणि एक्कारस अंगाणि अहिज्जिओ । ततो बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झोसेत्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता अच्चुए कप्पे देविंदसमाणो बावीससागरोवमट्ठिइओ देवो जाओ । ताओ य देवलोयाओ चइत्ता महाविदेहे वासे सिज्झिहिति ॥

एवं खलु धम्मिल्लेण तवोकम्मेण सा इड्ढी लद्धा ॥

॥ धम्मिल्लहिंडी सम्मत्ता ॥

धम्मिल्लहिंडीग्रन्थाग्रम्—
श्लो० १२७७ अ० २.



सर्वग्रन्थाग्रम्—
श्लो० २०२४ अ० ५.

१ चिच्चिऊण ली ३ क ३ गो ३ । चिच्चिऊण उ २ ॥ २ °हिंसि क ३ गो ३ ॥ ३ पदिवसाणं सुरू° उ २

[पेढिया ।]

इयाणिं 'वसुदेवेणं कहं परलोगे फलं पत्तं' ति पुच्छिओ रण्णा भगवं परिकहेइ ।
इयाणिं पेढिया, [1]एवमहांतो(महतो) इतिहासपासाइ[2]स्स पेढभूया ॥

पज्जुण्णसंवकुमारकहासंबंधो

अत्थि पच्छिमसमुद्दसंसिया निउणजणवन्नियगुणा चत्तारि जणवया । तं जहा—आणट्ठा[3] कुसट्ठा सुरट्ठा सुक्करट्ठ त्ति । तेसिं च जणवयाणं अलंकारभूया, सुट्ठियलवणाहिवदेवदत्तभग्गा, धणवइमइनिम्माया[4], चामीयरपायारा[5], नवजोयणवित्थिण्णा, बारसजोयणायता[6], रयणवरिसंयाय[7] दुरुज्झियदारिद्ददोसा, रयणप्पहापडिहयतिमिरा, सुरभवणपडिरूवचक्कवहुभोमपासायसहस्समंडिया, विणीय-विण्णाणबहुल-महुराभिहाण-दाण-दय-सुवेसभूत-सीलसालिसज्जणसमाउला नयरी बारवती नाम । तीसे य बहिया रेवओ नाम पव्वओ रयणकंतिदित्तसिहरकरविलिहियगगणदेसो । सो य नंदणवणगुणगणावहासिणा जायवजणमणाऽऽणंदणेणं नंदणवणेण उज्जाणेणं मंदरो इव सुरनंदणेणं परिक्खित्तो । बारवईए नयरीए धम्मभेया इव लोगहिया दस दसारा परिवसंति । तं जहा—

समुद्दविजयो अक्खोभो, थिमिओ सागरो हिमवं ।
अयलो धरणो पूरणो, अभिचंदो वसुदेवो त्ति ॥

तेसिं च सम्मओ उग्गसेणो राया सुराण विव सक्को अणइक्कमणीओ । तत्थ समुद्दविजयस्स रण्णो नेमि-दढनेमिप्पमुहा पुत्ता, सेसाणं उद्धयाई । वसुदेवस्स य अकूर-सारणग-सुहदारगादिणो । तेसिं च पहाणा राम-कण्हा निंज्जल[11]-सजलजलदच्छविहरा, दिवसयरकिरणसंगमावबुद्धपुंडरीयनयणा, गहवइसपुण्णसोम्मतरवयणचंदा, भुयंगभोगोवमाणसुसिलिट्ठसंधी, दीहघणु-रहजुग्गबाहू, पसत्थलक्खणंकिय-पल्लवसुकुमालपाणिकमला, सिरिवच्छु[13]त्थइय-विउलसिरिणिलयवच्छदेसा, सुरेसरायुधसरिच्छमज्झा, पयाहिणावत्तनाहिकोसा, मयपत्थिवत्थिमिय-संठियकडी, करिकरसरिसथिर-वट्टितोरू, सामुग्गणिमुग्ग[14]जाणुदेसा, गूढसिर-हरिणजंघा, समाहिय-सम-सुपइट्ठिय-तणु-तंबनखचलणा, ससलिलजलदरवगहिर-सवणसुहरिमितवाणी ।

---

१ शां० विनाऽन्यत्र—एवं महतोत्तो इति° ली ३ मों० गो ३ । एवं महत्तो इति° कस० सस० । एवं महंतोत्तो इति° उ० ॥ २ °सायस्स शां० ॥ ३ अणट्ठा कुणट्ठा शां० ॥ ४ निम्मविया ली ३ ॥ ५ सायरपा° ली ३ ॥ ६ °णायामा ली ३ ॥ ७ °सय(ए)ण दुरु° शां० विना ॥ ८ °रसु° उ २ ॥ ९ °ण देउज्जा° णेण परि° गो ३ उ० ॥ १० विय शां० । विअ उ० ॥ ११ निज्जल° क ३ गो ३ । विजल° शां० ॥ १२ °रायदवय° उ २ विना ॥ १३ °च्छोच्छइ° शां० ॥ १४ °णिमुग्ग° शां० विना ॥

* फुल्यन्तर्गतोऽयं पाठ 'सर्वेष्वपि लिखितपुस्तकेषु "धम्मिल्लहिंडी सम्मत्ता" इत्यस्याग्रे वर्त्तते ॥

राम-कण्हाण अग्गमहिसीणं परिचओ

तत्थ रामस्स बलदेवस्स रेवई अग्गमहिसी । सा उण रेवयस्स माउलस्स दुहिया रती विव रूवस्सिणी ।

कण्हस्स उग्गसेणस्स दुहिया सच्चभामा णाम सची विव सक्कस्स बहुमया १ ।

रिट्ठपुरे य रुहिरस्स रण्णो देवी सिरी, तीसे दुहिया पउमावती । तीसे य पिउणा सयवरो दिण्णो त्ति । वासुदेवस्स चारपुरिसेहिं निवेइओ सयवरदिवसो । देवदिण्णेण रहेणं दारुगसहाओ गओ सयवरभूमिप्पएस । निग्गया य कुमारी सहिजणकयपरिवारा । मचारूढा य रायणो तीसे दसणूसुया ठिया । वइण्णो य कण्हो रहाओ । दिट्ठा य णेण पउमावती पउमवणनिग्गया इव पउमनिलया, पउमवरमणहरमुही, कण्णालक्खणविण्णपूजितकोमलचलणारविंद-जघोरु-सोणिमवला-नाभि-मज्झ-थणजुयल-बाहुलतिका-करतलकिसलय सिरोधरा-दसणवसण-ऽच्छि-कण्ण-नासा-कवोल-सिरकेस-गमण-भासिय-हसिया, कयली-लवंगकती । रइया य से दिट्ठीए नवजलवावली विय मयूरस्स । तीसे वि सो चक्खुविसयमागतो । चिंतियं च णाए—कयरो मण्णे एस देवो सयवरकोऊहल्लेण इहमागवो ? । जाव सा एव सकप्पेइ ताव कण्हेण रूवाइसयविम्हियहियएण भणिया पउमावती—अह वसुदेवसुतो हरामि त्ति न ते भाइयव्व ति । वणलया इव वणगएण उक्खित्ता दुयविलइया रह । ततो दारुगसारहिणा घोसियं—सुणतु सयवरसमागया खत्तिया [1], दसारकुलकेऊ वासुदेवो हरइ कुमारिं जो न सहइ सो पच्छओ लग्गउ त्ति । तयणतरेण दामोयरेण कुसुमकलावधवलो पचयण्णो सखो उद्धतो । त च सद्दं सुणती पउमावती सहसा भीया कण्हस्स वच्छत्थलमल्लीणा, तेणं य समासासिया । अपुव्वसहसम्मोहिया य खत्तियसेणा । पउरा य भणति—किण्णु परियत्तइ भूमी ? जोइसचक्क व निवडइ धरणिवट्ठे ? समुद्दो वा वेलमइक्कमइ ? त्ति । जाव ते सत्था न भवति ताव बहूणि जोयणाणि वइक्कतो, निवाघाएण पत्तो बारवतिं । रोहिणी-देवईहि य परितुट्ठमाणसाहिं बहुसक्कारेण य सक्कारिया पउमावती । दत्तो से पासाओ देवनिम्मिओ परिचारियाओ य । पिउणा वि पेसिओ अत्थो विउलो किंकरीओ य २ ।

सिंधुविसए वीइभय नगरं । तत्थ य मेरू राया, चदमती देवी, तीसे दुहिया गोरी । तेण य रण्णा पेसिय कुलगराण—कण्हस्स कुमारिं देमि, सबघाणुग्गहेण म अणुगेण्हह त्ति । तेहिं अभिचदो पेसिओ । सो विउलकोस-पेसवग्ग गहेऊण आगवो । वासुदेवो य तीसे पाणिं गाहिओ वुड्ढेहिं कुलगरेहिं । तीय वि दिण्णो रयणपासाओ ३ ।

गंधारजणवए पोक्खलावईनगरीए नग्गई नाम राया, देवी य मरुमती, तीसे थीससेणो पुत्तो जुवराया, तस्स भगिणी गधारी रूववती रूवगए गधव्वे य परिणिट्ठिया । थीस

१ °भसवण° शां विना ॥ २ °राकुघइल्लेम इहागड ? त्ति शां ॥ ३ °सयहिएणं शां विना ॥ ४ °दमा° शां विना ॥ ५ °ण सा य दे ॥ ६ °चारओ य शां विना ॥ ७ तीए क ३ ॥

सेणाणुमईए रामसहिओ कण्हो गंधारिं सपरिवारं गहाय बारवतिमुवगतो । सा वि बहुसक्कारेण पूइया जऊहिं । दिण्णो से पासाओ विमाणोवमो ४ ।

सिंहलदीवे राया हिरण्णलोमो, तस्स देवी सुकुमाला नाम, तेसिं दुहिया लक्खणलया लक्खणा णामं, पुत्तो य तस्स रण्णो जुयराया दुमसेणो । दूओ य पेसिओ कण्हेण सिंहलदीवं, सो आगतो कहेइ—देव[1] हिरण्णलोमस्स रण्णो दुहिया देवया विव रूवस्सिणी, सा तुम्ह जोग्गा. सा य किर दाहिणवेयालीए समुद्दमज्जणं सेवमाणी देवयणवक्खेवेण मासं गमेहिइ दुमसेणेण सारक्खिया ता कीरउ आयरो रयणसंगहस्स । तस्स वयणेण राम-केसवा गया समुद्दतीरं, दुमसेणं हंतुं सपरिवारं लक्खणकुमारिं गहाय सपुरिसागया । हिरण्णलोमेण य रण्णा विउलो अत्थो पेसिओ, 'पुव्वचिंतिओ मे मणोरहो सपुण्णो त्ति पणओ हं आणाविधेउ' त्ति ५ ।

अरक्खुरीए नयरीए रट्ठवद्धणो राया, तस्स देवी विणयवती, पुत्तो णमुई नाम जुवराया, तस्स भगिणी सुसीमा सुसीमा इव वसुमती मणोहरसरीरा । सा सुरट्ठाविसए पभासतित्थं मज्जिउं गया णमुइसहिया । सा कहिया चारपुरिसेहिं माधवस्स । गतो रामसहिओ, नमुइं हंतूण सपरिवारं सुसीमं घेत्तूण लच्छिं पिव वितिय जायवपुरीमागतो । सा वि सक्कारिया कुलगरेहिं, दिण्णो य पासादो ६ ।

गगणनंदणे (ग्रंथाग्रम्–२१००) नयरे जंबवंतो राया विज्जाहरो, तस्स य भज्जा सिरिमई, पुत्तो जुवराया दुप्पसहो नामा, धूया य से जंबवती । सा चंदाऽरविंदाणि मुहसोहाए अइसयति, णयणजुयलेण य सभमरकुवलयजुगलं, थणजुयलेण य पीणुण्णय-निरंतरेण बालतालफलसिरिं, लताओ य सपल्लवाओ बाहाजुयलेण, मज्झेण य तिवलिविभंगुरेण वज्जमज्झं, जहणवित्थारेण भागीरहिपुलिणदेसं, ऊरुजुयलेण गयकलभनासाभोगं, जंघाजुयलेण कुरुविंदावत्तसंठितिं, कमजुयलेणं कुम्मदेहागितिं, सुकुमालयाए सिरीसकुसुमसचयं, वयणमहुरयाए वसंतपरहुयवायं । सा चारणसमणेण 'अद्धभरहाहिवभज्जा भविस्सइ' त्ति आदिट्ठा । ततो सो जंबवंतविज्जाहरराया 'तं गवेसिस्सामि' त्ति गंगातीरे सन्निवेसे सन्निविट्ठो । सा य कुमारी अभिक्खं गंगानदिं मज्जिउं एइ सपरिवारा । विज्जाहरेण य इक्केण सेवानिमित्तं कण्हस्स निवेदिता । सो अणाहिट्ठिसहिओ त पएस गतो, दिट्ठा अणेण गंगापुलिणे कीलमाणी, रूवमुच्छिएण य हिया । निवेइया रण्णो, सो रूसिउ आगतो सयं, जुज्झिउं च अणाहिट्ठिणा सह संपलग्गो । भणिओ य णेण राया—अयाणुगो सि तुमं, कण्हस्स वासुदेवस्स नेऊण कुमारी देया, तं जइ तेण सयमेव हिया णणु सोहणं. किं न याणसि से पहावं ? देवप्पसायं च ? त्ति । ततो सो उवसतो, भणितं [च]—सुट्ठु कुमार[1] भणसि. मम वि चारणसमणादेस पमाणं करेंतस्स एसेव अहिप्पाओ आसी. तं अहं तवोवणं गमिस्सं, दुप्पसहो

१ °या लक्खणा शां० विना ॥ २ मणह° शां० ॥ ३ °सिरी शा० विना ॥ ४ °यणिणायं ली ३ ॥ ५ °सिस्सं ति त्ति शां० ॥ ६ याणासि शा० ॥

ते य परिपालणीओ, खमह मे अयाणओ अतिक्कमं। तओ ते जंबवंती धिर्ति पिव विंतिय गहेऊण बारवतिमुवगया। पूइओ य जायवेहिं सभारिओ। तुप्पसहो य कुमारो जंबवईपरिचारियाओ विउलं च वित्तं गहाय उवगतो, पणओ राम-केसवाणं। तेहि वि घणुववहारेण पूइओ गतो सपुरं। जंबवतीए दत्तो पासादो कण्हेण ७।

विदब्भाजणवए कुंडिणिपुरं नाम नयरं। तत्थ भेसगो राया, विज्जुमती देवी, तेसिं पुत्तो रुप्पी कुमारो, रुप्पिणी य दुहिया। सा य वासुदेवस्स नारएण निवेदिता, भणइ— कण्ह! सुणाहि—मया रायंतेउराणि बहुयाणि दिट्ठाणि जारिसी पुण कुंडिणिपुरे रुप्पिणी नाम कण्णया तारिसी बीया न होज्ज त्ति तक्केमि। सा सहस्सरस्सिरजियसयवत्तकतवयणा, वयणकमलनालभूयचउरंगुलप्पमाणकंधरा, मउय-सुवट्टिय सिलिट्ठ-संठिय-तणुय-सुकुमाल-सुभलक्खणसणाह किसलयुज्जलबाहुलतिका, करपरिमिय-वट्टहारपहसिय-पीणथणजुयलभार सीदमाणवलिभंगवलियमज्झा, ईसिंमउलायमाणवरकमलवियडणाभी, कण्णालक्खणवियक्ख णपसंसियमयणसरनिवारणमणुज्जसोणिफलका, खमणिम-परमसुकुमाल-थिर-वरोरू, सुली णजाणुप्पएसा, गूढसिर-रोमगोपुच्छसरिसजंघा, नवनलिणिकोमलतल-कमलरागसप्पभन हमणिभासियपसत्थचलणा, सवण-मणग्गाहिरिभितवयणवियक्खणा, आलओ गुणाणं। एवं च नारदो रुप्पिणिं कण्हस्स हिययसाहीणं काऊण उप्पइओ। रुप्पिणीए अणेण वासुदेवगुणा कहिया।

एयम्मि य देसयाले रुप्पिणी सिसुपालस्स दमघोससुयस्स दत्ता। रुप्पिणिपिउच्छाए य एयं पवित्तिं सोऊण विरहे भणिया—पुत्ति रुप्पिणि! सुमरसि जं सि बालभावे दो वि अइमुत्तएण कुमारसमणेण णमचारिणा भणिया 'वासुदेवस्स अग्गमहिसी भविस्ससि' त्ति?। तीए भणियं—समरामि। सा त भणइ—पुत्त! जह वागरियं तेण मुणिणा तहा त, न एत्थ संसओ बलदेव-वासुदेवा अवरते सुवंति, समुद्देण किर से मग्गो दिण्णो, धणदेण णयरी णिम्मिया बारवती, रयणवरिसं च वुट्ठं 'वासुदेवो य किर सिसुपाल-जरासंधे वहे हि' त्ति वाओ पवत्तइ त्ति चेइपइणो य तुमं सि दत्ता रुप्पिणा सिसुपालं हतूण मि तुमं कण्हो गेण्हतगो, तं मा ते वयणीयं होहिति जइ तवाणुसयं दामोयरस्स पेसेमि अहं वि। रुप्पिणीए भणिया—पिउच्छा! तुब्भे मम पभवहा पिउणो अणंतरं, जं च मे हियं तत्थ तुब्भे मे पमाणं।

ततो तीए पच्छण्णं पुरिसो पेसिओ बारवतीं लेहं गहेऊण, तं विवाहदिवसनिरुत्तपट्ठिओ विदियजत्ता कुमारीदाणस्सफला, सिसुपालवयणनिगूढवयणा य लेहा उवणीया कण्हस्स। 'वरदानदीतीरे य नागघरक्खणववदेसेण कुमारिनिग्गमो, तत्थ मिलियव्वं' ति कहियं तेहिं

१ °वती के शां विना॥ २ कुडिण्णपु° शा० विना॥ ३ न दिट्ठ त्ति ली ३॥ ४ °कज्ज° उ २॥ ५ °णाकलि° शां॥ ६ °ण अचारिणा उ २ ली ३॥ ७ °स्ससि त्ति शा विना॥ ८ पुत्ति क ३॥ ९ उ विनाऽन्यत्र—°हि त्ति वाओ, चेइ° शां। °हिति चेइ° ली ३ क ३ गो ३॥ १० °पयप्पे शां०॥ ११ °लपवसिद्धुया कु° उ २॥ १२ वरदाण° उ २॥

पुरिसेहिं। आगया य कुंडिणिपुरं, वण्ण-चिंधपभावा य कहिया णेहिं कुमारीए सपिउच्छाए, नेच्छियाऽऽगमणं कण्हस्स। बहुमाणं सिसुपालो आगतो ठिओ वरदानदीपुव्वतीरे। पमक्खिया रुप्पिणी सव्वालंकारभूसिया नीणीया नागघरं भद्दगमहत्तरगपरिवुडा। सा अब्बणच्छलेण पुणो पुणो नीइ। दिट्ठा य णाए ताल-गरुडज्झया जहा कहिया दूएहिं। तुट्ठाए य भणिया रुप्पिणी पिउच्छाए—एहि पुत्त! पसण्णाणि ते देवयाणि. एहि, कुणसु पइक्खिणं देवउलस्स मंदं मंदं परीति। वासुदेवेण य कुमारिं दट्ठूण भणिओ दारुगो—तूरह तुरगे। तेण य चोइया नागघरंतेण। कण्हेण य तीए पमाणं करेंतेण आरोविया रहं। ठिया य भद्दगेण विज्जुलया इव नवजलदलीणा दिट्ठा। आफालियं च णेण धणुं। 'कहिं वच्चसि सूर! कुमारिं गहेऊणं?' ति भणंतो भणिओ कण्हेण—मा मर, वच्च, रुप्पिस्स पवित्तिं नेहि. किं ते वज्झसेण?, भण—राम-गोविंदा रुप्पिणिकुमारिं हरंति' त्ति। सो भीओ रवंतो गओ रुप्पिसमीवं। दो वि सपरियणा निग्गया। रुप्पिंणा पइण्णा कया—भगिणिं अमोएउं न पविसिस्सं नयरिं। पत्थिओ महता बलसमुदएणं रहमग्गेण। रुप्पिणी य विमणा पुच्छिया कण्हेणं—किं देवि! नाभिरुइयं ते मया सह गमणं?। सा भणइ—देव! सुणह, मम भाया धणुवेयनिही, सबलो य आगतो. तुब्भे पुण दुवे जणा, तत्थ मे पीलं आसंकामि। कण्हेण भणिया—देवि! न जुत्तं इत्थिसमीवे अप्पा विकत्थेउं, तह वि पुण तवाऽऽसासणनिमित्तं भणामि—पस्स मे बलं। तत्थ नाइदूरे महापरिणाहा पायवा पंतीए ठिया, ततो णेण एक्कसरेण विणिभिण्णा। अणंतरिया य जे जे तीए संदिट्ठा ते ते विदारिया। वइरं च से अंगुलिमुद्दाए चूरियं अंगुट्ठंगुलिसन्निवाएणं। पत्तं च अग्गाणीयं। भणिओ य बलो कण्हेणं—भाउग! तुम्हे सुण्हं गहाय वच्चह, अहमेते णिवारेमि। रामेण भणिओ—कण्ह! तुमं बहुसहिओ वच्च वीसत्थो. अहं एयं कागबलं पोएमि। ततो रुप्पिणीए जायभयाए विण्णविओ कण्हो—देव! जहा मे वयणीयं न होइ—'भाउगं मारावेऊण गय' त्ति, तहा कुणसु पसायं. सत्ता तुब्भे सव्वं पि जेउं। एवं विण्णविएण दामोदरेण रामो भणिओ—भाउग! सुण्हा ते भाउगस्स अभयं मग्गति. कीरउ से पसाओ। रामेण य से 'तह' त्ति पडिवन्नं। रुप्पिभूपबलं च बलदेवमभिभविउमारद्धं। तेण य देवदिण्णो सखो समुद्धंतो। तस्स सद्देण निट्ठुरगज्जिय-खुभियमगरागरसरिच्छेण बलतिभाओ निराणंदो उज्झियाउहो ठितो। रुप्पी य अणुयाति अमरिसिओ, दूरं गंतूण य सरजालं पवुट्ठो रोहिणिसुयरहवरोवरिं। तेण य लहुहत्थयाए छिण्णा सरेहिं सरा, तुरगा सारही य पडिविद्धा। विणासियरहो वि जाहे न मुयइ धिट्ठयाए ताहे से धणुं विणासियं, अंगुट्ठो य दाहिणो विद्धो। ततो सुहीहिं कहिं कहिं वि निवारिओ—'सामि! एस रामो पभवंतो वि ते न विणासेइ, अलं जुज्झेणं' ति नियत्तिओ। पइण्णापूरणत्थं भोजकडं नयरं निवेसेइ। इयरे वि सिद्धकज्जा

१ वरगान° उ २ ॥ २ °हत्तरपरि° शा० ॥ ३-४ एहिं उ २ विना ॥ ५ दारगो शां०। एवमग्रेऽपि ॥ ६ पणामं करेंतीए आरो° क ३ ॥ ७ °प्पिणा प° क ३ विना ॥ ८ °यं सिसं। भ° क ३ ॥ ९ °तो विणा° शां० विना ॥

परं पीइसुबहुला अणुविरगा वचति, कहियं च रुप्पिणीए—अणहसरीरो ते भाया नियत्तो सयं जणवयं। दरिसिता पुर-पवय देसे य रुप्पिणीए पत्ता पगं सन्निवेसं। तत्थ कण्हो जेट्ठ भणसि—रमणीयमुववणमिणं, वसामु इयं ति। तेण 'तह' त्ति पडिस्सुयं, संदिट्ठो य सिद्धत्थो सारही—बच्छ! भणसु पवरवरा, सिग्घं विवाहमंडगं उवणेह त्ति। सो गओ। जाव नागरा सव्वेंति ताव य जक्खेहिं वधू-वरं वेवाहिगेण सक्कारेण पूइयं। पत्ता नागरया, दट्ठूण विम्हिया। तं च देवयानयरं जायं। पवर-जक्खपरिगायाण य अतिच्छिया रयणी। कमेण य पत्ता बारगं। पत्तो य रुप्पिणीए समवणस्स उत्तर-पुरच्छिमो पासाओ ८।

रोहिणी-देवगीहिं तत्था ऽऽमरण-पडिचारिकाजणेण पूइया। देविपरियणस्स य पडिसिद्धो पवेसो। भणिओ य सच्चभामाए वासुदेवो—देव! दरिसिज्जउ कुमारी जा तुब्भेहिं आणीया। सो भणइ—का कुमारी? कओ वा? जओ पहस्सइ। जाहे निब्बंधं करेइ ताहे णेण भणिया—रेवयपव्वयसमीवे णंदणवणे दच्छिह त्ति। संदिट्ठो अणेण लेप्पकारो—उज्जाणे सिरिघरे सिरिपडिमं अवणेऊण पेढिगं लहुं सज्जित्ता आण पच्चप्पिणाहि त्ति। तेण जहाणत्तं अणुट्ठियं। दिण्णा य आणत्ती अंतेउराण उज्जाणनिग्गमणे। पभूसे रहे करेऊण रुप्पिणिं दारुगसहिओ गओ णंदणवणं केसवो। सिरिघरे य णेण ठविया रुप्पिणी, भणिया—'देवि! देवीण आगमणसमए पेढियाए निच्चला अच्छसु जाव निग्गयाउ' त्ति वोत्तूणमवक्कओ रहसमीवे चिट्ठति। पत्ताणि य अंतेउराणि, सच्चभामा पुच्छइ—देव! कहिं सा कुमारी?। भणिया—गया सिरिघरं, वच्चह, तत्थ णं दच्छिह। ताओ गयाओ 'अहो! भयवतीए रूवं णिम्मवियं सिप्पिणा' त्ति भणतीओ पणयाओ। उवाइया य सच्चभामाए—'भयवइ! कुमारी आगमुगा हिरि सिरिपरिवज्जिया होउ, तओ पूयं करिस्सं' ति निग्गया, भणिया य समंततो। चेडीओ भणंति—सामिणीउ! सा कस्स[इ] अडविराइणो धूया हो हिति का सत्ती तीए तुब्भ पुरओ ठाइउं? तुम्हे कम्मि वि छिणा ठिया होहिति। गयाओ य कण्हसमीवं भणंति—देव! न दीसए सा तुब्भ वल्लहा! तेण भणियाओ—अवस्सं तत्थेव होहित्ति, वच्चामो, दच्छिह णं। गओ य केसवो देवी(ग्रन्थाग्रम्—२२००)सहिओ सिरिघरं। सा उट्ठिया, 'देव! संदिसह, काओ पणमामि?' त्ति। तेण सच्चभामा दंसिया। रुप्पिणी य तीसे पणया। सा भणति—तुमं सि अम्हेहिं पुव्वं वंदिया। वासुदेवेण भणिया—कहं कहं? त्ति। सच्चभामा भणति—'जइ अम्हेहिं भगिणी वंदिया तुज्झ किं इत्थ वत्तव्वं?' ति। सफलुसाए वि तत्था-ऽऽहरणेहिं पूइया।

पज्जुण्णकुमारजम्मो तदवहारो गवेसणा य

रुप्पिणी कयाइ च सीहं मुहे अइगच्छमाणं सिमिणे पासित्ता कहेइ। केसवेण पहाण-

---

१ य सां° शा विना॥ २ वत्त भ° शा॥ ३ °णीए देवगीए य तत्था° शां॥ ४ वा कुमारिं जओ शां विना॥ ५ खिप्पातो क ३ गो॥ ६ °डरीयं ली ३॥ ७ °णो रेवयसमी° शां० विना॥ ८ सुमि° शां० विना॥

पुत्तलंभेण अभिणंदिया । पुणरवि य उज्जाणं गतो सओरोहो माहवो । वियरमाणीए य रुप्पिणीए दिट्ठो णहचारी समणो[2] झाणनिच्चलणयणो, पुच्छिओ य णाए वंदिऊण—भयवं ! उदरे मे साहह किं होहिइ ? त्ति। सच्चभामाए वि तयणंतरे पुच्छिओ तहेव। सो झाणवाघायभीरू 'कुमारो होहिति' त्ति भणंतो अदरिसणं गतो । ततो तासिं विवाओ समुप्पण्णो—अहं पुत्तलंभेण मुणिणा आदिट्ठा, अहं आदिट्ठ त्ति । रुप्पिणी भणइ—मया पढमं पुच्छिओ । इयरी भणइ—सच्चं, तुमे पढमं पुच्छिओ, न पुण तेण किंचि भणियं. मया पुट्ठेण वागरियं ति, तेण ममं पढमं पुत्तो होहिति, ण तुहं ति । एवं तासिं विवदंतीणं सच्चभामा भणति—जीसे पढमो पुत्तो जायइ तीसे वरकोउए इयरीए केसेहिं दब्भकज्जं कायव्वं ति । रुप्पिणी य पच्छण्णगब्भा, ततो णं सच्चभामा बाहइ । निबंधे य कए पडिवन्नं—एवं नाम भविस्सइ त्ति । ततो दो वि जणीओ गयाओ वासुदेवसमीवं । कहिओ अणाहिं चारणादेसो पणयं च । वासुदेवेण भणियाओ—तुज्झं दुण्ह वि जणीणं कुमारा [3]होहिंति, अलं विवाएणं ति । ताओ निग्गयाओ । तासु च निग्गयासु दुज्जोहणो उत्तरावहराया सेविउमइगतो दामोयरं । कहियं च अत्थाणीगयाण राईणं कण्हेण देविविवायवत्थुं । दुज्जोहणेण भणियं—देव ! जीसे पढमं पुत्तो जायइ तस्स मया धूया दिण्णा । एवं परिहासे कए अइगओ बारवतिं सपरिवारो जउणाहो ।

रुप्पिणी य पुण्णे पसवणसमए पसूया पुत्तं । कयजायकम्मस्स य से बद्धा मुद्दा वासुदेवनामंकिया, निवेदितं च परिचारियाहिं कुमारजम्मं कण्हस्स । सो रयणदीविकादेसियमग्गो अइगतो रुप्पिणिभवणं । चक्खुविसयपडिओ य से कुमारो देवेण अक्खित्तो । कओ य अक्कंदो चेडीहिं—कुमारो केण वि[4] हिओ त्ति । रुप्पिणी य कण्हं दट्ठूण मुच्छिया, सत्था पुत्तसोगदुहिया विलविउमाढत्ता—देव ! निही मे दिट्ठ-नट्ठो जातो. मे मंदभागाए अज्ज नवुग्गतो बालचंदो राहुणा घत्थो. निरालोयासु दिसासु कत्थ णं मग्गामि ?. परित्तायसु मं सामि !. देवताण मे को कओ अवराहो जेण मे पुत्तको[5] अवहिओ ?, न याणं, मरिस्सितु । सो एवं च रोयमाणी देवी आसासिया जणवइणा—'देवी मा विसायं वच्च, गवेसामि ते पुत्तगं. जेण ममं परिभविऊण हिओ तस्स दिट्ठमेत्तस्स अणप्पिणंतस्स मारं चिणयं करिस्सं' त्ति वोत्तूण सभवणमुवगतो ।

तत्थ सकुलारो चिंतापरो अच्छइ । नारओ य पत्तो तं पएसं । वक्खित्तचित्तेण य चिरस्स दिट्ठो, भणिओ य णेण—सागयं रिसिणो ?, चिंतापरेण ण मए त्थ दिट्ठा । सो भणइ हसमाणो—कण्ह ! महती ते चिंता—कस्स मण्णे राइणो कण्णा रूवस्सिणी होज्जा ! रयणं वा ? को वा न सेवइ ? को वा जरासंधपक्खिओ त्ति ? । सो भणइ—न एयं, सुणह कारणं—रुप्पिणीए जायमेत्तओ केणावि हिओ कुमारो, तस्स परिमग्गणनिमित्तं मे महती

१ विहर° क ३ ॥ २ °णो निच्चलज्झाणणय° शां ० विना ॥ ३ होंतगा, अलं शां० ॥ ४ वि हरिओ क ३ ॥ ५ °को हिओ उ २ ॥

चिंता । नारओ दसप्पभापरिभिन्नक्खरं भणइ—कण्ह ! सोहणो सवो जाओ जओ सच्चभामाए आसण्णो पसवणकालो तीसे य नारओवदिट्ठो पुत्त कुमारो होहिसि, ततो रुप्पिणीए केसमुंडणं दूरओ परिहरिय । ततो वासुदेवेण भणिओ—अलं परिहासेण, मवह, देवी धीरवेह त्ति । ततो सो तत्थेव परिहसंतो गओ, रुप्पिणीए भणिओ—अज्ज ! आसि मे आसा 'तुब्भे मे पुत्तगस्स पवत्तिं आणेहि' त्ति त जइ तुब्भे एवं आणवेह, निराणंदा मि संवुत्ता । ततो जायाणुकंपेण नारएण भणिया—रुप्पिणि ! मुय सोगं अहं तव पुत्तस्स गवेसणं अकाऊण न ते पुणो दच्छामो एस निच्छओ त्ति । उप्पइओ कसिणकुवलय-पलासरासिसामं गगणदेसं ।

सीमंधरजिणं पइ पज्जुण्णवहारविसया नारयस्स पुच्छा

चिंतियं च णेण—'अण्णया अइमुत्तो कुमारसमणो इह अइसयनाणी ससयपडिपुच्छादायगो आसी, संपयं पुण अवरविदेहे सीमंधरो नाम तित्थयरो विहरति, तं गच्छामि तस्स पायमूलं सो मे एयमट्ठं वागरेहिइ' त्ति संकप्पेऊण गतो खणेण अरहओ समीवं । ति गुणपयाहिणपुव्वं च वंदिऊण पुच्छति—भयवं ! बारवतीए कण्हस्स वासुदेवस्स रुप्पिणीए अग्गमहिसीए पुत्तो जायमेत्तओ हिओ केण ? त्ति ।

भयवया भणियं—धूमकेउणा जोइसियदेवेण पडिणीययाए अवहरिऊणं भूयरमणाडवीए सिलायले वज्झिओ 'एत्थ एसो सुहायवेण सोसं गमिस्सइ' त्ति । विज्जाहरमिहुणं च पच्चूसे वसोवरिएण समइच्छइ—कालसंवरो कणगमाला य । तस्स य दारगस्स चरिमसरीरनिप्फत्तिभवियव्वयाए तेसिं गती पडिहया । ताणि सकोयाणि 'किं मण्णे एत्थ कोइ अणगारो तवस्सी सढिओ होज्ज ?' त्ति उवइयाणि, पस्सति बालं सतेयसा सुहारयणमरीइपयरेण य विप्पसायं परमदंसणीयं । 'अहो ! अच्छेरं परिसेण रूवेण तेयसा य न होइ एसो पायवावन्नो' त्ति पसंसमाणो भणइ कालसंवरो—देवि ! वच्चामो त्ति । सा न चलइ । तो विज्जाहरेण भणिया—किं देवि ! एएण ते अहो देवकुमारसप्पभेण दारगेण ? त्ति । सा भणइ—अज्जउत्त ! तुम्हेहिं दिज्जतेण त्ति । ततो तेण तुट्ठेण से अंके निक्खित्तो 'एस ते पुत्तो मया दत्तो' त्ति । ताणि य गहेऊण निहिमिव दरिद्दाणि गयाणि । वेयड्ढदाहिणसेढीए पच्छिमदिसंतेणं मेहकूडं नाम नयरं अमरावतीदेसो, कओ य उसवो, पयासियं च—कणगमालाए देवीए तिरिक्खरणीविज्जाए पुव्वं पच्छाइओ गब्भो, सपयं जाओ कुमारो दिव्वो, 'पज्जुण्णओ' त्ति य से नामं कयं । सो तत्थ परिवड्ढइ । सोलसवरिसो अम्मा-पिऊहिं सद्धिं समेहि त्ति ।

पज्जुण्णपुव्वभवपुच्छा

पुणो पुच्छइ—भयवं ! कह तस्स जायमेत्तगस्स पडिणीओ उप्पन्नो ? त्ति । भयवया भणिओ

१ °हयव्व त्ति । त° शां ॥ २ °ओ आसि मे शां ॥ ३ आणेह शां विना ॥ ४ क ३ विनाऽन्यत्र— °सणं काऊण ते ली ३ ॥ ५ अयवड्ढ° शां ॥ ६ °पडि° उ २ ॥ ७ मे पयरमट्ठं क ३ ॥ ८ °ण सीसणाद° ली ३ ॥ ९ °पत्तो पाओ त्ति ली ३ ॥ १० तए परे धड्ढ° क ३ उ ॥ ११ सम स° क ३ ॥

नारओ—अणाइसंसारवत्तिणो जीवस्स तासु तासु जोणीसु कारणवसेण सव्वे सत्ता बंधवा आसी सत्तू य. पुण तस्स दारगस्स सम्मत्तलंभकाले जो पिता तम्मि समए आसी, सो से जहा जम्मंतरे पच्छा सत्तू जातो तं सुण—

पज्जुण्ण-संबपुव्वभवकहाए अग्गिभूइ-वाउभूइभवो

भरहे मगहाजणवए सालिग्गामे मणोरमुज्जाणं । तत्थ सुमणो नाम जक्खो, तस्स असोगपायवसंसिया सिला सुमणा, तत्थ णं जणा पूयंति । तत्थ य गामे सोमदेवस्स माहणस्स अग्गिलाए भारियाए दुवे पुत्ता अग्गिभूइ-वाउभूई अणेगसत्थऽप्पहयमतिणो, तम्मि मंडले लद्धपंडितसद्दा, बहुजणसम्मया परिवसंति ।

तम्मि य काले णंदिवद्धणो अणगारो चोद्दसपुव्वी समुप्पण्णोहिनाणी समणो विहरमाणो मणोरमउज्जाणे समोसरिओ । तस्स य समीवे समंततो जणो आगम्म केवलिपन्नत्तं धम्मं सुणइ, ससए य पुच्छइ । सो य भयवं जिणो विव अवितहं वायरेइ । तं च तहा जणमुवसेवमाणं उवलद्धूण सोमदेवपुत्ता भणंति—अयाणओ एस लोगो अम्हे वइक्कसिऊण समणसमीवमुवेगम्मति. कयरं तं नाणं जं अम्हं अविदितं ? ति । तेहिं पिया आपुच्छिओ—ताय[1] मणोरमे उज्जाणे मुणी किल कोई[2] ट्ठितो, तत्थ लोगो वच्चइ. तं तेण सह वायं करेमु, अणुजाणह त्ति । तेण भणिया—तुब्भे मया उवज्झाए अत्थदाणतोसिए काऊण सिक्खाविया, कीस परिभवं सहह ?. पराएह[3] समणं । ते गया जणपरिवुडा णाइदूरट्ठिया भणिया—भो समण ! तुमे समं वादत्थी आगया अम्हे. भण, किं जाणसि ? जा ते पडिवयणं देमो त्ति । तेसिं च आयरियाणं सीसो सच्चो नाम ओहिनाणी वादलद्धिसंपण्णो सुमणसिलासमीवे पसण्णचित्तो अच्छइ । तेण सद्दाविया—भो माहणा ! मा होह महिससमाणा. जं में वत्तवं तं भणह । इओ ते गया तस्स समीवं भणंति—भो समण ! किं भणियं होइ 'महिससमाण' त्ति ? । सच्चेण भणिया—सुणह—

महिसाहरणं

एक्कम्मि रण्णे पाणीयं एक्कमेव, तं चउप्पयाणि आरण्णाणि तण्हाभिभूयाणि आगम्म आगम्म तद्देसट्ठियाणि पीयपाणियाणि निव्वुयाणि जहागतं वच्चंति । महिसो पुण तत्थावगाहिऊण सिंगेहि आहणइ ताव जाव कलुसितं । ततो ण वि तस्स, ण वि अन्नेसिं पाणजोग्गं होइ । एस दिट्ठंतो । जहा सा अडवी तहा संसाराडवी, उदगसरिसा आयरिया, मिगसरिसा धम्मसवणाभिलासिणो पाणिणो ॥

तुब्भे[4] वाघायं धम्मकहाए करेमाणा महिससरिसा मा होहि-त्ति मए एत्थ सद्दाविया ॥

सओ भणंति—एएण मुणिणा सह वायत्थी आगया. जइ तुमे पराजिए एस ते गुरू पराजिओ होइ, तो तुमे सह जुत्तो आलावो. इहरहा हि महिससरिसा अम्हे तुमे कया सीह-

१ °वहम्म° शां० ॥ २ कोयि ट्ठितो शा० । कोइ पत्तो ली ३ ॥ ३ °राजए° ली ३ ॥ ४ °ब्भे धम्मकहावाघाय करे ली ३ ॥

सरिसा कयाइ भवेज्जामो । सच्चेण भणियं—पवमेयं जइह मं । ते भणंति—जियस्स को निग्गहो ? । साहुणा भणियं—जो तुम्हं रुइओ । ते भणंति—जइ अम्हे जिणसि तो ते वयं सीसा तुमे पराजिए तुब्भेहिं सव्वेहिं निग्गहव इओ । एवं ठिए समाणे पासणियसमीवे सच्चेण भणिया—पुच्छह ममं जं भे अहिप्पेयं । ते भणंति—अम्ह न कोइ संसओ विविहवेयाणं तुमं पुच्छ जं ते पुच्छियव्वं । साहुणा भणियं—जइ मया पुच्छियव्वा कहेह—कओ त्थ इहमागया ? । ते भणंति—अम्हे इहेव संवुत्था जो चदा-ऽऽइवे ण याणइ सो अम्हे न याणिज्जा । साहुणा भणिया—जाणामि, जहा तुब्भे सोमदेवस्स माहणस्स पुत्ता अग्गिलागब्भजाय त्ति एयं कहेह—र ग भ कओ त्थमागया ? । ते भणंति—एयं पि किं कोइ जाणइ ? । साहुणा भणियं—बाढं । ते भणंति—जइ तुमं जाणसि एयं तो जिया णाम अम्हे सुणामु । सच्चो भणइ—तुब्भे दो वि जणा अणंतरभवे सियालपिल्लका आसी । ते भणंति—को पच्चओ ? । भणइ सच्चवादी सच्चो—अत्थि पच्चओ—

<u>अग्गिभूइ-वाउभूइपुव्वभवसंबंधो</u>

इह नाइलो नाम गहवती । तस्स कम्मकरेहिं छेत्ते हलनाडो पम्हुट्ठो नग्गोहपायवस्स हेट्ठा, सत्ताहिगा य (ग्रन्थाग्रम्—२३००) वद्दला जाया । तुब्भे सीयवायहया त निग्गोहमस्सिया । छुहावसेण य भे सो नाडो खइओ । तस्स अपरिणामेण विसूइया जाया । तेण परितावेण दो वि मया अग्गिलागब्भे दो वि जमला जाय त्थ । न एत्थ संदेहो ॥

त सोऊण सकिया । भणियं च पासणिएहिं—पुच्छिज्जउ नाइलो । गया य पुच्छगा । कहियं गहवइणा—अत्थि वंत्तपुव्व, नाडो अद्धभक्खिओ य, सियालजुयलं च दिट्ठपुव्वं मयं दुद्दिणवे । तओ ते माणुस्सा आगच्छमाणा भणंति—जिया माहणदारगा अइसयनाणिणा । आगएहिं कहियं जहाभूयं । साहुणा भणिया—बितियं पच्चयं सुणह—

<u>राहुगबलामूगकहासंबंधो</u>

उज्जेणीओ पंच पुरिसा इहमागच्छंति । तेसिं च तिण्णि इब्भदारगा, दुवे कम्मगरगा । इब्भसुओ एगो अवदायसामो राहुगो नाम बलामूको सेयवरो, दुवे अवदाया चीणपिट्ठरंजितवसणा । कम्मगरा य काल-सामा, तत्थेगो कंबलेण पाहेयं वत्थाइ पोट्टलबद्धाइं च वहइ इयरो य इसिपूरवत्थेण । जो सो मूओ सो मया अणुसट्ठो इह उवनेहिइ पव्वयस्सइ य । जेण पुण कारणेण इमं देसमागतो तं भेह कहेमि जाव इह न पावेइ—

<u>राहुगपुव्वभवकहा</u>

उज्जेणीए सायरो नाम सेट्ठी आसी । तस्स तिगिंच्छिए अत्थि कोसल्लं । सो आयवयपरियट्टी करिसणारंभपक्खित्तचित्तो अट्टज्झाणी कालगतो सूयरो जाओ । सरए य सो जूहेण सह सालिभक्खणनिमित्तं खेत्तं पुव्वसुत्तमागतो । तावसकालसुएण य सद्दो कओ, पलाय च जूहं, सो य सूयरपिल्लओ अवलोइंतो पुत्तं दट्ठूण समुप्पन्नजाईसरो तत्थेव

१ °वहिड्ड शां० विना ॥ २ °कोसु पुणो शां० ॥ ३ अम्हे कहेसु जाव शां० ॥ ४ °व्वए शां० विना ॥

समीवमागतो । तेण अणुकंपाए ण धाडिओ, दिण्णो य से खीरोदणो, पुव्वसिणेहाणुरागेण य पुत्तमणुसरंतो[1] नयरमागतो परिवड्डिओ । अण्णया वद्धो पसुत्ते जणे साणेहिं मारिओ, रैसंतो रोससंपलित्तो तत्थेव नयरे सप्पो जाओ । परिभमंतो य तं घरं जणं च दिट्ठपुव्वं पस्समाणो जाईसरो जाओ । न मुयइ य तं पएसं ममत्तेण । संचरंतो दिट्ठो लउडेहिं घाइओ पुरिसेहिं । तदवत्थो जीवियत्थी अवसरिओ, [3]तं वेदणं सारीरं वेएंतो चिंतेइ—को एएरिसि-दोसो ?, अहिजाई भयजणणी. अहवा सयं कयं नूँण कम्मं परपीडानिमित्तगं, तं अणुभवामि । एवं मद्दवमुवगतो कालगतो पुत्तस्स पुतो जातो । सुमरियपुव्वभवो य तं जणं पस्समाणो चिंतेइ—कहं पुत्तं 'ताओ'त्ति भणिस्सं, सुण्हं वा 'अम्मो' त्ति, तं सेयं मे मूयत्तणं । परिवड्डिओ य सयणस्स आउरस्स तेइच्छं लिहिऊण उवदिसति, सम्मओ पूयणिज्जो य जातो ।

एयम्मि देसयाले एगो देवो सोहम्मकप्पवासी णंदीसरमहिमाए अवइण्णो विदेहे केवलिं पुच्छइ—भयवं ! अहं किं भविओ ? सुलहबोही ? दुल्लभबोहिओ वा ? । केवलिणा भणिओ—तुमं सि भविओ, किं पुण तुमे गुरू अचासादिओ तेण दंसणमोहणिज्जं अज्जियं ते दुल्लहबोहिगत्तणहेऊ । सो भणति—कहं पुण बुज्झिज्ज ? त्ति । अरहया भणिओ—तुमं इओ चइऊण उज्जेणीए जंबुदीवे भरहवत्तणीए वलामूगस्स राहुकस्स इब्भपुत्तस्स भाउपुत्तो होहिसि. सो ते अब्भत्थिओ बोहेहि त्ति । एवं सोऊण गतो देवो राहुगसमीवं । तस्स णेण अत्थो दिण्णो । भणिओ य—अहं तव भाउगस्स पुत्तो भविस्सं. मम माउए अकाले अंबफलदोहलो होहिति, तीसे तुमे इमेहिं ओसहेहिं फलपागं काऊण तेइच्छं करिज्जासि. 'समए जो इत्थ दारगो जायइ सो मम दयिवो' त्ति पडिवण्णेसु पडियारं करेज्जासि. जायं च ममं साहुसमीवं अभिक्खं अभिक्खं नेज्जासि । 'जइ न बुज्झेज्जा तो इमाणि कुंडलाणि मे नियगनामंकियाणि दंसेज्जासि' त्ति वेयड्ढपव्वयसिद्धाययणसमीवे पोक्खरिणीए पक्खित्ताणि नेऊण तं पएसं 'पुणो सुमरेज्जासि' त्ति; पुणो स नयरे साहरिओ ।

जहासंदिट्ठो य डोहलविणोओ कओ वारगलंभस्सफलो । जायं च तं साहुसमीवं नेइ कीलावंतो । सो दट्ठूण साहवो महया सद्देण रसति । ते भणंति णं—सावग ! सज्झाय-ज्झाणवाघायं करेइ एस बालो । ततो सो तस्स बोहणत्थं इहं एइ । अन्नया तन्निव्वेएण तवं चरिस्सति । पव्वइओ य थोवं कालं साहुधम्ममणुपालेऊण देवो भविस्सइ । सगारं च सुमरिऊण उज्जेणिमागंतूण साहरेगइवासजायस्स रोगं उदीरेहिति । वेज्जपडियाइक्खियं सयं तिगिच्छगरूवं काऊण भणिहिति—जइ णं मम देह सीसगं तो णं नीरोगं करेमि त्ति । तेहि य पडिवन्ने हट्ठस्स सत्थकोसं वोज्झगं देइ । सो य सिलागुरुगो, सो णं ण तरति वोढुं, 'उवज्झाय ! ण मे सत्ती एरिसं भार पदमवि संचारेउं' त्ति । ताहे भणिहिति—जइ समणो पव्वयाहिसि तो ते विसज्जेमि त्ति । बहुप्पयारं भण्णमाणो न पडिवज्जिस्सइ । एवं कयपयत्ते

१ °तभो न° शां० ॥ २ स० विनाऽन्यत्र—सरंतो ली ३ । सरतो क० मो० गो ३ उ २ ॥ ३ तं चेव वे° क ३ ॥ ४ नूणं ली ३ ॥ ५ सासिओ शां० ॥ ६ ते मा° क ३ ॥ ७ णिआ° शां० ॥ ८ °णस्स य समी° शां० ॥

अंतो वेयड्डं नेऊण कुंडलाणि दरिसिहिति । तओ सो सुमरियपुव्वभवो जायतिव्वसंवेगो राउलो सामण्णमणुचरिहिति ।

एयम्मि य कहावच्छेदे आलोइया पुरिसा कोऊहलिका य गया तेसिं समीवं । जह- कहिया य साहुणा दिट्ठा, पुच्छिया भूयं दरिसेंति जहाभणियं । 'पराइया माहण' त्ति भणंता पुरओ परिसमुवगया जहाविट्ठं-सुयं कहिंति । ते वि पुरिसा कमेण पत्ता, वंदिऊण आसीणा । भणिओ य मूओ साहुणा—राहुग! पुव्वभवतावस! मरिऊण सूयरो सि जाओ तत्थ वि साणेहिं रसमाणो वहिओ उरगो सि जाओ तओ लउडेहिं हम्ममाणो नट्ठो तओ, तओ पुत्तस्स पुत्तो माणेण अम्मा पियरो आलवसि एवं ते कालो गओ तओ 'देवयवयणं कायव्वं' ति इहागओ सि संसरमाणस्स य एगमेगस्स जंतुणो तिरिय-मणुयभवेसु अम्मा- पियरो सव्वे जीवा आसी, देव-नारएसु नत्थि, तत्थ सेट्ठी वि जहाणुभूया य से (ते) जातीतो [*साहुणा*] सपच्चयं कहियाओ तावसकाले जा ते माया आसि ति ण कहं जाणासि जहा एसा जम्मंतरेसु वि आसि? त्ति संसरमाणेण जंतुणा सव्वसंबंधा अणुभूय- पुव्वा एस सब्भावो । सोऊण उव्वुसियअंसुपुण्णणयणो पडिओ साहुणो पाएसु—भयवं! विदिया तुब्भं सव्वसंसारगयं ति । तस्स य वयणं सोऊण सहायपुरिसा परमविम्हिया भणंति—अहो!!! अच्छेरियं, एस अम्ह घरे वड्ढिओ जम्मप्पभिइ मूओ इयाणिं साहुवयणं सोऊण उल्लवेउं पयत्तो त्ति ॥

भणिया य ते अग्गिभूय-वाउभूई समणाइणा सच्चेण—एस बितिओ पव्वओ, जहा तुब्भे सियाला आसि त्ति । पासणिगेहि वि 'तह' त्ति पडिवन्नं । विमणा य ते माहणा भणं ति—निव्वयणा वयं, छिण्णो संसओ, जियं समणेणं भवंतरविन्नाणएण । पसंसंती सव्वा गया परिसा । तेहिं सोमदेवस्स अग्गिलाए य कहियं । ताणि रोसपलित्ताणि भणंति— पुत्ता! जेण वो समणेण महाजणमज्झे ओहामिया तं पच्छन्नं जीवियाओ ववरोवेह । तेहिं भणियं—किह एरिसो महप्पा तवस्सी वहिज्जइ? । ताणि भणंति—अम्ह वज्झा, मा पडि- कूला होहि त्ति । ते ऐ पभाए कुणंता निसीहे गया तं पएसं । सच्चो य सुमणसिलापएसे सवराइयं पडिमं वोसट्ठकाओ ठिओ । वइपरिणया य जक्खेण भासिया—'दुराचारा! रिसि- घायगा! विणट्ठ' त्ति भणंतेण थंभिया लेप्पकम्मनरा इव । पभाए जणेण दिट्ठा तदवत्था, बंधवजणेण य । सच्चो आइओ—महरिसि! खमह, से कुणह य जीविएण पसायं ति । सारयसरसलिलविमलहियएण य साहुणा भणियं—णाहं कुप्पामि एएसिं, सुमणो जक्खो कुविओ, तेण थंभिया । पसाइज्जमाणो य जक्खो भणइ—एएहिं एत्थ सुसियव पावकम्मेहिं, नत्थि से जीवियं ति । भणिओ अदिट्ठो भासमाणो ओहिदंसणिणा सच्चेण— एए जिणव यणबाहिरा अण्णाणिणो, खमसु से, मुयसु कोवं ति । ततो उवसंतो । जाया य सामाविया ।

१ °इं सु° शां विना ॥ २ °एगेग° शां विना ॥ ३ °तओ म° शां विना ॥ ४ सेट्ठा शां० । सेदी कं ३ ॥ ५ शां विनाऽन्यत्र—कुव्वति, ते निसी° ली ३ क ३ ॥ ६ °वन्नं वि शां० ॥

न्निंतियं चाणेहिं—अहो! साधवो दयासारा. अम्हारिसेसु वि निग्घिणेसु साणुकंपा वत्तंति. एस सिद्धिमग्गो जं एते दंसेंति त्ति । पडिया सव्वस्स पाएसुं, भणंति य सुद्धहियया—भयवं! तुज्झ संतिया पाणा. अज्जप्पभिइं च तुज्झ सीसा मो. साहुधम्मं पुण न सत्ता पालेउं, गिहिधम्मं पुण गिण्हामो । ततो अणुव्वयधरा सावया जाया, अहिगया य जिणवयणममयभूयं । गया साहुणो विहरमाणा ।

ते वि सीलरया जिणपूयारया अम्मा-पियरो पण्णवेंति—पडिवज्जह मग्गं अरहंतदेसियं ति । ताणि भणंति—पुत्ता! गया य ते समणा, जाणं ते भएण पडिवन्नो धम्मो. अलं भे तेणं ति। तेहिं भणियं—निगुणेसु अम्म-ताय! पडिनिवेसो मूढया. सव्वो अविसंवादी नेव्वाणसपावओ य जिणवरदेसिओ धम्मो. मा होह अयाणुयाइं. पडिवज्जह सप्पहं मा दुग्गतिं वच्चिहह त्ति। ताणि भणंति—तुब्भे ताण समणाणं सोऊण अम्हे कुलधम्माओ वेउत्ताओ फेडेउं इच्छह. जइ एवं पडिवन्ना कुगइं वच्चामो, गया णाम त्ति । ताणि ण पडिवज्जति तेहिं पुत्तेहिं उवइस्समाणं । ते पुण दढधम्मा कालगया सोहम्मे पंचपलिओवमट्ठितीया देवा जाया ।

पज्जुण्ण-संबपुव्वभवकहाए पुण्णभद्द-माणिभद्दभवो

ततो चुया गयपुरे जियसत्तू राया, धारिणी देवी, अजियसेणो जुवराया । सेट्ठी पुण अरहदासो, तस्स भज्जा पुप्फसिरी, तीसे गब्भे जाया जिट्ठ-कणिट्ठगा पुण्णभद्द-माणिभद्द त्ति । कयाइ महिंदो नाम अणगारो सगणो हत्थिणाउरे समोसरिओ । तस्सतिए धम्मकहं सोऊण राया सेट्ठी य पव्वइया । अजियसेणो य राया जाओ, पुण्णभद्दो सेट्ठी । साहवो विहरिऊण बहुणा कालेण पुणरवि गयपुरमागया । पुण्णभद्द-माणिभद्दा य वंदिउं पत्थिया, अंतरा य पस्सति सोवागं सउणपंजरं खधे काऊण पिंगलाए सुणिगाए अणुगम्ममाणं । तेसिं च ताणि दट्ठूण अतीव सिणेहो जाओ । ततो से चिंता जाया—किं मण्णे एस दट्ठूण सिणेहो वड्डइ? पुच्छीहामो गुरुवो त्ति । सो य णेहिं सोवागो भणिओ—जाव अम्हे साहुसमीवं वच्चामो नियत्तामो य ताव य पडिवालेहिं, तो ते किंचि दाहामो । सो 'जहाऽऽणवेह'त्ति ट्ठितो । ते गया महिंदं अणगारं वंदिऊण चिरेण पुच्छंति—भयवं! सोवाए सुणियाए य परो सिणेहो, कहेह कारणं? । ओहिणा सुदिट्ठं च साहुणा कहियं, जहा—तुब्भं पुव्वभवे अम्मा-पियरो आसी. बहुं पावं समज्जिणित्ता काल- (ग्रन्थाग्रम्—२४००) गयाणि सप्पावत्ते नरए पंचपलिओवमाणि दुक्खमणुभविऊण उवट्टाणि इहाऽऽगयाणि । सपच्चयमेयं सोऊण समुप्पण्णजाईसरणा वंदिऊण सोवागसमीवमागया । णीओ अणेहिं सगिहं, कहियं च पुव्वभवचरियं । सोवागेण सुणिगाए य सुमरियं । भणिओ य णेहिं सोवागो—अम्हे ते वित्तिं देमु जेण जीवसि, अलं ते पावजीविएणं, मा पुणो नरगे वच्चिहिसि । ततो सो असूणि मुयमाणो भणइ—णाऽहं सत्तो इयाणिं गरहियाए जातीए कालं गमेउं. कयभत्तपरिच्चाओ मरिस्सं । कए निब्बंधे तेहिं दिन्नपच्चक्खाणो ट्ठिओ । पिंगलाए उवणीयं भोयणं, सा णाऽभिलसइ । ततो भणिया सेट्ठिणा—पिंगले! तुमे वि भत्त

१ साहवो वि° शा० ॥ २ °याणि—गुणेसु अम्मतात! पडिवेसो शा० ॥ ३ पोम्मसिरी शा० ॥

पच्चक्खाय जओ न भुंजसि ?। ततो णाए सीसं कंपियं। सा सत्तरत्तस्स कालगया। सोवागो अट्ठारसण्हं दिवसाणं नंदीसरे दीवे देवो जाओ। सुणिया अजियसेणस्स रण्णो दुहिया जाया सुदरिसणा णाम। तेहिं पुण्णभद्द-माणिभद्देहिं सिणेहेण सूइया। कालेण य 'अग्गिले! पिंगले!' त्ति आलवंतेहिं बोहिया। सेट्ठी य रण्णो सरीरभूओ, तओ तेण चोइया पव्वइया पियदंसणागणिणीसमीवे, काऊण सामण्णं गया देवलोयं। ते य पुण्णभद्द-माणिभद्दा सावयधम्ममणुपालेऊण समाहीए कालगया गया सोहम्मं।

पज्जुण्ण संबपुव्वभवकहाए महु-केढवभवो

तत्थ दो सागरोवमाइं दिव्वे भोए भुंजिऊण चुया गयउरे विस्ससेणस्स रण्णो सुरूवाए देवीए पुत्ता जाया जेट्ठ-कणिट्ठा महू केढवो य। कमेण य महू राया जातो। नंदीसरदेवो वि संसारं भमिऊण वडपुरे कणगरहो नाम राया जाओ। सुदंसणा वि संसरिऊण तस्सेव भारिया चंदाभा नाम जाया। महू अहिराया, तस्स आमलकप्पाहिवो भीमो नाम राया आणं न सम्ममणुपालेइ। तेण जत्ता गहिया, वडपुरं च पत्तो। कणगरहेण य बहुमाणेण संगिहमाणीओ। कणगभिंगारेण य उदगमावज्जिंत चंदाभा देवी पादे धोवइ। ततो महू तीसे रूवे पाणिपल्लवफासे य रज्जमाणो वम्महवसयमुवगतो, सयरत्तो आगारं किह वि अच्छिओ, अह य तह य भुत्तभोयणो निग्गतो गतो आवासं। निउणेण य मतिणा पुच्छिओ—सामि! अण्णारिसी भे मुहच्छाया लक्खिज्जइ अइवीसंभमाणा मा छलिया होज्जह कहेह, भे सरीरे वियारो। सो भणइ—साधु तक्कितं, कारणं साहेमि ते—कणगरहस्स देवी चंदाभा, सा मे हिययमइगया 'जइ सा नत्थि अहं मवि नत्थि' त्ति णिच्छओ एतीए चिंताए विवण्णया वयणस्स तुमे दिट्ठा। तेण भणिओ—सामि! बलक्कारेण कणगरहस्स भारिया जइ हीरइ तो अम्हे एक्कलगा बज्झा होहामो त्ति विण्णवेमि—उवाएण चंदाभा घेप्पहिति भणओ बद्धाविज्जउ कणगरहेण समं, अंतेउरा पेसिज्जंतु, अकल्लगं च दरिसिज्जउ ततो गइरागेहिए वीसंभे य संजोगो निरवाओ भविस्सइ। तहा य कयं। अकल्लं त सोऊण कणगरहो सह चंदाभाए अभिक्खणं एइ। भीमो य कणगरहसम्माणं सोऊण उवइओ। नियत्तो महू गयउरं गओ। कणगरहो भणिओ—किंचि कालं समयं अच्छिऊण सनयरं मे (से) नेहिसि त्ति। तेण 'तह' त्ति पडिवन्नं। केसु वि दिवसेसु गएसु गयपुरं गया रायाणो कयपूया समारिया विसज्जिया। अंते कणगरहो पूइओ, चंदाभा आभरणसज्जणववएसेण रुद्धा। सुयं च णाए, जहा—नत्थि मे निग्गमो त्ति। ततो णाए पच्छइया दासी पेसिया कणगरहसमीवं। सो य णायपरमत्थो भीओ अवक्कतो पुरस्स रज्जं दाऊण तावसो पव्वइओ। चंदाभा चंदप्पभा इव चंदस्स महुस्स बहुमया जाया।

बहुणा य कालेण कणगरहो तावसरूवधारी गयउररायमग्गे दिट्ठो चंदाभासंतिगाए चेडीए, निवेइयं च णाए—सामिणीओ! मया राया अज्ज दिट्ठो त्ति। तीए भणिया—कया

१ पूइया गो ३ विना ॥ २ अप्पू शां । एवमग्रेऽपि ॥ ३ °जियं च° शां विना ॥ ४ ते शां ॥ ५ °ओ वधारिज्जउ शां विना ॥ ६ °गहिय पीइवी° शां ॥ ७ °हो दासीए चंदाभासंतिगाए, निवे° शां ॥

पुण तुमं रायं न पेच्छसि ? । सा भणइ—सामिणि ! कणगरहो नाम तावसो । तीए भणिया—कहिं ?, दंसेहि मे । तीय वि तहिं ठियाए दाविओ । सा चिंतावरा अप्पाणं निंदंती अच्छइ—अहो ! एस राया मम मंदभागाए दोसेण एरिसीं अवत्थं पत्तो त्ति । महू य पत्तो तं पएसं, पुच्छिया य णेण—देवि ! किं आयरेण निज्झायसि ? त्ति । तीए तक्खुप्पण्णं भणिओ—देव ! एते नगरस्स बहिया सुत्तविभत्ता इव के दीसति त्ति चिंतेमि । राया भणइ—देवि ! एयाणि जणस्स नयरवासिणो खेत्ताणि आजीविओसहिसपोइणनिमित्तं । सा भणति—देव ! एत्थ अम्हं कयरं खेत्तं ? । सो भणति—जाणि पस्ससि सुत्ताणि विभयमाणाणि ताणि अम्हं खेत्ताणि । सा भणइ—एएसु एवंतणुएसु किं होहिति जेण जीवीहामो ? । राया भणइ—एस मज्जाया 'मेर' त्ति वुच्चति. जो एयं भिंदति सो अवराही. ततो से विणयत्थं दंडो दोसाणुरूवो, सो अम्हं कोस पविसइ. रायाणो मज्जायारक्खगा । ततो तीए हिंसग-मिच्छावादि-तेण-पारदारिगाण निग्गहो पुच्छितो । कहिए य णं भणइ—देव ! तुब्भेहिं जाणमाणेहिं कणगरहस्स दारहरणं करेंतेहिं अजुत्तं कयं । ततो णाए दाइओ तावसो सचरंतो—एस अम्ह कए एरिस दुक्खमणुभवइ । महुणा य पडिवन्नं—आमं देवि !, अजुत्त मया कयं । चंदाभा भणइ—मम दोसो, न तुज्झं, जॉ णं जीवं तया न परिच्चयामि, ता विसज्जेह मं, करिस्स परलोगहियं । तेण भणियं—अहं पि परिच्चयामि रज्जसिरिं ति । केढवो सद्दाविउं निमंतिओ रज्जेण भणइ—तुमं अणुपवइस्सं । ततो पुत्तसकामियरिद्धी महू सह केढवेण चंदाभाए य विमलवाहणस्स अणगारस्स समीवे पव्वइओ, गहियसुत्तऽत्थो संविग्गो, दुवालसविहतवजुत्तो बहुं कालं सजमिऊण कालगतो महासुक्के इंदो जातो । सो पुण केढवो तस्सेव सामाणो जातो । देवी सोहम्मे उववण्णा । कणगरहतावसो कालगतो धूमकेउविमाणे देवो जाओ । वेरमणुसरतो महुं अवलोएइ, न य ण पस्सइ अप्पिड्ढिगत्तणेण । इंदो महू सत्तरससागरोवमक्खएण चुओ रुप्पिणीए कण्हऽग्गमहिसीए कुच्छिंसि पुत्तत्ताए उववन्नो । कणगरहदेवो विपुलसंसार भमिऊण पुणरवि तम्मि काले धूमकेऊ देवो जाओ । सुमरियपुव्ववेरेण अणेण महू आहोइओ जायमेत्तो । तओ णेण जायरोसेण अक्खित्तो उज्झितो सिलायले, विज्जाहरमिहुणेण णीओ सपुरं । एस पडिणीयया ॥

ततो नारतो छिण्णससओ आगतो रुप्पिणिसमीवं । तीए य णेण कहिओ—पुत्तो ते देवि ! जीवति, विज्जाहरपरिग्गहिओ वड्ढइ । समागमकालो य णेण सिट्ठो भयवया जहा भणिओ । ततो नारदो उप्पइओ ।

पज्जुन्नो विज्जाहरपुरे वड्ढइ, कला य णेण उद्दीरियमेत्ताओ पुव्वभवपरिचियाओ गहियाओ । आपूरमाणजोव्वण-लायण्णं पज्जुण्णपायवत्तसमसिरं, अवभासियपुंडरीयनयणं, जणनयणवीसामभूयं, दिवायरकिरणालिंगियणलिणमणहरमुहं, सिरिदुमछण्णवच्छयलं, आयतपसत्थबाहुजुयलं, दससतणयणकरकमलसगमसुमगवज्जमज्झं, मिगवइसरिसकडिदेसं, करि-

१ एए उ पुरस्स शा० विना ॥ २ °पायण° ली ३ शा० ॥ ३ जीविस्सामो शा० ॥ ४ जा अह जीवतया तं परि° ली ३ । जा इ (य) अहं जीव तया म परि° क ३ गो ३ ॥ ५ °विउ नि° ली ३ ॥ ६ तुज्झे अ° शा० ॥ ७ जायारो° क ३ गो ३ उ० ॥

पच्चक्खाय जओ न भुंजसि ? । ततो णाए सीसं कंपियं । सा सत्तरत्तस्स कालगया । सोवागो अट्ठारसण्हं दिवसाणं नंदीसरे दीवे देवो जाओ । सुणिया अजियसेणस्स रण्णो दुहिया जाया सुदरिसणा णाम । तेहिं पुण्णभद्द माणिभद्देहिं सिणेहेण सूइया । कालेण य 'अग्गिले ! पिंगले !' त्ति आलवंतेहिं बोहिया । सेट्ठी य रण्णो सरीरभूओ, तओ तेण चोइया पव्वइया पियदंसणागणिणीसमीवे, काऊण सामन्नं गया देवलोयं । ते य पुण्णभद्द माणिभद्दा सावयधम्ममणुपालेऊण समाहीए कालगया गया सोहम्मं ।

पज्जुण्ण संबपुव्वभवकहाए महु-केढवभवो

तत्थ दो सागरोवमाइं दिव्वे भोए भुंजिऊण चुया गयउरे विस्ससेणस्स रण्णो सुरूवाए देवीए पुत्ता जाया जेट्ठ कणिट्ठा महू केढवो य । कमेण य महू राया जातो । नंदीसरदेवो वि संसारं भमिऊण वडपुरे कणगरहो नाम राया जाओ । सुदंसणा वि संसरिऊण तस्सेव भारिया चंदाभा नाम जाया । महू अहिराया, तस्स आमलकप्पाहिवो भीमो नाम राया आणं न सम्ममणुपालेइ । तेण अत्ता गहिया, वडपुरं च पत्तो । कणगरहेण य बहुमाणेण संगिण्हमाणीओ । कणगभिंगारेण य उदगमावज्जेंत चंदाभा देवी पादे धोवइ । ततो महू तीसे रूवे पाणिपल्लवफासे य रज्जमाणो वम्महवत्तवयमुवगतो, सचरत्तो आगारं किह वि अच्छिओ, जह न तह य भुत्तभोयणो निग्गतो गतो आवासं । निच्चणेण य मंतिणा पुच्छिओ—सामि ! अण्णारिसी भे मुहच्छाया लक्खिज्जइ अइवीसभमाणा मा छलिया होज्जह कहेह, भे सरीरे वियारो । सो भणइ—साधु तक्कियं, कारणं साहेमि ते—कणगरहस्स देवी चंदाभा, सा मे हिययमइगया 'जइ सा नत्थि अहमवि नत्थि' त्ति निच्छओ पतीए चिंताए विसण्णया वयणस्स तुमे दिट्ठा । तेण भणिओ—सामि ! बलक्कारेण कणगरहस्स भारिया जइ हीरइ तो अम्हे एकल्लगा वज्झा होहामो ते विण्णवेमि—उवाएण चंदाभा घेप्पहिति भणंओ वद्धाविज्जउ कणगरहेण समं, अंतेउरा पेसिज्जतु, अकालग च दरिसिज्जउ तओ गहयगिईए तीसमे य संजोगो निरवाओ भविस्सइ । तहा य कयं । अकज्जं त सोऊण कणगरहो सह चंदाभाए अभिक्खणं पइ । भीमो य कणगरहसम्माणं सोऊण उवइओ । नियत्तो महू गयउरं गओ । कणगरहो भणिओ—किंचि कालं समयं अच्छिऊण सनयरं मे (से) नेहिसि त्ति । तेण 'तह' त्ति पडिवन्नं । केसु वि दिवसेसु गएसु गयपुरं गया रायाणो कयपूया सभारिया विसज्जिया । अंते कणगरहो पूइओ, चंदाभा आभरणसज्जणववएसेण रुद्धा । सुयं च णाए, जहा—नत्थि मे निग्गमो त्ति । ततो णाए पव्वइया दासी पेसिया कणगरहसमीवं । सो य णायपरमत्थो भीओ अवक्कंतो पुत्तस्स रज्जं दाऊण तावसो पव्वइओ । चंदाभा चंदप्पभा इव चंदस्स महुस्स बहुमया जाया।

बहुणा य कालेण कणगरहो तावसरूवधारी गयउररायमग्गे दिट्ठो चंदाभासंतिगाए चेडीए, निवेइयं च णाए—सामिणीओ ! मया राया अज्ज दिट्ठो त्ति । तीए भणिया—कया

१ पइया गो ३ विना ॥ २ मधू शां । पत्तमोऽपि ॥ ३ °जिय च° शां विना ॥ ४ ते शां ॥ ५ °ओ मधारिज्जड शां विना ॥ ६ °गईय पीइवी° शां ॥ ७ °ट्ठो दासीए चंदाभासंतिगाए निवे° शां ॥

पुण तुमं रायं न पेच्छसि ? । सा भणइ—सामिणि ! कणगरहो नाम तावसो । तीए भणिया—कहिं ?, दंसेहि मे । तीय वि तहिं ठियाए दाविओ । सा चिंतावरा अप्पाणं निंदंती अच्छइ—अहो ! एस राया मम मंदभागाए दोसेण एरिसीं अवत्थं पत्तो त्ति । महू य पत्तो तं पएसं, पुच्छिया य णेण—देवि ! किं आयरेण निज्झायसि ? त्ति । तीए तत्थुप्पण्णं भणिओ—देव ! एते नगरस्स बहिया सुत्तविभत्ता इव के दीसति त्ति चिंतेमि । राया भणइ—देवि ! एयाणि जणस्स नयरवासिणो खेत्ताणि आजीवियोसहिसपोहणनिमित्त । सा भणति—देव ! एत्थ अम्हं कयरं खेत्तं ? । सो भणति—जाणि पस्ससि सुत्ताणि विभयमाणाणि ताणि अम्हं खेत्ताणि । सा भणइ—एएसु एवंतणुएसु किं होहिति जेण जीवीहामो ? । राया भणइ—एस मज्जाया 'मेर' त्ति वुच्चति, जो एयं भिंदति सो अवराही. ततो से विणयत्थं दंडो दोसाणुरूवो, सो अम्हं कोस पविसइ. रायाणो मज्जायारक्खगा । ततो तीए हिंसग-मिच्छावादि-तेण-पारदारिगाण निग्गहो पुच्छितो । कहिए य णं भणइ—देव ! तुब्भेहिं जाणमाणेहिं कणगरहस्स दारहरणं करेंतेहिं अजुत्तं कयं । ततो णाए दाइओ तावसो सचरतो—एस अम्ह कए एरिसं दुक्खमणुभवइ । महुणा य पडिवन्नं—आमं देवि !, अजुत्तं मया कयं । चंदाभा भणइ—मम दोसो, न तुज्झं, जौं णं जीवं तया न परिच्चयामि, ता विसज्जेह म, करिस्स परलोगहियं । तेण भणियं—अहं पि परिच्चयामि रज्जसिरिं ति । केढवो सहावेउं निमंतिओ रज्जेण भणइ—तुंमं अणुपव्वइस्सं । ततो पुत्तसकामियरिद्धी महू सह केढवेण चंदाभाए य विमलवाहणस्स अणगारस्स समीवे पव्वइओ, गहियसुत्तऽत्थो सविग्गो, दुवालसविहतवजुत्तो बहुं कालं सजमिऊण कालगतो महासुके इंदो जातो । सो पुण केढवो तस्सेव सामाणो जातो । देवी सोहम्मे उववण्णा । कणगरहतावसो कालगतो धूमकेउविमाणे देवो जाओ । वेरमणुसरतो महुं अवलोएइ, न य णं पस्सइ अप्पिड्ढिगत्तणेण । इंदो महू सत्तरससागरोवमक्खएण चुओ रुप्पिणीए कण्हऽग्गमहिसीए कुच्छिसि पुत्तत्ताए उववन्नो । कणगरहदेवो विपुलसंसार भमिऊण पुणरवि तम्मि काले धूमकेऊ देवो जाओ । सुमरियपुव्ववेरेण अणेण महू आहोइओ जायमेत्तो । तओ णेण जायरोसेण अक्खित्तो उज्झितो सिलायले, विज्जाहरमिहुणेण णीओ सपुर । एस पडिणीयया ॥

ततो नारतो छिण्णससओ आगतो रुप्पिणिसमीवं । तीए य णेण कहिओ—पुत्तो ते देवि ! जीवति, विज्जाहरपरिग्गहिओ वड्ढइ । समागमकालो य णेण सिट्ठो भयवया जहा भणिओ । ततो नारदो उप्पइओ ।

पज्जुन्नो विज्जाहरपुरे वड्ढइ, कला य णेण उदीरियमेत्ताओ पुव्वभवपरिचियाओ गहियाओ । आपूरमाणजोव्वण-लायण्णं पज्जुण्णमायवत्तसमसिर, अवभासियपुंडरीयनयणं, जणनयणवीसामभूयं, दिवायरकिरणालिंगियणलिणमणहरमुहं, सिरिदुमछण्णवच्छयलं, आयतपसत्थबाहुजुयलं, दससतणयणकरकमलसंगमसुभगवज्जमज्झं, मिगवइसरिसकडिदेस, करि-

१ एए उ पुरस्स शा० विना ॥ २ °पायणं° ली ३ शां० ॥ ३ जीविस्सामो शां० ॥ ४ जा अह जीवतया स परि° ली ३ । जा इ (य) अह जीव तया स परि° क ३ गो ३ ॥ ५ °वित्तु लि° ली ३ ॥ ६ तुज्झे अ° शा० ॥ ७ जायारो° क ३ गो ३ उ० ॥

कलभससणसमऊरुजुयल, महुरसिर-तणुकपरूढरोमाणुगतवट्टनघ, सोभगलक्खणसमुचितसुकुमालपायपउम, सुइसुह-गंभीरभासण, हंससमगमण च पस्समाणी कणगमाला चिंतेइ—पज्जुण्णसामिणो रूवसरिसो विज्जाहरलोए बितिओ पुरिसो न हु होज्जा जय ण कामिज्ज ततो मे सफल जीविय होज्जा सो पुण विणीओ वियक्खणो य पावगभीरू, ण इम इच्छेज्जा कहेमि से सब्भाव, त पि पत्तिइज्ज वा न वा। एव मयणपरवसा सकप्पेमाणी अगलिगा जाया। पुच्छिया य पज्जुण्णेण—अम्मो! का भे सरीरपीडा जेण असत्थाओ दीसह?। सा भणइ—सामि! मा म 'अम्मो'त्ति भणाहि जीय सि पुत्तो सा ते अम्मा। सो भणइ—कीस विवरीयाणि जपेसि? कीस वा अह भ पुत्तो जमेव ववदिससि?। सा भणइ—सुणाहि, अम्हेहिं तुम दोहि वि जणेहिं सिलावलुज्झिओ वासुदेवनामकमुद्दसहिओ दिट्ठो, आणीओ य गिह सुणामि पुण 'कण्हऽग्गमहिसीए रुप्पिणीए पुत्तो जायमेत्तो चेव केण वि हिओ' त कालो सवयति मुद्दा य कण्हसतिगा, तेण जाणामि तीसे पुत्तो त्ति इमा य पुण मे अवत्था तुम अहिलसमाणीए। ततो पज्जुण्णेण भणिया—अम्मो! न मया सुयमेय ज तुब्भे भणह धुव ते धातुविसवादो ज तुज्झे अजुत्त जपह। ततो भणइ—हरि दिण्णग! मरामि जइ म अवमण्णसि। तेण भणिया—तुब्भ किं मरियव्व?, मम मायावेउ इच्छहा? जओ एव सलवह। ततो भणइ—किं रण्णो वीहेसि?। तेण भणिया—वीहेमि। कणगमालाए भणिओ—किह वीहेसि?, सुणाहि—अत्थि णलिणसह नयरं, तत्थ राया कणगरहो नाम, मालवई देवी, पुत्तो कणगकेऊ, अह च कणगमाला दुहिया सो राया पुत्तस्स रज्ज दाऊण तवोवण गतो मज्झ च वड्डियाए दिण्णा णेण विज्जा सिद्धा चेव पण्णत्ती त ते कुलपरपरागय देमि जहा दुद्धरिसो भवसि। पज्जुण्णेण भणिया—एव, कुणसु मे पसाय। सा पहट्ठा ण्हाया कयबलिकम्मा। दिण्णा य से तीए सिद्धा पण्णत्ती। तओ सा भणइ—इच्छसु म इदाणिं ति। तेण भणिया—अम्मो! दुब्भासिय ते, पढम ताव त्थ तुब्भे मम मायाओ अहवा जा जीविय देइ सा किह ण माया? जइ वि तुज्झ उदरे ण वुच्छो मि भितिय विज्जापयाणेण गुरू त्थ भुयह एय विगार।

तओ सा रुट्ठा 'हयो मि रागेण' ति कचुइज्ज भणति—कहेहि रण्णो, एस पज्जुण्णो दुट्ठो इच्छइ मम लवेउ, कीरउ से णिग्गहो त्ति। राया त सोऊण वयण पज्जुण्णस्स विणयपवण्ण न कुविओ। तओ णाए कालसवरसुयाण कहिय—एस राया विवरीओ जो दिण्णग न निगेण्हइ अपत्थियपत्थग तुब्भे ण लहु विणासेह त्ति। तेहिं तोहिं कवडुज्जएहिं पडिवण्ण 'तह' त्ति। भणिओ य णेहिं पज्जुण्णो कलबुगाए वावीए सूल गिहतूण—एहि, मज्जामो समग ति। तेण भणिया—तुब्भे डुहिया, वचह, मज्जह मम किं जणणीए दूसियस्स मज्जिएण? ति। तेहिं भणिओ—रोसेण ज देवी भणइ को त पत्तियत्ति? एहि, वच्चामो (मया

१ °तवट्ट° शा कसं विना ॥ २ कस्स वा अह पुत्तो वा विना॥ ३ °रुप्पीसहन° शां ॥ ४ ली ३ विनाऽन्यत्र—°ओ ण भ° शा गा ३। °ओ त भ° उ ॥ ५ °या निरा° गो ३ ॥ ६ °सुपस्स क° कस गो ३ उ० विना ॥ ७ दाहिजयडुज्जपु° ली ३ विना॥

ग्रम्-२५००) त्ति । णीओ य तेहिं । सा य वावी अंतो विसाला, मुहे संकुचिया, मज्झे य णेहिं पज्जुण्णो ठविओ, 'समगं पवायं देमो' त्ति दिण्णो । पज्जुण्णो [*पण्णत्ती*] सूलल्लीणो[1] ठिओ । चिंतियं च णेण—सूला मारेउकामेहिं ममं ठविया होज्ज त्ति । पण्णत्तिं चिंतिय भणिया य—भगवइ ! होउ पिहं जाव से चेट्ठियं पस्सामो त्ति । तहा कयं पण्णत्तीए । इयरे उत्तिण्णा, 'धुवं सो सूले लग्गो' त्ति पासाणवरिसं मोत्तूण 'हओ सि वल्लभ[2]' इति पट्ठिया । पज्जुण्णेण पच्छओ ट्ठिएण भणिया—सूरा होह, इयाणिं विणट्ठ त्थ. पहरह जो भे पाणो । परावत्ता, 'एस अविज्जो' त्ति वीसत्था सव्वे जुज्झंता वहिया । कालसंवरो सुयवहपरिकुविओ पट्ठिओ, भणिओ य देवीए—कुणसु पयत्तं । सो भणइ—सो धरणिगोयरो किं करिस्सइ मे ? त्ति । तीए पण्णत्तिदाणं कहियं । निवारिओ य मंतीहिं—देव ! सुयमारणं ण जुज्जइ राईणं कुलतंतुरक्खणनिमित्तं । सो य पज्जुन्नो चिंतावरो अच्छति—कयावराहस्स मे पिउसमीवं गंतुं जुज्जइ ? न जुज्जइ व ? त्ति ।

पज्जुण्णस्स अम्मापिऊहिं सह समागमो

इओ य बारवतीए सच्चभामा देवी दुज्जोहणरायदुहियाए सह सुयस्स विवाहारंभं काउमारद्धा । रुप्पिणीए नारओ भणिओ—अज्ज ! इमो[3] सो तुब्भेहिं मम पुत्तस्स समागमकालो निद्दिट्ठो. सच्चभामासुयस्स वीवाहो, तं जइ सच्चं तुब्भेहिं भासियं तं कुणह पसायं. दंसेहि मे पज्जुण्णं पुत्तगं । एवंभणिओ नारदो भणति—देवि ! अज्जेव पुत्तं आणीय दच्छिहं ति । उप्पइउ गगणपहेण विज्जाहरगईय पत्तो य मेहकूडं । दिट्ठो णेण पज्जुण्णो एगागी, आभट्ठो य—कुमार ! किं विमणो दीससि ? त्ति । तेण से कयप्पणामेण भाउमरणं कहियं, 'महंतो अवराहो कओ' त्ति वाउलचित्तया मे । नारएण भणिओ—जे तुमं मारेउं चिट्ठिया ते सत्तू, ण भायरो. किंच सुणाहि—तुमं सि कण्हस्स वासुदेवस्स पुत्तो रुप्पिणीए देवीए पुत्तगो जायमेत्तओ अवहिउ धूमकेउणा सिलाए उज्झियओ सि, एएण कालसंवरेण सभारिएण गहिओ 'पुत्तो' त्ति. तव पुण गब्भत्थस्स मायाए सह सच्चभामाए सवत्तीए पणीयं आसि—'जा पढमं पुत्तं पयाइ सा इयरीए तस्स कल्लाणदिवसे केसमुंडणं कारइ' त्ति. तुमं च जायमेत्तो हिओ. सच्चभामा न सद्दहइ. तीसे पुत्तो जाओ तं अज्ज दिवसो जणणीय ते जसो वड्ढेयव्वो. वच्चामु सिग्घं कणगमालापुव्वकहियकारणो[4] । सो भणइ—नारदसामि ! एवं एयं जहा भणह तुब्भे. किह पुण अम्मा-पियरो ममं जाणिहिंति ? । नारएण भणिओ—मया तीसे पुव्वं[5] कुमार ! कहियं जिणोवदेसेण, अविलंबियं गम्मउ त्ति । नारएणं विमाणं विउव्वियं, पत्थिया ओलोयंता भरहं, दंसेइ य से नारओ नगरा-ऽऽगरा-ऽऽसम-जणवए । पस्संति[6] च खइराडवीए खंधावारं । पुच्छियं च पज्जुण्णेण—कहि मण्णे एस खंधावारो वच्चइ ? त्ति । तेण भणिओ—दुज्जोहणेण रण्णा

१ दिण्णा य पण्णत्तीए पज्जुण्णो सूल° कस० उ० ॥ २ °उ त्ति अह ली ३ ॥ ३ °छभो त्ति क ३ उ २ ॥ ४ °मो मासो तु° क ३ ॥ ५ पुव्व कहि° शां० ॥ ६ °तिं धवलइ° उ २ विना ॥

पुत्तनिमित्त विवाय वासुदेवकहियं सोऊण तव एसा दत्ता गब्भत्थस्स य एसा पुण संपयं सच्चभामासुयस्स भाणुस्स णिज्जए तव माउकेसहारिणी। ततो कुद्धो भणइ—पस्सह करेमि से पूयं ति। विउव्वियं णेण णिवहणं पडिलोमं। तत्थ माहणो सूकरजाणविलग्गो विगयरूवो खरकुक्कुडजाणसहिओ। कुमारीसवगेहिं भणिओ—वेयालरूव[1]! मा अभिमुहं एहि, अवसर अप्पसत्थ त्ति। सो भणइ—जइ अहं अमंगलो को हु कल्लाणो? त्ति जस्सेसा समीवं निज्जइ भाणुस्स सो किं ममाओ पइविसिट्ठो?। ततो ते पुरिसा निब्भच्छंति णं—बडुक[1]! अवसर, मा पलवसु बहुयं ति। ततो णेण पुलिंदा विउव्विया। तेसिं भएण दिसो दिसिं नीओ खधावारो। नारओ अणेण भणिओ—तुब्भे मम माउसमीवमुवगतूण मे लाहिह अहं वा पस्सामि परिजणं, कुमारे य भाणुसहाए। 'एवं होउ' त्ति सो अइक्कतो।

पज्जुण्णेण य बारवतिबाहिं एगत्थ वणसंडे वाणरओ दंसिओ रक्खापुरिसाणं। भणिया अणेण—एस वानरो छाओ अहिलसइ एत्थं फलं पुप्फं वा। ते णं सम्भणंति—निवहणग इहं, ण वीससियव्वं ति। तेण से सुवण्णखडं दिण्णं। कयविसग्गेण वाणरेण खणेण णिप्पुप्फफलो कओ। तओ रक्खपुरिसा चिंतेंति—अइरा अम्हे विणासिय त्ति। पज्जुण्णेण भणिया—ण जायइ तित्ती कविस्स, किं भणह? त्ति। ते वि विण्णविंति विमणा—देव! जारिसी एयस्स सत्ती दीसति एस बारवतीए वि ण तित्तो होज्जा अम्हं पुण रायकुलाओ विणासो मक्कडरूवी उवट्ठितो अलं णे सुवण्णेण, पलामो त्ति। भीए जाणिऊण ते भणिया—अच्छह वीसत्था, जहापुराणो वणसंडो भविस्सइ त्ति। तदवत्थो य जाओ। थोवंतरेण घोडगो वीयवालाण दंसिओ—चरउ स्थोवं छाओ आसो। णिवहणववएसेण ण देंति, ते वि तहेव लोभिया, मुहुत्तेण णित्तणं कयं करणं, पण्णत्तिमायाए पणयाणं कयं साभावियं। बावियसु वगतो—पियउ पाणीयं आसो त्ति। न देंति, सुवण्णलोहीए पडिवन्ना, मुहुत्तेण कया णिरोदया, भीया उ, जाया साभाविया। थोवंतरे भाणुकुमारो बहुजणपरिवारिओ बारवतिबाहिं कीलति। पण्णत्तीए कहिओ य दिट्ठो पज्जुण्णेणं। भाणुणा य सपरियणेण पज्जुण्णो दिट्ठो वत्तमतुरयारूढो मदरूवो परिणयवओ। पुच्छिओ कुमारेहिं—अज्ज! विक्कायइ आसो?, घडासु मोल्लं। पज्जुण्णेण भणिया—वोज्झ आसस्स मोल्लं करेइ, परिच्छह ताव। ते आरूढा कमेण, इच्छियं वहइ आसो। भाणू विलग्गो, भणिया य पण्णत्ती पज्जुण्णेण—जहं न विणस्सइ तहा होउं भयवति!। रामकडकीमाणं कहिल (?) तहा अक्खित्तो जहा जातो सोइयव्वो परियणस्स। पच्छागए य मुक्को तुरगवत्ती। पज्जुण्णो बारवतिमुवगतो, पविट्ठो य वसुदेवघरं मेंढुलगं गहेऊण। कयपणिवाओ य पुच्छिओ वसुदेवेण—दारग! किमागमणं?। भणति—देव! तुम्हे मिंढगलक्खणं जाणह जइ पसत्थो एस उरब्भो तो ण गेण्हिस्सं। तेण णिज्झाइओ, भणइ—दारग! लक्खणजुत्तो। 'सत्तं से परिच्छामि' त्ति अंगुलीए आगारिओ णेण। पज्जुण्णभएण य आसणाओ पाडिउ, धूमाविओ जाणु

१ °रूओ मा शां कसं विना॥ २ °ण भाणुकुमरो। भाणुणा क ३॥ ३ ता ण। ते शां॥ ४ °ड विसमक° शां। °ड भयवति! समकड° कसं॥

देसे । भणिओ तेण—देव! पुणो विण्णाणं अक्खह त्ति । हसिऊण अइगतो गिहं । पज्जुण्णो माहणदारगरूवं काऊण सच्चभामागिहमुहे मालागारेण दिण्णपुप्फापीलो खुज्जाए विखुज्जीकयाए विलत्तो, भत्तं मग्गमाणो णिवेदितो चेडीहिं सच्चभामाए—को वि माहणदारगो रूवस्सी तेयरासी भोयणं मग्गइ त्ति । तीए भणियं—भुंजउ अइनेहेणं । वद्धावेऊण य भणति देविं—जइ मे तित्तीए भोयणं अइभुक्खियस्स दिज्जइ तो भुंजिस्सं । तीए भणियं—कामओ जिमेहिं । निविट्ठो आसणे, उवणीया कंचणपत्ती, भिक्खा दिण्णा दिण्णा पेखइतो भणइ य—देवि! एयाओ चेडीओ सयं खायंति, मज्झं ण देंति । तीए संदिट्ठाओ—देह से जाव इच्छइ । ताओ भणंति—सामिणि! वलवामुहं माहणरूवं एयं भवणं पि ते गसेज्ज त्ति तक्केमो । एयम्मि अंतरे सुयं देवीए सच्चभामाए—निवहणं पुलिंदेहिं विद्धंसियं ति । भणिया य पज्जुण्णेण—देवि ! जइ मे न दिज्जइ तित्तीय भोयणं तो वच्चामि रुप्पिणीए भवणं । तीए भणिओ—अण्णेण कज्जेण अहं आदण्णा. 'तुमं रुप्पिणियाए वा सुवण्णियाए वा गिहं वच्चाहि' त्ति दत्तायमणो णिग्गतो, खुड्डगरूवी अइगतो रुप्पिणीए समीवं । तीए वंदिओ आमंतिओ य—किं दिज्जइ खुड्ड? त्ति । सो भणइ—साविए ! मया महंतो उववासो कयल्लओ. चिंतेमि, माउए वि मे थणो न पीयपुव्वो त्ति पारणगनिमित्तं देहि मे पायसं दुयं ति । तीए भणियं—एवं होउ, वीसमसु मुहुत्तगं जाव, नत्थि, सह त्ति । सो वासुदेवसीहासणे उवविट्ठो । भणिओ य रुप्पिणीए—खुड्डग! एयमासणं देवयापरिग्गहियं, मा ते को वि उवघातो भविस्सति, अण्णम्मि आसणे णिसीयं त्ति । सो भणइ—अम्ह तवस्सीणं ण पभवति देवता । आणत्ता य चेडीओ देवीए—सिग्घं पायस साहेह, मा किलम्मउ तवस्सी । पज्जुण्णेण य अग्गी थंभिओ, न तप्पती खीरं । कासवगो य सच्चभामाए पेसिओ विण्णवेइ—देवि! देह किरि केसे त्ति । पज्जुण्णेण भणिओ—कासव! जाणसि मुंडं काउं? । सो भणइ—आमं । तेण भणिओ—बदरमुंडं जाणासि? । सो भणइ—न याणामि । कुमारेण भणिओ—एहि, जा ते दाइज्जउ । ततो से अणेण सचम्मगा वाला अवणेऊण सिराओ हत्थे दिण्णा, 'एरिसं बदरमुंडं वच्चति' । सो रुहिरकिण्णसरीरो गतो । देवी य खुड्डेण सह आलावं करेंती तूरावेंती य चेडीओ आगयपण्हया पफुल्ललोयणा सवुत्ता, खुड्डगो य मायं पस्समाणो पफुल्लमुहो । जायणवुड्ढा य कासवगसहिया उवागया, दत्तासणा पभणंति—देवेण पट्ठविया मो, देह किर देवि! केसि त्ति । रुप्पिणीए भणियं—जाव खणिगा होमि ताव दिज्जंति केसा. अतीह तुब्भे त्ति । पज्जुण्णेण भणिया—भो! पुच्छामि ताव, जायवाणं एस किं कुलायारो केसेहिं विवाहे कोउगाणि कीरंति? । ते भणंति—खुड्डय! ण एस आयारो, पणियं किर देवीणं आसी । ततो लग्गाणि से आसणाणि किर वत्थेसु । खुड्डेण भणिया—किं लेसियाणि

१ °ण दुक्खियस्स क ३ गो ३ उ० । °णं अइदुक्खियस्स ली ३ ॥ २ परिक्खित्ता भ° शा० ॥ ३ °या चे° क ३ विना ॥ ४ °क्केसु शा० ॥ ५ °वासुदेवपत्तियाए गिहं शा० ॥ ६ °त्तावमाणो ली ३ ॥ ७ °ओ य अइगतो य—किं उ २ विना ॥ ८ °त्त निविस त्ति । सो शा० ॥ ९ °यह । सो शा० विना ॥ १० देविं ली ३ विना ॥ ११ °रखीणस° कसं० विना ॥

मे वत्थाणि आसणहरणनिमित्त ! । ततो ते विलक्खा विणिग्गया । ण्हाविया णेण वुत्ता—अरे ! ज त्थ देवीए आणत्ता मुडण त करेह सिग्घ । ततो ते मोहिया अण्णोण्ण मुंडेउमारद्धा, चीरिकामुंडा अद्धमुंडिया खडदाढिगा केसहत्थगया निग्गया ओहसिज्जता चेडीहिं ।

तयणतर णारओ उवट्ठिओ । भणिओ य रुप्पिणीए—अज्ज ! अलिगभाणग त्थ सवुत्ता ! नारएण भणिया—देवि ! किं कीरउ ? जइ पासगय पुत्त न याणसि । ततो पज्जुण्णेण सक रूव दसिय, पणओ य अंसुपुण्णणयणो । माऊए चिरकालरुद्ध च बाह मुयतीए अवतासिउ, 'सागय पुत्त, जीवसु बहूणि वाससहस्साणि' त्ति अभिणदिउ, उच्छगे निवेसाविऊण दिण्णो मुहे थणो । देविपरियणो य पायपडिओ परुण्णो । णारएण य भणिओ—मा कुणह कोलाहल सुण कुमार !—न जुज्जइ तुब्भ पागइयपुरिसस्सेव पिउसमीव गतु । पज्जुण्णेण भणिय—किह उण गतव ? । भणइ—देविं हरासु, ततो जायवचद पराजेऊण (ग्रन्थाग्रम्—२६००) पगासो कुलगरववण करिस्ससि । रुप्पिणीए भणिय—अज्ज ! बलवतो जायवा मा कुमारस्स सरीरपीला भविस्सइ अलमेएण मम पवाएण ति । नारएण भणिया—देवि ! न याणसि कुमारस्स पभाव एस पण्णत्तिपरिग्गहिओ सएण वीरिएण मया य सहाएण समत्थो सवे पत्थिवे जोहेउ, किमग पुण जायवे ? मा भाहि, एवकए उज्जलओ मेलओ होहिति पिया-पुत्ताण । णारयमयाणुवत्तीए य पडिवन्न देवीए । विउव्विओ रहो नारदेण, विलग्गा रुप्पिणी सह परिचारिगाहिं । आघोसिय नारएण महया सद्देण—रुप्पिणी हीरइ, दसेइउ बल दहि त्ति । गय-तुरय-रहेहि य निज्जाया जायवजोहा । पण्णत्तीपभावेण य से पज्जुण्णो कुणइ हयहिए कुजर-तुरगमे, आवहाणि अमोहाणि । ततो ते अभिभविउ अचएता चित्ता पेच्छगा विव ठ्ठिया । वासुदेवो य पत्तो, गहिओ णेण सखो । पण्णत्ती सदिट्ठा पज्जुण्णेण—वासुकापे भरेहिं सख ति । असद्दो य पविट्ठो [*णेण*,] । ततो सो सरेहिं छाएउ पवत्तो । कुमारो य से सुरप्प उद्धचदेहिं खडाखडिं करेइ । रुसिएण य कण्हेण चक्क मुक्क । भीया देवी नारएण भणिया—मुय विसाद, चक्क कुमारसरीरे णावरज्झइ त्ति । सुदरिसण पज्जुण्णरह पयक्खिणीकाऊण नियत्त । वासुदेवेण भणिय—अकयकज्ज कीस मम समीवे एसि ? त्ति । चक्काहिट्ठिणा जक्खेण भणिओ—देव ! मा कुप्प, आउहरयणाण एस धम्मो—'सत्तू विवाडेयवो, बधू रक्खियवो सामिणो' त्ति एस य तुब्भ पुत्तो रुप्पिणीए देवीए अत्तओ नारयरिसिणा अज्ज आणीओ तस्स य मएण देवी अवहिआ । उवसतो कण्हो 'करिस्सं वे पूय पियनिवेदगस्स' त्ति वोत्तूण सठिओ पीईय पिवतो विव पज्जुण्ण । नारएण भणिओ—पज्जुण्ण ! भिण्ण रहस्स चक्करयणेण, उवसप्पसु पियर ति । ततो नारयसहिओ उवगतो त्ति । पणमतो य आणदसुपुण्णणयणेण पिउणा अंकमारोविउ अग्घाओ य सिरे, अभिनदिओ य महाफलाहिं आसीसाहिं, महया इड्ढीए पवेसिओ नयर । कुलगर-जायवपत्थिव-जणनयणमालाविलुप्पमाणरूवो रुप्पिणिभवण च आइच्चसो विव भरहगिहमणुपविट्ठो । ठविओ जुवराया । दुज्जोहणदुहिया अणेण भाणुस्स विसज्जिया । सच्चभामाए विलयाए पूइओ ।

१ °सेउ बल मणसि गय° शा विना ॥ २ °ए पूर सत्त शा विना ॥

ततो 'रूवस्सी विउसो विणीओ पियाभासी सत्तजुत्तो सरण्णो दाया पज्जुण्णो' त्ति वारवतीजणेण पससिज्जमाणो जहासुहमभिरमति । कण्हेण वि अणिच्छंतो वि परं पीइ-मुवहंतेण विज्जाहर-धरणिगोयरपत्थिवकण्णाणं सरिसजोव्वणगुणाणं पाणि गाहिओ पासाय-गतो दोगुंदुगदेवो इव भोए भुंजमाणो निरुविग्गो विहरइ ।

कयाइं च सच्चभामा कण्हं सगिहगयं विन्नवेइ—देव ! जा किर इत्थिया भत्तुणो ण बहुमया तीसे अवच्चाणि मंदरूवाणि णित्तेयाणि भवंति जा पुण वल्लभा तीसे भत्तारसरि-सरूव-गुणाणि तं अह तुब्भं वेसा, रुप्पिणी भे गोरविया, तेण से तिसमुद्दपरिगयाए मे-इणीए तिलयभूओ पुत्तो दत्तो । वासुदेवेण भणिया—देवि ! मा एवं जंपसु. तुमं सि सव्व-तेउरजेट्ठा, कीस एवं सलवसि ? । तो भणइ—जइ एवं तो पज्जुण्णसरिस पुत्तं देह । कण्हेण भणियं—देवि ! जइ तुब्भं एरिसो अभिप्पाओ तो आराहेमि देवं हरिणेगमेसिं, जहा तुमं सफलमणोरहा होहिसि त्ति । कुलगरविदितं काऊण ट्ठितो पोसहसालाए अट्ठमेण भत्तेण । आकंपिओ देवो भणइ—वरेह वर, जम्मि ते सुमरिओ । सो भणइ—देवी पज्जु-ण्णसरिस पुत्तं इच्छेइ, कुणसु पसायं । णेगमेसी भणइ—जीए देवीए सह पढमसमागमो ते तीए पज्जुण्णसरिसो पुत्तो होहिति इमो य हारो से दायव्वो त्ति । गतो देवो ।

विदितं च एयं कारणं कयं पण्णत्तीए पज्जुण्णस्स । पारियतवो य कण्हो वासघर-मुवगतो । पज्जुण्णस्स चिंता जाया—सच्चभामा अम्मयाए सह समच्छरा. जइ तीसे मम सरिसो पुत्तो होइ ततो तेण सह मम पीई न होज्ज. किह कायव्वं ? । चिंतियं चाणेण—जंब-वती देवी अम्माय माउसंबधेण भगिणी, तं वच्चामि तीसे समीवे । गंतुं जंबवइभवणं प-णओ, दत्तासणो भणति—अम्मो ! तुब्भं मम सरिसो पुत्तो रोयइ ? त्ति । तीए भणियं—किं तुमं मम पुत्तो न होसि ?. सच्चभामानिमित्ते देवो नियमेण ट्ठितो, किह मम तव सरिसो पुत्तो होइहि ? त्ति । सो णं विण्णवेइ—तुज्झं अहं ताव पुत्तो, बितिओ जइ होई णणु सो-हणेयर । सा भणइ—केण उवाएण ? । पज्जुण्णेण भणिया—'तुब्भं सच्चभामासरिसं रूवं हो-हिति संज्झाविरामसमए जाव पसाहण-देवयच्चणविक्खित्ता ताव अविलंबियं देवसमीवं वच्चे-ज्जाहि'-त्ति वोत्तूण गतो नियगभवणं पज्जुण्णो । पण्णत्तीए य जंबवती सच्चभामासरिसी कया । चेडीए भणिया—देवि ! तुब्भे सच्चभामासरिसी संवुत्ता । ततो तुट्ठा छत्त-चामर-भिंगा-रधरीहिं चेडीहिं सह गया पतिसमीवं, पवियारसुहमणुभविऊण य हारसोहिया दुतमवक्कंता ।

सच्चभामा य अलंकिय-विभूसिया कयकोउय-मंगला उवगया कण्हसमीवं । भणिया य णेणं—देवि ! किं इम परियट्टियनेवत्था सि पुणो आगया ? । सा कुविया—नूणं का वि ते कय-सकेया हिययसाहीणा आगया, जओ मं उवालभत्ति । तेण भणिया—देवि ! परिहासो कओ, मा कुप्प, का सत्ती अण्णाए अज्ज इहागंतुं ? । ततो पसण्णमुही संवुत्ता, वसिऊण य गया भवणं ।

वासुदेवेण विचिंतियं—वंचिया कीय वि तवस्सिणी, उवलभामि ताव त्ति । अंतेउरमवलो-इउमारद्धो । पत्तो य कमेण जंववतिसमीवं, पस्सति सरयकालतिपहगं विव हंसावलिसो-

१ °इ दाइ ण° ली ३ ॥ २ °णय शा० विना ॥ ३ °सारि° क ३ ॥

हिय हारेण विरायमाणिं । पणया य णं विण्णवेइ—देव ! सुणह, मे अज्ज जारिसो सुमिणो दिट्ठो । तेण भणिया—कहेहि । सा भणइ—अहं किर तुब्भं समीवमुवगया, तुब्भेहि य मे हारो दिण्णो, पडिबुद्धा य जाव हारं उरम्मि पस्सामि साहह सुमिणफलं । तेण चिंतियं—पज्जुण्णचिट्ठियमिणं । ततो तेण भणिया जंबवई—देवि ! जायवकुलस्स अलंकारभूतो ते भविस्सइ पुत्तो । सा कयंजली भणइ—देव ! अवितहमेयं जं जपह त्ति । केढवदेवो य तीसे गब्भे उववण्णो । पुण्णेसु य मासेसु पयाया पुत्तं पसत्थलक्खणकियपाणि-पायं, विबुद्धपोंडरीयलोयणं, णयचंदमणोहरवयणचंदं । तं समयमेव महसायर-अजियसेणं दारुगाणं पुत्तजम्मं निवेदितं च कण्हस्स । जंबवइसुयाणंतरं भणिया य ते—एते वयंसमणुस्सा जंबवइदेविनंदणस्स त्ति । कयजायकम्माणं कयाणि नामाणि संबो बुद्धिसेणो जयसेणो सुदारगो त्ति । ततो संबो देवकि-रुप्पिणि-जंबवतीहिं पज्जुन्नसिरिणा य लालिज्जमाणो सुहेण परिवड्ढइ ।

कयाइ वासुदेवपायवंदओ णीओ, खेल्लावेइ णं कण्हो । कालिंदसेणा सुहिरण्णं दारियं पाएसु पाडेइ । पुच्छिया य वासुदेवेण—कालिंदसेणे ! इमा तव दारिया ? । तीए 'जहा ऽऽणवेह' त्ति पडिवन्नं । भणिया य—निक्खिव तं णं कुमारसमीवे । तीए पायपीढसमीवे ठविया । कीलंतेहि य एक्कमेक्को अवतासिओ । कण्हेण मती पलोइओ । तेण भणिओ—जुत्तं ति । कालिंदसेणाए य लद्धपसराए विण्णवियं—देव ! एसा दारिया हेमंगयस्स कंचणपुराहिवस्स दुहिया जइ मम पसाओ अत्थि तो कुमारस्स सुस्सूसिगा होउ । कण्हेण 'एवं' ति पडिस्सुयं, कोडुंबिया य संदिट्ठा—सुहिरण्णा दारिया मम सुण्हा, कुमारसरिसीए पडिवत्तीए णं उवक्खेयव्वा । विसज्जिया वड्ढइ । संबो तेहिं वयंसएहिं समेओ सुमुहस्स कलायरियस्स उवणीओ सिक्खइ कलाओ ।

पज्जुण्णो य माउपायवंदओ गतो पस्सइ अंसूहिं रोवंतीं रुप्पिणीं । पुच्छिया अणेणं—अम्मो ! साहह देव मोत्तूण जेण भे मन्नु कयं, जेण तं सासेमि । तीए भणिओ—पुत्त ! मया ते रुप्पिस्स माउलस्स पेसियं तस्स दुहिया वेयब्भी नाम सुया मया रूववती सो भणइ—'अवि य णं अहं पाणाणं देमि, न य रुप्पिणीसुयस्स' त्ति तो मे मण्णु जायं । पज्जुण्णेण भणिया—अम्मो ! मा अधिइं करेह, दाहिवि णं पाणाणं । गतो य संबं गहाय भोजकडं नगरं, पाणवेसत्थिया ठिया इंदट्ठाणब्भासे, गायंतेहिं य विम्हयं नीओ लोओ । हत्थी य मत्तो तेणेव मग्गेण पाणियं पाउकामो आगतो, आरोहेण य भणिया—हरे पाणा ! अवसरह सिग्घं, मा हत्थिणा चम्मढिज्जिहि त्ति । तेहिं भणिओ—मा छुभें इओ एवं भेडहत्थिं, मा कुक्कुरेहिं खज्जिहिति । ततो रुट्ठो, छूढो णेण हत्थी । पण्णत्तीवसेण य कुक्कुरा से समंतओ विलग्गा, तेहिं कवोल-मुह-नासापएसेसु खज्जमाणो सहारोहेण पराभग्गो । तेण य अण्णे हत्थी भीया, तेण परोप्परं भमंता, सूरत्थमणवेलाए य घर-कडग

१ हारे हियए प° शां ॥ २ °ण्णावि अ° क ३ ॥ ३ °स्संते मे° शां ॥ ४ हृद° शांस विना ॥ ५ भरे शां विना ॥ ६ °णाऽवमद्दिज्जिहिइ-त्ति उ २ विना ॥ ७ °-भड मुत्त लिंडह° शां विना ॥ ८ हत्थी । संपेण य कुक्कुरा समंतओ विलइया तेहिं खं ३ ॥

पडलाणि भंजमाणा, पाउसकालबलाहगा इव गुलगुलेमाणा, नयरजणं खलिय-पडिय-विसंठुलं हय-विहलवयणं वीसरसरोरासियं 'सामि!, माय!, मातुल! परित्तायसु' त्ति पलायणपर कुणमाणा समंततो परिभमिया। रुप्पिणा ससंभमं पुच्छियं—को इमो नयरस्स खोभो?। ततो से कहियं उवलद्धकारणेहिं पुरिसेहिं—देव! चंडालकुक्कुरेहिं हत्थी खइओ, तेण भीएण पलायमाणेण हत्थिणो भीया. तेहिं भीएहिं परिभमंतेहिं परियत्तियमिव नयरं । तओ चिरेण पसतं। मूसएहिं खइयाओ वरत्ताओ हत्थीणं, तओ ते उद्दामा भमिउमाढत्ता। कुमारपाणेहि य वरत्ताओ दंसियाओ, ताओ महग्घाओ पणेत्ता पकासा जाया। संबस्स य वुड्ढिगारूवं कयं, पविट्ठा य रुप्पिसमीवं। पण्णत्ती य संबस्स निस्सिया भणइ—देव! सुणह, सुयमम्हेहिं—तुब्भे किर वेदब्भिं कुमारिं पाणाण देह त्ति. ण य खत्तिया मिच्छावाई. जइ य अवस्सं पाणाणं दायव्वा कण्णा, मज्झ दारयसरिसं वरं न लभिहिह अण्णं जंपह जं पत्तं। ततो रोसरत्तनयणो भणइ—वच्चह, अतीव, चिंतेमि ताव त्ति। अवगएसु य पडिहारो सद्दाविओ, भणिओ य—कीस ते पाणा पवेसिया?। सो भणइ—देव! न पासामि णं पविसंते, केवलं अइगया(ग्रन्थाग्रम्–२७००)दिट्ठा। सभागया मणुस्सा भणिया—पाणा इह कण्णानिमित्तं पलवंति, ण कोइ णे ते निब्भच्छेइ?। ते भणंति—सामि! तीसे पाणथेरीए अच्छीहिंतो मसगवट्टीओ निग्गच्छंति, तेहिं मसगेहिं णे नयणाणि छाइयाणि, तेहिं खज्जमाणा मूगा इव संवुत्ता मो मायंगवुड्डीए सह गया मसगा। ततो तस्स रण्णो मंतीहिं सह समवाओ जातो—पाणरूवी को होज्ज सो तरुणो ओयंसी? हत्थी कुक्कुरेहिं तस्स संतिएहिं भग्गो। तत्थ केइ भणंति—देव! कोइ देवो विज्जाहरो वा एएण वेसेण कुमारिं वरेइ. अइंतो निग्गच्छंतो वा न दीसति, नत्थि एत्थ ससओ न फरुसेयव्वो सो पाणो, किंचि उवघायं करेज्ज त्ति। 'को पुण उवाओ तेसिं निवारणे?' त्ति राया पुच्छइ । मंतीहिं भणियं—'कुमारी दिण्णसयंवरा अम्ह' त्ति वत्तव्वं। बितियदिवसे रयणहत्था वुड्ढा पुरतो ट्ठिया राइणो, गिहीयाणि रयणाणि अहिगतेहिं। मायंगवुड्ढा भणति—देव! किं चिंतियं ते?, भणह, तो सकाले अण्णत्थ चिंतियं काहामो। रण्णा णिज्झाइया सभा, मुणवयधरी दिट्ठा। ततो णेणं भणिया मातंगी—विदिण्णसयंवरा कण्णा वेदब्भी, तीए ण पभवामि अहं। मायंगवुड्ढाए भणियं—जइ एवं पस्सउ मे दारगं, सा णाम पमाणं। रण्णा भणियं—एवं होउ त्ति, अतीह त्ति। अदिट्ठाणि णिग्गयाणि पाणाणि । पुच्छिया सभागया रण्णा—कीस भे किंचि न भणह?। ते भणंति—देव! किं भणामो?, इदाणिं अम्हे सचेयणा संवुत्ता देव! एएण रूवेण छलिउकामो न फरुसेयव्वो। पज्जुण्णेण य वेयब्भीए दंसिओ अप्पा। तीए दिट्ठा दो वि जणा। पुच्छिया अणाए—के तुब्भे देवरूविणो इहमइगया? किमट्ठ वा?। ते भणंति—अम्हे पज्जुण्ण-संबा जइ ते सुया मातुलेण भणिया—'पाणाण देमि वेयब्भिं, न य पज्जु-

१ °यमाण नयर कु° शा० विना ॥ २ शा० विनाऽन्यत्र—हत्थी खोभिया, तेहिं पुर परियत्तेहिं परियत्तियमेव। तओ क ३ उ० ॥ ३ °मारद्धा शा० विना ॥ ४ पत्तला प° शा० विना ॥ ५ °त्थ चित्तं का° शा० ॥ ६ तेण शा० ॥ ७ होहि त्ति शा० ॥ ८ °दाणीं म्ह स° शा० ॥

ण्णस्स' त्ति तओ अम्हेहिं पाणवेसेहिं जाइओ भणति—दिण्णसयंवरा कण्णा, तं जइ से रुइयं अम्हेहिं सह गंतु, भण णं, हरामु अम्हे । तओ पज्जुण्णरूवमोहिया भणति—पिउणा विसज्जियाए तुब्भे मे पभवह त्ति। ते निग्गया, पुणो रायं घोपति—पुच्छिज्जउ कुमारी, किं चिरेण ति ? । सद्दाविया वेयब्भी, पाणे पस्सइ साभाविए, एवं पुच्छिया—पुत्त ! एते पाणवरेहिं जयं ते रोयइ। सा भणइ—तुब्भेहिं अहं पुव्वमेव दत्ता पाणाणं, इयाणिं किं पुच्छिज्जामि ? ध्रुवं भणे—पाणीए होयव्वं, जओ तुब्भं एरिसी वाया निग्गया । तओ रुसिएण रुप्पिणा भणिया—जइ ते एरिसं चित्तं, वच्च, मा मे पुरओ चिट्ठसु त्ति। तओ सा एवंभणिया रुप्पिणो भवणाओ निग्गया पउमसंडाओ विव सिरी पणमिय पिउणो, पज्जुण्ण-संबसहिया गया पाणकुडं। दीसंताणि य जणेण रूवगुणहयहियएण तिण्णि वि जणाणि भोयकडाओ निग्गंतूण विंझगिरिसमीवे पण्णत्तीए उवणीयभोयणाच्छायणाणि वुत्थाणि। पज्जुण्णेण य पाणिग्गहणत्थं विउव्वियं दिव्वभूतिजुयं रयणभूसियं पासायं। पट्ठविया य आभरण-वसणपहाणभूसिया पुरिसा। ते रायाणं सपरिवारं माहण-णागरे य निमंतेंति—कल्लं तुब्भेहिं आगंतव्वं वहूए अक्खए छोढुं, जइ अम्हेहिं सह संबंधो इच्छिज्जइ पीई वा । ते गया। छूढा य चारपुरिसा । तेहिं दिट्ठो पण्णत्तीपरिवारो, विम्हिएहि य कहियं रण्णो जहादिट्ठं । माहणाणं णागराण य समवाओ—रण्णो जामाया अवजाणिओ मा दरिसिहिति अम्हे, कुद्धो विणासेज्ज, वच्चामो त्ति । रण्णो विदितं माहणा णागरा ईसरा य गया, सपूइया वत्था ऽऽभरणेहिं, भुत्तभोयणा नियत्ता पाणगुणगणविम्हिया । इयराणि गयाणि बारवतिं खणेण । संबेण य भणिओ पज्जुण्णो—देव ! पाणीवेसेण वेदब्भी अइणिज्जउ बारवतिं तओ मे पीई भविस्सइ, जहा मयं भोयकडे चंडाला आसी । वेदब्भी भणइ—सबसामि ! किं मया चंडालो कओ जओ एवं जंपसि ? पसिय, मा मं विडंबेहि इहमाणेऊण । तओ भणति—अम्मासमीवे मुहुत्तमेत्तं कीरउ से चंडालवेसो, विकिणउ तंतीओ । पज्जुण्णेण भणियं—एवं होउ त्ति । ठविया वेदब्भी रुप्पिणिभवणदुवारे । संबो अइगतो कयप्पणामो भणइ—अम्मो ! एस चंडाली दुवारे ठिया तंतीउ विकिणइ । तीए भणिओ—पुत्त ! केण एसा एत्थ अइणीया ? । चेडीहिं दिट्ठा, निवेइया य देवीए—सामिणिओ ! अइ एरिसी सिरीमयवतीओ तो अच्छेरं, पेच्छह ताव मायंगिं त्ति । तीए अवलोइया, पज्जुण्णो य पडिओ माउपाएसु भणइ—अम्मो ! दिण्णा मामेण वेयब्भी पाणाणं ति । पुच्छिओ 'किहं ?' त्ति जहावत्तं कहेति । विदितं कयं केसवस्स, तुट्ठा य रुप्पिणी, तेण वि 'पियपुत्तओ' त्ति बहुमओ, कओ सक्कारो वहूए ।

संबो कलाओ आगमेइ सवयसो । कमेण य पत्तो जोव्वणं बितियवासुदेवोवमो । बुद्धि

१ °क्से णेइ त्ति शां ॥ २ °राय जंपति ली ३ । राइं घोपति शां ॥ ३ °कुडी शां विना ॥ ४ °णाणि पज्जुण्णेण य पाणिग्गह° क ३ गो ३ । °णाविग्गह° ली ३ ॥ ५ °भवव पह° शां ॥ ६ °हिंगि शां विना ॥ ७ पाणवे° शां विना ॥ ८ °सी मयवती सिरीओ तो शां ॥ ९ °हिसि क ३ गो ३ ॥ १० °मय शां ॥

सेणो य परिवासियं पुप्फसेहरगं कुमारसतियं मग्गिऊण णेइ कहिं पि, तहा वत्थपरियट्टं, मोदके य भुत्तसेसे एगते[1] खाइस्सं ति । एवं वच्चइ कालो ।

कंचुकीओ य आगतो रहं गहाय विण्णवेइ—कुमार ! संदिट्ठं देवेण—रयणकरंडए उज्जाणे गणियादारिगाओ सुहिरण्ण-हिरण्णाओ नट्टं उवदंसेहिन्ति, तत्थ भे पासणिएहिं गंतव्वं । तुट्ठो संबो सवयंसो आरूढो रहं, सुदारओ सारही, मग्गे जाणस्स अक्खो सज्जिज्जइ । तत्थेगा पडिरूवा कण्णा, तीए संबकुमारस्स कओ पणामो । बुद्धिसेणेण य कुमारो सणियंग भणिओ—अज्जउत्त ! मउडस्स पयरगाणि ललंति, दोहि वि हत्थेहिं णं उण्णामेहि त्ति । तेण तहा कयं । जाणे हयसद्दो जातो, पडिच्छिओ संबेण, पुच्छिओ य बुद्धिसेणो—का मण्णे एसा जा णे पगासा चिट्ठति ? । तेण भणिया—कुलकण्णा होहिति त्ति । गया उज्जाणं, सभाए उवविट्ठा पासणिया । तहिं नालियागलएहिं सव्वा नट्टविही उवदंसियव्वा । हिरण्णाए दंसिया । उदयपरिक्खए सम्मत्ते सुहिरण्णा दंसेउं पयत्ता । बुद्धिसेणो ठितो संबस्स पुरओ, जयसेणेण भणिओ—अवसर एक्कपास । सो भणइ—एए ममं पेच्छगा पेल्लंति । विहीए दंसिया सुहिरण्णाए बत्तीसतिनट्टभेया । नालिगासेसेण उदएण उवज्झाएण ण्हविया । अवसरिओ बुद्धिसेणो । दिट्ठा य कुमारेण सिरी विव कयाभिसेगा, तीय वि सायर दिट्ठो रईए विव कामो । पत्थिओ य पुरिं रहारूढो सवयंसो संबो ।

पुरिसभेया

जयसेणो भणइ—अज्जउत्त ! बुद्धिसेणो तवस्सी अप्पपाणो वयणसारो, जो पेल्लणं न सहइ कुपुरिसो त्ति । तेण भणिओ—तुमं पुरिसविसेसं न याणसि अंधो इव रूवविसेसं । जयसेणेण भणिओ—तुमं जाणसि, निउणो सि, कइ पुरिसा ? भणसु, ततो विण्णाणं पगासं होहिति ? । सो भणइ—अत्थ-धम्म-कामेसु[3] पुरिसविभत्ती चिंतिज्जइ, उत्तम-मज्झिमा-ऽधमा. तत्थ अत्थे उत्तमो जो पिउ-पियामहऽज्जियं अत्थं परिभुंजंतो वड्ढावेइ, जो ण परिहावेइ सो मज्झिमो, जो खवेइ सो अधमो. धम्मे दुवे पुरिसा—उत्तमो मज्झिमो य, सयंबुद्धो बुद्धबोहिओ य. कामे वि तिन्नि—जो कामेइ कामिज्जइ सो उत्तमो, जो कामेज्जइ ण कामेइ सो मज्झिमो, जो कामेइ न कामिज्जइ सो अधमो । जयसेणेण भणिओ—एएसु अज्जउत्तो कयरो ? । सो भणइ—अत्थ-धम्मेसु न ताव पारं वच्चइ, कामे पुण मज्झिमो । सो भणइ—तुमं कयरो ? । सो भणइ—अहं उत्तमो । सो रुट्ठो—अरे पंडितमाणि ! अप्पसंभाविओ सि सामिं भणसि 'मज्झिमो' त्ति, कायव्वो ते विणओ । बुद्धिसेणो भणइ—तुमं अयाणओ सि, जो कामेज्जमाणो न कामेइ सो मज्झिमो होइ । सो भणइ—साहु, को कामेय ण ? । सो भणइ—न कहेमि, जदि मं सयं पुच्छिहिति तो साहामि । कुमारेण भणिओ—कहेहि । सो भणइ—

---

१ °ते खाइ मखाइ° उ २ विना ॥ २ °य अ° शा० विना ॥ ३ °सु चिंति° शा० उस० सस० विना ॥ ४ °ी १ विनाऽन्यत्र—°मो सि काय° क ३ गो ३ उ० ॥ ५ °इ क° उ० विना ॥

अह कयाइ देव सेविऊण निग्गतो पस्सामि पच्चलिवासणहत्थे पुरिसे। ते भणति—सविट्ठा मो देवेण 'बारवतीए पडिए सुक्के य लिहिऊण साहेह मे' त्ति त एसो बुद्धिसेणो एय रह जइ दुरुहति तो ण पडियाण अग्गलेहे लिहामि, जइ णारोहति तो सुक्खाण ति। मया चिंतिय—एय लेह देयसमीवे वाइज्जतग जइ सुक्खपुरओ लिहति भ तो मे उहावणा व होज्जा 'को वा दोसो रहाऽऽरोहणे?' त्ति विचारेमि। रहसारहिणा भणिय—अज्जउत्त ! विलग्गह रह ति। आरूढो मि पस्समाणो णयणाभिरामाणि रूवाणि। पुरतो मत्तगयारूढो आधोरणो भणति—अज्ज ! वसरह, अविहेओ मे गओ त्ति। सारहिणा तव्वयण सोऊण परावत्तिओ रहो गणियाऽऽवासगमज्झेण पत्थिओ, ईसित खिज्जित पसाइवाणि सुणमाणो तरुणवग्गस्स पत्तो य एग भवण सतोरण कयबलिकम्म, भणिओ—ओयरह अईह भवण ति। अइगओ मि, दिट्ठा मया कण्णगा चेडीहिं परिवारिया सरस्सती विव विज्जाहिं। तीय वि कयप्पणामो आभट्ठो—बुद्धिसेण ! सागय ? ति। कयपायसोय च आसणगय पुच्छति—बुद्धिसेण ! कओ आगच्छसि ?। मया भणिय—देवपायमूलाओ। तओ णाए ततोमुही अंजली कया। ततो पुच्छति—बुद्धिसेण ! केण विणोएण दिवसे गमेह ?। मया भणिय—कलापरिचएण ति। तत्थ चेडीओ पासवत्तिणीओ, तासु मे दिट्ठी न पसज्जइ। ततो अण्णा आगया, 'सा पडिरूव' त्ति तीए मे दिट्ठी निवेसिया। ततो णाए भणिओ मि—बुद्धिसेण ! गुरुजणसमीव न गतव्व, वीसमसु, एसा भोगमालिणी ते चिंतेइ त्ति। अइगयाय भणिओ य भोगमालिणीए—अज्जउत्त ! रहजाणेणं त्थ परिस्सतो, गब्भगिहे सयणीय, एत्थ वीसमह त्ति। पविट्ठो मि, सयणगयस्स मे पाए सवाहिऊण भणइ—अज्जउत्त ! वच्छत्थल भे सवाहामि। मया चिंतिय—निउणा चेडी, जा पाए सवाहिऊण उर इच्छति छिविउ। तो भणइ—'थणेहिं वो उर सवाहिस्स'ति पीडेइ थणेहिं। अत्थि महतो विसेसो करयलसवाहणाओ वि पओहर फरिसे। एव उवायणिसिणा य कणेरुयाए विव वणगतो रह कारिओ मि। कमेण य निग्गतो, पणयपडिवखेण य अभिक्खण वच्चामि त भवण। अण्णया भणइ म भोगमालिणी मणोणुकूल-महुरभासिणी—अज्जउत्त ! जाणह कारण जेणेत्थं माणीया ?। भणिया मया—ण याण, कहेहि सुदरि ! त्ति। भणइ—सुणह,

अम्ह सामिणी सुहिरण्णा बाला चेव कुमारस्स दिण्णा सबसिरिणो। देव च पस्सइ पगाम, पवड्ढिया कमेण, देवेण य आणत्त—कालिंदसेणे ! दारिया मम अब्भतरो(ग्रन्थाग्रम्–२९००)वत्थाणे पस्सउ इयाणि ति। कयाइ च पत्थिया अम्माए सम, तीए निवारिया 'न ते गतव्व' ति। ततो णाए गयाए अम्माए विरहिए गब्भगिहे वेहासीकओ अप्पा। मया य देवनिओएण दिट्ठा उवडक्खित्ता, रज्जुपास उज्झिऊण सयणीए निक्खित्ता आसत्था। णाए पुच्छिय—कहि म्हि भोगमालिणि !। मया भणिया—सयणीए सयणहिदएसु य।

१ गमेसि ली ३ ॥ २ शां विनाऽन्यत्र—°णी एव ते इति क ३ मो ३ ॥ ३ °ण तुब्भे परि° ली ३ ॥ ४ °ला रइगिहे ली ३ ॥ ५ °णिसेण य ली ३ ॥ ६ °त्थ इहमा° शां ॥ ७ देव च पहाइ पगा° शां ॥

पुणो पुच्छति—केण त्ति डहमाणीया? । मया भणिया—देवतेहिं मया य । ततो मया भणिया—सामिणि ! मरियव्वे किं कया बुद्धि ?, कहेह मे । [सा भणइ—] सुण सहि !, अहं किर वाला चेव कुमारस्स दत्ता. वड्डिया य देवोपत्थाणे कयाइ कुमारं गया पस्सामि. 'इयाणिं मे दट्ठुं पि ण लब्भइ' त्ति निच्छओ कओ । मया भणिया—सामिणि! अलं विसाएण. सुणह—तुब्भेहिंतो अण्णा कण्णा कयरी विसिट्ठरूवा जा से हिययसाहीणा भविस्सइ ?. अचिरेण से हिययइच्छियसणोरहसपत्ती भविस्सइ । एवं आसासेऊणं णं अम्माए कहेमि । तीए य मित्तेहिं सह हत्थारोह-लेहएहिं समवाओ कओ । ते भणंति—अम्हे देवस्स वीहामो. बुद्धिसेणो कुमारस्स पच्चयभूओ, सो कण्णागुणे निवेदेतो सोभइ. अम्हे णं एएणं उवाएणं इमं आणेम, तुब्भे णं उवाएणं गेण्हह, सो कज्जं काहति त्ति ।. ततो रथ रहिणा लेहएहिं महामत्तेण य उवायपुव्वं पवेसिओ । मा य भे चित्तं ठाउ 'एसा गणिगादारिय' त्ति । सुणह—

गणियाणं उप्पत्ती

आसि किर पुव्वं भरहो नाम राया मंडलवती, सो एगाए इत्थीए अणुरत्तो । सामंतेहि य से कण्णाओ पेसियाओ, ताओ समगं पेसियाओ। दिट्ठाओ य पासायगयाए देवीए सह राइणा । पुच्छिओ अणाए राया—कस्स एसो खंधावारो? । तेण य से कहियं—कुमारीओ मम सामंतेहिं पेसियाओ । तीए चिंतियं—'अणागयं से करेमि तिगिच्छियं, एत्तियमित्तीसु कयाइ एगा बहुगा वा वल्लभाओ होज्ज'त्ति चिंतिऊण भणइ—सामि! मुयामि पासाउ अप्पाणं । तेण भणिया—कीस देवि! एवं भणसि? । सा भणति—एयाहिं इहमेतिगयाहिं सोयग्गिणा डज्झमाणी दुक्खं मरिस्स। राया भणइ—जइ तुज्झ एस निच्छओ तो न पविसिहति[3] गिहं । सा भणइ—जइ एतं सच्चयं तो वाहिरोवत्थाणे सेवंतु । तेण 'एवं' ति पडिवण्णं । तो छत्त-चामरधारीहिं सहियाउ सेवति । कमेण गणाण विदिण्णाओ । एसा गणियाजणस्स उप्पत्ती ॥

इमा पुण अमियजसाए पसूइबहूसु य अईयासु कालिंदसेणाए दुहिया हेमंगयस्स रण्णो. जहा कुमारो से जाणइ तत्ति तहा करेह ।

मया पडिवण्णं—पुप्फ-गंध-वत्थ-तंबोलाणि णेमि तासिं पत्तियावणहेउं. जा उज्जाणे दिट्ठा सा वि सा चेव जं पि अज्जउत्तपुरओ ठिओ मि नच्चमाणीए तं कारणं सुणह—सामिणि(णी) अज्जउत्तनिवेसियदिट्ठी मा नट्टविहिकम्मं चुक्केज्ज त्ति । तीए य कहाए पत्ता आवास ।

पओसे य संवो बुद्धिसेणं भणइ—वच्च, आणेहि णं तं सुहिरण्णं. अहं पि उत्तमो होमि, कामेमि णं ति । तेण भणिओ—मह ताओ न पत्तिज्जिहिन्ति, जयसेणो मे सहायो दिज्जउ त्ति । गया दुवग्गा वि । बुद्धिसेणेण भणियाओ चेडीओ—पट्ठविओ मि

१ °स्स य कायभू° शा० ॥ २ °मयग° शा० ॥ ३ °सिहींति शा० विना ॥

कुमारेण, गवक्ख सामिणीए। ताओ भणति—को तुज्झ पत्तियइ ? त्ति। तेण से जयसेणो दरिसिओ। तेण वि कहिओ कुमारसंदेसो। विदितं च कयं कालिंदसेणाए। तीए भणिय—वीसमह मुहुत्तं जा पसाहिज्जति दारिया। सा गया जयवइसमीवं, निवेदितं च तीए। देवी परिचिंतेऊण गया कण्हसमीवं, कहिओ सब्बाहिप्पाओ। तेण भणिया—पच्छा रायदारिगाहिं सह सक्कारो कीरहि त्ति, सेवउ णं सुहिरण्णा। विसज्जिया कालिंदसेणा जवंतीय। कयविसग्गाय पेसिया दारिया पवहणेण। बुद्धिसेणेण कुमारस्स निवेदितं, भणिओ य णेण—अज्जउत्त ! निउणा होज्जह। तेण भणिओ—कहमणुवत्तीलक्खणा पीई ?। सा अइगया वासगिहं, उवविट्ठा सयणीए। निग्गतो बुद्धिसेणो सबरियदुवारं काऊण गब्भगिहं। सा य केस-वसण भूसण सव्वस्स जं जं पवज्जइ तं तं सव्वो वि अणुकरेइ। ततो तीए सुय इव सारियाए सेहविओ। गया से रयणी परमपीइसुहहयाण। उवगतो बुद्धिसेणो, भणिओ सव्वेण—निज्जउ एसा मे गिहं अविण्णाया गुरुजणेण वि। पत्ता य पइकम्मयारीओ देवीए पट्ठवियाओ पसाहण-सुवण्णवत्थाणि गहेऊण दोण्ह वि जणाण। ततो 'विदियमागमण वीसे अम्माए' त्ति वीसत्थो सव्वो। तीए य सह मणाणुकूलवत्तिणीए पचलक्खणविसय सुहमोहियस्स वच्चइ कालो॥

॥ एसा पेढिगा ॥

पेढियाग्रन्थाग्रम्-

श्लो० ८१० अ० १२



सर्वग्रन्थाग्रम्-

श्लो० २८४४ अ० १७

[मुहं]

एत्तो मुहं—

संब-सुभाणूणं कीडाओ

संब-भाणूणं कयाइ सभाए कीलंताणं पणी(णि)यं समुप्पण्णं—जस्स सउणो विचित्तं वासति सो जिणति कोडिं ति। ठविया पासणिगा। बितियदिवसे भाणुणा सुओ आणीओ, संबेण सारिगा पज्जुण्णगिहलालिया कंतसजोइयसुहुमविविहवण्णपिच्छच्छयणा एगदेसुट्ठियरोमखयखारसेगा। सुगो पकड्ढिओ सिलोगजुयलं—

सतेसु जायते सूरो, सहस्सेसु य पंडिओ।
वत्ता सयसहस्सेसु, दाया जायति वा ण वा॥
इंदियाण जए सूरो, धम्मं चरति पंडिओ।
वत्ता सच्चवओ होइ, दाया भूयहिए रओ॥

त्ति पभणिउ सुओ ठिओ। सारिया संबेणं चोइया—मयणे! भणसु तुमं किंचि सुभासियं। सा भणइ—

सव्वं गीयं विलवियं, सव्वं नट्टं विडंबियं।
सव्वे आभरणा भारा, सव्वे कामा दुहावहा॥

ततो खारसित्ते पएसे छित्ता रसिउमारद्धा, भणइ य रसियावसाणे—देव! को वि मं पीलेइ, परित्तायसु, मरामि, मा मं उवेक्खह. तिगिच्छगा सद्दाविज्जंतु लहुं ति, ते मे परिबाधापडिगार करेंति. नेहि मे देविसमीवं। एवमाइ कलुणं विलवंती पुणो वि चोइया—सुंदरि! अलं विसाएण, भणसु किंचि, ततो जं वोच्छिसि तं सव्वं कीरइ। ततो भणइ—

उक्कामिव जोइमालिणिं, सुभुयंगामिव पुप्फियं लयं।
विबुधो जो कामवत्तिणिं, मुयई सो सुहिओ भविस्सइ॥

खारे छिक्का पुणो रसइ विलवइ य। पुणो भणिया—पढसु ताव किंचि। ततो भणति—

न सुयणवयण हि निट्ठुर, न दुरहिगंधवहं मह्रुप्पलं।
न जुवइहिययम्मि धीरया, न य निवतीसु य सोहियं थिर॥

'एवं सा विचित्तं वासइ' त्ति जियं संबेण। 'सुओ सिलोगजुयलमेव लवइ' त्ति पराजिओ, भोयणवेलाए य सद्दाविओ सुभाणू रुद्धो 'पणिए कोडिं देहि'त्ति। सुयं सच्चभामाए, कय च कण्हस्स विदियं। पेसिओ कंचुकीओ संबं भणइ—कुमार! सुब्बउ, 'भाणू भुत्तभोयणो दाहिति'त्ति देवो आणवेइ। संबो भणति—जो सिणेहिओ सो दाऊण णं नेउ,

---

१ एत्तो शां० विना॥ २ °भासु की° ली ३॥ ३ कोडि त्ति उ २ विना॥ ४ पच्छण्ण° उ २ विना॥ ५ °छयणा शां०॥ ६ °ह्वि° गो ३ शां०॥ ७ °लवति शां०॥ ८ उ० मे० विनाऽन्यत्र—°धपद म° ली ३॥

अथवा एस जाणइ जं कायव्वं । सुभाणू भएण ण सक्कइ, णिवेइयं कण्हस्स, दिण्णं विसं जिओ । दुहत्ता पुच्छिया सबेण, पियपुच्छगाण य दीणाणाहाण य दत्तं वित्तं ।

केसु वि दिवसेसु गतेसु पुणो भाणू भणइ—संब! होउ पणीयं, जस्स उक्कडा गंधा सो जिणइ दोण्णि कोडीउ । संबो भणइ—अलं तुमे सह पणिएण तुमं जिओ देवस्स कहेसि। सो भणइ—अंबाए कहियं देवस्स, न मया । ततो 'एवं होउ'त्ति कया सक्खी । संबेण चिंतियं—गंधजुत्तीसु भाणू न जिणिज्जा, देवसतएहिं गंधेहिं सो विलिंपिज्जा करेमि घाण-पडिलोमदव्वसंजोगं ति । ततो णेण पलंडु-लसुण-वेकड हिंगूणि छगलमुत्तेण सह कइयाणि सरावसंपुडेण आणीयाणि । सुभाणू य पुव्वपविट्ठो सभं सुरहिविलेवणो । पसंसिओ गंध-विहाणकुसलेहिं । संबो य सभादुवारे विलित्तो घाणपडिकूलेण लसुणादिजोएण । तेण य गंधेण परब्भाहतो समागओ कुमारलोओ सपरियणकदुवारे समतओ विपलाओ—संब सामि! अइउक्कडा गंधा, पसीय, विसज्जिज्जतु, कुणह पसायं। तेण भणिया—भणह निव्वणं । ते भणंति—जियं तुमे।भाणू भणइ—दुरहिगंधा एयस्स । संबेण भणियं—उक्कडस्स पणियं, न य विसेसो सुभा-ऽसुभेसु कओ । पासणिएहिं संबपक्खो उक्खित्तो । जिओ भाणू रुट्ठो । देवीए रुदतीए वासुदेवस्स कहियं । तेण पेसिए ण मुक्को, दिण्णं विस-जिओ । संबेण परियणस्स दिण्णो विभत्तो अत्थो, दिण्णं दुहत्ताण य ।

पुणो केसु वि दिणेसु गएसु भाणू संबं भणइ—होउ पणियं चउसु कोडीसु, जस्स जुतीए अइसयंति विभूसणाणि सो जिणइ । संबेण भणिओ—अलं तुमे समं पणिएण, देवंसि उवट्ठायतओ जिओ वि । निबंधे कए पडिवन्नो संबो । निरूविया सक्खी । गतो य संबो पज्जुण्णसमीवं, कहिओ य णेण पणियालावो । तेण भणिओ—होउ कुमार! जिओ तुमे सुभाणू जइ तुमं जिंपिहिसि इयाणिं तो दिज्जिहिति से जहाभणियं । संबो भणइ—देव! भाणुकेण जियस्स किं मे जीविएण ?, कुणह पसायं जहा मे जओ होइ । पज्जुण्णेण पडिवन्नं—एवं कीरिहिति, अच्छह जहासुहं ति । गतो य पज्जुण्णो सिवाए महादेवीए पायमूलं, कहियं च से संब-सुभाणुपणियं, विण्णविया य णेण—अज्जिए! देह जाइतगाणि आभरणाणि, जाणि अम्हं चुल्लपिउणो सामिणोऽरिट्ठनेमिस्स देवेहिं दत्ताणि । तीए भणिओ—पुत्त पज्जुण्ण! न तव किंचि अदेयं, ताणि भूसणाणि चुल्लपिउणो ते ण सत्तिए पिणद्धावि, तेण जाइयगाणि [3]णेहि, इहरहा दत्ताणि णाम तव चि । पणओ घेत्तूण गतो, संबस्स य णेण दत्ताणि, तेहिं विभूसियदेहो गतो सभं । पुव्वपविट्ठो य सुभाणू महग्घाभरणमंडिओ पसंसिओ पासणिएहिं—धुवं तुमं इदाणिं जिणिसि त्ति । संबकुमारो य नक्खत्तमालाविराइयवच्छत्थलो सोभिओ विज्जुलयालंकिओ इव बलाहगो, तस्स य भूसणजुईए सूरप्पभाए इव खज्जोयजुती पडिहया सुभाणू(णु)भूसणच्छाया। 'जियं संबेणं' ति विघोसियं पासणिएहिं । सुयं च सच्चभामाए, विण्णविओ कण्हो रोवंतीए—संबो

१ अम्माए शा० ॥ २ जिणिहि° शा ॥ ३ णेहिं शा विना ॥

तुज्झवयणेण वल्लभत्ताएण ण देइ मे दारयस्स जीवियं. निवारिज्जउ जइ तीरइ। एवं विण्णविए पेसज्जिओ कंचुगी। तेण संबो भणिओ—कुमार! 'मुयह सुभाणूं(णुं), मा णं बाहह' एवं देवो आणवेइ। संबेण भणियं—पणिए जिओ, एत्थ किं देवस्स वा दाणवस्स वा वत्तवं. अवराधी विणेयव्वो पसुणा, णायकारी पालेयव्वो। कंचुकी गओ, कहियं तेण संबवयणं। देवी भणइ कण्हं—देव! सव्वस्सेण वि मे मोइ(ग्रंथाग्रम्—२९००)ज्जउ दारगो जइ अत्थि पसादो। तीए चोइओ गओ कण्हो सभं। पुच्छिया य तेण समासया। तेहिं संबजओ कहिओ। दिट्ठो य णेणं संबो सुरवई इव पसाहियसरीरो। भणिओ तेण—विसज्जेहिं सुभाणुं, अम्हे दाहामो पणियं। संबेण भणियं—सीहस्स दंता केण गणेयव्वा?, जइ 'वल्लहो' त्ति निज्जइ णीओ णाम. जया मज्जाया भविस्सति तदा दाहिति। कण्हेण भणिओ—मज्जाया तुमम्मि इयाणिं, णऽण्णत्थ. ण देसि एयस्स दारयस्स जीवियं, एसो तुमे खलीकओ वि न विरज्जइ त्ति—निग्गओ सहाओ फरिसेऊण णं। दिण्णे कोडिचउक्के विसज्जिओ भाणू।

बितियदिवसे संबो गतो सच्चभामाभवणं केसवसिरिमुवहंतो नक्खत्तमालाविभूसिओ य, तीए आलोए ठिओ खुज्जं अंगुलीए सद्दावेइ। सो य 'कण्हस्स वेस-भासा-वण्णा-ऽऽगितीहिं बहुसरिसो' त्ति न निवडिओ तीए। भणिया अणेण खुज्जा—मया सुमिणो दिट्ठो तस्स पडिघाओ कायव्वो. देविं भण—'पंचगव्वेणं मं अतितयं वारेतं पि ण्हाणेह' त्ति—अवक्कंतो। तीए तुरियं सपाइओ संदेसो। अइंतो य कण्हो 'घ(ध)डउ' त्ति चेडीए च्छादिओ 'कि इमं करेह?, अवसरह' त्ति भणंतो। ततो पच्छा मंगलेहिं ण्हाविओ। परिसंठिए य परियणे भणिया सच्चभामा कण्हेण—मया तुमं सव्वंतेउरपुज्जा ठविया, अइसिरिओ उल्लट्टंतीमिच्छसि तो मया खेल्लसि। तीए भणिअ—देव! कीस मं एवमुवालभह सयं आणवेऊण?। कण्हेण भणिया—कया मया भणिअं? अलिअं भणसि। सा भणइ—खुज्जा मे सद्दाविऊण संदिट्ठा. मया पुण दिट्ठ त्थ नक्खत्तमालाविभूसिओरत्थला. सो मे फेडिया(यो) एत्तिओ वि सवाओ। तत्तो कण्हो पहसिउ भणइ—संबसिरी होहित्ति 'सो कल्लं मया फरुसिओ' त्ति। तं च सोऊण रुट्ठा देवी भणइ—'अहं पुत्तभंडाण खेल्लावणिया सवुत्ता, किं मे जीविएणं?' ति जीहं पकड्ढिया। कहिंचि निवारिया य, भणिया य कण्हेण—देवि! अविणीयस्स कल्लं काहं निग्गहं, वीसत्था भवसु त्ति।

जंबवती सद्दाविया, भणिया य—तुज्झ पुत्तेण वि अहं ओहासिओ। सा भणइ—तुमं जाणसि अत्तणो पुत्तस्स चरियं। देवेण भणिया—तुमं पि जाणावइस्सं। अण्णदियहे गोउलियवेसं काऊण जंबवइसहिएण दिट्ठो(ट्ठो)। रूवंस्सिणी संबेण पुच्छिया—तक्कं लब्भेइ?। सा भणइ—आमं। 'गेण्हामि णं' हत्थे गहिया। देवो रूवं दंसेइ, संबो पलाणो, न एइ य देवसमीवं। बितियदिवसे कुलगरसमक्खं संबो सद्दाविओ। सो खादिरसंकुं नखरणेण

१ °विय शां० मे० विना ॥ २ °भाणू ली ३ विना ॥ ३ °भागया शां० मे० ॥ ४ °जओ मी° शां० मे० विना ॥ ५ °सिरिओ उल्लट्टंती° ली ३। °सिरिं उल्लट्टंती° शां० ॥ ६ °ट्ठाहं रू° शां० विना ॥ ७ गिण्हामि शां० मे० विना ॥ ८ खायर सं° शां० ॥

तच्छितो अतिगतो सभं। वासुदेवेण पुच्छिओ—सवसामि! किं इमं? । सो भणइ—जो पज्जोसियं आलावं करेइ तस्सेसो मुहे सक्कू आहम्मइ त्ति। वासुदेवेण भणिया कुलगरा—सुयं भे, अहं एएण हिओ पचगवेण ण्हाणाविओ तं किर अहं तुज्झ जइ कहेमि सो मे सक्कू मुहे आहम्मइ तो निग्गतो जं काहिसि तं काहिसि, मा वस बारवतीए। वसुदेवेण भणियं—कण्ह! खमाहि, सो एस केलीकिलो अम्हाणं कुलस्स अलंकारभूओ, जह रिसीण णारदो। ततो कण्हो भणइ—एस तुब्भेहिं उविक्खिओ, जेण मया वि खेडेइ न इह वसियव्वं। कुलगरेहिं भणिओ—सव! निग्गमव नयरीओ। सो भणइ—कालो ठविज्जउ, जचिरं मया बाहिं अच्छियव्वं। कण्हेण भणियं—निच्छुभतस्स को कालपरिच्छेदो?। सो भणइ—'तुब्भे इह सव्वे वसह, मया पुण अपरिमियं कालं बाहिं अच्छेयव्वं' ति अणवट्ठिए काले ण णीमि त्ति। कण्हेण भणियं—जया ते सच्चभामा अहं च अब्भत्थेऊण अईणेसु तदा बारवइं अईहिसि।

ततो 'एवं' ति वोत्तूण पियामहाण कयपणिपातो निग्गतो गतो पज्जुण्णसमीवं। कहियं च णेण निव्विसयकारणं सावराहं। तेण भणिओ—पियरं अणासायंतेण ते महंतो अवराहो कओ, वयसु ताव उवसंतं देवं विण्णवेहामि त्ति। ततो सवो भणइ—देव! जइ तुब्भेहिं पि विसज्जिओ ता मे पण्णत्तिं जाइय देह। पज्जुण्णेण भणिओ—पण्णत्तिपरिगाहिओ किंचि काहिसि दुण्णयं, ततो मज्झ वि उवालंभं होहिति त्ति। ततो सवो भणइ—न करेहामि अविणयं, कुणह मे पसायं। दिण्णा य से पण्णत्ती—भयवइ! बहिंवसंतस्स सवस्स होहि सहायिगा। ततो तस्स कयप्पणामो विसज्जियदुइतो निग्गतो एगागी सुरट्ठाविसए विहरइ।

कहेइ से बारवइपवत्तिं पण्णत्ती, जहा—देवीए सच्चभामाए वासुदेवो विण्णविओ—जाव सवो निग्गतो ताव सुभाणुस्स एगदिवसे अट्ठसयाणं रायकण्णाणं समयं वीवाहो होउ निव्विग्घं ति। ताण य सतुत्तरसयं कुल-रूव विण्णाणसालिणीण मेलावियं ति। सत्थो य बारवतिं वयइ, पण्णत्तीसगहिओ कण्णारूवधारी सत्थवाहमहीणो धाइसहिओ। सो धाईए भणिओ—एसा गणियादारिया इच्छइ तुज्झे संसिया बारवतिं पविसिउं तत्थ एगस्स इच्छियस्स भत्तुणो भारिया होहिति त्ति। सत्थवाहेण परिग्गहीया पत्ता बारवतिं। दिट्ठा सुभाणुमणुस्सेहिं, निवेइया णेहिं कुमारस्स। सो रूवाइसयसवणविम्हिओ आगओ, तस्स दसिओ अप्पा हसि त्ति सो उम्माइओ, पुणो य पयदंसि। सा वि सदेसेइ अप्पाणं 'गणियादारिग' त्ति, पविलोभावेऊण विभवेण मरिउं ववसति। न इच्छइ य जाहे ताहे समवणे पडिसिद्धभोयणो ठितो। उवलद्धं च देवीए, तीय वि महत्तरगा पेसिया। तेहिं बहुप्पयारमणुणीया न पडिवज्जइ। ततो उग्गसेणो सच्चभामाए पायवडियाए विण्णविओ

१ णीमि त्ति शां मे विना॥ २ °हनेहामो तदा शां विना॥ ३ °हितमो क ३॥ ४ सो अम्मा° शां० मे विना॥ ५ से दसे° शां विना॥ ६ °वेति य शां॥

गओ संबदारिगासमीवं । तेण वि कुल-रूव-विभवे सुभाणुस्स वण्णंतेण विलोभिया तहेव मरणं ववइस्सइ, भणइ य—अज्जय! तुम्हं देवतब्भूयाणं जइ वि य वयणं करेज्ज तो ताहिं रायधूयादासीहिं 'खोट्टीहिं तुल्ला एस'त्ति परिभविज्जिस्सं, तुब्भे कत्थगए उवट्ठावेज्जा?. तं अतीत, मा मं धम्मं जाणंता अग्गिम्मि छुहह । ततो सो गतो । सच्चभामाए य कण्हो अब्भत्थिओ—दारगस्स जीवियहेउं भण्णउ सा दारिगा । कहं वि कण्हेण पडिवन्नं । गएहिं य अब्भत्थिया सच्चभामाए—पुत्ति! पुत्तभिक्खं मे देहि । सा भणइ—मया तुब्भं वयणेण छूढो अप्पा बंधणे. 'अहं पुण कुमारेण सव्वबाहिं ठविज्जं' ति जातं मे सल्लं को अवणेहिति?। तेहिं भणिया—तुमं पुत्त! दारयसमीवे, सेसा तुब्भं अवसाणे । 'एवं नामं' ति अइणीया कुमारि[3]मज्झं, लद्धपसरा य भणइ—अहं ताव गणियादारिया बला वि आणिज्जामि. तुब्भे णाम रायधूया होइऊण अण्णेसु जायवकुमारेसु देवरूवीसु विज्जमाणेसु सुभाणुगस्स दिज्जियंधा । अईयमज्जाया ताओ णं भणंति—तुमं सच्छंदा, अम्हे अम्मा-पिउवसाओ, किं करेमु? । ततो सा संबगुणे वण्णेइ । तओ तीए कहाए रज्जमाणीए जाणिऊण काहिंचि सयं रूवं दरिसेइ । पाणिग्गहणदिवसे भाणुसमीवे ठविया, सेसा पंतीए । सो रूवविम्हिओ निज्झायि णं, संबं पस्सइ, अवसरइ य 'एस संबो'त्ति जंपमाणो, पुणो कण्णं पासइ । सा रोवइ—अहं किर संबो परिजणेण भण्णइ. संबं कत्थ वि गयं उप्पस्सय त्ति । पुणो पुणो एवं दंसेइ से, परिजणस्स अंतरियस्स दंसेइ रूवं अप्पाणं च । निवेदितं कण्हस्स । सो भणइ—रुप्पिणिं जंबवइं च सद्दावेह. जदि संबो होहित्ति दंसेहिति से अप्पाणं । कहियं च, ताओ इत्थियाओ आगंतुं जायववुड्ढा य आगया । दंसिओ णेण अप्पा । पुच्छिओ तेहिं—संब! कीस इहं अइगतो? । [सो भणइ—] देवेण अम्माए य बला अइणीओ मि, तो पत्थिओ सगिहं । भाणू भणिओ—पट्टए ठिओ ण्हायसु वहुसहिओ त्ति । सो भणइ—अलं मम एयाहिं, संबेण एयाओ उद्दालियल्लियाउ त्ति । तो सप्पहासेहिं कुलगरेहिं संबो सुहिरण्णयासहिएण अट्ठसएण कण्णाणं ण्हविओ । दिण्णा य से कण्हेण पण्णास कोडीओ सुवण्णस्स, वत्था-ऽऽभरण-सयणा-ऽऽसण-जाण-वाहण-भायण-विही-परिचारियाओ । ततो सो पासायगतो ताहिं रायतणयाहिं सहिओ निरुस्सुओ नाडएहिं उवगिज्जमाणो दोगुंदुगदेवो विव निरुविग्गो माणुस्सए भोए भुंजमाणो विहरइ त्ति ॥

॥ सुहं कहाए ॥

सुहग्रंथाग्रम्— श्लो० १२४ अ० १२.



सर्वग्रंथाग्रम्— श्लो० २९७८ अ०२९.

---

१ खुड्डुतु° ली ३ । खुड्डुहिं तु° क ३ गो ३ मे० । खुड्डाहिं तु° उ० ॥ २ अतीव ली ३ मे० विना ॥ ३ °मारी, लद्धमज्झपस° शां० ॥ ४ °यव्व ली ३ विना ॥ ५ अट्ठस° शां० ॥ ६ °एहिं क° शां० मे० विना ॥

[पडिमुहं]

पडिमुहसओ—

केसु वि दिवसेसु गएसु पज्जुण्णो गतो वसुदेवघरं, अब्भतरोवत्थाणे य वसुदेवरूव काऊण उवविट्ठो आसणे। देवीहिं कयप्पणामाहिं परियचिओ पुच्छिओ य—देव ! कत्थ अच्छिय त्थ ? । भणइ—गओ मि जेट्ठस्स राइणो गिहं । ताओ भणति—का तत्थ कहा आसी ? । भणइ—तत्थ चारणसमणो णभगणाओ उवेइओ, वदिओ सभतेहिं, कट्ठासणे आसीणो । पुच्छिओ राइणा—कओ भयवं आगओऽत्थ ? ।सो भणइ—राय ! धायइसडदीवभरहाओ । 'त केरिसं ?' ति पुच्छिओ साहइ—जो चक्खुणा पस्सेज्ज त्ति किंचि खेत्त पव्वय वा सो ण जाणइ विक्खभा ऽऽयामपरिमाण पि जहा सव्वण्णू वण्णेंति तहा साहामि—लवणसमुद्द-कालोद उसुकार-चुल्लहिमवतपरिक्खित्ताणि दुवे भरहाणि चत्तारि चत्तारि जोयणसय सहस्साणि आयामेण, लवणसमुद्दतेण छ जोयणसहस्साणि छ च सयाणि चोद्दसुत्तराणि जोयणाण सय च एगूणवीस दुसत्तबारसुत्तरभागाण, कालोदसमुद्दतेण एगूणवीस जोयण सहस्साणि तिन्नि य सयाणि एगाणउयाणि एगूणसत्तरिं च भागे । एव च कहेइ ।

वसुदेवो य अतिगतो निवारिओ अब्भतरपडिहारेहिं—अम्ह राया अतेउरगतो, तुब्भे के तस्स सरिसरूवा ?, ण भे पविसियव्व ति । तओ सो भणइ—किं पलवह ? त्ति—बला अइगओ, सुणइ य गभीरसद्द । दिट्ठो य पज्जुण्णेण, साभावियरूवो य पडिओ अज्जगस्स पाएसु । कयासीसो भणिओ—नत्तुय ! अज्जियाहिं सह को कओ आलावो ? । भणइ—तुब्भ परियालेंतेण तुज्झ रूवेण मोहियाओ मुहुत्त । तओ पहसियाओ भणति—णत्तुय ! देवो विव इच्छियरूवधरो सि, जीव चिरं बहूणि वाससहस्साणि । ततो भणति—अज्जय ! तुब्भे[हिं] वाससय परिभमंतेहिं अम्ह अज्जियाओ लद्धाओ पस्सह सव्वस्स परिभोगे, सुभाणुस्स पिंडियाओ कण्णाओ ताओ सव्वस्स उवट्ठियाओ । वसुदेवेण भणिओ पज्जुण्णो—सवो कूवद्दुरो इव सुहागयभोगसंतुट्ठो 'मया पुण परिब्भमंतेण जाणि सुहाणि दुक्खाणि वा अणुभूयाणि ताणि अण्णेण पुरिसेण (ग्रन्थाग्रम्–३०००) दुक्करं होज्ज'त्ति चिंतेसि। ततो पणओ पज्जुण्णो विण्णवेइ—अज्जय ! कुणह मे पसाय, कहेहं जहा हिंडिय त्थ । भणइ—कस्स वा कहेयव्व ? को वा मे तुमोप विसिट्ठो नत्तुओ ?, किं पुण तुम सि अण्णेसिं साहिंतओ, तो मे पुणो वाहिहिंति ते, तो जस्स जस्स अत्थि इच्छा सोउ त त मेलावेहि ततो तुम पुरओ काऊण कहेहं । ततो तेण तुट्ठेण कुमारा अकूरा ऽणाहिट्ठि-सारणगणा य राम-केसवादी य निमंतिया । ते समेया सहाए पहट्ठमणसा । तेसिं च मज्झगओ वसुदेवो बहस्सती विव कोविदाण पज्जुण्णपमुहाण धम्म ऽत्थ-काम लोग वेद-समयदिट्ठ-सुवा ऽणुभूय पकहिओ सुयणसवणणदिणा सरेण । सुणह—

---

१ गतेसु शां ॥ २ वदिओ शां ॥ ३ दुवे हिमवयमाणि अट्ट° की ३ ॥ ४ हेहि शां विना ॥ ५ °याओ वि° शां० विना ॥ ६ कहेमि शां० ॥ ७ °सए हिंडं सुवा° शां० विना ॥

अंधगवण्हिपरिचओ

इहं आसी हरिवंसगगणचंदा-ऽऽदिच्चा दुवे भायरो—सोरी वीरो य। तत्थ सोरिणा रण्णा सोरियपुरं निवेसियं, वीरेण पुण सोवीरं । ते य अण्णोण्णाणुरत्ता अविभत्तरज्ज-कोस-कोट्ठागारा वुहाहंकारा णिरुवदुयं रज्जसिरीमणुभवमाणा विहरंति । तत्थ सोरिस्स राइणो पुत्तो अंधगवण्ही पहाणो, भद्दा देवी य, दस पुत्ता समुद्दविजयाइणो, दुवे य दुहियाओ—कोंती मद्दी य । वीरस्स भोयवण्ही पुत्तो, तस्स उग्गसेणो, उग्गसेणस्स बंधू-सुबंधू-कंसमादीया ।

सुपइट्ठो य अणगारो गणपरिवुडो विहरमाणो सोरियपुरस्स णाइदूरे सिरिवणे उज्जाणे समोसरिओ । सोरी वीरो य दो भायरो तस्सागमणहरिसिया निग्गया वंदिउं, पणया य सुणंति साहुमुहनिग्गयं नमिजिणमयं, जहा—जीवा राग-दोसवसगया बहुं पावं समज्जिणित्ता नरग-तिरिय-कुमाणुस-देवदुग्गतीसु सारीर-माणसाणि दुक्खसहस्साणि अणुभवमाणा बहुं कालं किलिस्संति. कम्मलाघवेण य अरहंतवयणं भवसयसहस्सदुल्लहं सुणित्ता सद्दहंति. सद्दहमाणा य संवरियासवदुवारा बज्झ-ऽब्भंतरतवविधिविसोधितमला सिद्धिवसधिसाहीणा भवंति, सावसेसकम्मा वा केइ विउलं सुरसुहमणुभविऊण परित्तेण कालेण दुक्खसमुद्दपरतीरगामिणो भविस्संति । ततो ते एवंविहं सुपइट्ठमुणिवयणं सोऊण जायतिव्वसंवेगा पुत्तेसु संकामियरज्जसिरी पव्वइया, अप्परिपडियवेरग्गा जहोवइट्ठं गुरुसंदेसं संपाडेमाणा विहरंति । बहुणा य कालेण गुरुसहिया सोरियपुरमागया । वंदिया य परमपीइसंपउत्तेण अंधगवण्हिणा, उवासिऊण य गतो सपुरं ।

साहुसमीवे अड्ढरत्तसमए देवोवयणनिमित्तं उप्पिंजलओ आसि । ततो अंधगवण्ही जायकोऊहल्लो निज्जाओ, विणयपणओ पुच्छइ सुपइट्ठमणगारं—भयवं ! किंनिमित्तो देवुज्जोतो आसी ? । साहुणा भणियं—एगस्स साहुस्स पडिमागयस्स सत्तरत्तंतराओ देवेहि पडिणीओ उवसग्गं कासी य ततो तस्स विसुज्झमाणलेसस्स अज्ज ओहिणाणं समुप्पन्नं, तन्निमित्तं परितुट्ठेहिं देवेहिं महिओ पराजिओ पडिणीओ. एयं उज्जोवकारणं ॥ ताहे पुच्छति—किंनिमित्तं कहं वा तेसिं वेर आसी ? । सुपइट्ठेण मुणिणा भणिओ—वच्छ, सो चेव साहू सयमणुभूयं णाणेण य उवइट्ठं साहेति त्ति । ततो गया सव्वे वि तस्स समीवं, वंदिऊण य विणएण राया पुच्छइ वेरकारणं । साहू भणइ—सुणाहि राय !—

उप्पन्नोहिणाणिणो मुणिणो अप्पकहा

कंचणपुराओ दुवे सामवाइगा वाणियगा लंकादीवे रयणोपादाणं काऊणं पच्छण्णाणि य आणेऊण सज्झाकाले कंचणपुरं सपत्ता । ततो तेहिं 'अवेलाए मा पमाओ होहित्ति' त्ति रिट्ठवाइंगणिमूले णिक्खित्ताणि, अइगया य ते रत्तिं सगिहाणि । ताणि पुण मूला वाणिय-

---

१ °रा य होहका° शा० मे० विना ॥ २ आवासिऊण अतिगतो शा० ॥ ३ °भये दे° शा० ॥ ४ वयर शां० ॥

गेण महाए गहियाणि । ते आगया रयणाणि अप्पस्समाणा अण्णोण्णं सकिच पवत्ता । तेसिं फरुसवयणावसाणे कर-चरण-दंत पत्थरनिवाएहिं तिव्वरोसपरिगयाण जुद्धं संपलग्गं । ते रोद्दज्झाणा मया समाणा रयणप्पभपुढवीनेरइया जाया । तत्थ दुक्खबहुला उव्वट्टिया समाणा वणमहिसा जाया, कमपरिवड्डिया अण्णोण्णदंसणरुसिया सिंगग्गोवसग्गियदेहा तिव्ववेयणाभिभूया मया समाणा गंगातीरे जोयणंतरिएसु गोट्ठेसु वसहा जाया, परोप्परदंसणजायतिव्वकोवा सिंगनिवायजज्जरियसरीरा कालगया कालंजरवत्तिणीए वाणरजूहवइणो जाया, वियरंता य जम्मंतराणुसारेण अमरिसेण णह-दसण-कट्ठ-पासाणेहिं अभिहणमाणा अण्णोण्णसभिन्नमत्थगा रुहिरपरिसित्तगत्ता पडिया महीयले ।

विज्जुसपाउ व चारणसमणो तम्मि पएसे उवइओ, दिट्ठा य णेण तदवत्था, भणिया य—भो वाणरा ! किं भे कय कोवसट्टेहिं ?, सच्छंदपयारस्स तिरियविसयाण य अणाभागी जात त्थ, तं मुयह वेराणुबंधं, मा णरय तिरिय-कुमाणुसेसु दुक्खसकलापडिबद्धा चिरं किलिस्सिहिह, उवसमह, जिणवयणं पवज्जह, उवसंता य पाणाइवाय मुसावाया ऽदिण्णादाणाओ नियत्तह, तो सुगइगामिणो होहेह । एवभणिए एगो उवसंतो पडिवण्णो जिणमयं, 'साहु भणइ एस मुणि' त्ति कयंजली ठितो वेयणाभिभूओ वि । ततो से दिण्णाणि वयाणि, भणिओ य—परिचयसु आहारं सरीरं जह भावओ त्ति । सो पडिवण्णो । गओ चारणो । सो वाणरो पसन्नचित्तो कालं काऊण सोहम्मे देवो जातो । इयरो सामरिसो बहूणि तिरियभवग्गहणाणि संसरिओ । सोहम्मदेवो चुओ माणुसं विग्गहं लहिऊणं गुरुसमीवे जिणवयणं सोऊण समणो जातो, सो अहं । जो सो तिरियगतिबन्धिवाणरो सो अकामनिज्जराबलेण आहुणिओ जोइसियदेवो जातो, सो मे सामरिसो भयजणणेहिं सरीरपीडाकरेहि य रूवेहिं पीडेइ । अहं अविचलियपसत्थसंकप्पो अहियासेमि । तओ मे अज्ज ओहिणाणं समुप्पण्णं, सो पराजिओ, देवाऽऽगमणं च तन्निमित्तं । एयं पडणीयकारणं ॥

पुणो राया पुच्छइ—किं मण्णे मया सम्मत्तं लद्धपुव्वं ? को वा अहं आसी ? । ततो साहुणा आभोएऊण भणिओ—सुणाहि—

अंधगवण्हिपुव्वभवसंबंधो

उसहस्स अरहओ तित्थे साकेए नयरे धणदत्तो सत्थवाहो सावगो, तस्स णंदा भारिया, तेसिं पुत्तो सुरिंददत्तो । तत्थेव नगरे सहस्सई नाम माहणो, तस्स सोमिला भज्जा, तेसिं पुत्तो रुद्ददत्तो । सुरिंददत्त रुद्ददत्ता बालवयसा । सुरिंददत्तो वहणेण समुद्दमवतरिउकामो 'बहुपच्चवाओ पवासो' त्ति चिंतेऊण रुद्ददत्तस्स हत्थे तिण्णि कोडीओ 'जिणाययणे पूयाउवओगं नेयव्वाओ' त्ति दाऊण गओ संववहारेण दीवंतराणि । रुद्ददत्तेण य धणं जूय वेसपसंगेण णासियं । तओ चोरियं पकओ जणविदिट्ठो उक्कामुहचोरपल्लिं पविट्ठो, कालेण तेसिं अहिवती जातो निग्घिणो निस्संसो । परिवारेण य सेणं साकेयं

१ सिंगग्गोवग्गिय° मे विना ॥ २ °सारिणा अ° उ २ ॥ ३ °ण सुगुरु° क ३ ॥

पिल्लियं निसीहे, आदीवियाणि घराणि । दिट्ठो संचरंतो नागरेहिं, 'इमो रुद्ददत्तो अम्हं विणासाय उवट्ठितो, ने एस पमादियव्वो' त्ति निच्छियं जुज्झंतेहिं मारिओ । तेण य जं सुरिंददत्तनिसिट्ठं चेइयट्ठाए दव्वं तं विणासितेणं जे जिणबिंबपूयादंसणाऽऽणंदितहिययाणं भवसिद्धियाणं सम्मद्दंसण-सुय-ओहि-मणपज्जव-केवलनाण-निव्वाण[3]लंभा ते पडिसिद्धा, जा य तप्पभवा सुर-माणुसरिद्धी, जो य महिमासमागयस्स जणस्स साहुजणाओ धम्मोवएसो तित्थाणुसज्जणा य सा वि पडिसिद्धा । ततो णेण दीहकालठितीयं दंसणमोहणिज्जं कम्मं निबद्धं असातवेयणिज्जं च । रोद्दज्झाणसरिसओ य[5]संगिहीयनिरयाऊ अपतिट्ठाणे नरए उववण्णो । तत्थ दुक्खमविस्सामं अणुभविऊण मच्छी जातो । ततो नरग-तिरियभवे फासितो बहुणा कालेण मगहाजणवए सुगामे गोयमस्स माहणस्स अणुंहरीए भज्जाए पुत्तो जातो । गब्भत्थस्स य पिया मतो । ततो 'निस्सिरीयगोयमो'त्ति वड्ढइ । छम्मासजायस्स य माया मया । माउँच्छियापइणा य सगिहंमइणीओ । तीए भणिअं—मा मेतं अलक्खणं गिहं पवेसेहि, अच्छउ बाहिं ति । एवं सो अणाढिओ कह वि जीविओ, कमेण य जोव्वणं पत्तो, साहुसमीवे सुयधम्मो पव्वइओ, अलाभपरीसहं सहति । विसुद्धमाणलेसस्स य सेअपरिवड्ढियवेरग्गस्स चत्तारि लद्धीओ समुप्पण्णाओ—कोट्ठबुद्धित्तं खीरासवत्तं अक्खीणमहाणसियत्तं पयाणुसारित्तं ति । ततो पण्णरस वाससहस्साणि कयसामण्णो महासुक्के कप्पे देवो इंदसामाणिओ जाओ ॥

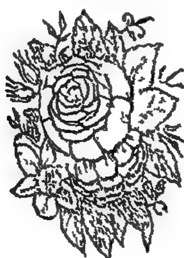
तं राय ! एवं जाण—जो य रुद्ददत्तो जो य णिसिरीयगोयमो जो य महासुक्कसामाणो सो तुमं ॥

वसुदेवपुव्वभवपुच्छा

ततो वंदिऊण पुणो पुच्छति—भयवं ! जो मे एसो दसमो पुत्तो वसुदेवो, एस सयणस्स परियणस्स य अईव वल्लहो, किं अणेण सुकयं कयं पुव्वभवे ? साहह त्ति ।

॥ एयं पडिमुहं ॥

पडिमुहग्रन्थाग्रम्- श्लो० १०७ अ० १२.



सर्वग्रन्थाग्रम्- श्लो० ३०८६ अ० ९.

१ मा से पमा° शा० मे० विना ॥ २ °च्छिउ जु° ली ३ ॥ ३ °णलाभा उ २ विना ॥ ४ जा य शा० विना ॥ ५ °स्सामो अ° ली ३ विना ॥ ६ °णुदरी° ली ३ । °णुधरी° शा० । °णुद्धरी° मे० ॥ ७ °उस्सियापयणा य स° उ० । °उस्सियाए य णायं स° क ३ गो ३ । °उलियाए य णाय स° ली ३ ॥ ८ °हमाणी° शा० मे० विना ॥

पढमो सामा विजयालभो

अओ सरीर—साहुणा भणिओ—सुणाहि—

समुद्दविजयाईण नवण्ह वसुदेवस्स य पुव्वभवचरिय

विंझगिरिपायमूले सीहगुहा नाम चोरपल्ली आसि । तत्थ अपराजिओ सेणाहिवो आसी, तस्स वणमाला भारिया, तीसे दस पुत्ता—सुरूवो विरूवो भद्दरूवो सज्झो अवज्झो दाहो विदाहो कुसीलो[1] विसीलो करको त्ति । पत्तेय कयसन्निवेसा बहु पाव समज्जिणित्ता सत्तमाए पुढवीए नरइया जाया । ततो उवट्टिया तिरियभवतरिया सव्व पुढवीओ फासेऊण जल-थल-खहयरतिरिएसु चउरिंदिय तेंदिय-बेंदिएसु य तब्भवजोगाणि दुहाणि भोत्तूण साहारणबादरवणस्सतीसु उववण्णा तत्थ बहु काल वसिऊण पतणुकय कम्मसचया भद्दिलपुरे मेघरहो[2] राया, तस्स सुभद्दा देवी, दढरहो पुत्तो । तत्थेव नयरे धणमित्तो नाम सेट्ठी समणोवासगो, तस्स भज्जा विजयनदा, तीसे गब्भे ते साधारणवणस्सतिजीवा एगरहिया कमेण नव पुत्ता जाया, तेसिं नामाणि—जिणदासो जिणगुत्तो जिणदेवो जिणदत्तो जिणपालिओ अरहदत्तो अरहदासो अरहदेवो धम्मरुई य त्ति, पियदसण-सुदसणाओ दुवे दुहियाओ ।

तम्मि य समए मदरो नाम अणगारो सगणो भद्दिलपुरे सीअलजिणस्स जम्मभूमीए समोसरिओ । ते य नव मायरो सह पिउणा तस्स समीवे पव्वइया । राया सपुत्ते कय रज्जनिक्खेवो (ग्रन्थाग्रम्—३१००) निक्खतो । विजयनदा अतरवत्ती धणदेव पुत्त जणेऊण, बारस वासाणि पालेऊण, लद्धसेड्ढिट्ठाण च निक्खिविऊण सह धूयाहिं पव्वइया । सेट्ठी राया य धुयकम्मा निव्वुया । सेसाणि अच्चुए कप्पे उववण्णाणि । विजयनदा 'होज्ज मण्णे एएहिं मे पुत्तेहिं धूयाहि य पुणो वि सबधो' त्ति सिणेहाणुरायपडिबद्धा तस्स ठाणस्स अणालोइअ ऽपडिकता कयसरीरपरिच्चागा अच्चुए कप्पे सह धूयाहिं देवत्ताए उववण्णा । ततो चुया पुव्व महुराए नयरीए अइबलस्स रण्णो सुणेत्ताए देवीए भद्दा नाम दारिया जाया, परिवड्ढिया य दत्ता, तीसे गब्भे अच्चुया देवा चुया कमेण य पुत्ता जाया समुद्दविजयाई, दुवे य धूयाओ—कोंती मद्दी य, पडु-दमघोसाण दत्ताओ ।

वसुदेवपुव्वभवकहाए नदिसेणभवो

जे पुण ते पुव्वकहिया दस साधारणबादरवणस्सइजीवा तत्थेगो उवट्टिओ मगधाजणवए पलासपुरगामे दरिद्दस्स कखदिल्लस्स माहणस्स सोमिलाए भारियाए पुत्तो जाओ नदिसेणा नाम । बालस्स चेव य से अम्मा पियरो कालगया, 'सो अप्पसत्थो' त्ति परिहरिओ जणेण । पिंडोलगत्तणेण य से कम्मि वि काले गए माउलगेण अहियाविओ, तस्स य विजि

---

१ °रकु सि शा ॥ २ °हो सि रा° ली ३ ॥ ३ दढरोधो पु° शा । दढरहो भ ॥ ४ °णो पुण्णो स° क ३ गो ३ उ ॥ ५ °ग्गिय का° शा विना ॥

धूयाओ अणुमग्गजायाओ । माउलगेण भणिओ—नंदिसेण ! अच्छ वीसत्थो, अहं तव धूयं दाहामि, गावीण वित्तिं वहसु त्ति । सा य दारिया पत्तजोव्वणा 'दमगस्स दिज्जामि'त्ति सोऊण भणइ—जइ एयस्स एवंगयस्स दिज्जामि त्ति तो मारेमि अप्पाणं । सुयं च नंदिसेणेण । भणिओ य माउलगेण—पुत्त ! मा अधितिं करेहिं जा तुमं निच्छइ किं च तीए तुज्झ ?, अहं ते बितियं दाहामि त्ति । पत्तसमए बीयाए वि नेच्छिओ । एव ततियाए वि निच्छिओ । माउलेण पुणो भणिओ—जइ वि सि तुमं तिहिं वि निच्छिओ, तं मा वाहिरभावो होहि अहं तव अण्णत्तो वि विसिट्ठतर संबंधं काहं निव्वुओ होहि । ततो नंदिसेणेण चिंतियं—जो हं एयाहिं वड्डूहिं निच्छिओ, पराओ ममं किह इच्छिहिति ? । परमेण मणसतावेण निग्गओ गामाओ रयणपुरमागतो, वसतो य वट्टए, पस्सए य तरुणे इच्छियजुवइसहाए उववणेसु रममाणे । ततो निंदमाणो अप्पाणं 'अहो ! अहं दूभगसेणावती, किं च मे एयारिसेणं जीविएण ?' ति सपहारेऊण जायनिच्छओ एगं उववणं नगरस्साऽदूरे असपायं रुक्ख-गुच्छ-गुम्म-लयागुविलमइगओ ।

तत्थ य एगम्मि लयाहरे सुट्ठिओ नाम अणगारो साइसयो पसत्थज्झाणोवगतो चिट्ठति । नंदिसेणो य तं अपस्समाणो मरिउकामो तस्साऽऽसण्णे लयापास बंधति । साहुणा य साणुकंपेण निवारिओ—नंदिसेण ! मा साहसं ववससु त्ति । तेण समंतओ अवलोइयं जायाऽऽसकेण—गामाओ मे कोइ पच्छओ आगओ होज्जा जो मं पडिसेहति । अपस्समाणो य कचि पुणरवि वधेऊण पवत्तो, पुणो वि वारिओ, सद्दिसाभाएण तं पएसं गतो, अभिघायणं काऊण आसीणो । भणिओ नियमसुट्ठिएण सुट्ठिएण—सावय ! अकयधम्मो गतो परलोयं दुक्खनिविण्णो किह सुही भविस्ससि ? त्ति । ततो भणइ—को पच्चओ जहा अत्थि परलोगो ? धम्मेण वा कएण सुहं लब्भइ ? त्ति । ततो साहू ओहिणाणपगासियभावो भणइ—अत्थि पच्चओ, सुणाहि—

परलोगपच्चए धम्मफलपच्चए य सुमित्ताकहा

वाणारसीए हयसत्तू राया । तस्स दुहिया सुमित्ता बालभावे गिम्हे पुव्वावरण्हकाले भुत्तभोयणा पसुत्ता, पाणियपडिफोसियतालविंटेण वीइज्जमाणी सीयलजलकणगसित्ता 'णमो अरहंताणं'ति भणंती पडिबुद्धा, पडिचारिगाहिं पुच्छिया—सामिणि ! के अरहंता ? जेसिं भे नमोक्कारो कओ । सा भणइ—न याणं, अवस्स पुण नमोक्कारमरिहंति । ततो णाए धाई सद्दाविया, भणिया य—अम्मो ! गवेसेसु ताव 'के अरहंत ?'त्ति । तीए पुच्छंतीए समणीओ दिट्ठाओ अरहंतसासणरयाओ, आणियाओ य कुमारिसमीवं । पुच्छियाहि अणाहिं कहिया—भरहेरवयवासे विदेहवासे[1] य सभवो धम्मादिकराणं, इमं च विमलस्स अरहओ तित्थं[2] । ततो सा भणइ—अज्ज मया पडिवुज्झंतीए कओ नमोक्कारो । ततो ताहिं भणिया—तुमे अरहतनमोक्कारप्पभावेण इमा रिद्धी पत्ता णूण, जओ ते पुव्वभावगाए कओ नमोकारो । 'एवं ति

१ °वासविदेहवासम्भ° शा० ॥ २ °त्थ ति । तो सा उ २ विना ॥

[सरीर]

पढमो सामा विजयालंभो

अओ सरीर—साहुणा भणिओ—सुणाहिं—

समुद्दविजयाईण नवण्ह वसुदेवस्स य पुव्वभवचरियं

विंझगिरिपायमूले सीहगुहा नाम चोरपल्ली आसि। तत्थ अपराजिओ सेणाहिवो आसी, तस्स वणमाला भारिया, तीसे दस पुत्ता—सुरूवो विरूवो भद्दरूवो सज्झो अवज्झो दाहो विदाहो कुसीलो[1] विसीलो करको त्ति। पत्तेय कयसन्निवेसा बहु पाव समज्जिणित्ता सत्तमाए पुढवीए नेरइया जाया। तओ उवट्टिया तिरियभवतरिया सव्व पुढवीओ फासेऊण जल-थल-खहयरतिरिएसु चउरिंदिय-तेंदिय बेंदिएसु य तब्भवजोग्गाणि दुक्खाणि भोत्तूण साहारणबादरवणस्सतीसु उववण्णा, तत्थ बहु कालं वसिऊण पतणुकय कम्मसचया भद्दिलपुरे मेघरहो[2] राया, तस्स सुभद्दा देवी, दढरहो[3] पुत्तो। तत्थेव नयरे धणमित्तो नाम सेट्ठी समणोवासगो, तस्स भज्जा विजयनंदा, तीसे गब्भे ते साधारणवणस्सतिजीवा एगरहिया कमेण णव पुत्ता जाया, तेसिं नामाणि—जिणदासो जिणगुत्तो जिणदेवो जिणदत्तो जिणपालिओ अरहदत्तो अरहदासो अरहदेवो धम्मरुइ य त्ति, पियदंसण सुदंसणाओ दुवे धूयाओ।

तम्मि य समए मंदरो नाम अणगारो सगणो भद्दिलपुरे सीअलजिणस्स जम्मभूमीए समोसरिओ। ते य नव भायरो सह पिउणा तस्स समीवे पव्वइया। राया सपुत्ते कय रज्जनिक्खेवो (ग्रन्थाग्रम्—३१००) निक्खंतो। विजयनंदा अतरवत्ती धणदेवं पुत्तं जणेऊण, बारस वासाणि पालेऊण, लद्धसेट्ठिट्ठाणं च निक्खिविऊण सह धूयाहिं पव्वइया। सेट्ठी राया य धुयकम्मा निव्वुया। सेसाणि अच्चुए कप्पे उववण्णाणि। विजयनंदा 'होज्ज मण्णे एण्हिं मे पुत्तेहिं धूयाहि य पुणो[4] वि समवो त्ति सिणेहाणुरायपडिबद्धा तस्स ठाणस्स अणालोइअ अपडिक्कंता कयसरीरपरिच्चागा अच्चुए कप्पे सह धूयाहिं देवत्ताए उववण्णा। तत्तो चुया पुन महुराए नयरीए अइबलस्स रण्णो सुणेत्ताए देवीए भद्दा नाम दारिया जाया, परिवड्ढिया सव दत्ता तीसे गब्भे अच्चुया देवा चुया कमेण य पुत्ता जाया समुद्दविजयाई, दुवे य धूयाओ—कोंती मद्दी य, पंडु-दमघोसाण दत्ताओ।

वसुदेवपुव्वभवकहाए नंदिसेणभवो

जे पुण ते पुव्वकहिया दस साधारणबादरवणस्सइजीवा तत्थेगो उवट्टिओ मगधाजणवए पलासपुरगामे दरिद्दस्स कखदिलस्स माहणस्स सोमिलाए भारियाए पुत्तो जातो नंदिसेणो नाम। बालस्स चेव य से अम्मा पियरो कालगया, 'सो अप्पसत्थो' त्ति परिहरिओ जणेण। पिंडोलगत्तणं[5] य से कम्मि वि काले गए माउलगेण अहियाविओ तस्स य तिम्नि

१ °रकु त्ति शां ॥ २ °हो त्ति रा° ली ३ ॥ ३ दढरोधो पु° शां । दढरहो भे ॥ ४ °णो पुणो सं क ३ गो ३ उ ॥ ५ °भिमय का° शां बिना ॥

धूयाओ अणुमग्गजायाओ । माउलगेण भणिओ—नंदिसेण ! अच्छ वीसत्थो, अहं तव धूयं दाहामि, गावीण वित्तिं वहसु त्ति । सा य दारिया पत्तजोव्वणा 'दमगस्स दिज्जामि'त्ति सोऊण भणइ—जइ एयस्स एवंगयस्स दिज्जामि त्ति तो मारेमि अप्पाणं । सुयं च नंदिसेणेण । भणिओ य माउलगेण—पुत्त ! मा अधितिं करेहिं जा तुमं निच्छइ किं च तीए तुज्झ ?, अहं ते बितियं दाहामि त्ति । पत्तसमए बीयाए वि नेच्छिओ । एव ततियाए वि निच्छिओ । माउलेण पुणो भणिओ—जइ वि सि तुमं तिहिं वि निच्छिओ, तं मा वाहिरभावो होहि अहं तव अण्णत्तो वि विसिट्ठतरं संबंधं काहं, निव्वुओ होहि । ततो नंदिसेणेण चिंतियं—जो हं एयाहिं वहूहिं निच्छिओ, पराओ ममं किह इच्छिहिति ? । परमेण मणसंतावेण निग्गओ गामाओ रयणपुरमागतो, वसंतो य वट्टए, पस्सए य तरुणे इच्छियजुवइसहाए उववणेसु रममाणे । ततो निंदमाणो अप्पाणं 'अहो ! अहं दूभगसेणावती, किं च मे एयारिसेणं जीविएण ?' ति ववहारेऊण जायनिच्छओ एगं उववणं नगरस्साऽदूरे असंपाय रुक्ख-गुच्छ-गुम्म-लयागुविलमइगओ ।

तत्थ य एगम्मि लयाहरे सुट्ठिओ नाम अणगारो साइसयो पसत्थज्झाणोवगतो चिट्ठति । नंदिसेणो य तं अपस्समाणो मरिउकामो तस्साऽऽसण्णे लयापासं बंधति । साहुणा य साणुकंपेण निवारिओ—नंदिसेण ! मा साहसं ववससु त्ति । तेण समंतओ अवलोइयं जायाऽऽसंकेण—गामाओ मे कोइ पच्छओ आगओ होज्जा जो मं पडिसेहति । अपस्समाणो य कंचि पुणरवि बंधेऊण पवत्तो, पुणो वि वारिओ, सद्दिसाभाएण तं पएसं गतो, अभिवायणं काऊण आसीणो । भणिओ नियमसुट्ठिएण सुट्ठिएणं—सावय ! अकयधम्मो गतो परलोयं दुक्खनिविण्णो किह सुही भविस्ससि ? त्ति । ततो भणइ—को पच्चओ जहा अत्थि परलोगो ? धम्मेण वा कएण सुहं लब्भइ ? त्ति । ततो साहू ओहिणाणपगासियभावो भणइ—अत्थि पच्चओ, सुणाहि—

परलोगपच्चए धम्मफलपच्चए य सुमित्ताकहा

वाणारसीए हयसत्तू राया । तस्स दुहिया सुमित्ता बालभावे गिम्हे पुव्वावरण्हकाले भुत्तभोयणा पसुत्ता, पाणियपडिफोसियतालविंटेण वीइज्जमाणी सीयलजलकणगसित्ता 'णमो अरहंताणं'ति भणती पडिबुद्धा, पडिचारिगाहिं पुच्छिया—सामिणि ! के अरहंता ? जेसिं भे नमोक्कारो कओ । सा भणइ—न याण, अवस्स पुण नमोक्कारमरिहंति । ततो णाए धाई सद्दाविया, भणिया य—अम्मो ! गवेसेसु ताव 'के अरहंत ?'त्ति । तीए पुच्छंतीए समणीओ दिट्ठाओ अरहंतसासणरयाओ, आणियाओ य कुमारिसमीवं । पुच्छियाहिं अणाहिं कहिया—भरहेरवयवासे[1] विदेहवासे य संभवो धम्मादिकराणं, इमं च विमलस्स अरहओ तित्थं[2] । ततो सा भणइ—अज्ज मया पडिबुज्झंतीए कओ नमोक्कारो । ततो ताहिं भणिया—तुमे अरहंतनमोक्कारप्पभावेण इमा रिद्धी पत्ता पूग, जओ ते पुव्वभवगाए कओ नमोक्कारो । 'एवं ति

१ °वासविदेहवाससंभ° शां० ॥ २ °त्थं ति । तो सा उ २ विना ॥

पडिसुणित्ता पडिवन्ना जिणदेसियं मग्गं, पवयणकुसला य जाया। वड्डियाए य से सयंवरो दिण्णो पिउणा। ततो णाए उभयलोगसुहोवलभिणी इमा गीइगा पिउणो निवेदिया—

किं नाम होज्ज तं कम्मयं, बहुनिवेसणिज्जं अलज्जणिज्जं च।
पच्छा य होइ पच्छ(त्थ)यं, न य नासइ नट्ठे सरीरयम्मि ? ॥

ताय ! जो मे एईए गीइगाए अत्थं सुणावेज्ज तस्स मे अहं दायव्वा। तओ पगासिंयाए गीइयाए णाणाविहाणि वत्थूणि सुणाविंति विउसा, तीए अहिप्पायं न लहंति। एगेण य पुरिसेण सुणाविया—

कम्मेयाणं तवोकम्मयं, बहुनिवेसणीयं अलज्जणीयं च।
पच्छा य होइ पच्छ(त्थ)यं, ण य णासइ नट्ठए सरीरयम्मि ॥

पुच्छिओ भणइ—तुब्भे जाणह जो भावत्थो मया पुण ऽत्थ सुणाविया। भोयाविओ सक्काविओ य पुच्छिओ भणति—रयणउरे पुरिसपडिएण एवं भणियं मे का सची युत्तु ?। ततो पूइओ 'दूओ सि तुमं'। तीए विसज्जिओ। सुमित्ताए य पिया विण्णविओ—तात ! पुरिसपंडिएण लक्खिओ ममाऽहिप्पाओ जइ मं अत्थेण पत्तियावेइ ता अहं भज्जा नाम तस्स, न सेसकाणं। गया य रयणउरं बहुपरिवारा, आवासे पुव्वसज्जिए ठिया। सद्दाविओ गओ य पुरिसपडिओ सुप्पभो, पुच्छिओ य—कहं तवो बहुणिवेसो सलाहणिज्जो ? पच्छाकाले य पच्छो(त्थो) ? सरीरविणासे य फलं पइ(य)च्छइ ? त्ति। तेण भणिया— सुणाहि—

इब्भदारयदुगकहासंबंधो

इह दुवे इब्भदारया—एक्को सवयसो उज्जाणाओ नयरमतीति, अण्णो रहेण निग्गच्छइ। तेसिं नयरदुवारं मिलियाणं गव्वेण ओसरिउमणिच्छताणं आलावो वड्डिओ। तत्थेगो भणति—तुमं पितिसमज्जिएण अत्थेण गव्विओ, जो सयं समत्थो अज्जेउं तस्स सोहइ अहंकारो। भिविओ तहेव। तेसिं च अत्तुक्करिसनिमित्तं जाया पइन्ना—'जो अपरिच्छओ निग्गओ बहुधणो एइ बारसण्हं वासाणं आरओ, तस्स इयरो सवयसो दासो होहिति' त्ति वयणं पत्ते लिहिऊण णेगमहत्थे निक्खिविऊण एक्को तहेव निग्गओ, विसयंतेफलाणि पत्तपुडं गहेऊण पट्टणमुवगतो, कयविक्कयं करेंतो जायपक्खेवो सजणगमरिसओ, पोएण ववहरंतो पेत्तं विउले धणसंचए मित्ताणं पेसेइ। बीओ पुण वयंसेहिं चोइज्जमाणो न नीइ 'सो तवस्सी न बहुणा कालेण विढवेइ तमहं अप्पेण' ति। बारसमे संवच्छरे वयंसाऽऽगमणं सोऊण दुक्खेण निग्गओ घराओ चिंतेइ— मया किलेसभीरुणा विसयलोलुएण य बहुकालो गमिओ इयाणिं संवच्छरब्भंतरओ केत्तियं समज्जेइ ? ति, तं सेयं मे सरीर

१ °मिए गीयए शा मे ॥ २ °क्खाण तओ शा विना ॥ ३ °अणिअ च ली ३ ॥ ४ अइ दया मा° शा विना ॥ ५ °या नियइए सहा° शा विना ॥ ६ ओ त्ति। त शा मे विना ॥ ७ °पत्तलिहिय नग° शा ॥ ८ °ट भरड° शा विना ॥ ९ पत्तनिउलपण्णसंचआ मि शा ॥ १० भिविओ शा ॥ ११ °ज्जिहिइ ?, त शा ॥

परिच्चायं काउं' ति कयसंकेओ साहुसमीवमुवगतो सुयधम्मो पव्वइओ । विकिट्ठतवोकम्मपरिक्खवियसरीरो कयभत्तपरिच्चागो नवमासपरियाओ कालं काऊण सोहम्मे देवो जाओ । ओहिविसया उवलद्धकारणो य विसयंते सत्थं विउव्विऊणं पेसइ मित्ताणं । ते असद्दहंता चारपुरिसे पेसेंति । तेणोवलद्धकहियवित्तवित्थारा गया तस्स समीवं । पूइया वत्थाऽऽभरणेहिं पत्ता सनगरं । इयरेण पुव्वागएण राया दिट्ठो, धणं च राभंडमाकलियं । देवदव्वं पुण बहुगुणं इयराओ, तेण राया रयणोवणएणं तोसिओ । जो बारस वासाणि किलिट्ठो सो जिओ ससित्तो । ऊसवे समत्ते देवसत्थवाहेण मित्ता भणिया—जाणह जह मया विढत्तं दव्वं ? । ते भणंति—न याणामु । तेण कहियं—तवेणं ति । दासभावपडिया वि तमत्थं बोहिया दिव्वं पभावं दंसेऊण, भणिया—जइ पव्वयह विसज्जामि । तो तेहिं समित्तेहि तवपभावविम्हिएहिं पणएहिं देवो भणिओ—अइ मे कओ पसाओ सपच्चक्खं तवविभूतिं दंसंतेहिं, जइ सचेयणा भविस्सामो काहामो हियं ति । बोहेऊण गतो देवो । ते खुड्डियस्स अणगारस्स समीवे पव्वयंति सपयं । एएण कारणेण तवो बहुनिवेसो पूयणिज्जो य तवस्सीणं, सरीरविणासे य तवफलं सुरलोए, इयरस्स अप्पनिवेस कम्मं, सरीरणासे य णासइ त्ति ॥

एव तेण नंदिसेण[1] स्स (से) कहियं । कुमारी य ताणि सव्वाणि वि इहं दट्ठूण पत्तियति—अत्थि परलोगो, अत्थि य धम्मफलं ॥

एवं कहिए पत्ता इब्भसुया साहुसमीवं पव्वइया य । कुमारी वि साहुं वंदिऊणं सुप्पभं विण्णवेइ—तुब्भे मम पभवह, धम्मकामाए मे विग्घो न कायव्वो त्ति । तेण 'तह'त्ति पडिवन्नं । गतो नयरं रायसुओ सह कुमारीए ॥

नंदिसेणो दिट्ठपच्चओ पव्वइओ परमसंविग्गो अहिगयसुत्तत्थो पंचसमिओ तिगुत्तो[2] तपुज्जओ विवड्ढमाणसड्ढो[3] अपरिवडियवेरग्गो विहरति । लाभंतरायखओवसमेण य जं इच्छति जहा य जत्तियं च तं लभति । गहिओ य णेण अभिग्गहो—वेयावच्चं च मया कायव्वं सव्वसत्तीए त्ति । एवं सो महातवस्सी खाओ भरहे ।

सक्को य देवराया सभागतो तस्स कयंजली गुणकित्तणं पकओ—नंदिसेणो वेयावच्चुज्जओ न सक्को देवेहिं वि खोभेउं दढववसायो । तं च वयणमसद्दहंता दो देवा कयसाहुरूवा उवागया । एगो सन्निवेसबाहिं गिलाणत्तणविलंबगो, वितिओ गतो नंदिसेणवसहिं । तेण य खर-फरुस-निट्ठुरेहिं वयणेहिं निब्भच्छिओ, भणिओ अणेण—बाहिं गिलाणो[4] अच्छइ, तुमं वेयावच्चअभिग्गहं गहेऊण सुवतो अच्छसि । तओ उट्ठिओ ससंभंतो—संदिसह जेण कज्जं । तओ देवसमणो भणइ—अइसारगहिओ तिसाभिभूओ बाहिं गिलाणो अच्छइ, जं जाणसि तं करेहि त्ति । ततो अकयपारणो 'पाणगं गवेसामि'त्ति निग्गतो । अणुकंपाऽऽकंपियहियओ देवो अणेसणं करेइ । तं च जिणेऊण गहियपाणगो गओ गिलाणसमीवं । तेण

१ °ण्णाणडि शां० गो० विना ॥ २ °त्तो य उज्जुओ शां० विना ॥ ३ °ड्ढो पडिचरितवेर° शां० ॥ ४ °हुरपय° शां० ॥ ५ °णो चिट्ठसि, तुम शां० ॥ ६ °वसम° क ३ गो ३ उ० मे० ॥

अक्कुट्ठो—अहमेरिसीए अवत्थाए तुमं उद्दिसिऊण आगतो तुमं भुंजियव्वलोलो न मं अवलोएसि, 'वेयावच्चकर'सद्देण तूससि मंदभाग![1] त्ति। ततो पसण्णचित्तेण पणएण विण्णविओ—खमह (ग्रन्थाग्रम्—३२००) अवराहं कुणह मे विसग्गं, करेमि परिकम्मं ति। धोओ णेण मलमलिणो, भणिओ णेण—णेमि भे उवस्सयं, तहा करिस्सं जहा नीरोगा भविस्सह। ततो तेण उक्खित्तो पए पए अक्कोसइ—दुक्खावेसि मं, घुणासि, विसमं गेण्हसि त्ति। सो जतिओ जयं दीयति। देवेण य तस्सुवरिं परमदुब्भिगंधी उच्चारो कओ, 'वेगविघाओ ते कओ, दुट्ठ! मारेसि मं'ति। सो पसण्णमुहवण्णो 'कहं गिलाणस्स सुहं होज्ज?'त्ति मणसा चिंतेइ, न गणेइ कडुयवयणाणि, न वा तविहं गंधं, भणइ य—कहं भे ठवेमि?, संदिसह, किं वा कीरउ? त्ति, धोवामि वा?। ततो देवेण साणुसएण सो असुभपोग्गलोपचओ खणेण अवहिओ, घाण-मणसुहा य पुप्फवुट्ठी मुक्का। विसज्जियसाहुरूवा य देवा दिव्वरूवी भवित्ता तिगुणं पयाहिणं काऊण पायवडिया पुणो पुणो खमावेंति, बेंति य—भयवं! तुज्झ सक्को देवराया गुणकित्तणं करेइ तं असद्दहंता वयमागया परिक्खणनिमित्तं, तं सच्चं भणियं मघवता वरेहं वरं, किं पयच्छामो? त्ति। तेण भणिया—जो परमदुल्लहो मग्गो जिणपण्णत्तो मोक्खस्स य सो मया लद्धो न मे केण वि पओयणं ति। ततो वंदिऊण देवा गया।

इयरो वि नंदिसेणो लाभंतरायखओवसमेण वेयावच्चं करेमाणो जो जं साहू (जो साहू जं) इच्छइ तस्स तं लद्धूण देइ। एवं तस्स संजम तव-भावणाए गयाणि पणपण्ण वाससहस्साणि सामण्णमणुपालेमाणस्स। सुभग सुस्सर-सुभा ऽऽदेय-जसनामकम्मोवचिओ भत्तपरिण्णाकाले चिंतेइ—'अहं तिहिं वि दारिगाहिं दोहग्गदोसेण न इच्छिओ'त्ति सुमरिऊण नियाणं करेइ—'जइ अत्थि इमस्स तव नियम बंभचेरवासस्स फलं ततो आगमिस्से मणुस्सभवे रूवस्सी इत्थीणवल्लहो य होमि त्ति वुत्तूण कालगतो महासुक्के कप्पे इंदसामाणो देवो जातो। ततो चुओ तुब्भं पुत्तो जातो दसमो त्ति॥

एवं सोऊण संसारगतिं राया अंधगवण्ही जेट्ठपुत्ते संकामिय रायलच्छिं पव्वइओ, विसुज्झमाणचारित्तो अपरिवडितवेरग्गो खवियघाइकम्मो समुप्पण्णकेवलनाणविसुतरयमलो परिनिव्वुओ॥

ततो अहं अट्ठवासो जातो कलायरियस्स उवणीओ, विसिट्ठमेहा मतिगुणेण य तोसेमि गुरवो। रसवाणियगेण य मे दारगो उवणीओ 'कुमार! एस कंसो सेवउ तुब्भे'त्ति। मया पडिवण्णो सह मया कलासंगहं करेइ।

जरासंधेण य दूओ पेसिओ अम्ह गुरुणो जेट्ठस्स—सीहपुराहिवं सीहरहं जइ गेण्हसि सो ते जीवजसं दुहियं नगरं च पहाणं पयच्छामि त्ति। तं च पयरिं सोऊण मया कंससहिएण राया विण्णविओ—देव! विसज्जेह मं, सीहरहं बंधिऊण उवणेमि तुब्भं ति। रण्णा

१ °भागो त्ति शां विना॥ २ °णुगएण उ २ विना॥ ३ °ता इहमागा° शां विना॥ ४ ओ उ क १ गो १॥ ५ °गय र° शां विना॥ ६ बच्छ उ २॥ ७ °राजा शां॥ ८ °हियमहीव पहा° ली ३॥

भणियं—कुमार! अदिट्ठसंजओ सि, अलं ते राएणं । निच्छए कए विसज्जिओ मि बहुपरिवारो । सीहरहेण वि अम्हं[1] आगमणं सोऊण मेलावियं नियगबलं । संपलग्गे य जुज्झे वारेंति ममं रायसद्दिट्ठा महत्तरा । सीहरहो सीहो विव गयजूहं विगाहमाणो मदीयं बलं विक्खोभेइ । तदवत्थं च सीयमाणिं नियगवाहिणिं दट्ठूण कंससारहिपरिग्गहिओ रहो मया सीहरहाभिमुहो पयट्टिओ । जुज्झेउं पयत्तो मि सह तेणं । सो य कयकरणो विसेसिओ मया लहुहत्थयाए । विद्धा य से तुरगाससारहिया । कंसेण य से फलिहप्पहारेण रहधुरातुंड भग्ग । सो य उक्खिविऊण णियगरहमाणीओ । ततो भग्गं से बलं । लद्धजओ य तं घेत्तूण कमेण सपुरमागतो मि । पूइओ रण्णा तुट्ठेणं, कहेइ य मे विरहिए—कुमार! सुणाहि—कोट्ठुकिनेमित्ती[2] पुच्छिओ जीवजसाकुमारीए लक्खणविणिच्छयं. तेण मे कहियं—सा उभयकुलविणासिणी, तो अलं ते कुमारीए त्ति । मया विण्णविओ—कंसेण देव! सीहरहो गहेऊण मम उवणीओ, तं कहं तस्स पुरिसयारो नासिज्जइ ? । ततो राइणा भणियं—जइ वि एवं, कह रायसुया वाणियगदारगस्स दिज्जिहिति ? । 'एयस्स य परक्कमो खत्तियस्सेव दीसइ, ता भवियव्वं एत्थ कारणेणं' ति सद्दाविओ रसवाणियओ—कहेहि दारयउप्पत्ती । ततो पणओ विण्णवेइ—सामि! एस मया वुज्झंतो जउणाए कंसमंजूसगतो दिट्ठो, एसा य मुद्दा उग्गसेणणामंकिया, एत्थ सामिणो पमाणं । ततो कुलगरेहिं वियारेऊण नीओ रायगिहं । जरासंधस्स य मया कंसपरक्कमो कहिओ । 'एस उग्गसेणरायसुओ' त्ति सपच्चए कहिए तुट्ठेण दिण्णा जीवजसा कुमारी । सोऊण 'उज्झिओ अहं जायमेत्तो' त्ति रुसिउं वरेइ वरं महुरानयरिं । पओसेणं[3] य तेण पियरं बंधेऊण रज्जं पसासति ।

वसुदेवस्स गिहच्चाओ

अहमवि जोव्वणस्स उदये नवनवेहिं तुरग-गय-णेवत्थेहिं विसामि निज्जामि उज्जाणसिरिमणुभविऊण नागरजणेण विम्हयवियसियणयणेण पससिज्जमाणो रूवमोहियजुवइयणदिट्ठिपहकराणुवज्झमाणो ।

अण्णता य मं जेट्ठो गुरू सद्दावेऊणं भणइ—मा कुमार! दिवसं भमाहि बाहिरओ, धूसरमुहच्छायो दीससि, अच्छसु गिहे. मा ते कलाओ अहुणागहियाओ सिढिलियाओ होहिंति । ततो मया 'एवं करिस्सं' ति पडिस्सुयं ।

कयाइं च रण्णो धाईए य भगिणी खुज्जा गंधाहिगाराणिउत्ता वण्णगं पीसती मया पुच्छिया—कस्स इमं विलेवणं सज्जिज्जइ ? त्ति । सा भणइ—रण्णो । मया भणियं—अम्हं किं न होइ ? त्ति । सा भणइ—कयावराहस्स राया तुब्भं ण देइ विसिट्ठ पि वत्थमाभरणं विलेवणं व त्ति । गहिओ से[4] बला वण्णओ वारतीए । सा रुट्ठा भणइ—एएहिं चेव

१ °म्हागम° उ २ विना ॥ २ °ट्ठुकिं निमित्त पु° शां० विना ॥ ३ °ण तो पिय° शां० ॥ ४ से विलेवणओ वार° ली ३ ॥

अक्कुट्ठो—अहमेरिसीए अवत्थाए तुमं उद्दिसिऊण आगतो तुमं भुंजियवलोलो न मं अवलोएसि, 'वेयावच्चकर'सद्देण तूससि मंदभाग¹! त्ति। ततो पसण्णचित्तेण पणएण विण्णविओ—खमह (ग्रन्थाग्रम्–३२००) अवराहं, कुणह मे विसग्गं, करेमि परिकम्मं ति। धोओ णेण मलमलिणो, भणिओ णेण—णेमि भे उवस्सयं, तहा करिस्सं जहा नीरोगा भविस्सह। ततो तेण उक्खित्तो पए पए अक्कोसइ—दुक्खावेसि मं, धुणसि, विसमं गेण्हसि त्ति। सो जतिओ जयं रीयति। देवेण य तस्सुवरिं परमदुब्भिगंधी उच्चारो कओ, 'वेगविघाओ ते कओ, दुट्ठ! मारेसि मं'ति। सो पसण्णमुहवण्णो 'कहं गिलाणस्स सुहं होज्ज?'त्ति मणसा चिंतेइ, न गणेइ कडुयवयणाणि, न वा तविहं गंधं, भणइ य—कहं भे ठवेमि?, संदिसह, किं वा कीरउ? त्ति, धोवामि वा?। ततो देवेण साणुसएण सो असुभपोग्गलोपचओ खणेण अवहिओ, घाण-मणसुहा य पुप्फवुट्ठी मुक्का। विसज्जियसाहुरूवा य देवा दिव्वरूवी भवित्ता तिगुणं पयाहिणं काऊण पायवडिया पुणो पुणो खमावेंति, बेंति य—भयवं! तुज्झ सक्को देवराया गुणकित्तणं करेइ तं असद्दहंता वयमागया परिक्खनिमित्तं, तं सच्चं भणियं मघवता। वरेह वरं, किं पयच्छामो? त्ति। तेण भणिया—जो परमदुल्लहो मग्गो जिणपण्णत्तो मोक्खस्स य सो मया लद्धो न मे केण वि पओयणं ति। ततो वंदिऊण देवा गया।

इयरो वि नंदिसेणो लाभंतरायखओवसमेण वेयावच्चं करेमाणो जो जं साहू (जो साहू जं) इच्छइ तस्स तं लद्धूण देइ। एवं तस्स संजम तव-भावणाए गयाणि पणपण्णं वाससहस्साणि सामण्णमणुपालेमाणस्स। सुभग सुस्सर-सुभा ऽऽदेय-जसनामकम्मोवचिओ भत्तपरिण्णाकाले चिंतेइ—'अहं विहिं वि दारिगाहिं दोहग्गदोसेण न इच्छिओ'त्ति सुमरिऊण नियाणं करेइ—'जइ अत्थि इमस्स तव नियम-बंभचेरवासस्स फलं ततो आगमिस्से मणुस्सभवे रूवस्सी इत्थीजणवल्लहो य होमि'त्ति वुत्तूण कालगतो महासुक्के कप्पे इंदसामाणो देवो जातो। ततो चुओ तुब्भं पुत्तो जातो दसमो त्ति ॥

एवं सोऊण संसारगतिं राया अंधगवण्ही जेट्ठपुत्ते संकामिय रायलच्छिं पव्वइओ, विसुज्झमाणचारित्तो अपरिवडियवेरग्गो खवियघाइकम्मो समुप्पण्णकेवलनाणविधुतरयमलो परिनिव्वुओ ॥

ततो अहं अट्ठवासो जातो कलायरियस्स उवणीओ, विसिट्ठमेहा-मतिगुणेण य तोसेमि गुरवो। रसवाणियगेण य मे दारगो उवणीओ 'कुमार! एस कंसो सेवउ तुब्भे'त्ति। मया पडिवण्णो सह मया कलासंगहं करेइ।

जरासंधेण य दूओ पेसिओ अम्ह गुरुणो जेट्ठस्स—सीहपुराहिवं सीहरहं जइ गेण्हसि तो ते जीवजसं दुहियं नगरं च पहाणं पयच्छामि त्ति। तं च पवत्तिं सोऊण मया कंससहिएण राया विण्णविओ—देव! विसज्जेह मं, सीहरहं बंधिऊण उवणेमि तुब्भं ति। रण्णा

१ °भागो त्ति खं॰ विना ॥ २ °णुणयण उ २ विना ॥ ३ °ता इहमाग° खं॰ विना ॥ ४ °ओ उ क ३ गो ३ ॥ ५ °भय ठ° शा॰ विना ॥ ६ धायक उ २ ॥ ७ °लजा शां॰ ॥ ८ °हियमईय पहा° ली ३ ॥

भणियं—कुमार! अदिट्ठसंजओ सि, अलं ते गएणं। निच्छए कए विसज्जिओ मि बहुपरिवारो। सीहरहेण वि अम्हं आगमणं सोऊण मेलाविय नियगबलं। संपलग्गे य जुज्झे वारेंति ममं रायसंदिट्ठा महत्तरा। सीहरहो सीहो विव गयजूहं विगाहमाणो मदीयं बलं विक्खोभेइ। तदवत्थं च सीयमाणिं नियगवाहिणिं दट्ठूण कंससारहिपरिग्गहिओ रहो मया सीहरहाभिमुहो पयट्टिओ। जुज्झेउं पयत्तो मि सह तेणं। सो य कयकरणो विसेसिओ मया लहुहत्थयाए। विद्धा य से तुरगा ससारहिया। कंसेण य से फलिहप्पहारेण रहधुरातुंडं भग्गं। सो य उक्खिविऊण णियगरहमाणीओ। ततो भग्गं से बलं। लद्धजओ य तं घेत्तूण कंसेण सपुरमागतो मि। पूइओ रण्णा तुट्ठेणं, कहेइ य मे विरहिए—कुमार! सुणाहि—कोट्ठुंकिनेमित्ती पुच्छिओ जीवजसाकुमारीए लक्खणविणिच्छयं तेण मे कहियं—सा उभयकुलविणासिणी, तो अलं ते कुमारीए त्ति। मया विण्णविओ—कंसेण देव! सीहरहो गहेऊण मम उवणीओ, त कहं तस्स पुरिसयारो नासिज्जइ?। ततो रण्णा भणियं—जइ वि एवं, कहं रायसुया वाणियगदारगस्स दिज्जिहिति?। 'एयस्स य परक्कमो खत्तियस्सेव दीसइ, ता भवियव्वं एत्थ कारणेणं' ति सद्दाविओ रसवाणियओ—कहेहि दारयउप्पत्ती। ततो पणओ विण्णवेइ—सामि! एस मया वुज्झंतो जउणाए कंसमंजूसगतो दिट्ठो, एसा य मुद्दा उग्गसेणणामकिया, एत्थ सामिणो पमाणं। ततो कुलगरेहिं वियारेऊण नीओ रायगिहं। जरासंधस्स य मया कंसपरक्कमो कहिओ। 'एस उग्गसेणरायसुओ' त्ति सपच्चए कहिए तुट्ठेण दिण्णा जीवजसा कुमारी। सोऊण 'उज्झिओ अहं जायमेत्तो' त्ति रूसिओ वरेइ वर महुरानयरिं। पओसेणं[3] य तेण पियरं बंधेऊण रज्जं पसासति।

वसुदेवस्स गिहवासो

अहमवि जोव्वणस्स उदये नवनवेहिं तुरग-जय-णेवत्थेहिं विसामि निज्जामि उज्जाणसिरिमणुभविऊण नागरजणेण विम्हयवियसियणयणेण पससिज्जमाणो रूवमोहियजुवइयणदिट्ठिपहकराणुवज्झमाणो।

अण्णता य मं जेट्ठो गुरू सद्दावेऊणं भणइ—मा कुमार! दिवसं भमाहि बाहिरओ, धूसरमुहच्छायो दीससि, अच्छसु गिहे, मा ते कलाओ अहुणागहियाओ सिढिलियाओ होहिंति। ततो मया 'एवं करिस्सं' ति पडिस्सुयं।

कयाइं च रण्णो धाईए य भगिणी खुज्जा गंधाहिगारणिउत्ता वण्णगं पीसंती मया पुच्छिया—कस्स इमं विलेवणं सज्जिज्जइ? त्ति। सा भणइ—रण्णो। मया भणियं—अम्हं किं न होइ? त्ति। सा भणइ—कयावराहस्स राया तुब्भं ण देइ विसिट्ठं पि वत्थमाभरणं विलेवणं व त्ति। गहिओ से[4] बला वण्णओ वारतीए। सा रुट्ठा भणइ—एएहिं चेव

---

१ °म्हागम° उ २ विना ॥ २ °ट्ठुंकि निमित्तं पु° शां० विना ॥ ३ °ण तो पिय° शां० ॥ ४ से विलेवणओ वार° ली ३ ॥

आयारेहिं रुद्धो, तहावि न विरमसि अविणयाओ। मया पुच्छिया—साह, केण अवराहेण रुद्धो मि? । सा न साहइ 'रण्णो बीहेमि' त्ति । अंगुलियगदा[णे]ण अब्भत्थियाऽणुगमिया साहइ—राया विरहे णेगमेहिं विण्णविओ—देव ! सुणह, कुमारो सारयचंदो विव जणणयणसुहओ सुद्धचरित्तो जाए जाए दिसाए निज्जाइ ततो तओ तरुणिजणो तेण समं वच्चम्मो भमति जा य तरुणीओ ताओ वायायण-गवक्ख-जालंतर-दुवारदेसेसु 'नियत्तमाणं पस्सिस्सामो' त्ति पोत्थकम्मजक्खीओ विव दिवसं गमेंति सिमिणायंतीओ वि भणंति—'एस वसुदेवो, इमो वि वसुदेवो' त्ति जातो पत्त-साग फलाणि गेण्हति ताओ भणंति 'कइ वसुदेवो देसि?' त्ति दारगरूवाणि कंदमाणाणि वि कुमारदिण्णदिट्ठीओ विवज्जत्थं गेण्हंति—'वुट्टे(छुट्टो) वच्छो' त्ति दामेहिं बंधति एवं देव ! उम्मत्तओ जणो जातो घरकज्जमुक्कवावारो देवा ऽतिहिपूयासु मंदायरो, तं कुणह पसायं, मा अभिक्खं णीउ उज्जाणाणि त्ति। रण्णा भणिया—वयह वीसत्था, णिवारेमि णं ति । भणिओ य जो तत्थाऽऽसि परियणो, जहा—कोइ कुमारस्स न कहेइ एयं परमत्थं । तं निहुओ होहि त्ति, ततो रण्णो उवालंभो न भविस्सइ । मया भणिया—एवं करिस्सं ति ।

चिंतियं च मे पुणो—'अहं जइ पमाएण णिग्गतो होंतो तो मि वधं पावेंतो अहवा एस वधो चेव, तण्ण मे सेयं इहमच्छिउं' ति संपहारेऊण सरं वण्णभेयगुलियाओ काऊणं वल्लहेण दारगेण सह निग्गतो संझाकाले नयरबाहिं । सुसाणासण्णं च अणाहमययं दट्ठूण भणिओ मया वल्लहओ—गेण्हसु दारुगाणि, सरीरपरिच्चायं करिस्सं । तेण आणावियाणि कट्ठाणि, रइया चिया, भणिओ य वल्लहओ—वच्च सिग्घं, रयणकरंडगं मम सयणिज्जाओ आणेहि दाणं दाऊण अग्गिं पविसिस्सं । सो भणइ—जइ एस निच्छओ भे तो देव ! अहं पि अणुपविसिस्सं । मया भणिओ—जं ते रोयइ तं करिस्ससि, मा य रहस्सं भिंदसु, सिग्घं च एहि त्ति । सो गतो 'जहा आणवेह' त्ति वोत्तूण । मया वि अणाहमययं पक्खिविऊण आदीविया चियगा, सुसाणोज्झियमलत्तगं गहेऊण खमावणलेहो लिहिओ गुरूण देवीण य—'सुद्धसहावो होऊण णागरेहिं मइलिओ' त्ति निवेदणं काऊण 'वसुदेवो अग्गिं अइगतो' । मसाणखंभे पत्तं बंधिऊण दुयमवक्कंतो, उम्मग्गेण य दूरं गंतूण वेगेण मग्गमोइण्णो ।

जाणेण य एगा तरुणजुवई ससुरकुलाओ कुलघरं निज्जइ, सा ममं दट्ठूण बुड्ढं भितिज्जियं भणइ—अम्मो ! एस माहणदारगो परमसुकुमारो परिस्संतो आरुभउ जाणं अम्हं गिहे वीसत्थो अज्ज सुहं जाहिइ त्ति । भणिओ य मि बुड्ढाए—आरुहह सामि ! जाणं, परिस्संतत्थ । मया चिंतियं—'जाणट्ठिओ पच्छण्णं गमिस्सं'ति—आरूढो मि । पत्ता सुगामं सूरत्थमणवेलाए। तत्थ मज्जिय निमिओ अच्छामि । तस्स य गिहस्स नाइदूरे जक्खायणयं, तत्थ लोगो संठिओ । आगया य नयराओ पुरिसा, ते कहंति—सुणह जमज्ज वत्तं नयरे—वसुदेवो कुमारो अग्गिं पविट्ठो तस्स वल्लभगो नाम चेडो वल्लभगो सो किर चितं जलतिं

१ सा भणइ—रण्णो शा ॥ २ °रुणा सु° क ३ गो ३ शा । °रुणी सु° उ० मे ॥

दट्ठूण अक्कंदमाणो पुच्छिओ जणेण भणइ—वसुदेवो कुमारो अग्गिमइगओ जणवायभीओ. तस्स य वयणं सुणमाणो समंतओ जणो कंदिउमारद्धो. [1]तं च रुण्णसद्दं सोऊण रायाणो णव वि भायरो निग्गया. दिट्ठं च णेहिं कुमारस्स हत्थलिहियं खमावणपत्तं. तं च वाएऊणं रुवंता घय-महुणा परिसिंचित्ता चितं, चंदणा-ऽगुरु-देवदारुकट्ठेहिं छाएऊणं पुणो पज्जालिउं कयपेयकज्जा सगिहमणुपविट्ठ त्ति । तं च मे सोऊण चिंता समुप्पण्णा—गूढो संधी, निव्विसंका मे गुरवो 'मओ' त्ति परिमग्गणायरं न काहिंति. तवो सच्छंदं निव्विग्घं जायं वियरियव्वं ति। रत्तिमतिवाहयित्ता अवरेण पट्ठिओ, कमेण पत्तो विजयखेडं नयरं। नातिदूरे य नयरस्स समासण्णे एगम्मि पायवे दुवे पुरिसा चिट्ठंति, ते मं भणंति—सामि! वीसमह त्ति। अहं संठिओ। ते पुच्छंति—के तुब्भे? कओ वा एह?। मया भणिया—अहं माहणो गोयमो. कुसग्गपुराओ विज्जागमं काउं निग्गओ. तुब्भे पुण किंनिमित्तं पुच्छह?। ते भणंति—सुणह—

सामा-विजयापरिचओ

इह राइणो जियसत्तुस्स दुवे धूयाओ—सामा विजया य, रूवस्सिणीओ गंधव्वे नट्टे य परिणिट्ठियाओ विदिण्णसयंवराओ. तासिं पइण्णा—जो णे आगमेण विसेसिज्जा सो णे भत्त त्ति. तओ रण्णा चउसु वि दिसासु मणुस्सा संदिट्ठा—जो जुवाणो रूवस्सी सविज्जो माहणो खत्तिओ (ग्रन्थाग्रम्–३३००)वा सो मे आणेयव्वो त्ति. तं अम्हे रायनिओएण इह अच्छामो. तुज्झं पुण जइ अत्थि समो गंधव्वे णट्टे वा ततो णे सफलो परिस्समो होज्जा। मया भणिया—अवस्सं समयमित्तं जाणिस्सामि।

ततो तेहिं तुट्ठेहिं नीओ मि नयरं, दंसिओ रण्णो। तेण वि परिओसपुण्णहियएण पूइओ मि। पत्ते य अणि(णु)ओगदिवसे दिट्ठाओ मया कण्णगाओ सामा-विजयाओ मिउ-सुहुम-कसिण-निद्धसिरयाओ, सरसतोयरुहरमणिज्जमुहीओ, विच्छिण्णणयणजुयलाओ, णातितुंगसरय-नासावंसाओ, पवालदलदालिमप्पसूयसण्णिहोट्ठीओ, कोमल-तणुक-णमिरबाहियाओ, सुकुमाल-सतवकरजुयलाओ, निरंतरूसिय-पीण-पिंजरपओहराओ, कालसुत्तसरिसरोमराइरंजियकर[3]संगिज्झमज्झाओ, पिहुलसोणिमंडलाओ, गयकलभनासाकारसुकुमारोरूओ, गोपुच्छसंठियगूढसिररोमजंघाओ, सूरसिरीइपरिलीढकमलकोमलचलणकमलाओ, कलहंसललिअगमणाओ, फलरसपुट्ठपरपुट्ठमहुरभासिणीओ। ताओ य मया गंधव्व-नट्टसमयनिउणाओ वि नट्टे गीए अ विसेसिआओ। ततो तुट्ठेण रण्णा सोहणे दिणे तासिं पाणिं गाहिओ मि विहिणा, अद्धं च रज्जस्स निसिट्ठं। ततो अहं ताहिं सहिओ वणगओ विव कणेरूहिं सच्छंदं विहरामि। परिचयं च कुणमाणं संगामिआसु विज्जासु भणंति मं—अज्जउत्त! जइ तुब्भे माहणा कीस संगामिआओ भे कलाओ गहिआओ?। मया भणिया—सव्वे वि आगमा बुद्धिमओ न विरुद्धा। रूढपणयाण य तासिं 'अरहस्सं'ति छलनिग्गमो कहिओ। तओ तुट्ठीय वसंतमासचूअलयाओ विव अहिअं सोहिआओ। कमेण य विजया आवन्नसत्ता जाया,

१ तओ रुण्ण° शां० विना ॥ २ °मारसयव° शां० विना ॥ ३ °रसगि° शां० ॥

अविमाणियडोहला काले पसूआ कुमारं । तस्स कयजायकम्मस्स कयं नामं 'अक्रूरो'त्ति ।

तत्थ य मे वसंतस्स समतिक्कतं वरिसं । समतिच्छिअं उज्जाणं च निगच्छमाणो मम देसिको पुरिसो दट्ठूण वितिअस्स साहति—अहो अच्छरियं ! ! ! एरिसी नाम सारिक्खया भवति । तेण भणिओ—कस्स ? त्ति । सो भणइ—वसुदेवस्स कुमारस्स त्ति । तं च सोऊण मे चिंता जाया—न मे सोभइ इह अच्छिउं, अवक्कमामो त्ति ।

॥ इति श्री(सिरि)संघदासगणिविरचिते(रइए) वसुदेवहिंडी(डीए) सामा विजयालंभो पढमो सम्मत्तो ॥

सामा० ग्रं —२१६-२७ सर्वग्रं०—३३२१-१

बीओ सामलीलंभो

ततो अहं ताओ वीसमेऊण एगागी निग्गओ, मग्गं मोत्तूण दूरमइवइओ उत्तरदिसिं । हिमवंतपव्वयं पस्समाणो य पुव्वदेसं गंतुमणो कुंजरावत्तं अडविं पविट्ठो । महंतमद्धाणमइवाहेऊण परिस्संतो तिसिओ य एगं सरं पत्तो विगयपकं पंकयसछण्णतोयं वारिचरविहगमणहरमणियं । चिंतियं मया—अहं परिस्संतो जइ तण्हावसेण उदगं पाहामि तो मे अपरिट्ठिओ मारुओ सरीरे दोसं उप्पाएज्जा वीसमामि ताव मुहुत्तं, सिणाओ पाणियं पाहिं(ह)ति । एयम्मि अंतरे हत्थिजूहं कालमेहवंद्रमिव पाणियं पाउकामं सरमवइण्णं, कमेण पीओदगं उत्तिण्णं । अहमवि मज्जिउं पवत्तो । जूहवई य कणेरुपद्धिओ ईसिंमदजलदीसमाणसुरभिकपोलदेसो सरमवइण्णो । निव्वण्णिओ य मया उत्तममद्दलक्खणोववेओ । सो गयहत्थी गंधमणुसरंतो मम अणुवइउमारद्धो । चिंतिअं च मे—जलेण तीरिहिति गओ जोहेउं एस उत्तमो आसण्णे पत्तो विहेओ होहिति । तओ उत्तिण्णो मि । सो वि मे पच्छओ लग्गो । मया य करमग्गं वचेऊण गत्ते अप्फालिओ, सिग्घयाए य णं वचामि । सो मं सुकुमालयाए कायगरुयाए य ण सचाएइ गहेउं । तहिं तहिं चेव मया छगलो विव भामिओ । परिस्संतं च जाणिऊण उत्तरीयं से पुरओ खित्तं, तम्मि निसण्णो । अहमवि अभीओ महागयस्स दंते पायं काऊण आरूढो तुरियं । पत्तासणस्स य सुसीसो इव विधेओ जाओ, उत्तरीयं च गिण्हाविओ, वाहेमि णं जहिच्छं ति । गहिओ य मि आकासत्थिएहिं दोहिं वि पुरिसेहिं बाहासु समगं उक्खित्तो, णिंति य गगणपहेण कहिं पि । चिंतियं च मया—एए ममाओ किं मण्णे अहिया ऊणं ? त्ति । दिट्ठा य दिट्ठिं साहरंति, ततो 'ऊणं' त्ति मे ठियं । सदयं च वट्टंति 'साणुकंप'त्ति समाधिया । उप्पण्णा मे बुद्धी—जइ मगुलं काहिंति तो णे विवाडिस्सं, अलं चावल्लेण । आरुहिओ मि तेहिं पव्वयं, उज्जाणे णिक्खित्तो, पणया य नामाणि साधेऊण—पवणवेग ऽच्चिमालिणो अम्हे त्ति । तओ तुट्ठमणसा ।

१ °अं मम गच्छमाणं सम देसि° ली ३ क ३ गो ३ उ० । °णावितिगच्छमाणं मम मे ॥ २ सामा विजयालंभो सम्मत्तो एतत्स्थाने पुष्पिका शां ॥ ३ °कं विकसियपंक° मे ॥ ४ °द्विए मारुए सरी° शां ॥ ५ सो हत्थी शां ॥ ६ महाग° शां० ॥ ७ °त्ति निच्छिय । स° ली ३ ॥

सामलीपरिचओ

मुहुत्तंतरेण य इत्थिगा मज्झिमे वए पवत्तमाणी सित-सुहुमदुगुल्लपरिधाणुत्तरीया आगया, पणया य नामं साहिऊण—अहं मत्तकोकिला रण्णो असणिवेगस्स दुहियाए सामलियाए विज्जाहरकण्णाए बाहिरिया पडिहारी. सुणह देव !—राइणो संदेसेणं सचिवेहिं पवणवेग-ऽच्चिमालीहिं आणित त्थ. रण्णो दुहिया सामली नाम माहवमाससंझाकुवलयं-सामा, लक्खणपाढगपसंसियसुपइट्ठियसमावरत्ततला, तलाऽणुपुव्ववेट्टियंगुलीतंबनहपायजुयला, दुविभावणीय-पिंडिय-वट्ट-सुकुमाल-गूढरोमजंघा, पीणसं[3]नाहितकतलीखंभसन्निभोरू, पीवर-थिरनितंबदेसपिहुलसोणी, दाहिणावत्तनाही, मंडलग्गयतणु-कसिणरोमराईपरिमंडिय-करसितमज्झा, पीणुण्णयं[4]हारहसिरहितयहरसंहितपओहरा, गूढसंधिदे[5]सेसणिभूसणमाणसगयबाहुलतिका, चामर-मीणा-ऽऽयपत्तसुविभत्तपाणिलेहा, रयणावलिससुचितकंबुकंधरा, पयोधरपडलविणिग्गयपुण्णचंदसोमवं[6]दणचंदा, रत्तंतधवलकसिणमज्झनयणा, बिंबफलोवमरमणिज्जाऽधररूवगा, कुंडलोवभोगजोगसंगयसवणा, उण्णयपसत्थनासावंसा, सं[7]वणमणसुभगमहुरभणिया, परिजणनयणभमरपिज्जमाणलायण्णरस त्ति. तुम्हं राया दाउकामो, मा ऊसुगा होह ।

तत्थ य वावी आसण्णा, खारका य आकासेणं तं वाविं उयरंति । मया चिंतियं—किं मण्णे सिरीसिवा विज्जाहरी होज्जा, जओ इमा खारका आकासेणं वच्चंति । मत्तकोकिला य मम आकूयं जाणिऊण भणइ—देव ! न एस खारका विज्जाहरी. सुणध कारणं—एसा वावी ऋसिम-सिट्ठ-पत्थपाणिया 'मा चउप्पयगम्मा होहिति' त्ति फलिहसोमाणा कया. जइ य पाणियं पाउं अहिलसह तो उयारेमि ते । मया 'आमं'ति भणियं । ततो हं तीए समगं तं सोमाणवीहिं उइण्णो वाविं । पीयं मया पियवयणामयमिव मधुरं गुरुवयणमिव पत्थं तिसिएणं पाणियं । उत्तिण्णो मि । आगओ परियणो रायसंदेसेणं ण्हाणविहि-वत्था-ऽऽभरणाणि य गहेऊणं । णयरदुवारे य कलहंसी नाम अब्भंतरपडिहारी, तीए ण्हविओ सपरियणाए, अलंकिओ पविट्ठो नयरं जणेण य पससिज्जमाणो । दिट्ठो मया राया असणिवेगो, कओ य से पणिवाओ । तेणं अब्भुट्ठेऊणं 'सुसागयं'ति भणंतेणं अब्भासणे निवेसाविओ । सोहणे मुहुत्ते दिट्ठा मया सामली रायकण्णा जहाकहिया मत्तकोकिलाए । तीए वि तुट्ठेण राइणा पाणिं गाहिओ विहीए, पविट्ठो गब्भागारं ।

वत्तेसु य कोउगेसु विरहे मं सामली विण्णवेइ—अज्जउत्त ! विण्णवेमि, देहि मे वरं । मया भणिया—पिये ! विण्णवेयव्वा, जं तुमं विण्णवेसि सो मम पसाओ । सा भणइ—अविप्पओगं तुब्भेहिं समं इच्छामि त्ति । मया भणिया—एस मज्झं वरो न तुज्झं ति । सा भणइ—कारणं सुणह—

---

१ °यनालसामा शा० ॥ २ °वट्टिय° मो ३ ॥ ३ °समाहि° ली ३ ॥ ४ °यहारहरिसिरहितयहरिसितपओ° शा० । °मतिसरइहारसहितपओ° उ० ॥ ५ °देसामणिभू° ली ३ ॥ ६ °वयणयंदा शा० ॥ ७ सउणगणसु° शा० विना ॥ ८ त्ति शा० विना ॥ ९ अब्भासण्णे ली ३ ॥

अगारकपरिचओ

इह वेयड्डपव्वयस्स दाहिणिल्लाए सेढीए नयरं किण्णरगीयं नाम, तत्थ राया अच्चिमाली विव पावगो तेयस्सी अच्चिमाली णाम, तस्स देवी पभावती नाम, तीए दुवे पुत्ता—जलणवेगो असणिवेगो य। जलणवेगस्स विमलाभा नाम महादेवी, तीए अगारको कुमारो। असणिवेगस्स सुप्पभा देवी, तीए अहं दुहिया। कयाइं च अच्चिमाली राया सह देवीए वेयड्डसिहरितले विहरिऊण नियगपुरुज्जाणे उवइओ, एगपएसे सुहासीणो सिहो कहाहिं अच्छति। नाइदूरे यं से हरिणो ठिओ अच्छति। रण्णा सायगो खित्तो मिगस्स, पडिनियत्तो य, न य चलिओ मिओ। तओ अमरिसेण बितियं संधेमाणो अदिट्ठाए देवयाए बोहिओ अच्चिमाली—नंद-सुनंदा भयवंतो चारणा एत्थ पसत्थज्झाणोवगया लयाघरे चिट्ठंति, तेसिं आसण्णो तुमे मिओ लक्खिओ रिद्धिमंतो अणगारा जंतुसत्थं रक्खंति तत्थगए य जो सत्ते विवाडेज्जा तस्स जइ कुप्पंति णं य ण देवा वि परित्तायंति ताहिं, खामेहि चारणे, मा विणस्सिहिसि—त्ति भणिओ भीओ गओ चारणसमीवं। वंदिऊण भणइ—भयवं! मरिसेह, मया मिओ तुब्भं पायसमीवं ठिओ विवाडेउं लक्खिओ। तओ णंदेण साहुणा भणिओ—राय! कीलमाणा पाणिणो अट्ठाए अणट्ठाए य पाणिवहं काऊण अहरगइं गया बहुं कालं विवसा दुक्खसहस्साणि पावंति, तं विरमह पाणिवहाओ विगयवेरो भविस्ससि अवराही(हि)जीवं जो वहिज्ज सो वि ताव पावसंचयफलं भवसएहिं न नित्थरइ, किं पुण जो अणवरद्धकुद्धघायगो?। तओ सो एवंविहोपदेससंजणियवेरग्गो जेट्ठसुयस्स जलणवेगस्स पण्णत्तिं रज्जं च दाऊण पव्वइओ संविग्गो विहरति। बहुणा य कालेण विहरंता पुणो वि भयवंतो णंद-सुणंदा किण्णरगीयमुवगया। जलणवेगो निग्गओ वंदिउं। तओ चारणेहिं अणुसट्ठो अणिच्चयं विभूतिं उवदंसतेहिं, निव्विण्णकामभोगो य डहरगं च भाउयं सद्दावेऊण भणति—अहं विरागमग्गमोइण्णो पव्वइउकामो, तुमं पण्णत्तिं रज्जं वा वरेहि त्ति। तओ णेण भणियं—कुमारो बालो, न जुत्तं मम धरग्गहं गहेउं सो ताव गिण्हउ जं से अहिप्पेयं। सो सद्दाविओ, पुच्छिओ य भणइ—जं अम्मा निद्दिसिहित्ति तं गिण्हिस्सं। तीए भणिओ—पण्णत्तिं गिण्हिज्जाहि, जो विज्जाहिंको सो रज्जसामी। तेण माउवयणेण पण्णत्ती गहिया। असणिवेगो राया जाओ। विमलाभा य जहा पुरा पगतीओ करं गिण्हति। तओ रायाणमुवट्ठियाओ—देव! अम्हे सुप्पभाए देवीए सपदं उवायं करेमु, विमलाभा वि मग्गइ करं, दो पुण अप्पत्ता अम्हं सदिसह त्ति। सा सद्दाविया—(ग्रन्थाग्रम्—३४००)मा पगतीओ बाहसु त्ति। भणइ—अहं पुत्तमाया परिहामि उवायस्स त्ति। वारिज्जमाणी पीलेइ, पुत्तं च से दीवेइ। सो बलक्कारेण जं से रोचइ तं भुंजइ। एवं विरोधे वड्ढमाणे विज्जाबलेण असणिवेगं मम पियरं पराजेऊण णिवत्तो। कयाभिसेओ मम सद्दावेऊण भणति—सामलि! अच्छसु तुमं वीसत्था, भाउगसिरिं

१ ष सिहरिणो ठिवो मिगो अच्छ° शां विना ॥ २ ण त दे° शां ॥ ३ °ड्डो धा° शा मे० विना ॥ ४ गेण्ह, जो शां ॥ ५ °हिवो सो शां मे विना ॥ ६ भयेप्प° शां० मे ॥

अणुभवाहि, न ते किंचि परिहाहिति । मया भणियं—देव! पावासंकीणि बंधुहिययाणि-तुम्हे त्थ मया संगामाओ पडिनियत्ता अक्खयसरीरा दिट्ठा. तुम्हेहिं विसज्जिया तातं पस्सेज्जं ति । अंगारओ भणति—वच्चसु, जदा रोयति तदा एज्जासि । सपरिजणा य म्हि अट्ठावयपव्वयसंनिविट्ठं तातं मिलिया । कतिवासरेण य जिणायतणे अंगीरसो नाम चारणो वंदिऊण तातेण पुच्छिओ—भयवं! अत्थि मे पुणो रज्जसिरी होज्जा? संजमं वा अणुपालेऊणं जोग्गो होज्जासि? त्ति । एवं पुच्छिएण चारणेण भणिओ राया—अच्चिमाली रायरिसी मम धम्मभाया ततो ते कहेमि—न ताव ते पव्वज्जाकालो, रज्जं पुण ते होहिति । रण्णा पुच्छिओ—भयवं! कहं होहिति रज्जसंपया? त्ति । साहुणा अहं दंसिया—एतीए सामलीए कण्णाए जो भत्ता तओ ते पुणो रायसिरी होहिति, सो अद्धभरहाहिवपिया । पुणो राया पुच्छति—भयवं! कहं सो मया वियाणियव्वो? । साहुणा भणिओ—जो कुंजरावत्ताडवीए सरसमीवे सह वणगएण जुज्झिहिति सो जाणियव्वो । तं च वंदिऊण कुंजरावत्ते ठिया मु । पइदिवसं च दुवे दुवे पुरिसा तम्मि पदेसे संचरंति रायसंदेसेणं । तहिं च भे दिट्ठा जहादिट्ठा साहुणा, आणीया य । एसो य आएसो अंगारगस्स मम भाउगस्स कण्णपहमागतो । ततो सो पदुट्ठो तुम्हे पमत्ते विवाडेज्ज । अम्हं च विज्जाहराणं समओ नागराइणा ठविओ—जो किर अणगारसमीवे जिणघरे भज्जासहियं वा सुत्तं विवाडेज्जा सो भट्ठविज्जो होहिति । एएणं कारणेणं विण्णवेसि 'मया सहिए तुब्भे सो न लंघेइ' ।

मया य भणिया—अंगारको न किंचि मम करेइ, वायाए वाहेज्ज. जं पुण तुब्भं रोयइ तं मया कायव्वं ति । एवं तीए सहिअस्स मे सुरपइणो विव इच्छियविसयसुहनंदणोवगयस्स वच्चइ कालो । गंधव्वं च सविसेसं सिक्खिओ मि सामलियाए अहं, दुवे विज्जाओ सिक्खाविओ, बंधणविमोक्खणिं पत्तलहुइयं च । ताओ य मए दुवे वि सरवणे साहिआओ । वीसत्थो होमि हितगारिणीए सामलीए सह पसुत्तो हीरमाणो विबुद्धो, पस्सामि य पुरिसं, सामलिमुहाकारसारिक्खयाए य तक्किओ मया 'अंगारको होज्ज'त्ति । तओ मया चिंतियं—जो सत्तुं विवाडेइ सो उत्तमो, जो तेण सह विवज्जइ सो मज्झिमो, जो सत्तुणा विवाडिज्जइ सो अधमो, तं ताव मज्झिमो होमि, सह णेण विवज्जामि. मा य ऊणो—त्ति पहरिउमणो थंभियगत्तो अहं न सचाएमि । चिट्ठिं भणइ मं अंगारगो—कुमार! भुयंगमं को अविज्जो गेण्हेइ?, थंभिओ सि मय त्ति ।

एयम्मि देसकाले सामली उवागया भणति—देव! नारिहसि मे भत्तारं विणासेउं, तुम्हं एस पुज्जो त्ति । हुंकारेण निब्भच्छिया पुणो अणुणेइ—मुयह मे भत्तारं, जइ न मुयह अहं सयणधम्मं छड्डेमि । ततो रुट्ठेण अहं पविद्धो पडिओ मि पलालपरिपूरिए जिण्णकूवे, पस्सामि जुज्झमाणाणि भाउभंडाणि । तओ असिणा सामली दुवे खंडाणि कया अंगार-

१ अंगीरसो नाम शां० विना ॥ २ °सु य चा° शां० विना ॥ ३ मायर° कस० संस० उ० ॥ ४ °ट्ठियं भ° शां० विना ॥

एण। मया चिंतियं—अइनिग्घिणो भगिणीघायगो त्ति। तओ दुवे सामलीओ जायाओ। तीय वि आहतो खग्गेण, सो वि दुवे अंगारगा जाया। मया चिंतियं—माया एसा एयस्स, न विणट्ठा सामलि त्ति। गयाणि य अद्दरिसणं जुज्झमाणाणि। अहं पि दब्भओ निसण्णं भावूसियं काउस्सग्गं ठिओ निरुवसग्गनिमित्तं। ततो विज्जादेवया हसिऊण अदरिसणं गया। अहमवि जालंतरगयं दीवुज्जोवं पासमाणो चिंतेमि—एस वग्घो त्ति। ततो मे पुणो चिंतियं—जइ एस वग्घो होंतो तो पडियं मम लयंतो, न एस वग्घो त्ति निस्संसयं नाइदूरे पासायेण होयव्वं ति, जओ एस दीवुज्जोतो ति बुद्धिउं त्ति। पभाए उत्तिण्णो मि त्ति॥

॥ इति संघदासगणिविरइए सामलिलंभो [1]बिइओ ॥

सामलीलम्भग्रं०—११८-४ सर्वग्रं —३४४१-५.

तइओ गंधव्वदत्तालंभो

उत्तिण्णो मि कूवाओ, दिट्ठो मया मणुस्सो मज्झिमे वयसि वट्टमाणो, सो मे पुच्छिओ—सोम! किंनामो जणवओ? नयरं वा इहं किं नामधेयं?। सो भणइ—महामुह! कमेण जणो जणवयाओ जणवयं संकमइ, तुमं पुण किं आगासाओ पडिओ? जओ पुच्छसि जणवयं नयरं च त्ति। मया भणिओ—सुणाहि, अहं मागहो गोयमसगोत्तो खंदिलो नाम माहणो जक्खिणीहिं समं मे पणओ, ततो एगाए निज्जमाणो इच्छियं पएसं [2]बिइयाए ईसायमाणीए अणुपइऊण सा गहिया तासिं कलहंतीण अहं पडिओ, तेण न जाणामि भूमीपएसं। सो भणइ ममं अवलोएऊण—होज्ज, न अच्छरियं, जं तुमं जक्खिणीओ कामेंति त्ति। तेण मे कहिओ—अंगा जणवओ, चंपा नयरी। ततो दिट्ठं मया आययणं, तत्थ भयवओ वासुपुज्जस्स अरहओ [3]पेयकित्तिं पायपीढे नामकियं पस्सामि। [4]तं च बहुमाणपणओ पयक्खिणं तित्थयरं वंदिऊण कयत्थमिव अप्पाणं मण्णामि।

निग्गओ य म्हि आययणाओ। पस्सामि य वीणाहत्थगयं तरुणजणं किंचि सपरिवारं, वीणासगडं च बहुजणपरिवारियं विक्कयनिमित्तं। ततो मे पुच्छिओ एको मणुस्सो—किं एस विसयायारो? उदाहु कारणं? जेण वीणासव्वावारो दीसति लोगो। सो भणइ—इहं चारुदत्तसिट्ठिणो धूया गंधव्वदत्ता परमरूववती गंधव्ववेदपारगया सो य इब्भो वेसमणसमाणो व तीसे रूवमोहिया माहण-खत्तिय-वइसा गंधव्वे रत्ता [5]तं च जो जिणइ सिक्खिउं तस्स भज्जा होहिति पुण्णमासिणी मासे मासे गए य अणुओगं देइ [6]विउसाण पुरओ कज्जं च समुद्दओ आसी, पुणो मासेण भविस्सइ त्ति। मया चिंतियं—बहुदिवसा गमेयव्वा, पुच्छामि ताव णं—भो! अत्थि इहं उवज्झाया गंधव्वपारगा? । सो भणइ—अत्थि, तेसिं पुण पहाणो सुग्गीवो जयग्गीवो य।

---

१ °वुरिस° ली ३॥ २ °रचिते सा° क ३ गो ३ ली ३ मे । °रचिते वसुदेवहिंडौ सा° उ०॥ ३ बीओ लंभगो उ ॥ ४ °ए संविइयाए ईं° उ २ विना॥ ५ °णिए शां विना॥ ६ महकि° शां०॥ ७ तं हिययबहु° ली ३॥

ततो मे बुद्धी जाया—तेसिं गिहे अविरुद्धा दिवसा गमेमि। आभरणाणि पच्छण्णे भूमिभाए णिहिएऊणं अइगओ मि नयरं। पत्तो उवज्झायगिहं मुक्खत्तं विलवंतो । कयपणिवाओ भणिओ तेण 'सागयं' ति, पुच्छिओ य—कओ एसि? किंनिमित्तं वा इहागओ सि? त्ति । कहियं च से मया—णामं खंदिलो त्ति, गोयमो पुण गोत्तेणं, गंधव्वं सिक्खेज्जा। तेण 'जड्डो' त्ति अवण्णा कया । मया माहणीए कडयं दिन्नं पहाणरयणदीवियं । सा तं दट्ठूण भणइ—पुत्त! धिर्ति करेहि, अक्खाहि य जं ते अभिप्पेअं भोयण-ऽच्छायण-सयणेसु, न काइ चिंता । तेण कहिअं। भणिओ अणाए सुग्गीवो—सामि! सिक्खावेहि खंदिलं, मा अच्छउ रिक्को । सो भणइ—एस जड्डो, किं एस सिक्खिहि? त्ति । तीए भणियं—मेहावीहिं न मे पओअणं, एयस्स करेहिं पयत्तं—ति कडगं से दंसेइ । ततो पडिवन्नो, तुंबुरु-नारयाणं कया पूया । ततो अप्पिया मे वीणा चंदणकोणं च, भणिओ य—छिवसु तंतिउ त्ति । मया तहा आहयाओ जहा छिण्णाओ । उवज्झाओ माहणिं भणति—पस्स ते पुत्तस्स खंदिलस्स विण्णाणं। सा भणति—एयाओ जुण्णाओ दुब्बलाओ, कीरंतु थूराओ सिं अण्णाओ थिराओ, से कमेण णाहिति त्ति। ततो सज्जियाओ से सीसेहिं थुल्लाओ तंतीओ । भणिओ य उवज्झाएण—सणियं छिवेसु तंतीओ। तओ दिण्णं च गीययं—

अट्ठ णियंठा सुरट्ठं पविट्ठा, कविट्ठस्स हेट्ठा अह सन्निविट्ठा ।
पडियं कविट्ठं भिण्णं च सीसं, अव्वो! अव्वो! त्ति वाहरंति हसंति सीसा ॥

ते मया पुच्छिया—सा इब्भकण्णा गीयगं एयं जाणति? न जाणइ? त्ति । ते भणंति—न जाणति । मया भणियं—जिणामि एएण गीयएणं ति । ततो एरिसेहिं वयणेहिं हसावेमि । वच्चंति दिवसा । पत्तो अणुओगसमओ । ससीसो उवज्झाओ वच्चति, ममं भणति—तुमं अण्णम्मि काले वच्चिहिसि । मया भणियं—जइ सा अण्णेण जिप्पइ अहं कीस सिक्खामि? त्ति, वच्चामि त्ति । ते न दिंति गंतुं । मया बितियं कडगमाणेऊण माहणीए दत्तं । सा तुट्ठा भणति—जइ ते निवारेंति किं तुहं तेहिं?, वच्चसु, जिणसु तयं ति । दिण्णं च णाए पंडरं महग्घं च वत्थजुयलं समालभणं पुप्फ-तंबोलाइ ।

ततो नियत्थ-पाउओ गओ सभं चारुदत्तसंतियं । आसणेसु रइएसु सभाए आसीणा विउसा, इयरो जणो भूमीए । उवज्झाओ ससीसो णिज्झाइ मं ससंकिओ—मा ममं पासमुवेहि त्ति । अहं सभमुवगतो । तत्थ य चारुदत्तो नयरपहाणमणुस्ससहिओ अच्छति। दट्ठूण य सभासन्निवेस मया भणियं—विज्जाहरलोए एरिसो सभागारो, न इहं ति । ततो निज्झाइऊणं तुट्ठेण मे दिण्णमासणं । आसीणो मि । पस्सति मं जणो विम्हयविकसमाणणयणो । दिट्ठं च मया भित्तीए हत्थिजुयलं लिहियं । भणिओ य मे सेट्ठी—कीस मन्ने एस हत्थी चित्तकम्मकरेहिं अप्पाऊ लिहिओ? । सो भणइ—सामि! किं चित्तकम्मे वि

१ °णीय क° शां० ॥ २ °रेधि शां० ॥ ३ अप्पाहि शां० ॥ ४ शां० विनाऽन्यत्र °णा चदणाकोयणयं च क ३ । °णा चदणकोयणयं च गो ३ उ० मे० । °णा चादणकोयणय च ली ३ ॥

आउपरिक्खा अत्थि ? । 'आम' ति मया भणियं—जइ संदेहो आणिज्जउ पाणीयं वालुयाणि य । ठवियं पाणियभायणं भित्तिसंसियं । कीलंतेहिं बालेहिं उदगं गहेऊण हत्थी फुसिओ । पकुट्ठ सभागएहिं पुरिसेहिं—अहो ! अच्छेरियं ति । उवज्झाओ विम्हिओ ।

आगया य गंधव्वदत्ता जवणिअंतरिया ठिआ । न वि को वि उच्छहति वीणं छिविउं ति । चारुदत्तेण य सेट्ठिणा वागरियं—अईंति हु वारिगा, जइ न कोइ उवट्ठाइ गाइउं ति । सो चिरं अच्छिऊण विदुसेहिं भणियं—अईंच त्ति । तम्मि समए मया भणियं—कीस अईइ ? पासासु से सिक्खियविसेसं । ततो पेच्छगेहिं दिट्ठीहिं अणुबद्धो मि 'न एस धरणिगोयरो, एस देवो विज्जाहरो वा अइपगब्भो तेयस्सी रूववंतो' त्ति । ततो सेट्ठीवयणेण उवणीया वीणा, अप्पिया य पुरिसेहिं, सा मया पडिसिद्धा 'एसा सगब्भा, ण य जायइ छिविउं' ति, 'सीमिया सती, दंसिआ वाला । अण्णा उवट्ठविआ, 'दवग्गिदड्ढाओ दारुओ निम्मविआ फरुससद्दा एसा' । सिप्पिणा पुच्छिएण कहियं 'सच्चं' ति । अण्णा उवट्ठविया, सा जलनिबुड्डदारुनिम्मविआ 'गंभीरसद्दा न होइ' त्ति पडिसिद्धा । विम्हिया परिसा । ततो आणीया वीणा कयचंदणचच्चा (ग्रन्थाग्रम्—३५००)सुरभिकुसुमदामालंकिया सत्तंसरतंती । तं दट्ठूण मया भणियं—उत्तमा वीणा, आसणमिणं अणणुरूवं । तओ उवणीयं महरिहमासणं । ततो भणति सेट्ठी—सामि ! जइ जाणह विण्हुगीययं तो गिज्जउ । मया भणियं—जाणामि । ततो सभागया पुच्छति—किं विण्हुगीययं ? । मया पुण साहूण रिद्धीसु गिज्जमाणीसु पुव्वं सुयं विण्हुमाहप्पं गीययं च । ततो पकहिओ मि—सुणह—

विण्हुकुमारचरियं विण्हुगीइगाए उप्पत्ती य

आसि हत्थिणापुरे नयरे पउमरहो राया, तस्स लच्छिमती देवी, विण्हू महापउमो य दो कुमारा । धम्मस्स अरहओ पओप्पए सुव्वओ नाम अणगारो, तस्स समीवे राया सह विण्हुकुमारेण पव्वइओ । महापउमो राया रज्जं पसासति । पउमरहो परमसंविग्गो विधुतरयमलो परिणिव्वुओ । विण्हुकुमारो वि अणगारो अपरिवडियधम्मसद्धो सट्ठिं वाससहस्साइं परमं दुच्चरं तवमणुचरति । ततो से लद्धीओ समुप्पण्णाओ—विउव्विणिड्ढी सुहुम बादर विविहरूवकारिणी अंतद्धाणी गगणगामिणी ।

महापउमस्स रण्णो णमुई पुरोहिओ । सो साहूहिं महायणमज्झे वादत्थी सत्थेण पराजिओ, पदुट्ठो रायं तोसेऊण लद्धवरो रायत्तं करेइ । वासारत्ते ठिया साहू गयपुरे । सो कयाभिसेओ पगतीहिं भाणिओ समणे सद्दावेऊण भणइ—अहं तुम्हं असम्मओ, जओ मं न जयावेह ? । साहूहिं भणिओ—किं अम्हं वयणेण तुम्हं जओ होहिति ण वा ? सज्झाय-ज्झाणवक्खित्तेहि य न याणिओ तुम्हं अहिसेउ त्ति सब्भावो । सो भणति—किं बहुणा ? मम रज्जे ण वसियव्वं तुम्हेहिं । ते भणंति—राय ! वासासु विहारं सकमिउं,

१ सीमि° उ २ कस विना ॥ २ न पुव ति शां ॥ ३ °सरसत° मे विना ॥ ४ °इ अणुइयमाणो पर° शां विना ॥

अम्हे सरदे गमिस्सामो। सो भणइ—सत्तरत्तस्स परओ जो अच्छति सो मे वज्झो। तेहिं भणियं—समवाएऊणं तुम्हं कहेहामु त्ति।

तेहिं मिलिएहिं थेरेहिं संदिट्ठं—अज्जो! जस्स मे रिद्धी अत्थि सो कहेउ, संघकज्जं गुरुकमुप्पण्णं। तत्थेगेण साहुणा भणियं—मम आगासगमणसत्ती अत्थि, आणवेह जं करणिज्जं। सघथेरेहिं भणियं—वच्च तुमं अज्जो', विण्हुं अंगमंदराओ कह्लं आणेहि। सो 'तह'त्ति पडिसुणेऊणं खणेणं गतो। निवेदिया णेण सघाणत्ती। विण्हुणा भणियं—वीसमह भंते', हिज्जो जाइस्सामो। पसुत्तं च तं गहेऊण गतो गयपुरं। कहिओ य से नमुइपुरोहियनिच्छओ 'निव्विसया होहि'-त्ति। विण्हुणा विण्णविओ—संघो सुनिव्वुओ होउ, मज्झ भारो इयाणिं ति। गतो य णमुइसमीवं। अब्भुट्ठिओ नमुइणा। ततो भणइ विण्हू—अच्छंतु साहू वासाकालं। ततो नमुई भणति—तुम्हे सामी महापउमस्स रण्णो, किमंग पुण ममं?. तुम्हे ण भणामि, 'समणा मया निव्विसया कायव्वा' निच्छओ। विण्हुणा भणिओ—पाणबहुला मेइणी इमम्मि समए, विरुद्धं जइजणस्स संचरिउं. जइ तवाणुमए उज्जाणगिहेसु वासाकालं गमेऊणं पुरमपविसमाणा परदेस वच्चिहिंति तो वि ते मम वयणं कयं होहिइ। नमुई भणति—जे मम वाएयव्वा ते उज्जाणेसु मे कहिं वसिहिंति? त्ति। विण्हुणा भणिओ नमुई—भरहादीहिं राईहिं साहवो पालिया, विसेसेण पूइया य. तं जइ न पूएसि णाम, जं पुण भणसि 'वहेयव'त्ति तं ण रायचरियं. वुस्सूणं पि एयं न पीसए. उवसम, गए वाससमए विहरिस्सति अण्णपत्थिवरज्जाणि त्ति। ततो भणति—जं भणह 'न एयं रायचरियं, पुव्वपुरिसा य साहुपूअगा आसि'त्ति तं जो रायसुओ पिउपियामहपरंपरागयं रायसिरिं अणुभवति तस्सेसा धम्मया होज्ज. अहं पुण पढमराया नियगवंसे, किं मम परचरिएणं?. न मे कज्जं समणेहिं. सत्तरत्तपरओ जं पस्सामि संचरंतं न सो जीविहिति. अतीह, तुब्भे न भणामि किंचि, सेसाणं नत्थि जीवियं इओ वि परउ त्ति।

तओ अणगारो विण्हू चिंतेइ—अहो' नमुई दुरप्पा साहू वहेउमिच्छति, न मे जुत्तं एसा संघपीडा उवेक्खिउं ति। ततो णेण णमुई भणिओ—नमुइ! जइ सि एवं ववसिओ तो मे एक्कं वयणं करेहिं—देहि मे विवित्ते पएसे तिन्नि विक्कमे, तत्थ तवोहणा ठिया पएसे पाणपरिच्चायं काहिंति. न से कप्पइ इमम्मि काले विहरिउं. एवंपमाणे भूमिपदेसे दिण्णे मम वयणं कयं होइ, तव य वहपइण्णा णाम। ततो परितोसवियसियच्छो भणति—जइ सच्चमेयं, ततो भूमिपमाणाओ जीवंता जइ न निग्गच्छंति तो हेमि। विण्हुणा सामरिसेणं 'तह' त्ति पडिस्सुयं। निग्गया य नयरबाहिं। नमुइणा[3] 'दत्तं मया, सिणासु'[4] त्ति उदाहरियं। विण्हुणा वि पडिच्छियं ति। ततो रोसवसपज्जलिओ मिणिउकामो विउव्वियसरीरी पवड्ढिओ, उक्खित्तो य चलणो। नमुई भयमोहिओ

१ °ण्हु अणगार मह° उ० ॥ २ °मरो ली ३ विना ॥ ३ °णा भणिय दत्त शा० विना ॥ ४ °सिणखुं ७ २ विना ॥

पायवडिओ लग्गो पाए—खमह मे भयवं ! अवराहं ति । तेण धुओ पडिओ, खणेण य दिव्वरूवो सवुत्तो—मउडेण मणिमऊहरंजितदिसामुहेण गिम्हे मज्झण्हदिवसो विव दुंप्पिक्खो, कुंडलजुयलेण दोलायमाणेण उभयपासगतो इव गहमोइओ सम्मत्त मडलो, हारेण धवलमहाभोगिभोगसच्छेमेण विच्छिण्णवच्छयलविलसिरेण सारइय बलाहगसणाहसाणुदेसो इव मंदरो, कडग केयूरभूसियभुयाजुयलो य इदायुधचिंधित इव गगणदेसो, पालंबोचूलरइयमुत्ताविहाणो य जोइसमालाधरो इव तिरियलोओ । वड्डमाणं च पस्सिऊण भयविसठुलो अंतरा सिलाजालाणि पव्वयसिहराणि महते पायवे पहरणाणि य खिवति । ताणि य हुंकाराणिलसमुद्धुयाणि समंतओ पणिवयति । त च अदिट्ठपुव्वं महामोंदिं पस्समाणा किण्णर किंपुरिस भूय-जक्ख रक्खस-जोइसालया महोरगा भीय हित्थ-पत्थिया विलोलनयणा गलियाभरणा अच्छरासहाया 'को णु मो ? कत्थ पत्थिओ ? किं च का उकामो ?'त्ति कायरा विरसमालवता परोप्परं तुरियमुवहता, तेहि य चेवतसवगत्तेहिं सचारिसो मंदरो व विम्हियमुहेहिं सहचरेहिं दिस्समाणो खणेण जोयणसयसहस्ससमूसिततणू जातो । केहिय रिद्धिबहुलयाए जलियजलणसंघायभूओ दिट्ठो, केहिं पि सारदसमत्तमडलमियकमणहरतरसोमवयणचंदो । विवड्डमाणस्स य जोइसपहो उरदेसे णाभिदेसे कडिभाए जाणुदेसे य आसी । तओ चलिया भूमी । कओ य णेण मंदरसिहरोवरि दाहिणो चलणो । परावत्तेण य समुद्दजलं उच्छलियं । समाहया दो वि करतला, तेण सद्देण वित्तत्था आयरक्खा ।

एयम्मि देसयाले चलियासणेण विपुलावधिविसयविण्णायकारणेण भयवया देवसमक्खं भणिया गधव्व-नट्टाऽणीयाहिवइणो—भो ! सुणह—एस भयवं विण्हुअणगारो नमुइ पुरोहियाऽणायारपरक्कमकुविओ समत्थो तेलोक्कमवि गिलिउं, ता णं साणुणएण उवसमेह गीय नट्टोपहारेण तुरियं । ततो सोहम्मवइणा समाणत्ता पणच्चिया तिलोत्तिमा-रभामेणोव्वसीओ चक्खुविसए मुणिणो, पवादिआणि य वादित्ताणि, पगीया तुंबुरु-णारद-हाहा हूहू विस्सावसू य सुतिमहुरं सवणासण्णं थुणमाणा 'उवसम भयवं !' ति जिणणामाणि खमागुणे य वण्णेता । महिड्डिया य वेयड्डसेढीनिवासिणो विज्जाहरा देवसमूहं सुरवतिसहियं भयवतो विण्हुकुमारस्स पसायणनिमित्तं समागयं दिव्वमइचोइया विजाणिऊण हुयं सुरसमितिमुवगया । ते वि तहेव थुणति, आगमाणुरूवाणि गीयगाणि य गायता चलणमुम्मिस्सत कमलदलसवयच्छविधरं कमलमिव रसमुच्छिया महुयरा समुल्लियवा । तुट्ठेहिं य तुंबुरु-णारएहिं भणिया—अहो ! अच्छरियं, अहो ! माणुसमित्तेहिं नाम होइऊण देवेहिं सह कओ सयवो एच्छया य हसियं त्ति । विज्जाहरा भणिया—करिस्सं मे पसादं गधव्वो परा रती भविस्सत्ति सत्तसरततिनिस्सियं गधारगामं मणुस्सलोगदुल्लहमिदाणिं विण्हुगीयकोवनिबद्धं उवहारेह—

१ पडिओ शा० विना ॥ २ दुप्पिरिक्खो ली ३ ॥ ३ °भोगभोगिस° शां० ॥ ४ °च्छहेण ली ३ मे० ॥ ५ °का वि अं° शां० मे० ॥ ६ °हाहसे° उ २ मे० विना ॥ ७ °भासोमोम्म° शा० । °मासमोम्म° क ३ गो ३ ली ३ ॥ ८ °परसत° उ २ मे० ॥

उवसम साहुवरिट्ठया!, न हु कोवो वण्णिओ जिणिंदेहिं ।
हुंति हु कोवणसीलया, पावंति बहूणि जाइयव्वाइं ॥ गीतिका ॥

तेहिं पणएहिं 'परो णे अणुग्गहो' त्ति गहियं गीयगं ।

राया य महापउमो भयवओ विण्हुस्स तहागयचिट्ठियं नमुईपुरोहिअदुण्णयनिमित्तं सोऊण, दट्ठूण य दिव्वविउव्वियमहासरीरेण गगणतलमप्फुण्णं, भीओ सपुरजणवओ कंठ-गयप्पाणो गतो सरणं संघं, भयगग्गिरगिरो भणइ—मम सरणं संघो अहं कयाणुव्वओ समणोवासयो सुव्वयस्स भयवओ अणगारस्स सीसो परित्तायह मं । तओ संघेण भणिओ—'अपत्तं रज्जे ठवेसि, न य वुत्तंतं वहसि, पमत्तो सि'त्ति भणंतो विमलसहावो समण-संघो—खमियं अम्हेहिं रायं!. अवसाणं अम्हं एयं, तव विसयपमत्तस्स अणुपेक्खओ वि-सैमं जायं कारणं, जेण तेलोकं पि संसइयं. उवसमेसु विण्हुकुमारसमणं । सठिया य कर-यलंजलिपुडा—उवसम विण्हु!, खमियं संघेण महापउमस्स, साहर रूवं, मा य चलणं फंदेहि, चलइ महियलं तव तेयप्पभावेण पविसइ रसायलं, अइपुरट्ठिओ ते चलणब्भासे समणसंघो । तं च साहुजणोदीरियं वयणं न सुणइ अइयंतसोयविसयरूवो भयवं कुमा-रसमणो विण्हू । ततो मैहंतेहिं सुयधरेहिं भणियं—न सुणइ सद्दं नूणं दुवालसजोयणप-रओ. कम्हिय गगणंभाए सोतिंदियं से वट्टति, जओ न सुणइ. पर च जोयणसयसहस्स-मूसिया विउव्वणा, जओ तत्तियं अइगतो ततो रूवविसयो वट्टइ. अप्फालेह से पायं, ततो अवस्स अवलोएहित्ति. दट्ठूण य समणसघं पज्जुवासेंतं उवसमिहिति । ततो जमगसमगं अप्फालिओ चलणो साहूहिं । फासिंदियलद्धसण्णेण विण्हुणा महरिसिणा अवलोइयं धर-णियले । दिट्ठो य णेण महापउमो राया सओरोहो सपरिवग्गो सरणमुवगतो संघस्स, साहुणो य कयंजलिपुडा पवाहरता 'उवसमेह' त्ति । ततो णेण चिंतियं—णवणीयमिव मिदुसहावा, चंदणमिव सीयलहियया, महापउमस्स रण्णो सपरिवारस्स पीडं परि-(ग्रन्थाग्रम्—३६००)हरंतेहिं खमियं णेहिं असरिसं. न जुज्जइ संघं वइक्कमिउं ति । देवव-यणेहि य मउईकयहियओ संघगुरुयाए उवसहरिउं साहरिउं रूवं वसुहातले संठिओ सारइयचंदो इव सुहदंसणो । देव-दाणवगणा य सविज्जाहरा पणया भयवओ विण्हुस्स, कुसुमवरिसं मुइऊणं गया य सयाणि ठाणाणि ।

ततो सहावट्ठिओ खिज्जिओ, महापउमो राया भणिओ य—णाऽरिहसि रज्जसिरिं । पुत्तो य से णेण संदिट्ठो—पियरं बंधिऊण नाएण पयापालणं कुणसु त्ति, धम्मे य सायरो होहि त्ति । सो पयाहिं परिग्गहिओ कयपसाओ भयवया । नमुई मारिज्जमाणो निवारिओ साहुसंघेण निव्विसओ कओ । विण्हू वि अणगारो वाससयसहस्सं तवमणुचरेऊण धूयरओ समुप्पण्णकेवलनाण-दंसणधरो परिनिव्वुतो ॥

---

१ °व्वयाइ शां० मे० विना ॥ २ ली ३ विनाऽन्यत्र—°रसतो शां० संसं० ॥ ३ °सयं जा° गो ३ उ० ॥ ४ °तेण सुयधरेण म° शां० ॥ ५ °णाभोए उ २ विना ॥

जं च गीयं विण्हुकुमारनिस्सियं देव-गंधव्वमुहुग्गयमवधारियं विज्जाहरेहिं, तं पहाणेसु रायकुलेसु घरेइ तं च मया सामलीए समीवे वट्टमाणेण पुव्वसिक्खियं गीइयं सव्वं सरस्सतीए वीणापरिचियाए तं मे परिकहियं विण्हुगीइयं ॥

तओ सा विण्हुगीइयं गंधव्वदत्ता अहं च वीणं छिवित्ता गंधारगामसमुच्छणाए पगीया मो रत्तं तिट्ठाणकरणसुद्धं ताल-लयगहसमं। अवसाणे गीयस्स घुट्ठं नागरेहिं—अहो! समं सुकुमालं च वाइयं गीयं च त्ति। तओ पुच्छिया परिओसविसप्पियमुहेण सेट्ठिणा तम्मि अहिगारे निउत्ता आयरिया—केरिसं गीयं वाइयं च? त्ति। तओ तेहिं भणियं—अज्ज दुहियाए गीयं तं वाइयं पडुजाइणा, न गीयं पडुजाइणा तं वाइयं अज्ज दुहियाए त्ति। तओ उसारिया अब्भिंतरजवणिया। भणियं नायरएहिं—ठिओ दाणिं संघसो, खीणो ऊसवो नयरस्स, नियत्तो वीणावावारो, पत्ता भत्तारं गंधव्वदत्ता। तओ णायरा सेट्ठिणा परेण सक्कारेण पूइया विसज्जिया।

अह चारुदत्तेण भणिओ—तुब्भेहिं दिव्वेहिं पुरिसक्कारेण लद्धा दारिया गंधव्वदत्ता एईसे दाणिं अविग्घेण पाणिं गेण्हह एसा लोगसुई—माहणस्स किल चत्तारि भारियाओ—माहणी खत्तिणी वइसी सुद्दि त्ति 'एसा पुण मे अणुरूवा भारिया, कारणओ पुण विसिट्ठतरी व होज्ज' तक्केमि। तओ मे चिंता समुप्पण्णा—केण मण्णे कारणेण भणियं सेट्ठिणा 'इमा विसिट्ठा दारिय' त्ति?। पवेसिओ य म्हि अब्भिंतरिं, उवट्ठियाओ पडिकम्मकारिगाओ, ताहिं मे कयं रायाणुरूवं पडिकम्मं, दिण्णाणि अहयाणि वत्थाणि, तओ म्हि परिहिओ, कयाणि य वरकोउगाणि, आगओ मि सुहिजणपरिवारो चाउरतं आकुलं बहुवग्गेण सेट्ठिस्स। पससइ म इत्थियाजणो—जइ वि चिरस्स लद्धो वरो गंधव्वदत्ताए तो वि अणुरूवो, अहवा निरुवमरूवो कामदेवो एसो त्ति। तओ मे आणीया गंधव्वदत्ता सरस्सती विव रूववती, तरुणरविमंडलप्पहासा, कुंडलजुयलप्पभाणुलित्तनयणलोभणवयणकमला, महानिवेसनिरंतरहारपरिणद्धतालफलाणुकारिपओहरा, पओहरभरविलसमाणवलिसोहियतणुयमज्झा, पउमिणिपलासपिहुल-मसलसोणिफलगा, पउमपत्तसुकुमाल-सहिय-पीवरोरू, पउमरत्तकुवलयमयभूसणुज्जलमणहरतरहत्थकिसलयबाहुलइया, पासत्तसणाहगूढसिरजंघदेसा, सरससरुरुहकोमलपसत्थचलणा, समवललितकलहंसगमणा। अणिज्जमाणी इव लज्जाए पासे य मे कया अम्मगाहिं लच्छी इव कुबेरस्स। भणियं च सेट्ठिणा—सामी! किं तुब्भ कुल-गोत्तेण? हुवउ हुयवहो उदाहो दारिगा य त्ति। तओ मया चिंतियं—एसा इब्भदुहिया, केण मण्णे कारणेण सेट्ठी एवं भासइ? त्ति। मया विम्हयं काऊण भणिओ—एत्थ कारणे तुमे पमाणं। तओ सो गहियाकारो मम भणइ—सामि! कहिस्सं मे कारणं, जेणेत्थ मया विण्णविया आभरणथाणमपत्तं रयणं विणासियं होइ। तओ विहिणा हुओ हुयवहो। गा

१ गीयय शां ॥ पवममेऽपि ॥ २ °त्तरसतं° शां ॥ ३ सो की १ विना ॥ ४ ओसा° शां ॥ ५ °हरं शां० ॥ ६ मज्झ म° शां ॥

ट्ठिओ मि पाणिं गंधव्वदत्ताए सेट्ठिणा । मंगलेहिं अइणीओ मि गब्भगिहं सह पियाए । मुंदितमणस्स य मे पवियारसुहफला अइच्छिया राई ।

गएसु य वरकोउयदिवसेसु सुग्गीव-जसग्गीवा उवट्ठिया चारुदत्तसमीवं, तेहिं भणियं—गहवति! सामा विजया य दारियाओ गंधव्वदत्ताए सहीओ, तीसे अणुमए भयंतु ते जामाउयं । ततो तेण मम निवेदितं कारणं, मया च पिया कया पमाणं । तीसे अणुमए ता वि बहुसक्कार पाविया दो वि। रमामि य तिहिं वि सहिओ भारियाहिं, विसेसओ पुण गंधव्वदत्ताए वड्ढइ मे पीती, गुणा मं रमावेंति न किंचि परिहायइ परिभोगस्स ।

गएसु बहूसु दिवसेसु कयाइ भुत्तभोयणो अच्छामि आसण्णगिहे सावस्सयासणनिसण्णो । ततो उवगतो सेट्ठी चारुदत्तो, सो मं अंजलिकम्मेण पूएंतो लवति—जयंतु सामिपाया!, वाससहस्साणि वो पया आणं पालेंतु सह पियाहिं। ततो मया पूइओ गुरुभावेण, विदिण्णे आसणे णिसन्नो । ततो मं भणइ—सामि! जं मया पुव्वं वुत्तं 'एसा दारिया तुम्हं अणुसरिसी विसिट्ठा वा होज्ज' त्ति तं कारणं कहइस्सं, संदिसह । मया भणितं—सेउवग्घायं[3] कहसु त्ति । ततो पभणिओ—सुणह सामि!—

चारुदत्तस्स अप्पकहा गंधव्वदत्तापरिचओ य

आसी य इह पुरीए चिररूढपरंपरागओ उभयजोणिविसुद्धे कुले जातो सेट्ठी भाणू णाम समणोवासओ अहिगयजीवाजीवो साणुक्कोसो । तस्स तुल्लकुलसभवा भद्दा नाम भारिया, सा उब्बपसवा पुत्तमलभमाणी देवयणमंसण-तवस्सिजणपूयणरया पुत्तत्थिणी विहरइ ।

कयाइं च सेट्ठी सह घरिणीए पोसहिओ जिणपूयं काऊण पज्जालिएसु दीवेसु दब्भसंथारगओ थुइमंगलपरायणो चिट्ठइ । भयवं च गगणचारी अणगारो चारुनाम उवइओ । सो कयजिणसथवो कयकायविउस्सग्गो आसीणो, सेट्ठिणा पच्चभिण्णाओ । ततो ससंभमसमुट्ठिएण सादर वंदिओ 'चारुमुणिणो' त्ति भणंतेण। तेण वि महुरभणिएण भणिओ—सावग! निरामओ सि? अविग्घं च ते तव-वयविहिसु? त्ति । सेट्ठिणा भणिओ—भयवं तुम्ह चलणप्पसाएणं । *तित्थयरस्स नमिसामिणो चरियसबद्धं कहं कहिउमारद्धो ।

कहंतरे य घरिणीए कयंजलिवुडाए विण्णविओ—भयवं! अत्थि णे विउलो अत्थो. जो तस्स भोत्ता कुलसताणहेऊ लोगदिट्ठीए सो णे पुत्तो होज्ज?. संदिसह तुब्भे अमोहदंसी । ततो भयवया चारुमुणिणा भणिया—'भद्दे! भविस्सइ ते पुत्तो अप्पेणं कालेणं' ति वोत्तूण 'सावय! अप्पमादी होज्जासि सीलव्वएसु' त्ति गतो अदरिसणं ।

ततो केणइ कालेण घरिणीए आहूओ गब्भो । तिगिंच्छगोपदिट्ठेण भोयणविहिणा वड्ढिओ गब्भो । अविमाणियडोहला य पसवणसमए पयाया दारयं। कयजायकम्मस्स य नामकरणदिवसे कयं च से नामं 'गुरुणा चारुमुणिणा वागरिओ दारओ भवउ चारुदत्तो'

१ मुहित° क ३ गो ३ ॥ २ °त्ताय स° शा० ॥ ३ सोवग्घाय कहह त्ति शा० ॥ ४ सा हुव्व° शा० ॥ ५ °मुणि त्ति शा० विना ॥ ६ °विधेसु शा० ॥

* अत्र किर्यांश्चित् पाठत्रुटित इति सम्भाव्यते ॥

त्ति । ततो धाइपरिक्खित्तो परियणेण लालिज्जंतो मंदरकंदरुग्गओ विव संताणकपायवो निरुवसग्गं वड्ढिओ । तस्स य सिद्धिस्स वयसा सरीरस्सेव पंच भूया निरवरसोहिया पंच रूयाइगुणा इव संबद्धा । तेसिं पुत्ता मम सहवड्ढिया परूढसिणेहा, त जहा—हरिसीहो वराहो गोमुहो तमंतगो मरुभूइगो । तेहिं सह कीलमाणो रमए चारुदत्तो, त धाव म जाणइ चारुदत्तो त्ति । ततो सामि[1] कलायरियस्स उवणीओ, गहिया य मे कलाओ । गहियविज्जो य पिउणा सावयधम्मं गाहिओ वयंससहिओ अच्छामि त्ति ।

कयाइ च कोमुइयाचाउमासिणीए कोऊहल्लेण जिणपुप्फारुहणनिमित्त निग्गओ मि सव यसो अगमंदिरं उज्जाणं । तत्थ चेइयमहिमा वट्टए । आणाकरवारय पुप्फसंचयकुमारसहिओ य पादचारेण पस्सामि उववणाणि रमणीयाणि पस्सवणाणि य, वणराईओ मेहनिउरुंबभूयाओ सउणगणमहुरभासिणीओ । दसणलोलुयाए य दूरम्मि गया रुक्ख-गुच्छ-लयागहणं पसन्नसलिलवाहिणीं सहिण धवलवालुयं रययवालुयं नाम नदीतीरं पत्ता मो । गहियाणि पुप्फाणि इच्छियाणि । विसज्जिया दासचेडो—वच्चह, अगमंदिरे उज्जाणे आयतणसमीवे पडिवालेह त्ति । ते गया ।

अहमवि सवयंसो नदीतीरे ठिओ । मरुभूई उइण्णो भणइ—उयरह, कीस विलंबह ? त्ति । गोमुहेण भणिओ—तुमं न जाणसि कारणं । सो भणति—किं ति ण ? । गोमुहेण भणियं—तिगिच्छगा वण्णंति—अद्धाणं परिक्कमियं ण सहसा जलमवयरियव्वं दुवे किर पायतलसंसियाओ सिराओ उड्ढगामिणीओ गीवं पाउणिय भिज्जंते तत्थ दुवे नेत्तगामिणीओ, तासिं रक्खणट्ठा उसिणाभितत्तसरीरेण नावयरियव्वं जलं अवतरंतो वा विरुद्धयाए खुज्जत्तं बधिरत्तं अंधत्तं वा पाविज्ज त्ति, एएण कारणेण वीसमतेण उयरियव्वं त्ति । ततो भणइ मरुभूई—बहुकुडुविओ गोमुहो, उयरह, धावह पाए त्ति । ततो अम्हे पक्खालियचलणा कीलिउं पवत्ता एगदेसहरितससियाणि पउमाणि गहेऊण पत्तोण य सच्छ वम्मईवियप्पियपत्तच्छिज्जेहिं रमिमो । ततो अण्णं नदीसोत्तं अइगया मो । गिहीय गोमुहेण पउमपत्तमब्भतरयं पाणिपुडाभोगसठियं निक्खित्तं सोए, दिण्णा एत्थं जुत्तपमाणा सिकया, वच्चइ य नावा विव सिग्घं । मरुभूइएण वि पउमपत्तं गहियं, छूढा बहुसिकया, भारेण य निब्बुडा तस्स कमलपत्तनावा, हसिओ वयंसेहिं । ततो लद्धोवाएण अन्नं कमलपत्तं निक्खित्तं, सोतसिग्घयाए य जिओ गोमुहो । न पावइ मरुभूई पउमपत्तणावं, अइवयसी दूरं गतो पहरिसेण वाहरति सो णे—

एह एह सिग्घं, पेच्छह अच्छरियं ति । ततो मया भणियं—सुंदर[1] साहसु केरिसयं ?

१ °कप्पपा° शां विना ॥ २ °छायरि° शा ॥ ३ °क्कासरण° शां० ॥ ४ °वय° शां विना ॥ ५ °पामिर° उ २ विना ॥ ६ °पणवा° शा ॥ ७ °चेडी शा विना ॥ ८ °मिउ प शा विना ॥ ९ °ताणि स° शां विना ॥ १० °मयवि° शां ॥ ११ °दीसुत्तं शां विना ॥ १२ °रय पत्त° शां मे० ॥ १३ °ते सि° शां० ॥ १४ वेच्छ° की ३ ॥

ति। ततो भणइ—चारुसामि! एरिसं मे न दिट्ठपुव्वं, जइ त्थ दट्ठुकामा इहमागया दच्छि-हि-त्ति । ततो भणिओ गोमुहेण—चारुसामि! न एत्थ अच्छरियं, धुवं एएण उवलंतरवि-णिग्गयं पायवमूलं दिट्ठं होहिति, ततो से बुद्धी उप्पण्णा—(ग्रन्थाग्रम्–३७००)एवं[1]कोमलेण कहं भिण्णो पासाणो? त्ति. अथवा मराली पिल्लकाणि चारिंती[2] दिट्ठा होज्ज, ततो बहुत्तयाए विम्हिओ. अहवा झिल्लिगारवं निसुय[3] 'डहरियाए एवंमहंतो सद्दो' त्ति अच्छेरं मण्णए । ततो पुच्छिओ मया—एत्तो अन्नतरं होज्ज? त्ति। सो भणइ—जं अच्छेराणं पि अच्छेरं, एवं किं भे विचारेणं? दच्छिहिह त्ति । तस्स य बहुमाणेण गया मो तं पएस। दाएइ य मरुभूतीओ[4] सोयसलिलपरिक्खित्तं अच्चंत[5]सुहुमसिकयापुलिणं पावरणंतरविणिग्गयमिव जावयरसपंडुर जुवतिपओहरं । ततो गोमुहेण भणिओ—पुलिणखंडे किं अच्छरियं? सति एरिसाणि उद्-गपरिंणद्धाणि[6] त्ति।ततो भणति—जमेत्थ अच्छेरं तं पस्सह–त्ति पयाणि दंसेइ दुवे। ततो भणिओ—जइ एयाणि अच्छेरयं ततो अम्हं जाओ पयवीहीओ ताओ अच्छेरगसयाणि त्ति । ततो भणति—एयाणि साणुबंधाणि बहूणि पयाणि, इमाणि पुण वोच्छिण्णमग्गाणि त्ति. ततो ताणि आयरेण पस्सिमो। ततो हरिसीहो भणति—का एत्थ चिंता?, जइ पुण कोइ पुरिसो एयं तीरजायं रुक्खमारुहिय साहाओ साहं सकमंतो[7] लयामडवाए पुलिणं अवइण्णो, पुणो पायवं चेव आरूढो त्ति । ततो गोमुहेण भणियं वियारेऊण—न एयं जुज्जइ. जइ पायवाओ अवइण्णो होंतो ततो हत्थ-पायसघट्टणापरिसडिएण तरुण-जरढ-परिणएण पत्त-पुप्फ-फलेण पुलिणं सलिलं च अफुण्णं होंतं । ततो भणिओ हरिसीहेण—कस्स उ इमाणि पयाणि? त्ति।ततो भणियं गोमुहेण—आगासगामिस्स पयाणि त्ति । ततो भणियं हरिसीहेण—किं देवस्स? रक्खसस्स? चारणसमणस्स? रिद्धिमतो रिसिस्स? । भणियं गोमुहेण—देवा किर चउरंगुलभूमिं न छिवंति रक्खसा महाबोंदी, तेसिं महप्प-माणाणि पदाणि. पिसायाणि जलबहुलपदेसभीरूणि, ण वियरंति इमम्मि पदेसे. रिसी तव-सोसितसरीरा, तेसिं किसयाए मज्झदेसुण्णयाणि होंति. चारणा दगतीरे जलचरसत्तपरि-त्तास परिहरंता न सचरति। भणियं हरिसीहेण—जइ न एएसिं पदाणि, कस्स णं[8] इमाणि पयाणि? त्ति । गोमुहेण भणियं—विज्जाहरस्स त्ति । हरिसीहेण भणियं—जइ पुण विज्जा-हरी होज्ज । ततो भणियं गोमुहेण—पुरिसा सत्तवंतो उच्छाहगामिणो, तेसिं हिययगरु-याए पुरओ पयाणि पीलियाणि भवंति इत्थीणं पुण कलत्तगुरुयताए पण्हियासु उविद्धाणि भवंति, तेण कारणेण ण इमाणि विज्जाहरीए । पुणो भणति गोमुहो—चारुसामि! तस्स विज्जाहरस्स भारो अत्थि । पुच्छिओ हरिसीहेण—किं पवओ सो भारो होज्ज? उदाहु सज्जुव्वणो पादवो? आउ पुव्वावराही छिद्दे आसाइओ अरी होज्ज? । भणियं गोमुहेण—जइ गिरिसिहर होज्ज तओ गुरुययाए णिमग्गाणि पदाणि होज्ज जइ पायवो होज्जा ततो

१ °वको° शा० विना ॥ २ धारती शा० ॥ ३ °सुत ड° शा० विना ॥ ४ °ओ सलिलसोयप° शा०॥ ५ अच्छत्त सु° शा० विना ॥ ६ °रिद्धाण त्ति ली ३ क ३ । °रिद्धाणि त्ति शा० ॥ ७ °कम्म° क ३ गो ३ मे०॥ ८ णु शा० ॥

महियलपत्ताहिं साहाहिं बहुनिक्खेवो होज्जा न य अरी रम्म अवकासमाणिज्जति । ततो भणिय हरिसीहेण—जइ वि हु एत्तो एक्कतरं पि कारणं ण होइ, को हु से भारो अत्थि ? त्ति । भणिय गोमुहेण—अम्मय त्ति । हरिसीहेण भणिय—न जुज्जइ एस भारो त्ति, विज्जाहरीओ वि आगासगामिणीउ त्ति । भणिय गोमुहेण—सा धरणिगोयरी पिया तस्स त्ति, ततो तीए सह रमणीयाणि थाणाणि सचरति । भणिय हरिसीहेण—जइ से पिया, कीस ण विज्जाओ न गाहेइ ? त्ति । भणिय च गोमुहेण—मच्छरी सबाहिसंकियकामो 'मा साहीणविज्जा सच्छंदगमणा होहिति' त्ति न गाहेइ ण विज्जाओ । भणिय हरिसीहेण—एयं पुण कह जाणसि—अम्मगा से अत्थि अविज्जाहरी य ? त्ति । भणइ गोमुहो—इत्थीओ अधोकायगुरुईओ, पणयगाहणदच्छो य वामहत्थो, ततो एयं किंचि उव्विद्ध वामपादं । हरिसीहेण भणिय—जइ इत्थीसहिओ, कीस णेण इमं उवइऊण मुक्कमपरिमुत्ता ? । गोमुहो भणइ—इम पुलिणं आलोकरमणीय सलिलपरिक्खेव पायवघकारेण य हरियमणिवेइयालवणपरिक्खेवमिव पत्तेण चिंतिय अजोग्गं रतीए आविकिण्णभप्पयाए अवस्स तेण आसण्णेण होयव्व रमणीओ अय पएसो दुक्ख परिवहउ मग्गेज्जइ से बीहि त्ति । दिट्ठाणि य अण्णत्थ अवगासे चत्तारि पदाणि, दसियाणि से । विभत्ताणि गोमुहेण—इमाणि इत्थिपयाणि खिखिणिमुहनिवडियाणि पण्हत्थणूपुरकिंचिबिंबाणि य दीसति इमाणि विभत्ताणि पुरिसस्स त्ति । ततो त मिहुणपयपतिं अणुसज्जमाणा गोमुहवयणविम्हिया वच्चामो । दिट्ठो य णेहिं कुसुमिओ सत्तिवण्णो पायवो भमरभरिओ अंजणधाउकुम्भासो इव रययपव्वओ सरयकालसस्सिरीओ । भणिय च गोमुहेण—चारुसामि ! इमं पत्ताए सत्तिवन्न तीए इत्थीए इमीए साहाए गुलुको पिच्छिओ अपावतीए पिओ पणइओ । मया भणिओ—किह एयं ? त्ति । भणति—इमाणि से पयाणि मुक्कपण्हियाणि गुलुक कखतीए त्ति विज्जाहरो य वररोही, गहिओ णेण अयत्तेण गुलुको, जम्हा से अभिण्णलेहाणि पदाणि पुलिणे दीसति सो य दाणि अणेण भत्तुणा ण दिन्नो तीसे न य चिरकालयइक्कतो लक्खिज्जइ, जेणेत्थ पयरभजणपवत्ता अज्ज वि खीरं मुयति पुप्फविंट त्ति । ततो भणिओ हरिसीहेण—गोमुह ! जुज्जइ कारण अचिरमग्गस्स थवगस्स ण उ तीसे अम्मगाए ण दिण्णो त्ति, कह पियाए पणइओ न दाहिति ? । भणिय गोमुहेण—कामो पणयलोलो, तीए य अण्णे ण किंचि पणइयपुव्वो, ततो ण रमते जायणालोल पस्समाणो सा वि ण सवओ परीइ 'देहि मे पियं !' त्ति जायमाणी पयाणि तस्स पयाणि तीसे पयपरिक्खित्ताणि दीसति चारुसामि ! सा तस्स विज्जाहरस्स अविज्जाहरी कुविया पडिहयपणय त्ति । हरिसीहेण भणिओ—एयं किह जाणसि ? त्ति । भणइ गोमुहो—एयाणि तीसे पदाणि कोहसमुत्थाणि विणिक्खित्ताणि, इमाणि य विज्जाहरस्स अणुधावमाणस्स, स एसा विकिट्ठधरपयसचारा पयपद्धती तीसे य पथ रुद्धतस्स ओसकियवीसमणपीलिएण य पथो रुद्धो

१ °रिद्धप शां विना ॥ २ °रकंति° शां ॥ ३ °पणम° शां विना ॥ ४ °तीए पुप्फ° गो० मेदा ॥

इमं च सा अइगया[1] सहासनिरुद्धं गयपच्चागया वाणी. अण्णं च मया चारुसामि! सुट्ठु भणियं 'सा अम्मगा अविज्जाहरि' त्ति एयाणि से पदाणि गय-पच्चागयाणि जइ विज्जाहरी होंति(ती) कुविया आगासेण वच्चंती दिण्णो य से तेण कोहसमुत्थाणे सत्तिवण्णगुलुक्को. सो अणाए गहेऊण तस्सेव उरे[2] पुप्फोकओ (पुप्फोडिओ), समं च कोहेण अवकिण्णो, पडिओ य से पाएसु एस से दीसए तीसे पदसमीवे मउडगंठिनिपीलिओ सिक्कयासचओ. सा य सुकुमालकोपत्ता ज च लहु से पसण्ण त्ति लक्खिज्जंति[3], जओ से अडंताणं पुलिणे[4] अहिलिहियाणि विय पयाणि दीसति पदपज्जाय चारुसामि! तीसे सक्कराय पाओ परिक्खित्तो विज्जाहर पस्समाणीय. सा य 'वेयणापरिगय' त्ति तेण सभमेण से उक्खित्तो चरणो. तीय वि य वेयणागुरुययाए अंसेऽवलंबिओ. एवं दीसए—अम्मगाय एगं पद, दुवे विज्जाहरस्स त्ति ततो णेण अवणीया सा सरुहिरा सक्करा । भणिओ हरिसीहेण—जइ पुण केणइ अलत्तगरससम्मोइया अवछूढ त्ति । गोमुहो भणति—कडुओ अलत्तगरसो, न तत्थ मच्छियाओ नीलिंति. विस्सं मधुरं मंसनिस्सदुसज्जक्खयसोणियं, ततो महुरकवलयसिव एसा सक्करा गहिया मच्छिगाहिँ चारुसामि! तेण विज्जाहरेण सा उक्खित्ता अम्मगा बाहूहिं । हरिसीहेण भणियं—किह जाणसि? त्ति । भणियं च गोमुहेण—वोच्छिण्णाणि एयाणि पदाणि इत्थीए, पुरिसपयाणि दीसति त्ति किंच चारुसामि! एस मम बुद्धी—जो एसो अम्हं पुरओ भमरगुंजमाणकुसुमलयापरिक्खित्तो समभूमिभागत्थिओ आवासो विव सिरीए लयाघरओ, एत्थ तेण विज्जाहरेण सजुवइएण भवियव्व. इहेव ट्ठिया भवामु । 'न जुज्जए रहोगतो दट्ठु' ति ठियामो[6] त्ति । तओ य कस्सइ कालस्स लयाघराओ बहुवण्णपिंछच्छादितो मयूरो निग्गतो सह सहचा(च)रीए वणपरिचयनिस्संको । ततो भणियं गोमुहेण—चारुसामि! न इत्थ लयाहरए विज्जाहरो । भणिओ हरिसीहेण—एत्तियं वेलं 'सद्धुत्तिउ' त्ति वोत्तूण भणसि 'नत्थि' त्ति । ततो भणति—एस मोरो निव्वियारो निक्खंतो जइ मणुस्सो एत्थ होंतो ततो भयत्थयाए सवियारो णेंतो । तओ हं गोमुहवयणं पमाण करेंतो [गतो] लयाहर सवयंसो, पस्सामि यऽत्थ मदणमणीयं कुसुमसत्थर अचिरकालभुत्तत्तयाए अब्भुसंतमिव । ततो भणियं गोमुहेण—अचिरकालनिक्खंतो इओ विज्जाहरो, एयाणि से दीसति तस्स पत्थियस्स पदाणि. अवस्सं खु तेण इहाऽऽगंतव्व. इमं से पादवसघलग्गं दीविचम्मकोसरयणं खग्गं, एयसिं कज्जे अवस्स नियत्तियव्वं । तं च पदपद्धतिं निज्झायंतो गोमुहो भणइ—चारुसामि! महंते[9] हु ससए वत्तए सो विज्जाहरो, अवि णाम न जीवेज्ज त्ति । पुच्छिओ मया गोमुहो—कहं? ति । भणति—एयाणि किण्ण पस्सह अदीसमाणनिग्गमाणि आगासउप्पयणेण ऊसियसिकयाणि अवराणि दुवे पयाणि?. सो नूणं विज्जाहरो इह पाडिओ, एस से अक्खित्तपाडियस्स सरी-

१ °या मो हास नि° क ३ ली ३ गो ३ । °या साहस नि° मे० ॥ २ °रे णिपु° उ २ ॥ ३ °ज्जत्ति शा० ॥ ४ °णे आलियाणि शा० विना ॥ ५ °गहिय उ २ विना ॥ ६ ली ३ विनाऽन्यत्र—°मो तत्तिए । त° शां०। °मो त्ति । एत° क ३ गो ३ उ० मे० ॥ ७ °रमाणी° उ २ मे० विना ॥ ८ °ब्भुसंतमि° शा० ॥ ९ °ते उवसग्गे वत्तए उ० मे० ॥

रविंबदसणकओ अवगासो दोण्ह वि सगासुयगो य सिकयाविक्खेवो दीसए इओ पक्किओ इमाणि इत्थिपदाणि उवयताणि दीसति, ततो साणुकपा अणुवयामु कहणिमग्ग। दिहाणि य पकिण्णाणि भूसणाणि, मारुयाकंपिओयसब्भावोच्छेओ य इव पीयकं खोम। ततो भणति गोमुहो—अहो चारुसामि! सो विज्जाहरो पच्छा अवरेण अरिणा समासाइओ दीसत्थो सा य भारिया से अविज्जाहरी असमत्था पइकारे धरणिगोयरएण भावेण ति। भणिओ य मया मरुभूइओ—गेण्हसु एयाणि खोम-भूसणाणि, एय च चम्मरयण खग्ग जहिं दच्छीहामो तहिं से अप्पिस्सामो त्ति। पत्थिया मो कहणिं अणुसज्जता, अण्णत्थ सलइकोट्टरे दिट्ठा लग्गा मुद्धजा। भणिओ गोमुहेण हरिसीहो—अग्घायसु त्ति। ततो तेण अग्घाइया, थिरगधा य ते, आयवंतत्ता य णीहारि त्ति। गोमुहेण भणिय—चारुसामि! इमे केस-वत्थत्थाइणो गधा दीहाउणो समुप्पण्णस्स इमे य मुद्धया सुगधा (ग्रन्थाग्रम्—३८००) सिणिद्धा अणुक्खयमूला य, तेण कारणेण सो विज्जाहरो दीहाऊ उत्तमो य अणेण रायाहिसेओ पावियव्वो, त अणुमग्गामु ण। ततो अम्हे पत्थिया। दिट्ठो य विज्जाहरो कयवपायवससिओ पचहिं आयसेहिं खीलेहिं विद्धो पचहिं व इदियत्थेहिं अंतराया—एक्को मज्झसधिम्मि, दो दोसु हत्थेसु, दो दोसु पाएसु। तस्स य मे दुक्ख दट्ठूण अत्तणो मे दुक्ख जाय। ततो मया तस्स वेयणापरिगयस्सावि णिज्झाइया अविवण्णा मुहच्छाया, सोम्मा गतच्छवी, आयसकीलुप्पालिएसु वि हत्थपाएसु लोहिय न निगच्छति, तिव्ववेयणापरिगयस्स वि अमदो ऊसासो। ततो ह एगते निसण्णो पायवच्छायाए, भणिया य मया वयसा—सुयपुव्व मया साहुसमीवे विज्जाहरकहासु पवत्तासु—विज्जाहराण किल चम्मरयणमडुकीसु ओसहीओ चत्तारि अत्ताण रक्खिउ ततो चम्मरयणमडुकीं निज्झायह। ततो सा वयसेहिं विघाडिया, दिट्ठा ओसहीओ, न उण जाणामि विसेस, ततो मया भणिया वयसा—ओसहीओ सिलासु घसिऊण खीररुक्खे सञ्च निवेसेह तत्थ परिच्छिऊण विज्जाहरं जीवावेह। ततो तेहिं परिच्छियाओ सण्णायाओ य—इमा विसल्लकरणी, इमा सजीवणी, एसा सरोहिणी। ततो ते मया उवट्ठिया विज्जाहरं ओसहीओ पत्तपुडेसु काऊण, तस्स य जो पाणहरो कीलो उत्तमगे सो मक्खिओ विसल्लीकरणीए, ततो पडिओ महीतले आयवतत्त पिव कमल, अणोयत्त य से वयणकमल, ततो त अवलबिय मरुभूइएण। ततो लद्धबुद्धिविसेसेहिं दो वि वाम-दाहिणा हत्था मोइया, ते अवलबिया हरिसीह-तमतएहिं। सो य अरिणा मम्मत्थाणाणि परिहरतेण बद्धो परिकेसबुद्धीए, तेण सो न विवण्णो। ततो पाएहिंतो विमोतिओ, कयलिपत्तसत्थरे य सन्निवेसिओ पीयवकचरीओ। अह पुण गोमुहसहिओ पुरत्थिमेण णाइदूरे अवक्कमिऊण ठिओ पायवतरिओ, दत्ता य सरोहिणी वणेसु। भणिया य वयसा—कयलिपत्तेहिं ण सलिलकणेहिं वीएऊण लद्धसण्ण नाऊण मम समीव एज्जह त्ति। तेहिं जहा भणिय त कय। पच्चागयसण्णो य सहसा

१ °वयामु शां विना॥ २ °कपिय स भा° उ २॥ ३ °वे स° शां विना॥ ४ सरो° शां विना॥

उद्धाइओ, भणियं च णेण गंभीरेण सरेण—ठाहि ठाहि धूमसिह!, दुरायार! कहिं ते गओ मुच्चिहिसि? । ततो तं न पस्सति जस्स कुद्धो, अपडिसूरं च गज्जिऊण विलिओ । अम्हे पुण णीसद्दा ठिया । ततो दिसावलोयं काऊण कं वि अपस्समाणो कमलसंडमंडियं तदासण्णं सरमवतिण्णो, उत्तिण्णो य ण्हायसरीरो तहेव पीयंवरो कणगाभरणभूसिओ अब्भुज्जलिओ विय कोमुइसमओ । कओ य णेण उत्तरदिसिमभिमुहेणं कस्स वि नमोक्कारो ।

गोमुहेण भणियं—चारुसामि! इदाणिं जाणति मित्ता-ऽरिविसेस त्ति । कओ अम्हेहिं आलावो अण्णोण्णसद्धिं । ततो सो उवगतो अम्ह समीवं, भणियं च णेणं—भो! अहं अरिणा बद्धो केण सोइओ? त्ति । भणिओ गोमुहेण—अम्हं इब्भपुत्तेण चारुसामिणा साहुसमीवाओ विण्णायओसहिपभावेणं ति । ततो तेण कओ मम पणामो, भणियं च णेण—अहं तव जीवियकयक्कीओ दासो त्ति । भणिओ मया—मा एव भणसु, भाया सि ममं । अहिनंदिओ य निसण्णो धरणियले, पुच्छिओ हरिसीहेण—केण इमं सि आवतिं पाविओ? केण वा कज्जेणं? ति । ततो पवत्तो कहेउं—

अमियगतिविज्जाहरपरिचओ

अत्थि दाहिणाए सेढीए सिवमंदिरं नाम नयरं, तत्थ विज्जाहरराया लोयवहुमओ महिंदविक्कमो नाम, तस्स देवी सुजसा नामा, तीसे पुत्तो गहियविज्जो आगासगमण-दच्छो अमियगती नाम, तं ताव जाणह ममं 'अमियगतिं'त्ति । सो हं सच्छंदगमण-लालसो अण्णया कयाइ वेयड्ढपायमूले सुमुहं नाम आसमपयं धूमसिह-गोरिपुंडेहिं वयं-सेहिं सह गतो । तत्थ मम माथाए जेट्ठो भाया खत्तियरिसी हिरण्णलोमो नाम तावसो, सो य मया वंदिओ । सो भणइ—'पुत्त! अमियगति! सागयं'ति त्ति भणंतेण रूवस-पण्णा सहावसिणिद्धगत्ता सिरिसमुदए वत्तमाणा उवणीया कण्णगा । भणियं च णेण—अमियगइ! एसा मम दुहिया सुकुमालिया नाम दारिया, जइ ते रोयइ एसा तो मए दत्त त्ति । तं च रूवस्सिणिं दट्ठूण मया अम्मा-पिऊहिं अणुण्णाए रागेण भणियं—पडि-च्छिया मया गुरुवयणं पमाणं करेंतेणं ति । ततो विहिणा गहिओ से मया पाणी । कुल-धम्मेण रमामहे[3] सह तीए, आणीया य नयरं, पूइया य राइणा । ण तं विज्जाओ गाहेमि 'मा सच्छंदगमणा होहिति'त्ति । धूमसिहो य मम विरहे समयणो वुग्गाहेइ सुकुमालियं । सा वि कहेइ तस्स विकारा-ऽऽकार-भासियाणि, अहं न सद्दहामि, अत्थि पुणो मे संका ।

कयाइ च कयपडिकम्मस्स मे केसे सठवेइ पिया धूमसिहो य, अहं पुण सयं आयं-सकं धरेमि । पिट्ठओ य ठितो धूमसिहो अंजलिं करेइ से पत्थणापुव्वं । सो मया आय-सयच्छायाए दिट्ठो । ततो मया रूसिएण भणिओ—अणज्जसरिसो ते मित्तभावो, अवक्कम, मा ते विवाडेहं ति । सो पडिभिण्णो सकिओ निग्गओ, न मे दंसणमुवेइ । सह पियाए

१ जाहि जाहि ली ३ । थाहि थाहि शा० मे० ॥ २ °त्थ राया विज्जाहरलोय° शा० ॥ ३ °मामि य सह ली ३ ॥ ४ °ज्ज! पुरि° ली ३ ॥

उदुसुहाणि य अणुभवमाणस्स अप्पमत्तस्स वच्चए कालो। अन्न म्हि सहारो इहमागतो, ओवइओ दट्ठूण आलोयरमणीयं इमीए नदीए पयोधरभूयमिव पुलिणखंडं। ओवतियस्स अपच्चत्तीसम रईय त्ति परिचत्त। ततो गोमुहपरिकहियं सव्वं परिकहियं—पय-कुविय पसादित रमणीयाणि जाव लयाघराओ निग्गतो समासादिओ मि विज्जाविरहिओ सत्तुणा धूमसिहेण बद्धो नीया य सुकुमालिया विक्कोसमाणी तुब्भेहिं अम्हे सयाए बुद्धीए ओसहिवलेण जीवाविया त तुम्हे त्थ मे चारुसामी परमबंधू आणवेह किं पियं उप्पाएमि? लहु च मे विसज्जेह सा (सा) तवस्सिणी सुकुमालिया मम जीवियनिरासा मायामयं तेण उवणीयं मम कलेवरभूयं पस्समाणी पाणे परिचएज्ज, त परिसाएमि णं, तस्स य धूमसिहस्स पडियरेज्ज त्ति। ततो मया भणिओ—'वच्च, समेहि भारियाए सह, सुहय सोहणेसु कज्जेसु सुमरिज्जासु' त्ति विसज्जिओ मम पणमिऊण उप्पइओ॥

अम्हे वि उट्ठिया उज्जाणविभूतिं पिच्छमाणा निग्गया वणाओ, उवगया अगमंदिरं, पविट्ठा जिणाययणं, 'चेडेहिं उवणीयाणि पुप्फाणि, कयमच्चणं पडिमाणं, थुतीहिं वंदणं कयं, निग्गया मो जिणभवणाओ, पत्थिया मो नयरं। ततो हरिसीहो लवइ—चारुसामिणा अमियगतिं मोयंतेण धम्मो पत्तो जीवियदाणेण। गोमुहो भणइ—सच्चं धम्मो पत्तो, अधम्मो वि पुणेत्थ दीसए—अमियगती गतो धूमसिहं साणुबंधं विणासिज्जति। तमं तगो भणइ—अत्थो हु पत्तो चारुसामिणा मित्तमूलो। गोमुहो भणइ—सच्चं एयं, अणत्थो य दीसवि धूमसिहपक्खाओ। हरिसीहो भणति—तो किं खु पत्तं? । गोमुहो भणति—कामो त्ति। तेण भणियं—कहं?। भणइ—कामो नाम इच्छा, अमियगतिजीवियमिच्छियं चारुसामिणा, स णूणं पत्तं जीवावितेण। एरिसीए कहाए पत्ता मो भवणं, अवगयपरिस्समा ण्हाया कयबलिकम्मा, भुत्तभोयणाण गतो दिवसो, वच्चइ य उऊ सुहेण।

अण्णया कयाइ अम्मा गया भाउयस्स सव्वट्ठस्स गिहं, तस्स य दुहिया मित्तवती नाम रूववती, भोयणकाले य अम्मा रुम्मती य सगिहं पत्थिया 'बहु मे कायव्वं'ति भणती। माउलेण भणिया—कीस एवं निसिणेहा सि?, जइ वि भाउज्जायाए सह न ते समाही मम पसायं करेहि त्ति। सा भणइ—जइ मे दारियं देसि तो संठिया पीई, इहरहा वोच्छिण्णा इह पीई संपयं। तेण पणएण भणिआ—को अण्णो पभवति तुमं मोत्तूण दारियाए? जओ एवं भणसि जइ पुण मम पसण्णा सि तो दिण्णा मय त्ति। एवं भणिए परितुट्ठा भुत्तभोयणा सभवणमागता। संदिट्ठा य णाए चरमयहरया ठियपडियानिमित्तं। ताओ पुण तं समयं रायकुले अच्छति। ततो पियपुच्छयजणस्स दिज्जए गंधपुप्फं। तावो गिहागओ वद्धाविओ जणेण दारियासंपयाणेण य पससावयणेहिं। पुच्छियाए य अम्मयाए से कहियं—मित्तवती सव्वट्ठेण दत्त त्ति। तातेण भणियं—दुट्ठु ते कयं दारियं पडिच्छंतीए, चारुसामिणा अहुणा गहियाओ कलाओ, विसयपसत्तस्स य से सिढिलाओ

१ उववइ° उ २ मे विना॥ २ चेडीहिं शा विना॥

होज्जा। अम्माए भणियं—कहं कण्णं लद्धं अवमण्णेसि ? त्ति । तं च मे कहियं चेडीहिं । ततो सोहणे दिवसे संवच्छराणुमए य मुहुत्ते पाणिं गाहिओ मि विहिणा तातेण । मित्तवतीय कयाणि कोऊयाणि कुलसरिसाणि । रमामि हं गंधव्वे नट्टे आलेक्खे य ।

कयाइं च मित्तवती सगिहं गया, तत्थ माउलाणीए य नियगाणि भूसणाणि दाऊण मज्जिय-पसाहिया-जिमिया विसज्जिया, अम्ह संतगाणि आभरणाणि तत्थेव ठवियाणि, गिहागयस्स माउलगस्स दंसियाणि विकाले—इमाणि मित्तवतीए ससुरकुलसंतगाणि भूसणाणि, मया से अत्तयाणि दत्ताणि त्ति । तेण भणिया—कीस न पेसियाणि वीवाहिणीते ? भणिहो 'परियट्टएण दिण्णाणि आभरणाणि' त्ति। तीए भणियं—पच्चूसे सयमेव पच्चप्पिणिस्सं त्ति । तस्स य वयणेण माउलाणीया पभायसमए अम्ह घरमागया । अहं उवज्झायसमीवं गतो। पडिबुद्धा य मित्तवती उवगया माउयाए समीवं । पच्चप्पियभूसणाए य माउलाणीए दिट्ठा अपरिमलियविलेवणा, ततो णाए पुच्छिया—पुत्ति ! चारुसामी किमिह अज्ज न वुच्छो ? अथवा कुविओ ते ? कीस एगागिणी वुच्छा ?। ततो तुण्हिक्का चिरमच्छिऊणं भणइ—पिसायस्स दाऊणं बाहसि मं । तं च अम्माए सोऊणं सरोसं भणियं—हला ! बावत्तरिकलापंडिओ वि चारुसामी तव पिसाओ ?। सा भणइ—पिउच्छा ! मा कुप्पह, जो विरत्ते वि एगागी नचइ, गायइ, साहुक्कारे कस्स वि देइ, हसइ य, सो किह साभाविओ ? अहं छिण्णि कज्जे विं पस्समाणी पिसाएण कह वि न घेप्पामि त्ति । त च वयणं सोऊण अम्मका से रुदंती अम्मं भणइ—तुम्हेहि जाणंतीहिं मम वेरनिज्जायणं कयं, जं पुव्वं न कहिओ दारगस्स दोसो । अम्माए य भणिया—होउ, सह धूयाए अवत्तव्वाणि घटसि, न ते (ग्रंथाग्रं—३९००) सोहणं भवति. जह चिर सोचिहिसि तह करेमि. वच्च, मा मे दंसणपहे ठाह त्ति । ततो सा विमणा सभवणं गया । तीसे य मएण माउलो सव्वट्ठो आगंतूण अम्मं किर भणति—कीस दारगस्स चारुसामिणो ताणे किरिया ण कीरति ? कीस उवेक्खह ? त्ति । ततो अम्माए फरुसिओ—धूयं भज्जं च रक्खसु त्ति जहा पिसाएण ण घेप्पंति घरिणीए सोऊण ममं पलीवेसि. वच्च, अवेहि, मा छलिओ सि नामं ति । सो गतो । एयं पि मे सेज्जापालीए कहियं सपरिहासं ।

ततो अम्माए कुवियाए मम वयंसा गोमुहादी सद्दावेऊण भणिया—कुणह मे पियं, चारुसामी गणियाघरे पवेसह त्ति । गोमुहेण भणियं—अम्मो ! ताओ णेण रूसिहिति, वसणपडिओ य दुम्मोयओ य होहिति, अलं गणियाघरपवेसेणं ति । ततो भणति—जइ सेट्ठी रूसिहिति मज्झं रूसिहिति. तुम्हे अपडिकूला मम वयणं करेह किंच वो वसणदोसकहाए ? "वसणी अत्थं विणासेज्ज" त्ति सो मण्णे मम चिरचिंतिओ मणोरहो 'पुत्तो मे अत्थपरिभोत्ता कहं होज्ज ?' त्ति. सो जातो. जवि वित्तं विणासेइ वेसवसं

१ °णिधेति प° शा० ॥ २ °उछगासमी° शां० ॥ ३ अधवा उ० मे० ॥ ४ विसप्पमा° शा० ॥ ५ पसा° क ३ शां० ॥

पत्तो सवो पुण्णो मे मणोरहो । ततो तेहिं पडिवण्णं । मम य कहिओ एस सब्भावो चेडीए—अज्जउत्त ! इदाणिं फिर तुब्भे गणियाघरे वसिहिह ततो अम्ह दुल्लहदसणा होहिह त्ति ।

गएसु य कइसु वि दिवसेसु विण्णार्वेति मं वयसा—चारुसामि ! वच्चामो उज्जाणं, तत्थ भुत्तभोयणा कीलिऊण एहामो त्ति । मया भणिया—जइ भोज्जं कीस मम पढमं न कहियं ? । ते भणंति—अण्णवक्खेवेण, ण य तुह किण्ण होइ जओ विहत्तं करेसि ?। ततो हं तेहिं सह पत्थिओ, पत्ता य मो उज्जाणं, 'आयवदोसेण विसिओ मि' त्ति भणंतो ठितो मि पायवससिए पएसे वीसामकयबुद्धी । ततो हरिसीहो समीवपोक्खरणिमवतिण्णो, मुहुत्तमेत्तं अच्छिऊण वाहरति मं—एह, अच्छेरयं पेच्छह त्ति । गओ मि तस्स वयणेण, अवइण्णो पोक्खरिणिं, भणिओ य—साह, किं ते अच्छेरं दिट्ठं ? ति । ततो तरुणिजुवतिवयणलावण्णचोराणि पउमाणि दसेइ—पस्सह, पउमेसु कमलरागच्छवी रसो अदिट्ठपुव्वो मया, को होज्ज ? त्ति । गोमुहेण णिज्झाइऊण चिरं भणियं—एयं पोक्खरमधु देवोपभोग्गं इह किह वि संभूयं गिण्हह णं अविलंबियं पउमिणिपत्तपुडेहिं ति । तओ गहियं, जाओ य से समवाओ—एयं मधुरसलोयदुल्लहं, किं कायव्वं ? ति । हरिसीहेण भणियं—रण्णो उवट्ठवेमु, ततो काहिति तुट्ठो वित्तिविसग्गं ति । वराहो भणति—रायाणो दुक्खं दीसंति, दिट्ठा वि लहुं न पसीयंति अमच्चस्स देमु, सो णे कज्जकरो भविस्सति । तमंतगेण भणियं—किमम्ह अमच्चेण ?, अमच्चा राइणो कोसवुड्ढिसमुज्जया वित्तेण सक्का तोसेउं, न दुल्लहदव्वेण वि । मरुभोईतो भणति—नयरगुत्तियस्स देमु, सो विकालचरियाए कज्जकरो मित्तत्तं उवेहिति त्ति । ततो गोमुहेण भणियं—अयाणगा तुब्भे अम्ह राया अमच्चो आरक्खिओ य चारुसामी सव्वकज्जसाहगो एयस्स एस दुल्लहदव्वस्स भायणं, एयस्स चेव पसाएण अम्हेहिं[1] वट्टति । ततो णेहिं सव्वेहिं भणिओ मि—पियसु कल्लाणेहिं ति । मया भणिया—किन्न जाणह ममं मधु मंस-मज्जाणं अविण्णायरसे कुले पसूयं ? सो मं मधुं पज्जेउं इच्छह त्ति । गोमुहेण भणिअं—चारुसामि ! जाणामु एयं, किह व अकिच्चे तुम्हे निओएमु ?, न एयं मज्जं, अमयं ति बुवति देवोपओगं मा ते अण्णहा बुद्धी भवउ अपडिकूलेंतो मंगलबुद्धीए पियसु, ण ते आयारातिक्कमो । ततो हं सामिपाया ! तेसिं अच्चसमाणं वयणेण पडिवण्णो पाउं । पच्छालियपाणि-पाओ य आयतो य पाईणमुहो पीओ य पउमिणिपत्तपुडएणं 'अमयं' ति मण्णमाणो । तं च सव्वगत्तपल्हायणं पीयस्स तुट्ठी जाया । आयतो य भणिओ वयसेहिं—अच्छह ताव पुरओ वीसमंता, अम्हे पुप्फाणि गेण्हिस्सामो त्ति । ततो पत्थिओ मि । अपुव्वयाए य पाणस्स मयसमारंभेण भमंते इव पायवे पस्सामि, चिंतेमि य—किं मण्णे अमियस्स एरिसो परिणामो ? उदाहु उवायपुव्वं मधु पाइओ मि ? त्ति । एवं च चिंतेमि ताव असोयपायवसंसिया दिट्ठा य मया अम्मया महग्घभूसणालंकियसरीरा, सुद्धाणि

१ °हिं चिट्ठंति गो ३ । °हिं द्विट्ठ ति उ मे ॥ २ °ओपओ° उ २ मे ॥ ३ °ममयकस्स शां ॥

सोगाणि परिहिया[1], पउमे व्व वत्तमाणा । सा य वाहरइ अग्गंगुलीहिं, गतो मि से पासे, 'रूववती का एस ?' त्ति चिंतेमि । सा 'सागयं' ति भणति । पुच्छिया मया—भद्दे ! का तुमं ? ति । सा भणइ—इब्भपुत्त ! अहं अच्छरा देवरण्णा तुह समीवं[2] पेसिया सेविउं । मया भणिया—ममं देवराया कहं जाणइ ? जओ तुमं पेसेइ त्ति । सा भणइ—सेट्ठी महागुणो तव पिया पयासो, तस्स पीइनिमित्तं पेसियं जाणसु, मा य ते संभमो[3] होउ, अम्हे सव्वस्स ण दंसणं देमो, ण या अम्ह पमाओ अम्हे मणुस्सो पस्सिउं समत्थो त्ति जइ न पत्तियसि एस तव वयंसा ममं न पस्सति, तुमं पि मम पभावेण ण दच्छंति, केवलं तुण्हिक्को होहि त्ति । तो ते पासगयं पि मम अपस्समाणा पुणो पुणो वाहरमाणा अइच्छिया, थोवंतरगया पडिनियत्ता 'नत्थि पुरओ[4], उवत्तो मग्गे होहिति' त्ति 'चारुसामि ! कत्थ सि' त्ति जंपमाणा । ततो सा भणइ—पेच्छ मे[5] पभावं, इयाणिं तुमं पस्सतु त्ति । ततो दिट्ठो[6] मि णेहिं । भणति—कत्थ सि अच्छिओ ? अम्हेहिं इओ ओलोएहिं न दिट्ठो त्ति । मया भणिया—इहेव ट्ठिओ मि त्ति । ततो भणति—वच्चामो त्ति । पत्थिओ मि, खलइ मे गती मयदोसेण । सा मं भणति—वयंसा ते मम न पस्सति, वीसत्थो होहि । अवलंबिओ मि णाए दाहिणेण हत्थेण नाहि, मोय । मया वि य खलंतगतिणा कंठे अवलंबिया । गत्तफरिसेण य 'वासवअच्छरा एसा धुवं' त्ति संजायमयणो कढिणससणो तीए परिग्गहिओ पत्तो मि सवयंसो कम्मगारपुरिससमक्खं भोयणत्थाणं । निसण्णाण य दिण्णं भत्तं पत्तेयं सव्वेसिं, सा मया सह निसण्णा आसणे, भुंजामि, निद्दाए नाहेज्जामि, मयदोसेण भिसिणायमाणो इव सुणामि तेसिं वयणं—एसो ते अप्पिओ अम्हेहिं । ततो य [*चिंतेमि*] पवहणमारुहिय नीओ[7] सह तीए, पत्तो भवणं, अवयारिओ य तीए पवहणाओ, सरिसयाहिं तरुणीहिं परिवितो मि । सा मं भणइ—इब्भपुत्त ! आणीओ सि मे विमाणं, अणुभवसु मया सह विसए निरुस्सुओ । ततो ताहिं समेतो गतो इव कणेरूहिं महुरवाइणीहिं ताहिं[8] मि पाणिं गाहिओ । अइणीओ गब्भगिहं गायमाणीहिं । 'अच्छरं' त्ति निच्छिओ रइपरायणो पसुत्तो, विबुद्धो मयपरिणामे, पस्सामि य वसंततिलयाभवणं । सा मया पुच्छिआ—कस्स इमं गिहं ? । सा भणइ—इमं विमाणं मम । मया भणिया—माणुसगिहसरिसं, न एयं देवभवणं ति । सा भणइ—'जइ हु एवं तो सुणाहि जो इत्थ सब्भावो—इब्भपुत्त ! अहं वसंततिलया गणियादारिया कण्णयाभावे वट्टमाणी कलासु पसत्ता गमेमि कालं, न मे धणे लोभो, गुणा मे वल्लहा, तुमं च मे हियएण वरिओ, ततो अम्माणुमएण गोमुहादीहिं तव वयंसेहिं उज्जाणे उवायपुव्वं मम समप्पिओ सि' त्ति भणंती उट्ठिया, कओ य वत्थपरियट्टो, उवगया य मम कतंजली विण्णवेइ—इब्भपुत्त ! अहं वो

१ परिहाणि पउ° उ २ मे० ॥ २ समीवे ली ३ ॥ ३ ससओ उ० मे० ॥ ४ °ओ अज्जउत्तो म° ली ३ संस० ॥ ५ मे इम प° ली ३ । मे इ प° क ३ गो ३ शां० ॥ ६ °ट्ठो मऽणेहिं ली ३ क ३ गो ३ ॥ ७ °रुहिओ मि णी° उ० मे० । °रुहिऊण य णी° क ३ ॥ ८ °हिं वि पा° शां० विना ॥ ९ °रत्तानि° शां० ॥

सुस्सूसिया, पडिच्छइ य भारियाधम्मेण, एत्ताणि यो सोमाणि कण्णाभावदंसियाणि, अहं ते जावज्जीविया उवायकारिणि त्ति। ततो मया सबहुरागेण भणिया—भद्दे! तुम सि मे सवसस्स अवसस्स वा मे भज्जा। ततो तीए सहिओ सच्छंदं विहरामि, परिभोगं च अम्माविसज्जियं भोगं वसेइ मे वसंततिलया, दक्खिणं पि सहस्स अट्ठहियं, ऊसवेसु पुण सयसहस्सं अट्ठ सहस्साहियं। एमेव ताए सह रममाणस्स विसयसुहमोहियस्स गयाणि दुवालस वरिसाणि।

अण्णया पाणं पाऊण सह पियाए पसुत्तो, विबुद्धो य सीयमारुयवीइओ न पस्सामि वसंततिलयं। उट्ठिओ मि 'कत्थ मण्णे वत्तामहे' त्ति चिंतयंतो पस्सामि भूयघरगं रच्छामुहकयं। पच्चभिणायं च पुव्वदिट्ठं, 'उज्झिओ इं गणियाए, जाव न कोइ पस्सति ताव सगिहं वच्चामि' त्ति। पच्चूसो य वट्टए, पत्थिओ मि, पविसंतो य नियगभवणं निवारिओ दारट्ठिएण—मा पविस, को तुमं?। मया भणिओ—सोम! कस्सेयं भवणं? त्ति। सो भणइ—इब्भस्स रामदेवस्स त्ति। मया भणिओ—न सेट्ठिणो भाणुस्स?। सो भणइ—तस्स सेट्ठिस्स दुपुत्तो जाओ चारुदत्तो, सो गणियाघरं पविट्ठो, तस्स सोएण सेट्ठी परिचत्तगिहो पव्वइओ खीणे य धणे घरणीए घरं आडत्तं, मया य माउगस्स गिहं सवट्टुस्स त्ति। सो य आलावो सुओ रामदेवेण अब्भंतरगएण। पुच्छिओ अणेण दारिट्ठो—को एसो? त्ति। तेण कहियं—कोइ भाणुसेट्ठिस्स भवणं पुच्छइ, होज्ज से पुत्तो त्ति। सो भणइ—अलच्छीओ मा मे घरं पविसउ त्ति। ततो हं लज्जिओ दुयमइक्कंतो सोगभरसमुच्छओ गओ भवणं सवट्टुस्स त्ति। पविट्ठो य, दिट्ठा य मे अम्मा दरिद्दवेसा दीणविमणवयणा। ततो से चलणेसु अहं पडिओ, तीए पुच्छिओ—को तुमं? त्ति। मया भणियं—अहं चारुदत्तो त्ति। ततो तीए अवलंबिओ, परुण्णा मो। रुदितसद्देण उवगतो सवट्टो, सो वि य परुण्णो। ततो सठविया मो परियणेण। दिट्ठो सि मित्तवती य वक्खणमलिणवसणाए, मट्ठचित्तभित्ती इव गयसिरीया पायपडिया मे रुयइ। सा वि मया भणिया—अलं रुदितेण, सचेट्ठिएण सि किलिट्ठा। भणिया य सठिया। चीहीओ निप्फावे आणेऊण सज्जियं भोयणं। भुत्तभोयणेण य पुच्छिया मया अम्मा—अम्मो! किं सेसं धणस्स? त्ति। सा भणइ—पुत्त! अहं न याणं निहाणपउत्तं वा वड्ढिपउत्तं वा परिजणपवित्थरपउत्तं वा सेट्ठिम्मि गए पव्वइए विणट्ठं दासी दासगयं, तुज्झ परिभोगे सोलस हिरण्णकोडीओ भुत्ताओ, अम्हे जहा तहा वट्टामो त्ति। ततो मया भणिया—अम्मो! इहं 'अपसं' ति दाइज्जमाणो जणेण न सत्तो परिवसिउं वच्चामि दूरं, अज्जेऊण विभवं आगमिस्सं, तुज्झ पायप्पसादेण अवस्सं उवज्जेहं ति। सा भणइ—पुत्त! तुमं अखेदुण्णो ववहरिउं, विदेसे कहं वसिहिसि? अम्हे दुवे जणीओ तुमं अणिग्गयं वट्टावेहामि त्ति। मया भणियं—अम्मो! मा एवं (ग्रन्थाग्र—४०००) सलवह, अहं भाणुसेट्ठिस्स पुत्तो एवं वट्टीहामि? त्ति मा तुम्हं एयं मणसी होउ, विसज्जेह मं। ददो भणइ—पुत्त! एवं होउ, सपहारेमि ताव सवट्ठेण समं ति।

१ भे द मे ॥ २ °सयसाहि° शां ॥ ३ °ण्णा सा । ह° ली ३ ॥ ४ याणामि नि° उ २ विमा ॥

कयनिच्छओ य सह माउलेण निग्गओ नयराओ पायचारेणं बहुं चिंतयंतो वेसवास-दोससंबद्धं। पत्ता मो उसीरावत्तमंतिमासण्णं गामं। तस्स बहिं ठविओ मि माउलेण। अतिगतो य सो गामं, कस्सय कालस्स निग्गतो पुरिसेण अब्भंगणा-ऽऽच्छादणा-लंकार-वत्थहत्थेणाणुगम्ममाणो। ततो ण्हायो मि नदीये, कयपणामो लोगुत्तमाणं जिणाणं। अइगया मो गामं, पस्सासि य कम्मंतवावारे गामे पउट्ठिए य देस-कालनिवेसे विपणीए उववणेण नयरमिव सो गामो लक्खिज्जति। पविट्ठा य मो एगं विभत्तरच्छंतर गेहं। विस-मावकासे कयपायसोया भोयणत्थाणे गामवाससुलभं भोयणं गोरसबहुलं भुत्ता मो। रत्तिं च चितापरो तत्थ वुत्थो, खयं गया य संवरी। भणिओ मि माउलेण—चारुसामि! इमो दिसासंवाहो गामो ककुहभूओ जणवयस्स. विसिट्ठो य ववहारो इहं ववहरिज्जउ. इहं च ते तायस्स कम्मंतसम्बद्धा अत्थि कुडुम्बिणो, जेहिंतो सक्का हिरण्णं घेत्तुं ति। मया पडि-वन्नं—एवं होउ त्ति। ततो अंगुलेयगकीएण भडेण तत्थ ववहरतो बहुमओ मि जाओ जणस्स गामवासिणो। उवक्खुभति भंडं माउलो सव्वविदेससठियं सुत्तं रूओ य। अण्णया य विगाढे पओसे[2] मूसगेण वत्तीं हरतेण रूओ[3] पलीविओ। कहंचि निग्गओ मि आव-णाओ। बहूदड्ढा य आवणा परित्ताइयं जणेण जं सावसेसं। पभाए समासासिओ मि गामे-यगेहिं। पुणो ववहरतेण संपिंडियं सुत्तं रूओ य, भरियाणि सगडाणि, गया मो सत्थेण समं उक्कलविसयं[4], तत्थ गहिओ कप्पासो, भरियाणि सगडाणि, पत्थिया मो तामलित्तिं, कमेण पविट्ठा मो अडविं, सठिओ य सत्थो गहणासण्णपएसे, अइवाहियबलेण वीसत्थो जणो। सूरत्थमणे य ओवइया तक्करा, उद्धंताणि अणेहिं सिंगाणि, आहया पडहा, मुहुत्तं धरिया अइवाहिएहिं, विहग्गा य सह सत्थिएहिं, पुणो य विकाले पलीवियाणि सगडाणि, विलुंपंति भंडाणि चोरा। तम्मि य संभमे अहं गहणमतिगओ सव्वट्टं न पस्सामि। वंसलयाए अंधकारस्स धूमेण पच्छाइयासु य दिसासु वग्घगुंजियसद्दपरिभूओ[6] य अवक्कंतो ततो पदे-साओ। दवग्गिणा परिवड्ढमाणेण य भयदुयकप्पडियसहायो य किच्छेण अइच्छिओ अड-विं। न जाणं पुण 'कहिं गतो सव्वट्टो?' त्ति। चिंतियं च मया—न सक्कं[7] अपरिव्वएणं गिहं दट्ठुं, उच्छाहे सिरी वसति, दरिद्दो य मयसमो, सयणपरिभूओ य धी जीवियं जीवइ, सेयं[8] चिट्ठिउं ति। जणवयाओ जणवयं सकम्मंतो कमेण पत्तो पियंगुपट्टणं। ण्हाओ य अतीओ वीहिं पस्समाणो आभट्ठो वणिएणं मज्झिमे वए वट्टमाणेणं सोमदंसणेणं—भो इब्भपुत्त! चारु-दत्तो भवसि तुमं? ति। मया भणिओ—आमं, होमि त्ति। ततो परितुट्ठेण भणिओ—आरु-हसु आवणं ति। आरूढो मि आवणं, अवतासिओ णेण अंसूणि मुयमाणेण। निसण्णो आवणे। भणइ य ममं वणिओ—अहं चारुसामि![9] सुरिंददत्तो नाम नावासजत्तओ तुम्हं

१ °व्वरिया। भ° शा० विना॥ २ पदेसे शा० विना॥ ३ रूबो प° शा० विना॥ ४ उक्कूल° शा० विना॥ ५ समए अ° शा०॥ ६ °रिभीओ शा०॥ ७ °क्का प° शा०॥ ८ सेउ चि° शा० विना॥ ९ °रुदत्तसामि! रुद्दत्तो उ २ मे० विना॥

अंतेवासी सुयं च मया 'सेट्ठी किल पव्वइओ, तुमं गणियाघरे वट्टसि' त्ति, तं कहेहि इहमागमणकारणं ति । ततो से मया कहिओ सव्वो पबंधो । ततो तेण अम्हि भणिओ—मा वच्च विसायं, इमो विहवो तव, अहं च ते विधेयो त्ति । नीओ य अणेण गिहं, ण्हाय जिमिएण य मया भणिओ—ता देहि मे सतसहस्सं पक्खेवं, सेसं तुम्हं ति । तेण दिण्णं तुट्ठेण । ततो नियगघरे इव वसतेण सज्जियं जाणवत्तं, भरियं भंडस्स, गहिया किंकरा सह सजत्तएहिं, पेसिया य खेमवट्टमाणी सबंधुस्स, गहिओ य रायसासणेण पट्टओ, अणुकूलेसु वात-सउणेसु आरूढो मि जाणवत्तं, उक्खित्तो धूवो, चीणथाणस्स मुक्कं जाणवत्तं, जलपहेण जलमओ विव पडिभाइ लोगो, पत्ता मु चीणत्थाणं । तत्थ वणिज्जेऊण गओ मि सुवण्णभूमिं । पुव्वदाहिणाणि पट्टणाणि हिंडिऊण कमलपुरं जवणदीवं सिंहले य वलजेतूण, पच्छिमे य बब्बर-जवणे य अज्जियाओ अट्ठ कोडीओ । भंडलग्गाओ ताओ जलपहगयाओ दुगुणाओ हवंति, ततो जाणवत्तेण सोरट्ठकूलेण वच्चमाणो आलोइयक्कूलस्स य मे उप्पाइयमारुयाहओ विणट्ठो सो पोतो, मया चिरेण पत्तं आसादियं, अवलंबमाणो वीइपरंपरेण विच्छुभमाणो सत्तरत्तस्स उंबरावईवेलाए विच्छूढो म्हि समुद्दाओ उत्तिण्णो, खारसलिलधवलसरीरो, सढिओ कुडंगस्स हेट्ठा, निसण्णो वीसमामि ।

उवगतो य तिदंडी, तेण उवणीओ गामं अवलंबंतेण, नियगावसहं य दिण्णो अब्भंगो, पुच्छिय इमं—कहं इब्भपुत्त ! इमं आवतिं पत्तो सि ? । मया निग्गमो विणिवाओ य संखेवेण कहिओ । ततो रुट्ठो भणइ—हुं, मे णीहि आवसहाओ अलच्छीउ ति । निग्गतो य तम्मि वि वणे, थोवंतरं च गतो नियत्तिओ त्ति—पुत्त ! मया विणयणत्थं निब्भच्छिओ अजाणओ सि जो मणुस्साणे छुभसि अप्पाणं जइ धणत्थिओ सि अम्हं विहेओ होइ उवासतो ते अकिलेसेण होहिति वित्तं ति । तओ ण्हविओ मि तस्स किंकरेण मणुस्सेण, पीओ जवागुं, एवं मे गया कइवइदिवसा । संधुक्कियमग्गिं काऊण ममं भणइ परिव्वायगो—पेच्छ । तओ णेण काललोहं मक्खियं रसेण, छूढं अंगारेसु, धंतं भच्छण्णं य जायं पहाणं सुवण्णं । ततो भणइ—पुत्त ! दिट्ठं ते ? । मया भणियं—दिट्ठं अच्छब्भुयं । ततो भणति—अहं जइ अहिरण्णो सुवण्णिओ य महतो तुमं पुण मे वट्टूण पुत्तसिणेहो जातो तुमं च अत्थनिमित्ते किलिस्ससि, तं गच्छामि तव निमित्तं रसं आणेमु सयसहस्सवेहिं ततो तुमं कयकज्जो सगिहं गमिस्ससि त्ति एस पुव्वगहिओ रसो आसी ईसि त्ति । ततो हं परितुट्ठो लुद्धो—ताय ! एवं कीरउ त्ति । तेण य सज्जिया उवक्खरा पाहेयं च । ततो कालरत्तिं निग्गया गामाओ पत्ता अडविं सावयबहुलं, रत्तिं गच्छामो, दिवा पच्छण्णा अच्छामो पुलिंदाण भएण । कमेण य पव्वयकंदरं विणिग्गया पत्ता मो एक्कं तणपच्छण्णं कूवपदेसं । तत्थ चिट्ठितो परिव्वायगो, अहं पि णेण भणिओ—वीसमह त्ति ।

१ °रथ वलजेऊण शां विना ॥ २ व पवत्तच्छ° शां ॥ ३ °हु ? । तो म° शां० ॥ ४ पवण्णा उ° शां० ॥

ततो सो चम्मकुप्पासयं परिहिऊण पविसिउमारद्धो । मया भणिओ—किं इमं ताय ! ? त्ति । सो भणइ—पुत्त ! कूवो तणच्छण्णो अहोमुहमल्लगसंठिओ. एयस्स मज्झे वइरकुंडं[3], तत्थ सो रसो निस्संदति. अहं उयरामि, तुमं ममं लंवेही आसंदगोपलग्गं, पच्छा तुंबं अहं भरेमि रसस्स त्ति । मया भणियं—अहं उयरामि, मा तुब्भे । तेण भणिओ—मा पुत्त ! बीहेज्जासि त्ति । मया भणिओ—न बीहेमि । पविट्ठो मि चम्मकुप्पासयं । तेण य जोगवत्तिं पलीवेउ उलंबिओ मि, पत्तो मि तलं कूवस्स, दिट्ठं रसकुंडं, लंबिओ तेण तुंबो, मया कडुच्छएण भरिओ, छूढो आसंदए, उक्खित्तो परिव्वायगेण चालिए रज्जुम्मि । अहं पडिच्छामि—पुणो आसंदयं ओलंबिहिति मम निमित्तं तिं । अहं वाहरामि—तात ! अवलंबेहि रज्जुं ति । दूरमोगाढो कूवो, गओ य परिव्वायगो ममं महापहुं पक्खिविऊण कूवस्स ।

मया वि तओ चिंतियं—मओ सि अहं लुद्धो, जो न मेओ सागराओ । विज्झायाओ जोगवत्तीओ दीवियाओ । ततो विभाए ण दीसति रवी, मज्झण्हे य पगासिओ कूवो । पस्सामि य हेट्ठा अईव वित्थयं सकुचितमुहपएसं । चिरस्स य निज्झायंतेण दिट्ठो नाइदूरे कुंडस्स पुरिसो किंचिसेसप्पाणो । सो मया पुच्छिओ—किंहि सि इहागतो सि ? त्ति । तेण महया दुक्खेण भणिओ—अज्ज ! परिव्वायगेण । मया भणियं—अहमवि तेणेव । तओ पुच्छिओ मया—वयस ! होज्ज कोइ उवायो निग्गंतुं ? ति । सो भणइ—इहं रविरस्सिपगासिए कूवे महती गोहा आगच्छति एतंसि विवरए उदयं पाउं, तेणेव च्चिय मग्गेण णीइ अहं भीरू असाहसिओ य खीणपायपाणयाए न निग्गतो. जइ साहसं भयसि तीए पुच्छे लग्गसु, तो होज्ज निग्गमो त्ति । ततो अहं उदयसमीवे पडिच्छामहे गोहं, आगया य महंती[6] विकिट्ठवट्टा गोधा सुरगादारेण, पीयं जलं, निग्गच्छंती य मया पुच्छे अवलंबिया । ततो सुरगाबिलेण कंडकगतीए सा ममं कड्ढंती दूरं गंतूण निग्गया । चम्मकुप्पासगुणेण म्हि निच्छोडिओ । ततो मुक्कगोहापुच्छो विमग्गामि कूवं, न पस्सामि, रत्तिं आणीओ न याणामि पएसं ति । ततो हं विमग्गमाणो लोभाभिभूओ वणमहिसेण लंघिओ, सो मं पधावेइ, तस्स पलायमाणो आरूढो महंतं सिलासंचयं अगम्मं महिसस्स । सो कुद्धो, अमरिसेण महंतेण आहया णेण सिला, तस्स पहाराभिघाएण णिग्गतो महंतो अयगरो, तेण गहिओ महिसो पच्छिमभाए, ठितो निट्ठुरो । अहमवि भीओ महिसस्स सिरे पायं दाऊण लीणो एगंते ।

तओ पलाओ वणे कंटकेसु परीमि तण्हा-छुहाभिभूओ, दट्ठूण चउप्पहं संठिओ, 'अवस्सं एत्थ मग्गेण कोइ एहि' त्ति । दिट्ठो य मया रुद्ददत्तो, सो मं पाएसु पडिऊण परुण्णो भणइ—तुब्भं अहं अंतेवासी, कओ सि इहमागतो चारुसामि ! त्ति । ततो से मया सव्वो

१ त्ति । सो गतो, अह शा० विना ॥ २ मुणो शा० ॥ ३ °रे । वि° शा० ॥ ४ किंहमिहा° शा० ॥ ५ °एतम्मि शां० ॥ ६ °ती कविहुचण्णा गो° शा० विना ॥ ७ परिघाडेइ शा० विना ॥ ८ क ३ विनाऽन्यत्र—निप्फरो शा० ॥ ९ °ण लीणो शा० विना ॥

वुत्ततो कहिओ अइक्कतो। ततो दिण्ण करगोदग तेण, पाहेय च णेण। सत्थ च मम भणइ—अंह मे इदाणि पडियारंगो, कीरउ वाणिज्ज, वच्चामु रायपुर ति। ततो गया रायपुर रुद्ददत्तमित्तघरे वीसमामु। गहिय मउ रुद्ददत्तेण—पडिसिराओ, मउणग, अलत्तगा, रत्तेल्लगाणि पोत्ताणि, कंकणाणि त्ति। भणइ य मम—चारुसामि! मा विसाय वचह तुब्भ भागधिज्जेहिं अप्पेण पक्खेवेण सरीरचिट्ठागुणेण बहु दव उवज्जेयव्व एस जणो दव्वोवज्जणाए सत्थो गच्छति, उट्ठेह, अम्हे वि तेण सम वच्चामो त्ति। ततो मिलिया मो, पाविया य सत्थ, कमेण उत्तिण्णा मो सिंधुसागरंसगम नदिं, वच्चामो उत्तरपुव्व दिस भयमाणा, अतिच्छिया हूण-खस-चीणभूमीओ, पत्ता मो वेअड्ढपाय सकुपह, ठिया सत्थिया, कओ मग्गो, वणफलाणि य भक्खियाणि, मुत्तभोयणेहि य कोट्टिय (ग्रन्थाग्रम् ४१००)तुंबरु चुण्ण सत्थिगेहिं। भणिया पुरगमेण—चुण्ण परिगेण्हह, परिकरेण वधह चुण्णस्स ऊंबोलीओ, भरेह मउ पोट्टलए, कक्खपएसे वधह ततो एव छिण्णटक कडय विजयाणदिदह अत्थग्घमे गदेसे सकुकयालवण सकुपह कमिस्सामो जाहे हत्था पसिज्जति ताहे तुबरु परामुसिज्जइ, ततो फरुसयाए हत्याण अवलयण होइ, अण्णहा उवलसकूओ नीसरिय निरालबणस्स छिण्णदहे पडणमपारे भविज्ज त्ति। ततो तस्स वयणेण तुवरुचुण्णाइगहणपुव्व सव्व कय, उत्तिण्णा मो सव्वे सकुपह, पत्ता मो जणवय, ततो पत्ता मो उसुवेगनदिं, तत्थ ठिया, पक्काणि वणफलाणि आहारियाणि। ततो पुरंगमेण भणिय—एसा नदी वेयड्ढपव्वयपवहा उसुवेगा अत्यग्घा जो उत्तरेज्ज सो उसुवेगगामिणा जलेण हीरिज्ज, न तीरए तीरिच्छ पविसिउ ति एस पुण पहो गम्मइ वेत्तलयागुणेण जया उत्तरो वाऊ वायइ ततो पव्वयतरविणिग्गयस्स मारुयस्स एगसमूहयाए महता गोपुच्छसठिया सभावओ मिउ थिरा वेत्ता दाहिणेण णामिज्जति नामेज्जमाणा 'उसुवेगनदीए दक्खिणकूल सपावेंति' त्ति अवलबिज्जति अवलबिएसु वेलुयपंव्वाउदरा छुब्भति ततो जओ दाहिणो वाऊ अणुयत्तो भवइ ततो सो उत्तर सछुभइ सछुब्भमाणेसु वेलुपव्वसरणेसु पुरिसो उत्तरे कूले छु भइ त्ति गेण्हइ वेलुपव्वे मारुय पडिवालेह त्ति। तस्स मएण गहिया वेलुपव्वाउदरिया, वद्ध मउ परिकरा य। मारुय पडिवालेंता जहोपदेस दक्खिणवाउविच्छूढवेसवसोवतरणेण ठिया मो उत्तरकूले। वेत्तलयागुविल च पव्वयकडग सोहयता मग्ग अइच्छिया, गया टंकणदेस। पत्ता मो गिरिनदीतीरं, सीसतम्मि सठिओ सत्थो। मुत्तभोयणेहिं पुरगमवयणेण नदीतीरे पिहप्पिह विरइयाणि भडाणि, एगो य कट्ठरासी पलीविओ, अवक्कता य मो एगत, अग्गिसधूम दट्ठूण टकणा आगया, पडिवण्ण भड, तेहिं पि कओ धूमो, ते गया पुरगमवयणेण नियगट्ठाण, निवद्धा छगला फलाणि य गहियाणि सत्थिएहिं। तओ पत्थिओ सत्थो

१ कहइरगतेण शा ॥ २ अम्हे इदाणि पडियारगा शा ॥ ३ °रगिगो क्षी ३ ॥ ४ °रसमं शा विना ॥ ५ °वरघु° शी ३ शा । एवमग्रेऽपि ॥ ६ उबेली° क्षी ३ मो ३ । उबेली° क ३ ॥ ७ °पुब्बा° शा विना । एवमग्रेऽपि ॥ ८ °णेण पु शा विना ॥ ९ पिहो क° शां विना ॥ १ °ट्ठाणनिविट्ठा छ° शां ॥

सीमानदीतीरेण, पत्ता मो अयपहं, वीसंता कयाहारा पुरगमवयणेण अच्छीणि बंधिऊण छगलमारूढा वज्जकोडीसंठियं पव्वयं उभओपासछिण्णकडगं अइगंता। सीयमारुयाऽऽहयसरीरा संठिया छगलगा, मुक्काणि अच्छीणि, वीसंता समे भूमिभागे, कयाहारा य भणिया पुरगमेण—मारेह छगले, चम्मब्भत्थे सरुहिरे ठवेह, अयमंस पइत्ता भक्खेह, वट्टकडिच्छुरिया भत्थगेसु पविसह. तओ रयणदीवाओ भारुंडा नाम सउणा महासरीरा उहाऽऽगच्छंति चरिउं. ते इहं वग्घ-ऽच्छभल्लुयाण मत्ताणं मंसाइं खायंति, महंतमंसपेसी निलयं नयंति. ते वो सरुहिरे भत्थगपविट्ठे 'मंसपेसि' त्ति करिय उक्खिविय णेहस्संति[1] रयणदीवं. निक्खित्तमेत्तेहिं य भत्थया फालेयव्वा छुरियाहिं. तओ रयणसंगहो कायव्वो. एस रयणदीवगमणस्स उवातो त्ति. रयणसंगहं च काऊण वेयड्ढपायसमीवे सुवण्णभूमिभागम्मत्ति. ततो जाणवत्तेण पुव्वदेसे आगम्मइ त्ति। ततो सत्थिया तस्स वयणेण छगले मारेउं पवत्ता। मया भणिओ रुद्ददत्तो—नाऽहं एरिसं वाणिज्जं जाणामि. जइ जाणंतो न एतो. तं ममं छगलं मा विवाडेह एएण अहं कंताराओ नित्थारिओ, तो एयस्स उवयारो जुत्तो। रुद्ददत्तो भणति—किं तुम्हे एगागी करिस्सह?। मया भणिओ—विहीए देहपरिच्चायं करिस्सं। ततो सो ममं मरणभीरू सत्थियसहिओ तं छगलं मारेउकामो। अहमेगागी न समत्थो निवारेउं। सो पुण छगलो ममं निवारणुज्जय दीहाए दिट्ठीए निज्झाएइ[2] एगग्गचित्तो।

ततो मया भणिओ—हे छगल! असत्तो हं तुहं रक्खिउं. सुण पुण—जइ ते वेयणा, अत्थि तुमे पुव्वकओ नूणं मरणभीरूणं सत्ताण वहो ततो भयकडकम्माणुभवणं, ण ते पओसो निमित्तभूए कायव्वो भयवंतो अरहंता वीयराग-दोस-मोहा अहिंसा सच्चं अदिण्णदाणविरती बंभचरियं निम्ममत्तं च संसारवोच्छेदं भासंति तं सव्वं सावज्जं जोगं वोसिर सरीरमाहारं च, 'नमो अरहंताणं' ति य वयणं चित्ते निवेसेहिं, ततो ते सोग्गती भविस्सति। एवं च भणंतस्स य मे छगलो अंसुपुण्णमुहो पणओ ठिओ। मया वि से उच्चारियाणि वयाणि, पच्चक्खायं भत्तं, अरहंतनमोक्कारो य सिद्ध-साहुसहिओ उदीरिओ। ततो सो संविग्गो चित्तलिहिओ विव निप्पकंपो विवाडिओ तेहिं। कया भत्था, रुद्ददत्तेणं पायवडिएण[3] पवेसिओ भत्थं, सत्थिगा वि पविट्ठा णियगे। ततो कीय वि वेलाए उवतिया सउणा, ते सद्देण तक्किया, तेहिं आमिसलोलेहिं उक्खित्ता भत्थगा, अहं पुण दोहिं भारुंडेहिं गहिओ। कहं पुण जाणामि?, आगासे हल्लाविज्जमाणो कंदुगो विव उक्खायो पाएहिं निज्झामि, दूरं च णीओ। भंडमाणाणं तिव्वामरिससपलग्गाणं पडिओ वयणाओ महद्दहे। पडंतेण य मए भिण्णो भत्थओ छुरियाए, पवंतो उत्तिण्णो जलाओ। ततो गगणं निज्झामि, पस्सामि य सत्थिए गच्छमाणे विहंगभत्थजाणेहिं। मदीयं च भत्थं सउणा गहाय गया। चिंतियं च मया—अहो! कयंतो मं वाहति, अहवा पुरादुच्चरिएण मे इमा अवत्था। ततो मे चिंता जाया—न मे खमं पुरिससारस्स, अहं मरिउं आरुहामि

१ णेस्स° शा० ॥ २ °ज्झायत्ति शा० ॥ ३ °वडणेण शा० विना ॥

पव्वय, जओ समो भूमिभागो तओ पवज्जिस्सं। ततो कयववसाओ दुरुहिउमारद्धो पव्वय, साहामिगो इव हत्थ-पाएहिं लग्गमाणो कहचि पत्तो सिहरतलं।

निज्झायमाणेण य मया दिट्ठं सेयं वत्थं पवलंतं मारुएणं। चिंतियं च मया—कस्सेयं वत्थं होज्ज? त्ति। निव्वण्णयंतस्स य मे उवागया सण्णा—एस साहू एक्कपादो ऊसवियबाहू आयावयंतो चिट्ठइ त्ति। चिंतियं च मया—सफलो मे पुरिसयारो साहुदंसणेण जातो त्ति। परितुट्ठो पत्तो मि साहुसमीवं, निसीहियं काऊण तिगुणपयाहिणापुव्वं वंदिऊण सठिओ मि से अभिमुहो पससंतो हियएणं—अहो!!! कयत्थो जोगपडिओ त्ति। सो य चिरं निज्झाइऊण भणति—सावय! तुमं चारुसामी इब्भस्स भाणुणो पुत्तो होज्जासि? त्ति। मया भणिओ—भयवं! होमि त्ति। ततो भयवया भणियं—कहं सि इहं आगओ? त्ति। ततो से मया गणियाघरपवेसादी पव्वयारुहणपज्जंतं सव्वं परिकहियं। ततो साहुणा समत्तनियमेण आसीणेण भणियं—ममं जाणेह[1], अहं अमियगई, जो तुब्भेहिं मोइओ मरणाओ त्ति। मया भणियं—भगवं! किं ते पच्छा कयं?, कहेह मे। ततो मे कहयति—

अमियगतिणो अवसेसो परिचओ

अहं तुम्ह सयासाओ उप्पइओ, आवाहिया य विज्जा, कहियं च मे तीए—वेयड्ढपव्वए कंचणगुहाए ते पिया अरीहिं समं अच्छए। ततो गओ मि कंचणगुहं। दिट्ठा मया सुकुमालिया मिलाइमाणी इव पुप्फमालिया दुक्खसमुदमवइण्णा। वेयालविज्जाए ममं सरीरं[3] मयं दंसेऊण भणइ—एसो ते भत्ता अमियगई, ममं भजसु त्ति, अहव जलंतं पावयं पविससु त्ति। सा भणइ—अणुसरामि भत्तारं अमियगतिं ति। तेहिं महंतो कओ कट्ठरासी, दिण्णो पावगो, सयं पक्खित्ता, पिया सयं परिमज्जिऊण निसण्णा। तंसि वेलाए अहं पत्तो, मया य हुंकारियं, पलाया ते, उक्खित्ता पिया चितगाओ, विम्हिय गया 'अहं जीवामि'त्ति। ततो मया से[4] निव्वाडिया पविट्ठा महण्णवं। ततो हं नियत्तो गतो पिउसमीवं, कहियं तायस्स। ततो पिउणा मे धूमसिहो णिकायवुड्ढेहिं असंभासो कारिओ विज्जाहराणं। एवं अहं अच्छामि।

अण्णया य मे पिउणा विज्जाहररायसुया मणोरमा नाम कण्णा आणीया। कयपाणिग्गहो हं भज्जाहिं सह रमामि। तओ य मह रज्जधुरं निसरिऊण हिरण्णकुंभ-सुवण्णकुंभचारणसमणाणं समीवे पव्वइओ निस्संगो तवस्सी विहरति। मम च सीहजस-वराहगीवा दुवे पुत्ता जाया, दारिया गंधव्वदत्ता। अहमवि सीहजसस्स रज्जं दाऊण सुयपिउपरिणेव्वाणो य जइओ तेसिं चेव समीवे चारणसमणाणं। अहिगयसुत्तो अहं कठयदीवे कक्कोडयपव्वए आयावयामि, रत्तिं तेण गुहाए परिवसामि।

तं सुट्ठु जं सि भद्दमुह! इहं मिलिओ मया सह। इयाणिं य ते किंचि परिहाहिति।

१ पव्वयं आरूढो य जइ समं भूमिभागं पव° शां विना॥ २ °णाहे ब्व हं° शा विना॥ ३ °रीरगं एद° शां॥ ४ से चाडि° शां विना॥

मम सुया इहं दिणे दिणे वंदगा आगच्छंति, तो ते सुता इह सनयरे सुस्सूसं करिस्संति, चंपं च विउलेण अत्थेण सह नइस्संति त्ति ॥

एवं च मे भयवं कहेइ अचिरस्स त्ति पत्ता य विज्जाहररायणो सीहजसो वराहगीवो य, तेहिं पिया पयक्खिणीकओ वंदिओ य । साहुणा भणिया—पुत्ता ! तायस्स मे चिरस्स ताव कुणह पणामं, किह वि एस इहाऽऽगतो । ततो ते भणंति—तात ! किं एस चारुसामी भविज्ज ? त्ति, ज भणह 'सो मे धम्मओ पिय' त्ति । तओ तेण भणिया—आमं, एसो थाण-धणपरिब्भट्ठो मम दंसणमागओ चिरस्स त्ति । सव्वं तेसिं तेण परिकहियं । तओ तेहिं अहं पिउसरिसीए पडिवत्तीए वंदिओ, वीसमंतो य, भणिओ य—इयाणिं अम्हे दुप्पडियारस्स दुमोक्खस्स तातजीवियदाणोवकारिस्स सत्तीए पच्चुवगारं करिस्सामो. अम्हं भागधिज्जेहिं तुब्भे इह आणीया, वोलीणो भे इदाणिं किलेसो । एवं च ते सलवंति ।

देवो य पडिरूवो रुचिराऽऽभरणभूसिओ अरयंवरो तेयवं उवगतो । सो मं हरिसायंतो 'नमो परमगुरुणो'त्ति वंदंतो पणओ । पच्छा णेण अमियगई वंदिओ । पुच्छिओ य विज्जाहरेहिं—देव ! कमं पुच्छामो—किं साहू पुव्वं वंदणीया ? उयाहु सावय ? त्ति । तेण भणिया—साहवो वंदणीया, पच्छा सावगा. अहं पुण भत्तिरागेण कमचुक्को. एएसि मया पसाएण इमं देवसरीरं लद्धं रिद्धी य त्ति । विज्जाहरेहिं पुच्छिओ—कहं ? ति । तओ भणइ—अहं छगलभावे जाइस्सरो छ जम्माणि सुमरमाणो एतेहिं धम्मे निजोजिओ सुणह—पढमं ताव अहं अहव्वेयपवत्तेहिं मंतनिओगेहिं आहूओ जलणे पंचवारा, छट्ठं वणिएहिं मारिओ त्ति । तओ पुच्छिओ विज्जाहरेहिं—(ग्रन्थाग्रम्–४२००)देव ! कह अहव्वेओ समुप्पण्णो ? केण वा कओ ? त्ति । तओ भणति—महाकालो नाम देवो परमाहम्मिओ, तेण सगरपउट्ठेण पसुवहो तस्स निरयगमणहेऊ पगासिओ सो य पिप्पलाएण परंपराएसेण गहिओ. तओ णेण तंन्निस्साए अहव्वेओ पणीओ. सुणह य पिप्पलायपभवं—

पिप्पलायस्स अहव्वेयस्स य उपत्ती

अत्थि वाणारसी नाम नगरी, तत्थ सुलसा नाम परिव्वाइया बहुसिस्सिणीपरिवारा वागरण-संखसत्थकुसला बहुसंम्मया परिवसइ । जन्नवक्को य तिदंडी वायत्थी वाणारसिमागओ । तओ तेसिं आलावो जाओ । तओ सुलसा नाणमएण भणति जन्नवक्कं—जई सि मं जिणसि वाए तओ छम्मासे पाउयाओ वहामि त्ति । जाओ य पासणियसमक्खं वाओ । सा जिया सहसत्थे जन्नवक्केण । माणं अवकिरिय सुस्सूसं पवत्ता काउं । तओ तेसिं भिन्नकहासु पवत्तासु अब्भासजोएण वेयकरो जाओ । तओ सिस्सिणीहिं परिचत्ता 'असील' त्ति । एगा नंदा नाम चिरसंगया भगिणीभावे वट्टमाणी ठिया । सुलसाए

१ °कारस्स शा० विना ॥ २ भत्तीए उ० मे० ॥ ३ अब्भुव° ली ३ शा० विना ॥ ४ °रागमेण श° शा० ॥ ५ तस्स निस्सा° शा० ॥ ६ पसव शा० ॥ ७ °समया क ३ शा० विना ॥ ८ °इ मम शा० ॥ ९ वहक° शा० ॥

पव्वयं, जओ समो भूमिभागो तओ पवज्जिस्सं। ततो कयववसाओ दुरुहिउमारद्धो पव्वयं, साहामिगो इव हत्थ-पाएहिं लग्गमाणो कहवि पत्तो सिहरतलं।

निज्झायमाणेण य मया दिट्ठं सेयं वत्थं चलंतं मारुएण। चिंतियं च मया—कस्सेयं वत्थं होज्ज? त्ति। निव्वण्णयंतस्स य मे उवागया सण्णा—एस साहू एकपादो ऊसवियबाहू आयावयंतो चिट्ठइ त्ति। चिंतियं च मया—सफलो मे पुरिसयारो साहुदंसणेण जातो त्ति। परितुट्ठो पत्तो मि साहुसमीवं, निसीहियं काऊण तिगुणपयाहिणापुव्वं वंदिऊण संठिओ मि से अभिमुहो पसंसंतो हियएण—अहो!!! कयत्थो जोगपडिओ त्ति। सो मं चिरं निज्झाइऊण भणति—सावय! तुमं चारुसामी इब्भस्स भाणुणो पुत्तो होज्जासि? त्ति। मया भणिओ—भयवं! होमि त्ति। ततो भयवया भणियं—कहं सि इहं आगओ? त्ति। ततो से मया गणियाघरपवेसादी पव्वयारुहणपज्जवसाणं सव्वं परिकहियं। ततो साहुणा समत्तनियमेण आसीणेण भणियं—मं जाणेह?, अहं अमियगई, जो तुब्भेहिं मोइओ मरणाओ त्ति। मया भणियं—भगवं! किं ते पच्छा कयं?, कहेह मे। ततो मे कहयति—

अमियगतिणो अवसेसो परिचओ

अहं तुम्ह सयासाओ उप्पइओ, आवाहिया य विज्जा, कहियं च मे तीए—जेयड्डपव्वए कंचणगुहाए ते पिया अरीहिं समं अच्छए। ततो गओ मि कंचणगुहं। दिट्ठा मया सुकुमालिया मिलाइमाणी इव पुप्फमालिया दुक्खसमुद्दमवइण्णा। वेयालविज्जाए मम सरीरं[3] मयं दंसेऊण भणइ—एसो ते भत्ता अमियगई, मं भजसु त्ति, अहव जलंतं पावयं पविससु त्ति। सा भणइ—अणुसरामि भत्तारं अमियगतिं ति। तेहिं महंतो कओ कट्ठरासी, दिण्णो पावगो, सव्वं पक्खित्तं, पिया सव्वं परिमज्जिऊण निसण्णा। तंमि वेलाए अहं पत्तो, मया य हुंकारियं, पलाया ते, उक्खित्ता पिया चितगाओ, विम्हिय गया 'अहं जीवामि'त्ति। ततो मया तं[4] निद्धाडिया पविट्ठा महण्णवं। ततो हं नियत्तो गतो पिउसमीवं, कहियं सायस्स। ततो पिउणा मे धूमसिहो णिकायवुड्ढेहिं असंभासो कारिओ विज्जाहराणं। एवं अहं अच्छामि।

अण्णया य मे पिउणा विज्जाहररायसुया मणोरमा नाम कण्णा आणीया। कयपाणिग्गहो हं भज्जाहिं सह रमामि। तओ य मह रज्जधुरं निसरिऊण हिरण्णकुंभ-सुवण्णकुंभचारणसमणाणं समीवे पव्वइओ णिस्संगो ववगओ विहरति। मम य सीहजसवराहगीवा दुवे पुत्ता जाया, दारिया गंधव्वदत्ता। अहमवि सीहजसस्स रज्जं दाऊण सुयपिउपरिणेव्वाणो पव्वइओ तेसिं चेव समीवे चारणसमणाणं। अहिगयसुत्तो अहं कंठयदीवे कक्कोडयपव्वए आयावयामि, रत्तिं तेण गुहाए परिवसामि।

तं सुट्ठु जं सि भद्दमुह! इहं मिलिओ मया सह। इयाणिं ण ते किंचि परिहाहिति।

१ पव्वयं आरूढो य जइ समं भूमिभागं पव° शा विना ॥ २ °गो व्व ह° शा विना ॥ ३ °रीरगं पद° शां ॥ ४ तं चाहि° शां विना ॥

मम सुया इहं दिणे दिणे वंदगा आगच्छंति, तो ते सुता इह सनयरे सुस्सूसं करिस्संति, चंपं च विउलेण अत्थेण सह नइस्संति त्ति ॥

एवं च मे भयवं कहेइ अचिरस्स त्ति पत्ता य विज्जाहररायणो सीहजसो वराहगीवो य, तेहिं पिया पयक्खिणीकओ वंदिओ य । साहुणा भणिया—पुत्ता ! वायस्स मे चिरस्स ताव कुणह पणामं, किह वि एस इहाऽऽगतो । ततो ते भणंति—तात ! किं एस चारुसामी भविज्ज ? त्ति, जं भणह 'सो मे धम्मओ पिय' त्ति । तओ तेण भणिया—आमं, एसो थाण-धणपरिब्भट्ठो मम दंसणमागओ चिरस्स त्ति। सव्वं तेसिं तेण परिकहियं। तओ तेहिं अहं पिउसरिसीए पडिवत्तीए वंदिओ, वीसमंतो य, भणिओ य—इदाणिं अम्हे दुप्पडियारस्स[1] दुमोक्खस्स तातजीवियदाणोवकारिस्स सत्तीए[2] पच्चुवगारं[3] करिस्सामो. अम्हं भागधिज्जेहिं तुब्भे इह आणीया, वोलीणो मे इदाणि किलेसो । एवं च ते सलवंति ।

देवो य पडिरूवो रुचिराऽऽभरणभूसिओ अरयंवरो तेयवं उवगतो । सो मं हरिसायंतो 'नमो परमगुरुणो'त्ति वंदंतो पणओ । पच्छा णेण अमियगई वंदिओ । पुच्छिओ य विज्जाहरेहिं—देव ! कमं पुच्छामो—किं साहू पुव्वं वंदणीया ? उयाहु सावय ? त्ति । तेण भणिया—साहवो वंदणीया, पच्छा सावगा. अहं पुण भत्तिरागेण कमचुक्को. एएसिं मया पसाएण इमं देवसरीरं लद्धं रिद्धी य त्ति। विज्जाहरेहिं पुच्छिओ—कहं ? ति। तओ भणइ—अहं छगलभावे जाइस्सरो छ जम्माणि सुमरमाणो एतेहि धम्मे निजोजिओ सुणह—पढमं ताव अहं अह्वेयपवत्तेहिं मंतनिओगेहि आहूओ जलणे पंचवारा, छट्ठं वणिएहिं मारिओ त्ति। तओ पुच्छिओ विज्जाहरेहिं—(ग्रन्थाग्रम्–४२००)देव ! कहं अहव्वेओ समुप्पण्णो ? केण वा कओ ? त्ति । तओ भणति—महाकालो नाम देवो परमाहम्मिओ, तेण सगरपउट्ठेण पसुवहो तस्स निरयगमणहेऊ पगासिओ सो य पिप्पलाएण परंपरोएसेण गहिओ. तओ णेण तंन्निस्साए अहव्वेओ पणीओ. सुणह य पिप्पलायप्पभवं—

पिप्पलायस्स अहव्वेयस्स य उपत्ती

अत्थि वाणारसी नाम नगरी, तत्थ सुलसा नाम परिव्वाइया बहुसिस्सिणीपरिवारा वागरण-संखसत्थकुसला बहुसंम्मया परिवसइ । जन्नवक्को य तिदंडी वायत्थी वाणारसिमागओ । तओ तेसिं आलावो जाओ । तओ सुलसा नाणमएण भणति जन्नवक्कं—जई सि म जिणसि वाए तओ छम्मासे पाउयाओ वहामि त्ति । जाओ य पासणियसमक्खं वाओ । सा जिया सहसत्थे जन्नवक्केण । माणं अवकिरिय सुस्सूसं पवत्ता काउं । तओ तेसिं भिन्नकहासु पवत्तासु अब्भासजोएण वेयकरो जाओ । तओ सिस्सिणीहिं परिचत्ता 'असील' त्ति । एगा नंदा नाम चिरसंगया भगिणीभावे वट्टमाणी ठिया । सुलसाए

१ °कारस्स शा० विना ॥ २ भत्तीए उ० मे० ॥ ३ अब्भुव° ली ३ शा० विना ॥ ४ °रागमेण ग° शा० ॥ ५ तस्स निस्सा° शा० ॥ ६ पसव शा० ॥ ७ °समया क ३ शा० विना ॥ ८ °इ मम शा० ॥ ९ वइक° शा० ॥

गब्भो आहूओ । सा 'मा पगासगब्भा परिभूया भविस्सं' इत्ति तित्थजत्तावएसेण निग्गया नंदाए सदिसिऊण ठाणं । गंगातीरे सह जन्नवक्केण पिप्पलपायवस्स घणकुडंगपरिक्खित्तस्स अहे ठिया अच्छति । नंदा य से उदंतं वहइ । सा आव पसवणदिवसा इति ताव निव्विण्णा । जन्नवक्कसुस्सूसाए काले पसूया दारगं, 'तं सि ण्हाय जन्नवक्कस्स पासे ठाविऊण गंगातित्थे उवयामि' त्ति अवक्कंता । 'किं मे दारगेण ? ति, अलं च मे जन्नवक्केण' ति चिंतवेंतीए दारगो रोवइ । जन्नवक्केण अवलोविया उचिए तित्थे, 'णत्थि, गया' त्ति चिंतापरो 'कहं पासेमि णं ?' ति अच्छति । वायचलिओ पिप्पलो पडिओ मुहे दारगस्स, तेण सो आसाइओ, सठिओ रुन्नु । चिंतियं जन्नवक्केण उज्झिउकामेण—इयाणिं आहारं काउमारद्धो पिप्पलं अयइ, 'पिप्पलाओ भवउ' त्ति नामं सिलाए आलिहिऊण गओ । इओ नंदा सिणेहेण पसवणदिवसे जाणिऊण घयं गहेऊण तं पएसं पत्ता । सो दारगस्स पिप्पलो भट्ठो मुहाओ चलमाणस्स, पुणो रोवइ, सुओ सद्दो नंदाए कण्णस्स, चिंतियं च णाए—पसूया सुलस त्ति । तुट्ठा आगया कुडंगभवणं, दिट्ठो अणाए दारगो, नामं च वाइयं 'पिप्पलाओ' त्ति, न पस्सइ य दो वि जणाइं, परिमग्गिऊण 'गहिओवकरणाणि गयाणि' त्ति अणुकंपाए दारगं गहेऊण अइगया वाणारसिं । दिण्णपीहइ कहेइ आसण्णजणस्स—गंगातीरे दिट्ठो ण्हाइउं गयाए । तेहिं भणिया—साहु कयं, अम्हे वि उवग्गहे वट्टिस्सामो । जत्तेण से कओपग्गहो वड्ढाविदो तीए, अहिज्जिओ अक्खरसंजोगं, गहिया अणेण वेया सहंगेहिं ।

तओ वणिगाए कलहसीलो बालभावे नंदाए णं भण्णइ—अण्णेहिं जणिओ मम माइकओ जाओ त्ति । तओ तेण पुच्छिया—अम्मो ! कहय कस्साऽहं पुत्तो ? त्ति । सा भणइ—मम त्ति । निबंधे कए कहिओ पभवो । तओ सो पदुट्ठो माया पियरस्स, कओ अणेण अहव्ववेओ, मातुमेहं पिउमेधा विकप्पिया, अभिचारुगा मता, सो य लोकबहुमओ समिद्धो जाओ । पुणो य जण्णवक्को आगतो, सो य पिप्पलादेण अहिणवबुद्धिणा पराजिओ, नीओ सगिहं सम्माणिओ अच्छति । पुच्छिओ—कस्स तुमं पुत्तो ? सो पिप्पलं साहइ । तेण णाओ—एसो मम पुत्तो त्ति, कस्सऽण्णस्स परिसी सत्ति ? त्ति । तेण भणिओ—अहं पिप्पलं जाणामि, जइ पुण तुमं पुत्तो त्ति तो कयत्थो मि । सकलुसो य ण उवचरति । कालेण य बहुणा सुलसा नंदाए वट्टमाणी बोद्धुमागया, दिट्ठा अणाए नंदा पिप्पलायभवणे सकता । पुच्छतीमे से कहिया पिप्पलायपरिवड्ढी । तस्स चिय नंदाए विदिता कया—एसा ते पुत्त ! माया सुलस त्ति । तेण माया वि मिच्छोवचारेण उवचरिया । भणिओ अणेण जण्णवक्को—ताय ! तुब्भे महता पिउमेहेण दिक्खिस्सह त्ति । तेण भणिओ—पुत्त ! जं मे हियं तं कुणसु त्ति । तओ दिक्खिओ विजणे गंगा-

१ कयं पा° शां १ क ३ उ ॥ २ महाविओ ती° शां विना ॥ ३ °हयपदिं शां विना ॥ ४ °ओ छण्णियामो क° शां ॥

तीरे जंतिओ, भणिओ य—जीहं तात! दंसेहि त्ति । सो[1] य से लहुहत्थयाए कत्तरीए छिण्णा । ततो अन्नायस्स खारसित्तेहिं सरीरावयवेहिं कण्ण-णासोट्ठ-कर-चरणादीहिं अग्गीहुओ, साविओ य—दुरायार! किं मया तव जायमेत्तेण अवरद्धं जं विजणे उज्झिओ सि? त्ति. कीस कस्सइ न कओ विदितो जहा जीवोवित्ति?. तुमं सि मे सत्तु त्ति । निच्छिट्ठो छूढो गंगाजले, गंधोदयसित्ता य कया भूमी, पयासियं च 'गतो विमाणेणं' ति । एवं सुलसा विवाडिया । एवं तस्स पित्ति-मायघायगस्स पिप्पलादस्स अहं सिस्सो वद्दली नाम, सो हं अहव्वेयविदू माहणे पाढेमि, मओ य छगलो जातो ।

इओ य मिहिलाए जणगो राया । तस्स सुणगमेधो तावसो उवज्झाओ । तेण अहं पुरोहिएण रन्नो संतिनिमित्तं हतो पुणरवि जातो छगलो । एएणं पंचवारे सुणकमेधेण हुओ । सुमरामि य वद्दलिप्पभवाओ जातीओ । पुणो टंकणदेसे छगलो जातो । वणिएहि य तम्मि हम्मासि त्ति एएण[3] मे उवइट्ठो अहिंसाविधो धम्मो। ततो मे चिंतियं—होइ एसो सुद्धो उवएसो धम्मस्स, वेदसत्थोवदेसस्स फलं इमं छट्ठं मरणमणुभवासि त्ति । एएण वयणं जिणदेसियं भावेण रोइयं, ठिओ मि वोसट्ठकायो अरहंतनमोक्कारपरिणओ, मारिओ वणिएहिं। ततो हं नंदीसरदीवे जातो देवो। तमहं इब्भपुत्तस्स गुरुपूयं काउंकामो आगतो ॥

ततो विज्जाहरेहिं भणियं—देव! अम्हे पुव्वं करेमु पूयं. चारुसामी अम्हं तायस्स जीवियदायगो, पच्छा तुब्भं धम्मोवदेसगो त्ति । सो भणइ—अहं ताव पूएमि, ततो तुब्भे काहिह सम्माणं ति । विज्जाहरेहिं भणिओ—देव! तुब्भेहिं पूयाए कयाए का सत्ती अम्हं अतिसएउं? अम्हेहिं पुण पूइयस्स सुस्सूसापुव्वगं तुब्भे काहेह पूयं. कुणह पसायं ति। एवं देवं अणुमाणेऊण णीओ हं विज्जाहरेहिं सिवमंदिरं नगरं । देवो वंदिऊण 'चारुसामि! चंपागमणूसुओ ममं सुमरसु' त्ति गतो। ततो हं नियगघरे इव सीहजस-वराहगीवेहिं पिउसम्माणेण उवयरिज्जमाणो अच्छामि ।

अण्णया य भणिओ मया राया—सुमरामि अम्माणं, गच्छेज्जं[6] त्ति । ततो मं भणंति दो वि जणा—तात! ण भे गंतुमणे धारेउं जुत्तं अम्हं, जह तुब्भं समाही तह होउ. एक्कं पुण सुणह—इहं तातेण अमियगइणा इहगएण धूयाए विजयसेणाए[7]देवीअत्तियाए कारणे नेमित्ती पुच्छिओ तेण आदिट्ठा—'उत्तमपुरिसभारिया भविस्सत्ति, जो सविज्जाहर दाहिणभरहं भोच्छिहिति[8]. सो य चंपाए एयं दारियं गंधव्वेण जिणेहिति चारुदत्तगिहे ठिय. चारुदत्तो य भाणुसेट्ठिपुत्तो कारणेण इह एहिति, तस्स समप्पिया तं पाविहिति तं कह नज्जिहिति?—गयमिहुणस्स चित्तकम्मालिहियस्स आउविसेस नाहिति, वीणाओ य सो दूसेहिति सकेसतंति-दड्ढ-उदगहतदारुनिम्मियाओ, सत्तसरतंती सज्जिहिति, एवं नायव्वो' तं नेह दारिगं ति । मया पडिवण्णं । ततो णेहिं दिण्णो धरणिगोयर-

---

१ सयं से व० मे० ॥ २ °वामि त्ति शां० ॥ ३ एतेहिं मे शा० ॥ ४ °उं आग° शा० विना ॥ ५ °सामिं ली ३ शां० विना ॥ ६ °च्छेज्जसु त्ति शां० ॥ ७ °णाए देवीए अ° शा० विना ॥ ८ °च्छिहत्ति शां० विना ॥ व० हिं० २०

त च मे बहु चिंता समुप्पण्णा—अहो ! इमा मायंगदारिया सभय असुयसाणी सिक्खियगुणे दसेइ रूवस्सिणी वियक्खणा य आतीए दूसिया कुडिला कम्मगती, जेण इम रयण अत्थाणे णिक्खित्त । अह च वीए रसाहियओ पस्सामि । पुच्छइ य मं किं दि यय वद्दत्ता, मया य त नट्टगुण गीयसरेण न सुय । ततो कुविया 'मद्दवसेण मायंगी पस्समाणो न मे पडिवयण देहि' त्ति आवासमतिगया । अह पि लज्जिओ कहचि मायंगकण्णगाओ दिट्ठिं निवारेऊण आवासमतिगतो । सा वि दारिया मम पस्समाणी सह सहीहिं नियत्थाणमुवगया, मायंगवुड्ढा य पणमिऊण सठिया ।

ततो अवर पविलंबिए दिणयरे गंधव्वदत्ता परिजणेण आरोविया पवहणं, पयक्खिय पत्थिय पवहण। कमेण अतिगतो मि पुरिं सह सेट्ठिणा, पच्चुग्गतो परिजणेणं, ओरुभिया गंधव्वदत्ता, अइगया वासघर, ठिया य सयणीए। भणइ य म गंधव्वदत्ता—दिट्ठा ते चंडाली ! सा य वुड्ढा ?, न रमति किं कमलवणे हसो ? त्ति। ततो मया सा ससवह पसाहिया—सुदरि ! नट्ट विसेसओ दिट्ठ मया गेय च सुय, न मायंगि त्ति । एव मे सा रयणी अइच्छिय ति ॥

॥ इति श्रीसंघदासगणिविरचिते वसुदेवहिंडौ गंधव्वदत्तालंभो तइओ सम्मत्तो ॥

गंधव्वदत्तालंभग्रं० ८९८-११ सर्वग्रं० ३३३९-१८

चउत्थो नीलजसालंभो

पभायाए य सव्वरीए कयपरिकम्मो अत्थाणगिहे अच्छए । उवट्ठिओ म दारवालो—सामि ! देवीओ मे दसण अभिलसति, सदिसह त्ति । मया भणिय—पस्संतु छदओ । ततो ह वुड्ढसमेयस्स पस्सामि पुव्वदिट्ठ मायंगवुड्ढ । सा भणइ—'पुत्त ! सुह ते ?, जीव बहूणि वाससहस्साणि' त्ति वोत्तूण पडिचारगोपणीए आसणे असकिया आसीणा । ततो मया चिंतियं—'किं मण्णे राइणो एसा कयप्पसादा, जओ जणगिहाणि पविसइ ? त्ति, आसणेसु निवेसइ ?' एव च चिंतेमि । वुड्ढो य पभणिओ गंभीरमहुराए सरस्सतीए—भद्दमुह ! जा ते सरभेई नच्चमाणी दिट्ठा कण्णगा त मे दारकाम अहमागया पडिच्छसु ण त्ति, जया एसा जोग्गा तव त्ति । मया भणिया—सरिसवण्णसबंध पससति पडिया, असमाणगोत्त न पससति । ततो भणति—जयइ भयव सुरासुरपरपूइयपायपउमो आइगरो वंसाण उसभजिणिंदो तस्सेव चलणाणुग्गहेण परिवड्ढियविमलकित्तिसमुदओ अम्ह वंसो जयति । ततो मया भणिया—को तुम्भं वसो ? त्ति। ततो भणइ—सुणाहि, जहा मया सुय पुव्वपुरिसपरंपरागय पढमजिणचरियवण्णणाहिगारेण। मया भणिया—कहेह । ततो भणइ—

१ °इम कमेण शा० विना ॥ २ °अ उक्को पवहणाओ परिजणेण ओरु° शां विना ॥ ३ °सय च सव्वरी कयं कय° क ३ गो ३ ॥ ४ °पुरिं शां विना ॥ ५ °राय पयमिय ते° ली ३ ॥ ६ पं । सा 'सव्व' त्ति मया भणिया शां० विना ॥ ७ °सयणासे° ली ३ ॥ ८ °रयरिए° ली ३ । °रयहूयपू° उ २ ॥

उसभसामिचरियं

इहेव भरहे इमाए ओसप्पिणीए छ कालभेदा, तं जहा—सुसमसुसमा १ सुसमा २ सुसमदूसमा ३ दूसमसूसमा ४ दूसमा ५ दूसमदूसम ६ त्ति । तत्थ जा य तइया समा तीसे दोसागरोवमकोडाकोडीपरिमाणाए पच्छिमतिभाए, नयणमणोहर-सुगंधि-मिउ-पंचवण्णमणि-रयणभूसियसरतलसमरम्मभूमिभाए, महु-मदिरा-खीर-खोदर[1]ससरिसविमलपागडियतोयपडिपुण्णरयणवरकणयचित्तसोमाण[2]वावि-पुक्खरिणी-दीहिगाए, मत्तंगय-भिंग-तुडिय-दीवसिह-जोइ-चित्तंग-चित्तरस-चित्तहारि-मणियंग-गेहसत्थमत्थमाधूतिलगभूयकिण्णकप्पपायवसंभवमहुरमयमज्जभायणसुइसुहसद्दप्पकासमल्लयकारसातुरसभत्त-भूसण-भवण-विकप्पवरवत्थपरिभोगसुमणसुरमिहुणसेविए काले बहुकालवण्णणिज्जे विदेहिका दुवे सत्थवाहपुत्ता सह वड्डिया, सह पंसुकीलिया, निरंतरसिणेहसबद्धा, सहियसववहारिणो, पगइभद्दया, एगो पुण कारणे कम्हिइ माती । ते सहावभद्दया कालगया समाणा अद्धभरहमज्झदेसे एगो जातो मिहुणपुरिसो, बीओ[4] पुण मायापहाणयाए तहिं चेव धवलो हत्थी जाओ । कमेण पत्ता जोव्वणं । सातिसयसोहुपुव[5]कहियपउममरसमागया अण्णोण्णदंसणविवड्डियपीइजोगा जाईसरा जाया । ततो तेण करिणा पहरिसपुण्णहियएणं नरमिहुणं खंधे समारोवियं । तेण य एरावणरूविणा चउदंतेण हत्थिरयणेण विंयरमाणो[6] सो पुरिसो 'विमलवाहणे एस अच्छति, एसो[7] एइ ?' त्ति मिहुणेहिं विम्हिय[3]मुहेहिं दीसमाणो पगासो जातो, उत्तमसंघयण-संठाण-लक्खणोववेयदेहो, नवधणुसयसमुस्सिओ । कालाणुभावेण य मणुयाणं तेसिं 'मम इमा, ण तव भूमी, मम इमो गेहागारो पुव्वं अहिट्ठिओ फलदुमो पुक्खरिणी व' त्ति । कयाइं च विमलवाहणपुण्णोदयचोइएहिं मिहुणेहिं समागएहिं कयंजलिपुडेहिं विण्णविओ—विमलवाहण! अज्जो! होहिति णे पमाणं णिग्गहा-ऽणुग्गहेसु तव संदेसेण वट्टिस्सामो. न मो वयं सत्ता परोप्पराभिभवं निवारेउं. तुमं पभवसि णे जीविदाणं, कुणसु पसायं ति । ततो तेण 'तह' त्ति पडिस्सुयं । विभत्ता य मज्झदेसवत्तीणं नरमिहुणाणं भूमिभागा दुमा य वावीओ य । भणिया य—सम्मए परेण उवकसियव्वं, न विक्कमेणं ति । जो य मज्जायमतिक्कमति तं विमलवाहणो मिहुणसमक्खं हक्कारेइ । ततो सो हक्कारओ आमरणंतं दंडं सुमरमाणो नातिक्कमति । विमलवाहणस्स भारिया चंदजसा चंदप्पहापयरविमलजसा दसभागावसेसजीविया पसूया मिहुणं चक्खुमं च चंदकंतं च । विमलवाहणो कुलगरो पलिओवमदसभागं जीविऊण कालगतो । चक्खुमं कुलगरो सुराण वि चक्खुहरसुंदररूवो हक्कारदंडणीतीये[8] सविसेसतर मिहुणेहिं पूइज्जमाणो असखाओ वासकोडीओ सामित्तं करेमाणो विहरइ । ततो चंदकंता वि चक्खुमंतो भारिया नियगाउदस-

१ °खोहर° गो ३ ॥ २ °सोवाण° ली ३ ॥ ३ °म्हियि मा° क ३ गो ३ ॥ ४ °ओ मिहुणहत्थी । कमेण शा० ॥ ५ °साहुंपु° क ३ गो ३ ॥ ६ विचरमा° ली ३ । विरायमा° शां० ॥ ७ °सो चरइ त्ति ली ३ ॥ ८ °तीए स° ली ३ उ० । °तीय स° शा० ॥

त च मे दट्ठु चिंता समुप्पण्णा—अहो ! इमा मायगदारिया समय असुचमाणी सिक्खियगुणे दसेइ रूवस्सिणी वियक्खणा य जातीए दूसिया कुडिला कम्मगती, जेण इम रयण अत्थाणे णिक्खित्त । अह च तीए रत्तहियओ पस्सामि । पुच्छइ य म किं पि गधव्वदत्ता, मया य त नट्टगुण गीयसद्देण न सुय। ततो कुविया 'मदणसेण मायगी पस्समाणो ण मे पडिवयण देहि' त्ति आवासमतिगया । अह पि लज्जिओ कहचि मायगकण्णगाओ दिट्ठि निवारेऊण आवासमतिगतो । सा वि दारिया मम पस्समाणी सह सहीहिं नियगत्थाणमुवगया, मायगवुड्ढा य पणमिऊण संठिया ।

ततो अवरं पतिलबिए दिणयरे गधव्वदत्ता परिजणेण आरोविया पवहणं, पयक्खिण पत्थिय पवहण। कमेण अतिगतो मि पुरिं सह सेट्ठिणा, पच्चुवगतो परिजणेणं, ओरुभिया गधव्वदत्ता, अइगया वासघर, ठिया य सयणीए। भणइ म गधव्वदत्ता—दिट्ठा ते चडाली ?, सा य वुड्ढा ?, न रमसि किं कमलवणे हसो ? त्ति। ततो मया सा ससवह पसाहिया—सुदरि ! नट्ट विसेसओ दिट्ठ मया गेय च सुय, न मायगि त्ति । एव मे सा रयणी अइच्छिय त्ति ॥

॥ इति श्रीसघदासगणिविरचिते वसुदेवहिंडौ गधव्वदत्तालभो तइओ सम्मत्तो ॥

गधव्वदत्तालभग्र ८९८-११ सर्वग्र ४३२९-१८

चउत्थो नीलजसालभो

पभायाए य सव्वरीए कयपरिकम्मो अत्थाणगिहे अच्छए । उवट्ठिओ म दाराहिगओ—सामि ! देवीओ भे दसण अभिलसति, सदिसह त्ति । मया भणिय—पस्सतु छदओ । ततो ह मुहुत्तमेत्तस्स पस्सामि पुव्वदिट्ठ मायगवुड्ढ । सा भणइ—'पुत्त ! सुह ते ?, जीव बहूणि वाससहस्साणि' त्ति वोत्तूण पडिचारगोपणीए आसणे असकिया आसीणा । ततो मया चिंतिय—'किं भण्णे राइणो एसा कयप्पसादा, जओ जणगिहाणि पविसइ ? त्ति, आसणेसु निवेसइ ?' एव च चिंतेमि । वुड्ढा य पभणिआ गभीरमहुराए सरस्सतीए—भद्दमुह ! जा ते सरभहे नच्चमाणी दिट्ठा कण्णगा स मे दारकामा अहमागया पडिच्छसु ण ति, अया एसा जोग्गा तव त्ति । मया भणिया—सरिसवण्णसबध पससति पडिया, असमाणगोत्त न पससति । ततो भणति—जयइ भयव सुरासुरपइपूइयपायपउमो आइगरो वसाण उसभजिणिंदो तस्सेव चलणाणुग्गहेण परिवड्ढियविमलकित्तिसमुदओ अम्ह वसो जयति । ततो मया भणिया—को तुब्भ वसो ? त्ति। ततो भणइ—सुणाहि, जहा मया सुय पुव्वपुरिसपरंपरागय पढमजिणचरियवण्णणाहिगारेण। मया भणिया—कहेह। ततो भणइ—

---

१ °हणं कमेण शा विना ॥ २ °ण उरुभो पवहणाओ परिजणेण ओद° शां विना ॥ ३ °याय च—ी ऊप कय° क ३ गो ३ ॥ ४ °पुरिं शा विना ॥ ५ °वुड्ढ पभणिय ग° शी ३ ॥ ६ णं। सा तह शां विना ॥ ७ °सजणहं शी ३ ॥ ८ °रपतिपू° शी ३ । °रपइपयपू° उ २ ॥

उसभसामिचरियं

इहेव भरहे इमाए ओसप्पिणीए छ कालभेदा, तं जहा—सुसमसुसमा १ सुसमा २ सुसमदूसमा ३ दूसमसूसमा ४ दूसमा ५ दूसमदूसम ६ त्ति। तत्थ जा य तइया समा तीसे दोसागरोवमकोडाकोडीपरिमाणाए पच्छिमतिभाए, नयणमणोहर-सुगंधि-मिउ-पंचवण्णमणि-रयणभूसियसरतलसमरम्मभूमिभाए, महु-मदिरा-खीर-खोदर[1]ससरिसविमलपागडियतोयपडिपुण्णरयणवरकणयचित्तसोमा[2]णवावि-पुक्खरिणी-दीहिगाए, मत्तंगय-भिंग-तुडिय-दीवसिह-जोइ-चित्तंग-चित्तरस-चित्तहारि-मणियंग-गेहसत्थमत्थमाधूतिलगभूयकिण्णकप्पपायवसभवमहुरमयमज्जभायणसुइसुहसद्दप्पकासमल्लयकारसातुरसभत्त-भूसण-भवण-विकप्पवरवत्थपरिभोगसुमणसुरमिहुणसेविए काले बहुकालवण्णणिज्जे विदेहिका दुवे सत्थवाहपुत्ता सह वड्ढिया, सह पंसुकीलिया, निरंतरसिणेहसबद्धा, सहियसववहारिणो, पगइभद्दया, एगो पुण कारणे कम्हि[3]इ माती। ते सहावभद्दया कालगया समाणा अद्धभरहमज्झदेसे एगो जातो मिहुणपुरिसो, बीओ[4] पुण मायापहाणयाए तहिं चेव धवलो हत्थी जाओ। कमेण पत्ता जोव्वणं। सातिसयसो[5]हुपुव्वकहियपउमसरसमागया अण्णोण्णदंसणविवड्ढियपीइजोगा जाईसरा जाया। ततो तेण करिणा पहरिसपुण्णहियएणं नरमिहुणं खंधे समारोवियं। तेण य एरावणरूविणा चउदंतेण हत्थिरयणेण वि[6]यरमाणो सो पुरिसो 'विमलवाहणे एस अच्छति, एसो[7] एइ?' त्ति मिहुणेहिं विम्हियमुहेहिं दीसमाणो पगासो जातो, उत्तमसघयण-संठाण-लक्खणोववेयदेहो, नवधणुसयसमुस्सिओ। कालाणुभावेण य मणुयाणं तेसिं 'मम इमा, ण तव भूमी, मम इमो गेहागारो पुव्वं अहिट्ठिओ फलदुमो पुक्खरिणी व'त्ति। कयाइं च विमलवाहणपुण्णोदयचोइएहिं मिहुणेहिं समागएहिं कयंजलिपुडेहिं विण्णविओ—विमलवाहण! अज्जो[1] होहिति णे पमाणं णिग्गहा-ऽणुग्गहेसु. तव संदेसेण वट्टिस्सामो. न भो वयं सत्ता परोप्पराभिभवं निवारेउं. तुमं पभवसि णे जीविदाणं, कुणसु पसायं ति। ततो तेण 'तह' त्ति पडिस्सुयं। विभत्ता य मज्झदेसवत्तीणं नरमिहुणाणं भूमिभागा दुमा य वावीओ य। भणिया य—सम्मए परेण उवकसियव्वं, न विक्कमेणं ति। जो य मज्जायमतिक्कमति तं विमलवाहणो मिहुणसमक्खं हक्कारेइ। ततो सो हक्कारओ आमरणंतं दंडं सुमरमाणो नातिक्कमति। विमलवाहणस्स भारिया चंदजसा चंदप्पहापयरविमलजसा दसभागावसेसजीविया पसूया मिहुणं चक्खुमं च चंदकंतं च। विमलवाहणो कुलगरो पलिओवमदसभागं जीविऊण कालगतो। चक्खुमं कुलगरो सुराण वि चक्खुहरसुदररूवो हक्कारदंडणीतीये[8] सविसेसतर मिहुणेहिं पूइज्जमाणो असखाओ वासकोडीओ सामित्तं करेमाणो विहरइ। ततो चंदकंता वि चक्खुमंतो भारिया नियगाउदस-

---

१ °खोहर° गो ३ ॥ २ °सोवाण° ली ३ ॥ ३ °म्हिथि मा° क ३ गो ३ ॥ ४ °ओ मिहुणहत्थी। कमेण शा० ॥ ५ °सालुपु° क ३ गो ३ ॥ ६ विचरमा° ली ३। विरायमा° शा० ॥ ७ °सो चरइ त्ति ली ३ ॥ ८ °तीए स° ली ३ उ०। °तीय स° शा० ॥

डुइहो रयण-हिरण्णरासी । पत्थाणकाले य विजयसेणाए देवीए सुया मे अप्पिया सपरिच्छदा सदास पडिचारगा 'गंधव्वदत्ता एसा धूया राइणा पव्वयंतेण संदिट्ठा, तुज्झ धम्मेण धम्मनिक्खेवो' त्ति ।

चिंतिओ य मया देवो सणियमेण[1] उवागतो । विमाणेण तेण आणिओ पुरिं चंपं सविड्ढीओ सह गंधव्वदत्ताए परिचारिगासहियाए अड्ढरत्ते । दिण्णो णेण विउलो अत्थसारो त्ति निक्खित्तो ववणे पुरिमाहिं, पडमंडवेसु य पसुत्तो परिचारियवग्गो । 'राय संदिसामि तव निमित्ते, कज्जे य मे सुमरिज्जासि' त्ति वोत्तूण गतो देवो । विज्जाहरदेवदिण्णा वेसर खरा उट्टा य सज्जिया, सगडाणि य ठवियाणि विविहभंडोवक्खरभरियाणि । देवसंदिट्ठो य राया आगतो पच्चूसे दीविगापरिविओ अप्पपरियणो । मम निवेदियं, पूइओ अग्घेण, 'त पाइ परिस्सवो, इयाणिं तुब्भेहिं अह सणाहो गिहं पविसिज्जउ, मोएमि णं अह' त्ति । वइए आगते सुयवुत्तो माउलो आगतो, सो मे परिस्सतो, भणियं च णेण—अहो[1] ते कुलं उण्णामियं, कओ ते पुरिसयारो । पुच्छिओ—अम्माण को पवत्तो ? । साहइ—सुणह—तुब्भेसु पवासिएसु वसंततिलया तुब्भे अपस्समाणी गिहे, असोगवणियं च हिंडिऊण पुच्छिया चेडिगाओ—कहिं गओ चारुसामि त्ति ? ताहिं कए निवेदे कहियं—अम्माहिं 'अत्थहीणो' त्ति काऊण उज्झिओ ओगणणमीओ सूयगेहे तओ उवलभिउं वर गया घरिणिसयास अपस्समाणीय तुमं बद्धो वेणीबंधो, दिण्णो निक्कओ रण्णो, पडियग्गया घरिणिं, मित्तवती य धय रक्खमाणी अच्छइ त्ति, राइणा य मोइयं गिहं । तओ हं पहट्ठो पवेसिओ नेगमेहिं पूइज्जमाणो नियगघरं, वंदिया अम्मा, मित्तवती उवगूहिया, वेणीबंधं मोइया वसंततिलया, घरिसाणि य रयणाणि भंडगिहेसु । संपुण्णजोव्वणा य गंधव्वदत्ता कमेण जाया । तओ मया समागवो कारिओ, गंधव्वंहणा(गंधव्वपइण्णा) य धारियाए पगासिय तुम्ह परिमग्गणत्थाए गयमिहुणं कारियं, सिप्पिणा य ठेमक्स कारियं । तओ हं कुलधम्माणुवरोहेण भोगे भुंजमाणो विहरामि, मित्तसुयविज्जाहरसंदेसं च मासे मासे अणुट्ठेमि ।

स एसो अत्थो जं मया तदा भणियं—दारिगा कुलेण तुज्झ समा वा विसिट्ठा वा होज त्ति, अणिगाहुणकारणं च पुच्छिया ॥

एवं सोऊण मया सेट्ठी पूइओ विसज्जिओ य । अहमवि भुंजामि भोए गंधव्वदत्तं लालयंतो, तीसे अणुमयाओ य सामा विजयाओ सामबहुल-मिय-महुरभासिणीओ कलासपुण्णाओ । एवं मे सिट्ठिभवणे निरुवसग्गा वच्चइ कालो ।

१ °मेवं उ° शा विना ॥ २ °चारगव° शां ॥ ३ °रेज्जासु त्ति शां ॥ ४ सेणाहं शां ॥ ५ सोमधं° शां । सो म धं° उ मे ॥ ६ वयतो शां ॥ ७ °णा उ धु° शां विना ॥ ८ °च्छति इति क ३ गो ३ ॥ ९ °ओ गिहं ने° शां विना ॥ १ °जयणा य दा° शां विना ॥ ११ °सिय शां विना ॥ १२ सेट्ठिण्ण उ २ विना ॥ १३ सयाणा मि° की ३ ॥

उवत्थिओ य पहाणो रिऊ वसंतो, संसाहिओ सिसिरो, भमइ कुसुमसुरभिरओ, सुइ- सवणसुहयं परहुयारुयं, सुहोपभोगाइं सलिलियाइं मयणवसमुवेइ तरुणसत्थो, वुत्ता य सुरवणे जत्ता । चंपाहिवस्स पुव्वकराइणो देवीए समुद्दमज्जणदोहलविणोयणत्थं मणो- सचारिमसलिलवित्थरिओ 'समुद्दो' त्ति दंसिओ उवायपुव्वं । तीए सपुण्णदोहलाए पुत्त- लंभपरितोसपुण्णसुहीय विणोयत्थाय संवच्छरजायं (ग्रंथाग्रम्—४३००) पुत्त नहा... पउरमहियाए किर पवत्तियाय अणुवत्तए बहुं कालं ।

ततो सिट्ठिणो अणुमए कयं मे उउगुणसाहारणं परिकम्मं । आगया गंधवदत्ता मह- रिहाऽऽभरण-वसणा परियणाणुबद्धा, वंदिऊण पासे मे निसण्णा । सेट्ठिसंदिट्ठं च मे पवहणं उवट्ठियं, उवगतो मि बाहिं भवणस्स, आरूढो य समं गंधवदत्ताए, गहिया तुरंगा ... रस्सीओ, पत्थिओ मि रायमग्गेण, वाहण-पुरिससवाहेण किच्छेण निग्गओ नयरीओ । अणुबद्धं मे पवहणं परियणेण, पिसियं गम्मए पस्समाणेहिं कित्तणाणि । वयति णागरया विभवे दंसेता । कमेण उववणपरंपरदंसणमणो पत्तो जणो महासरं । तत्थ वासुपुज्जस्स अरहओ आयतणं, तत्थ पहाणो जणो कयपणिवाओ सठिओ तेसु तेसु पदेसेसु मंदारगण- कुसुमियपायवगहणेसु । अहमवि सेट्ठिस्स णाइदूरे अवइण्णो पवहणाओ सह गंधव्वद- त्ताए, पुव्वसज्जिए आसणे ठितो, वीसताण य दिज्जए अण्ण-पाणं, विहिए उवभुंजामहे सह परिजणेण । भुत्तभोयणो य सह पियाए पस्सामि वसतकालजणियसोभे सहयार-तिलय- कुरवय-चंपगपायवे, ते य दंसेमि गंधवदत्ताए ।

दिट्ठं च मे असोगपायवस्स अहे सण्णिसण्णं नागकुलमिव चण्डालकुलं । मायंगे तत्थ मल्लदामालंकिए, चंदणाणुलित्ते, चुण्णभुक्खंडियबाहु-सीसे, कुवलयकिसलयतणमोल्लियक- यकण्णपूरे मत्ते विय मायंगे पासामि । तेसिं च मज्झे कालिया सिणिद्धछविया सुहुमा- विया वुड्ढा य पसत्थगंभीरा दसिणासवायसुकुमालाणि वत्थाणि परिहिया दिट्ठा य मया पीढिकासण्णिसण्णा रायलच्छीविहूसिया । अण्णम्मि य अवगासे ससमऽसमीवे दिट्ठा य मया कण्णा कालिगा मायंगी जलदागमसम्मुच्छिया विव मेघरासी, भूसणपहाणुरंजि- यसरीरा सणक्खत्ता विय सवरी, मायंगदारियाहिं सोमरूवाहिं परिविया कण्णा । तत्थ ममं पस्समाणी संठिया, भणिया य सहीहिं—सामिणि ! नट्टोपहारेण कीरउ महासरंगणं ! ततो धवलदसणप्पहाए जोण्हामिव करेंतीए ताए भणियं—एवं कीरउ, जइ तुम्हं रोयइ त्ति । कुसुमियअसोगपायवसंसिया मंदमारुयपकंपिया इव लया पणच्चिया । ताओ वि य निसण्णाओ महुयरीओ विव उवगाइउं पवत्ताओ सुइमधुर । ततो सा धवलेण लोयणजु- यलसचारेण कुसुयदलमयं दिसावलिसिव कुणमाणी, पाणिकमलविच्छोभेणं कमलकिसलय- सिरिंमावहंती, कमागयपाउद्धारेणं सारसारससोभमुवहंती नच्चइ ।

१ सवरणे (सरवणे) शां० विना ॥ २ °मुप्पण्णदो° ली ३ ॥ ३ सागरास° शां० ॥ ४ °सुमिएसु पं... सनयरासण्णकुसुमियपाय° शा० विना ॥ ५ °से मम ली ३ शा० मे० ॥ ६ °ए णाए शां० ॥ ७ °ण... शां० विना ॥ ८ °रिमोहावत्ती शां० ॥ ९ °ण सरससोभ° क ३ गो ३ । °ण सरसरससोभ° ली ३ ...

तं च मे दट्ठु चिंता समुप्पण्णा—अहो ! इमा मायंगदारिया समयं असुणमाणी सि क्खियगुणे दंसेइ रूवस्सिणी वियक्खणा य जातीए दूसिया कुडिला कम्मगती, जेण इमं रयणं अत्थाणे णिक्खित्तं । अहं च तीए रत्तहियओ पस्सामि । पुच्छइ य मं किं पि गंधव्वदत्ता, मया य त नट्टगुण-गीयसद्देण न सुयं । ततो कुविया 'मदवसेण मायंगी पस्समाणो ण मे पडिवयणं देहि'त्ति आवासमतिगया । अहं पि लज्जिओ कहचि मायंगकण्णगाओ दिट्ठिं निवारेऊण आवासमतिगतो । सा वि दारिया ममं पस्समाणी सह सहीहिं नियगत्थाणमुवगया, मायंगवुड्ढा य पणमिऊण सठिया ।

ततो अवरं पतिलंबिए दिणयरे गंधव्वदत्ता परिजणेण आरोविया पवहणं, पयक्खिणं पत्थियं पवहणं । कमेण अतिगतो मि पुरिं सह सेट्ठिणा, पच्चुवगतो परिजणेणं, ओरुभिया गंधव्वदत्ता, अइगया वासघरं, ठिया य सयणीए । भणइ मं गंधव्वदत्ता—दिट्ठा ते चंडाली ? सा य वुड्ढा ?, न रमति किं कमलवणे हंसो ? त्ति । ततो मया सा ससवहं पसाहिया—सुंदरि ! नट्टविसेसओ दिट्ठं मया गेयं च सुयं, न मायंगि त्ति । एवं मे सा रयणी अइच्छिय त्ति ॥

॥ इति श्रीसंघदासगणिविरचिते वसुदेवहिंडौ गंधव्वदत्ता लंभो तइओ सम्मत्तो ॥

गंधव्वदत्तालंभग्रं ८९८-११ सर्वग्रं ४३११-१८

चउत्थो नीलजसालंभो

पभायाए य सव्वरीए कयपरिकम्मो अत्थाणगिहे अच्छए । उवट्ठिओ मं दाराहिगतो—सामि ! देवीओ भे दंसणं अभिलसंति, संदिसह त्ति । मया भणिवं—पस्सउ छंदओ । ततो हं मुहुत्तमेत्तस्स पस्सामि पुव्वदिट्ठं मायंगवुड्ढं । सा भणइ—'पुत्त ! सुहं ते ?, जीव बहूणि वाससहस्साणि' त्ति वोत्तूण पडिचारगोपणीए आसणे असंकिया आसीणा । ततो मया चिंतियं—'किं मण्णे राइणो एसा कयप्पसादा, जओ जणगिहाणि पविसइ ? त्ति, आसणेसु निवेसइ ?' एवं च चिंतेमि । वुड्ढा य पभणिआ गंभीरमहुराए सरस्सतीए—भद्दमुह ! जा ते सरम्भहे नच्चमाणी दिट्ठा कण्णगा स भे दावकामा अहमागया पडिच्छसु णं ति, जया एसा जोग्गा तव त्ति । मया भणिया—सरिसवण्णसबंधं पसंसति पंडिया, असमाणगोत्तं न पसंसंति । ततो भणति—जयइ भयवं सुरासुरपइपूइयपायपउमो आइगरो वंसाणं उसभजिणिंदो तस्सेव चलणाणुग्गहेण परिवड्ढियविमलकित्तिसमुदओ अम्हं वंसो जयति । ततो मया भणिया—को तुम्हं वंसो ? त्ति । ततो भणइ—सुणाहि, जहा मया सुयं पुव्वपुरिसपरंपरागयं भदमजिणचरियवण्णणाहिगारेण । मया भणिया—कहेह । ततो भणइ—

---

१ °हणं कमेण शा विना ॥ २ °ण उरूओ पवहणाओ परिजणेण ओह° शां विना ॥ ३ °याय च सबरी कय कय° क ३ गो ३ ॥ ४ °पुरिं च्य विना ॥ ५ °हाय पभायिय तं° ली ३ ॥ ६ पं । सा 'तह चि मया भणिया शां विना ॥ ७ °सजणसं° ली ३ ॥ ८ °रयरिए° ली ३ । °पपहयए° उ २ ॥

उसभसामिचरियं

इहेव भरहे इमाए ओसप्पिणीए छ कालभेदा, तं जहा—सुसमसुसमा १ सुसमा २ सुसमदूसमा ३ दूसमसूसमा ४ दूसमा ५ दूसमदूसम ६ त्ति । तत्थ जा य तइया समा तीसे दोसागरोवमकोडाकोडीपरिमाणाए पच्छिमतिभाए, नयणमणोहर-सुगंधि-मिउ-पंचवण्णमणि-रयणभूसियसरतलसमरम्मभूमिभाए, महु-मदिरा-खीर-खो[1]दरससरिसविमलपागडियतोयपडिपुण्णरयणवरकणयचित्तसो[2]माणवावि-पुक्खरिणी-दीहियाए, मत्तंगय-भिंग-तुडिय-दीवसिह-जोइ-चित्तंग-चित्तरस-चित्तहारि-मणियंग-गेहसत्थमत्थमाधूतिलगभूयकिण्णकप्पपायवसंभवमहुरमयमज्जभायणसुइसुहसद्दप्पकासमल्लयकारसातुरसभत्त-भूसण-भवण-विकप्पवरवत्थपरिभोगसुमणसुरमिहुणसेविए काले बहुकालवण्णणिज्जे विदेहिका दुवे सत्थवाहपुत्ता सह वड्ढिया, सह पंसुकीलिया, निरंतरसिणेहसबद्धा, सहियसववहारिणो, पगइभद्दया, एगो पुण कारणे कम्हि[3]इ माती । ते सहावभद्दया कालगया समाणा अद्धभरहमज्झदेसे एगो जातो मिहुणपुरिसो, बीओ[4] पुण मायापहाणयाए तहिं चेव धवलो हत्थी जाओ । कमेण पत्ता जोव्वणं । सातिसयसो[5]हुपुव्वकहियपउमसरसमागया अण्णोण्णदंसणविवड्ढियपीइजोगा जाईसरा जाया । ततो तेण करिणा पहरिसपुण्णहियएणं नरमिहुणं खंधे समारोवियं । तेण य एरावणरूविणा चउदंतेण हत्थिरयणेण वि[6]यरमाणो सो पुरिसो 'विमलवाहणे एस अच्छति, एसो[7] एइ ?' त्ति मिहुणेहिं विम्हियमुहेहिं दीसमाणो पगासो जातो, उत्तमसंघयण-संठाण-लक्खणोववेयदेहो, नवधणुसयसमुस्सिओ । कालाणुभावेण य मणुयाणं तेसिं 'मम इमा, ण तव भूमी, मम इमो गेहागारो पुव्वं अहिट्ठिओ फलदुमो पुक्खरिणी व'त्ति । कयाइं च विमलवाहणपुण्णोदयचोइएहिं मिहुणेहिं समागएहिं कयंजलिपुडेहिं विण्णविओ—विमलवाहण! अज्जो! होहिति णे पमाणं णिग्गहा-ऽणुग्गहेसु. तव सद्देसेण वट्टिस्सामो. न मो वयं सत्ता परोप्पराभिभवं निवारेउं. तुमं पभवसि णे जीविदाणं, कुणसु पसायं ति । ततो तेण 'तह' त्ति पडिस्सुयं । विभत्ता य मज्झदेसवत्तीणं नरमिहुणाणं भूमिभागा दुमा य वावीओ य । भणिया य—सम्मए परेण उवकासियव्वं, न विक्कमेणं ति । जो य मज्जायमतिक्कमति तं विमलवाहणो मिहुणसमक्खं हक्कारेइ । ततो सो हक्कारओ आमरणंतं दंडं सुमरमाणो नातिक्कमति । विमलवाहणस्स भारिया चंदजसा चंदप्पहापयरविमलजसा दसभागावसेसजीविया पसूया मिहुणं चक्खुमं च चंदकंतं च । विमलवाहणो कुलगरो पलिओवमदसभागं जीविऊण कालगतो । चक्खुमं कुलगरो सुराण वि चक्खुहरसुदररूवो हक्कारदंडणीतीये[8] सविसेसतर मिहुणेहिं पूइज्जमाणो असंखाओ वासकोडीओ सामित्तं करेमाणो विहरइ । ततो चंदकंता वि चक्खुमंतो भारिया नियगाउदस-

१ °खोहर° गो ३ ॥ २ °सोवाण° ली ३ ॥ ३ °म्हियि मा° क ३ गो ३ ॥ ४ °ओ मिहुणहत्थी । कमेण शा० ॥ ५ °सादुंपु° क ३ गो ३ ॥ ६ विचरमा° ली ३ । विरायमा° शां० ॥ ७ °सो चरइ त्ति ली ३ ॥ ८ °तीए स° ली ३ उ० । °तीय स° शा० ॥

भागसेसे असमायण जसंवंत रूवसालिणिं च सुरूव ति मिहुण पसूया । चक्खुम अट्ठधणुसयसमुस्सिओ जसमत कुलगरवावारे णिउंजिऊण समाहीए कालगतो । कालेण य मिहुणा हक्कारठिर्ति भिंदति, जसवया मक्कारो दडनीई पउत्ता । सुरूवा वि चदमिव मिहुणणयणाणदण अभिचदकुमार पडिरूव च रूविण मिहुण पयाया । जसव असखेज्ज-वासकोडिजीवी सत्तधणुसयमूसियतणू अभिचदसकामियाहिगारो अतिक्कतो । अभिचदो हक्कार-मक्कारेहिं मिहुणाण सासण कुणमाणो सुहेण विहरति । पडिरूवाए य मिहुणनयणकुमुदसरयचदो पसेणई नाम कुमारो, सुरवहूण पि चक्खुरमणरूवा चक्खुकता य नाम कुमारी मिहुण जणिय । अहिचदो वि कुलगरो अद्धसत्तमधणुसयवरवदेहो गणणातीतवासकोडीपरिमियाऊ कालगतो । पसेणतिणा य हक्कार-मक्कारवइक्कमे धिक्कारो तइया दडनीती पउत्ता । तस्स भारिया चक्खुकता कमेण य मणुयदेव मरुदेव नाम कुमारं, सिरिकत च सिरिमिव रूविणिं कुमारिं मिहुण पसूया । पसेणई कुलगरो छद्धणुसउविद्धदेहो असखिज्जवासजीवी सभारिओ मरुदेवसकामियसिरी सुहेण कालगतो । मरुदेवकुलयरो अद्धच्छट्ठधणुसयपमाणतणू तिहिं दडनीतिहिं मिहुणाणि पालयतो सुर इव मणुयमोए भुजइ । सिरिकता य कवरूव मणुयलोकनाभिभूय नाभिकुमार, मरुदेवी य देववहुपरिवदियगुण कुमारी मिहुण पसूया । तओ मरुदेवो कुलगरो (ग्र था ग्रम्–४४००) सखातीतवासकोडीजीवी नाभिसमप्पियपयापालणवावारो कालगतो । णाभी तिहिं दडनीतीहिं फरुसवयणाहियाहिं रक्खइ मिहुणजण, पणुवीसाहिगपचधणुसऊसियमणोहरसरीरो सखे ज्जवासकोडीजीवी सुहेण विहरति पसत्थवाणी ।

मरुदेवाए सुमिणदसण उसहसामिजम्मो य

कयाइ च भयवती मरुदेवा महरिहे सयणीते सुहपसुत्ता सिमिणे पासति वसभं नहंगणाओ उवयमाण । तओ चिंतेइ—किं सचारिमो रययपव्वओ होज्जा ? अहवा धवलो बलाहओ होज्ज ? त्ति । पत्तो य समीव, पिच्छइ य ण पसत्थमुह-नयण कण्ण-खुर सिंग ककुह पुच्छ मणोहर विम्हिया, उमायतीए मुहमतिगतो । तओ चिंतेइ य—'एव सुदररूवो महप्पमाणो वसहो मुहमतिगतो, इमेण मे न काय पीला सरीरस्स, परमा य निव्वुई' त्ति पडिबुद्धा १ । पुणो य सिमिणे तदणतर गलियजलजलदधवलतरदेहमूसिय, चउविसाण पिच्छइ एरावण गयवर २ । तओ य हारनियरच्छविं, जलणकविलकेसरविराजित, सुपसत्थरूव सीह सम्मुह नियच्छए सा ३ । अभिसिंचइ य विगसितसतपत्तमुहनिसण्ण, दिसागयदेहिं चउहिं लच्छि णभगणाओ उवयत ४ । दामदुय पवरकुसुमसचयनिम्मविय, सुरभिगधवासियदिसाविभाग ५ । उदिते, ओण्हापर्भाकरेंतदिसिनिलये, सकले जुगव च

१ °भागे से° ली १ क ३ ॥ २ °समत शा ॥ ३ °क्कारिपाठि° शा विना ॥ ४ °पइणा शा विना ॥ ५ ततिया शा ॥ ६ सुरवइ व्व मणु° ली ३ । सुरो इव मणु° शा ॥ ७ °लाभो च २ मे विना ॥ ८ पेच्छति शा ॥ ९ वियसियसयवत्तपत्त° शा विना ॥ १ °भाकीरंत° ली ३ ॥

चंद-सूरे पेच्छइ ६-७ । सक्कज्झयं च गगणतलमणुलिहंतं, मणिरयणोचितविसिट्ठकुडभी-सहस्समंडियाभिरामं महप्पमाणं च ८ । कणगकलसं जलभरियं, कमलसुट्ठियं, पंकयपि-हाणं ९ । ततो सरं कमल-कुमुद-कुवलयंसितसोमयरदरिसणिज्जं, कुसुमासवलोलभमरपरि-भुज्जमाणसुभगं १० । पुणो समुद्दं च कुंद-कुमुददलनियर-रजतसमवण्णसलिलं खीरोदं, मउयमारुतेरिततरंगहत्थेहिं नच्चमाणं ११ । तओ य सुंदरमुहीहिं सुरसुंदरीहिं सेविज्जमा-णमुत्तमं, कंचण-मणिजालभासुरं विमाणं पेच्छइ, नागभवणं च सुनिपुणनागवधूगीयस-द्दमुहलं १२ । ततो ससि-सूरकंत-फलिह-कमलरागिंदणीलबहुलं रासिं रयणाणं मंदर-समं १३ । पेच्छइ य विधूमं जलणमाहुतिपदिप्पमाणं महप्पमाणं १४ ।

दट्ठूण य एरिसे विबुद्धा चोद्दस सिमिणे पसण्णचित्ता । ततो चिंतेइ—एरिसयं अब्भुययं अज्जस्स कहेमि, सो फलं नाहिति । कहियं च णाए नाभिस्स सुमिणदंसणं । तं च सोऊण नाभी परं परितोससुवगतो सेमतीए विचारेऊण भणति सुइरसायणं वयणं—अज्जे ! तुमे उ-त्तमा सुमिणा दिट्ठा, धण्णा, मंगल्ला. तुमं नवसु मासेसु अतीतेसु अम्हं कुलयरपुरिसप्पहाणं, भरहवासतिलयं, तिलोगपयासं पुत्तं पयाहिसि । ततो तीए परितुट्ठाए 'अज्ज' एवमेयं, जं तुमे वयहिं'—त्ति पडिस्सुयं । ततो भयवं उसभसामी पुव्वभवे वइरनाभो तित्थयरनामगो-यकयसंगहो सव्वट्ठसिद्धाओ विमाणाओ तेत्तीस सागरोवमाइं विसयसुहमणुत्तरं अणुहवि-ऊण मरुदेवाए कुच्छिंसि उववण्णो उत्तरासाढजोगजुत्ते निसायरे । ततो नाभिकुलयरपत्ती मरुदेवा देवेहिं देवीहि य पूइज्जमाणी सुहेण तित्थयरगब्भं परिवहइ । पुण्णे समये पसूया चे-त्तबहुलट्ठमीए विस्सदेवानक्खत्ते पुत्तं पुरिसाइसयं, सव्वमंगलालयं, तत्ततवणिज्जपिंजरसरीरं ।

दिसाकुमारिविणिम्मिओ उसभसामिजम्मूसवो

ततो अहेलोगवत्थव्वाओ दिसाकुमारीओ चलियासणाओ ओहिणा तित्थयरजम्मं जाणि-ऊण तक्खणमेव—

भोगंकरा भोगवती, सुभोगा भोगमालिणी ।
तोयधारा विचित्ता [य], पुप्फमाला अणिंदिया ॥

अट्ठ वि जोअणप्पमाणेहिं आभियोगदेवविउव्विएहिं विमाणेहिं सामाणिय-महत्तरिया-परिसा-ऽणीका-ऽऽयरक्खपरिवियाओ उक्किट्ठाए दिवाए देवगतीते गेहाकारमणुपत्ताओ । तित्थयरं म-रुदेविं च वंदिऊण विणएण जम्मणमहिमनिमित्तं संवट्टगवायपूयं जोयणपरिमंडलंतं पएस काऊण परिगायमाणीओ चिट्ठंति । ततो उड्ढलोगवत्थव्वाओ अट्ठ दिसाकुमारिमहत्तरियाओ—

मेहंकरा मेहवती, सुमेहा मेहमालिणी ।
सुवत्था वत्थमित्ता य, वारिसेणा बलाहगा ॥

एयाओ वि तेणेव कमेणं समागयाओ गंधोदगं वरिसिऊण तहेव परिगायमाणीओ चिट्ठं-ति । तहेव पुरित्थिमरुयगवत्थव्वाओ, तं जहा—

१ °यवियसिय° गो० शां० विना ॥ २ सम तीए शां० विना ॥ ३ अहरुयगवं° शां० ॥ ४ °ण आग° शां० विना ॥

नदुत्तरा य नंदा य, आणंदा णंदिवद्धणा ।
विजया य वेजयंती, जयंती अपराजिया ॥

ताओ वि तहेव पणमिऊण आयंसहत्थाओ गायमाणीओ चिट्ठंति । तओ दाहिणरुयगवत्थव्वाओ—

समाहारा सुप्पतिण्णा, सुप्पसिद्धा जसोहरा ।
लच्छिवती सेसवती, चित्तगुत्ता वसुंधरा ॥

एयाओ विणयपणयाओ भिंगारहत्थाओ चिट्ठंति । ततो पच्छिमरुयगवत्थव्वाओ—

इलादेवी सुरादेवी, पुहवी पउमावती ।
एगणासा णवमिगा, भद्दा सीया य अट्ठमी ॥

एयाओ वि तहेव उवागयाओ तालियंटगहत्थाओ विणएण सठियाओ । ततो उत्तररुयगवत्थव्वाओ—

अलंबुसा मीसकेसी य, पुंडरिगिणी य वारुणी ।
हासा सव्वप्पभा चेव, सिरी हिरी चेव उत्तरओ ॥

ताओ वि य चामरहत्थगयाओ चिट्ठंति । ततो रुयगविदिसिवत्थव्वाओ चत्तारि विज्जुकुमारिमहत्तरियाओ—

चित्ता चित्तकणगा सतेरा सोतामणी ।

ताओ य तेणेव विहिणा चउसु विदिसासु दीवियाहत्थगयाओ परिगायमाणीओ ठियाओ । तओ य रुयगमज्झवत्थव्वाओ दिसाकुमारीओ चत्तारि—

रूयगा रुयगसहा सुरूवा रूयगावती ।

ताओ वि भवपच्चइओहिनाणोवयोगविदियतित्थयरजम्मणाओ जाण विमाणरयणारूढाओ, सपरिवाराओ दुवमागतूण कयवंदणाओ जिणजणणीए निवेइयागमणकारणाओ तित्थयरस्स चउरंगुलवज्जं णाहिं कप्पेंति, कप्पेत्ता निहणंति, रयणपरिपूरियं ततो दुव्वावेढं बंधंति । ततो य मरगयमणिसामले कयलिघरे तिदिसिं विउव्वंति दाहिण पुरत्थिमुत्तराणे भूसणभूसिए गेहागारदुमस्स कयलीघरमज्झदेसेसु य हेमजालालंकियाणि चाउसालाणि विउव्वंति । ततो एताओ तित्थयरमायरं ससुयं मणिकिरणकरंबियसीहासणसुट्ठिय कमेण सिणेहऽभ(ब्भ)गुव्वट्टिय काऊण, दाहिण-पुरत्थिमे तिविहसलिलण्हाय सुमणसं काऊण, उत्तरचाउस्साले गोसीसचंदणारणिसमत्थं अग्गिं हुणंति, कयरक्खाकम्माओ जम्मणभवणे साहरंति । ततो मंगलाणि गीयाणि उदीरेमाणीओ ठियाओ ।

देवविणिम्मिओ उसभजम्मूसवो

तम्मि य समए सक्को देवराया, बालरविमंडलजुइणा पालएण विमाणेण वितिमिरं गग

१ सुणंदा शां ॥ २ मितके° ली ३ । सेसके° क ३ गो ३ ॥ ३ °वरिती य शां विना ॥ ४ °ओमो शा विना ॥ ५ रूयगा रुयंसा य सुरू° शां विना ॥ ६ °णिकरकर° शां ॥ ७ °लाणि ली ३ ॥

णदेसं कुणमाणो, सपरिवारो जिणजम्मभूमिमुवगतो; तित्थयरजणणिं सुहमणहराए भारहीए संथुणित्ता, दिण्णावसोवणीयं मरुदेवीए कुमारपडिरूवए विउव्वियपासत्थिए वीसत्थाए परमादरविहियपंचरूवी भयवंतं करकमलपुडसुपरिग्गहियं काऊण, मंदरगिरिवरचूलामणिभूयाए चूलिगाए दाहिणदिसाभायपइट्ठियाए अइपंडुकंबलसिलाए खणमेत्तसाहरियं, चउव्विहदेववंदकयसण्णेज्झं भयवंतं सासयसीहासणसुहासीणो सहस्सनयणो ठितो। ततो अच्चुइंदो परितोसवियसियमुहारविंदो विहीए खीरोयसायरसलिलभरिएँण कणयकलसट्ठसहस्सेण अहिसिंचए, कमेण सव्वोसहि-तित्थोदएहि य अहिसिचइ। अहिसिंचंते य लोगणाहे देवा पसण्णहियया रयण-मणि-कुसुमाणि वरिसंति। अच्चुइंदो भयवंतं विहीय अहिसिंचिऊण, पयओ अलंकिय-विहूसियं काऊण, ततो मंगलाणि आलिहइ सोत्थियादीणि, धूवं घाण-मणदइयं संचारेऊण, सुइमहुरं थोऊण भयवंतं पज्जुवासति। एवं पाणयादिया वि सुरपइओ भत्तिवसचोइया धुयभयं भवियकुमुदचंदं सबायरेण पूएऊण परमसुमणसा थुइपरायणा ठिया। ततो सक्केण तेणेव विहिणा खणेण भयवं जम्मणभवणे माउसमीवे साहरिओ। अवणीयसुयपडिरूवगा य पडिबुद्धा देवीहिं कयजयसद्दा मरुदेवी। खोमजुयलं कुंडलजुयलं च ऊसीसगमूले निक्खिवइ सुरवती, सबविग्घसमणं सिरिभायणमिव सिरिदामगंडं दिट्ठिसमासासणकरं उल्लोयंसि निक्खिवइ, विउलं रयणरासिं दाऊण रक्खानिमित्तं घोसेऊण मघवं गतो सनिलयं। देवा सेसा य जिणप्पणामसमज्जियपुण्णसंचयाँ गया णियट्ठाणाणि।

ततो भयवओ(वं) पलिओवमट्ठितियाए देवयाए सुरवतिसंदिट्ठाए परिग्गहिओ कुरुसंभवफल-रससुरवइविदिण्णकयाहारो वड्ढइ सुहेण मिहुणगणकुमुदबालचंदो। सुमिणदंसणनिमित्तं अम्मा-पिऊहिं कयं नाम 'उसभो' त्ति। भयवओ संवच्छरजायगस्स य सहस्सनयणो वामणरूवी उच्छुकलावं गहेऊण उवट्ठिओ नाभिसमीवं। भयवया य तिविहणाणप्पहावेण विण्णाओ देविंदाहिप्पाओ। ततो णेण लक्खणपसत्थो हत्थो दाहिणो पसारिओ। ततो मघवया परितुट्ठेण भणिओ—किं उच्छु अगु? त्ति। अगु भक्खणे य धाऊ। जम्हा य इक्खू अभिलसिओ तम्हा 'इक्खागुवंसो' त्तिं ठाविओ। ततो भयवं सुमंगलाए समं वड्ढइ। तम्मि समए मिहुणं जायमेत्तयं तालरुक्खस्स हेट्ठा ठवियं, तत्थ दारगो तालफलेण विहाडिओ, सा दारिया विवड्ढिया णाभिस्स निवेइया य। सा यं उक्किट्ठसरीरा देवकण्णगा विव णाभिणा सारक्खिया। तप्पभिइं च अकालमच्चू पवत्तो। जंभगेहिं लोगंतिएहिं य समाणरूवेहिं सेविज्जमाणो परिवड्ढति। कुलगरा य चक्खुमं जसमं पसेणई य पियंगुसामा कुलगरभारियाओ य, सेसा सुधंतकणगप्पहा। उसभसामी पत्तजोव्वणो

१ °रहीए क ३ गो ३॥ २ दिण्णोव° शां०॥ ३ °णीते ली ३॥ ४ °ए कण° ली ३ विना॥ ५ °मयाणि कु° उ २ सस० विना॥ ६ °यादी वि शां० विना॥ ७ °या सयाणि ट्ठाणाणि शां० विना॥ ८ °णमण° ली० य० क ३ गो ३। °णजण° टे०॥ ९ °णो वमणरू° ली ३॥ १० त्ति पगासिओ शां०॥ ११ °य अइउक्कि° ली ३॥

* "अगु भक्खणे य धाऊ" इत्येतत् टिप्पनकमन्त प्रविष्टमाभाति॥

य छत्तसरिससिरो, पयाहिणावत्तकसिणसिरोओ, सकलगहणायगमणोहरवयणो, आयतभुमयाजुयलो, पुंडरियवियसियनयणो, उज्जुयवयणमंडणणासावंसो, सिलप्पवालकोमला (ग्रन्थाग्रम्—४५००)ऽहरो, धवल-विमलदसणपंती, चउरंगुलप्पमाणकंबुगीवो, पुरफलिहदीहबाहू, लक्खणजालंकियपाणी, सिरिवच्छंकियविसालवच्छो, गयवज्झमज्झो, अकोसपउमनाभी, सुबद्ध-वट्टियकडिप्पएसो, तुरगगुज्झदेसो, करिकराकारोरुजुयलो, निगूढजाणुमंडलो, कुरुविंदावत्तसंठियपसत्थजंघो, कणयकुम्मसरिसपायजुयलो, महुरगंभीरमणहरगिरो, वसभललियगमणो, पभापरिक्खित्तकंतरूवो। ततो देवराइणा सदारेण आगतूण भयवओ विवाहमहिमा कया। ततो विट्ठिओ मिहुणधम्मो। गयाणि य छ पुव्वसयसहस्साणि। देवोवणीयपरिभोगसुमणसस्स उसभस्स सुमंगलाए देवीए भरहो बंभी य मिहुणगं जायं, बाहुबली सुंदरी [य] सुनंदाए। पुणो य एगूणपन्नं पुत्तजुयलकाणि सुमंगलाल्या सुमंगला पसूया। वीसं च पुव्वसयसहस्साणि वचंति सुहसागरगयस्स उसभसिरिणो।

उसहसिरिरज्जाभिसेओ

कुलगरपउत्ताओ य दंडनीईओ अइक्कमंति कालदोसेण पुरिसा, उवट्ठिया य भयवया भणिया—इमम्मि राया जइ होइ तस्स उग्गा दंडनीई होइ तीए य पया पालेउं सक्का। ते पुच्छंति—केरिसो राया? किह वा सो उवचरियव्वो?। ताहे कहेइ विहिं सोवयारं। ते भणंति—होह राया, तुब्भे जोग्गा। तओ नाभिसमीवं पेसिया। तेणं भणियं—उसभं रायाणं ठवेह। 'एवं होउ' त्ति गया। [भयवया भणियं—] गच्छह पउमसरं, पउमिणिपत्तेहिं उदगमाणेऊण जाव अभिसिंचह मं, जयसद्दं च पउंजह। ते जाव गया ताव सक्केण लोयपालसहिएण रायाभिसेएण अहिसित्तो, सव्वालंकारभूसिओ य। दिट्ठो य णेहिं परिओसवियसियमुहेहिं देवसपरिवुडो। चिंतेऊण पाएसु सलिलं छोढूण कयजयजयसद्दा ठिया कयंजलिउडा। 'अहो! विणीया इमे पुरिसि' त्ति चिंतेऊण संदिट्ठो सक्केण वेसमणो—'इमेसिं विणीयाण विणीयं रायहाणिं णिम्मवेह जं च रायजोग्गं तं च सव्वं पहुणो विहेहि'—त्ति संदिसिऊण कयपणामो गतो सुरवती। वेसमणेण य दुवालसजोयणायामा नवजोयणवित्थिण्णा निम्मविया नयरी। ततो पढमं राइणा विहत्ता चत्तारि गणा—उग्गा भोगा राइण्णा नागा। जे उग्गा ते आयरक्खा, भोगा भोगे भुंजंति, राइण्णा जे सामिणो समवयसा, नागा जे कज्जनिवेयगा। एवं च गणसमग्गो कोसलाजणवयं पालेइ। ततो जणवयसयं पुरसयं च पुत्ताण विदिण्णं। कया य सव्वा सम्माणिया य सुयाहिं समं पुत्ताणं।

उवट्ठियाओ पयाओ—ओसहीओ णे ण परिणमंति, संदिसउ पहू त्ति। भयवया भणिया—पाणीहिं परिमलिय णीतुसाओ आहारेह त्ति। पुणो कालंतरेण उवट्ठिया भणिया—

१ °सिरओ शां॰ ॥ २ °णऽणुण्णायपुण भ° शां॰ विना ॥ ३ °वयसा समाणा, जे कज्जणिवेयगा ते णागा। एव शां॰ विना ॥ ४ °यामि सं° शां॰ विना ॥ ५ णिनुसा° ली ३ शां॰ ॥

णितुसाओ पत्तपुडेसुं तीमियाओ पत्तपुडेसुं उम्हवियाओ आहारेह त्ति । पुणो उवट्ठिया, भयवं च हत्थिखंधवरगओ निग्गओ, अग्गी अ पादवसंघरिससमुट्ठिओ निवेदिओ । भणिया य मणुया—एस अग्गी इयाणि समुट्ठितो. एसो पयण-पयासण-दहणगुणो उवगारायं वो संवुत्तो. उवणेह य मट्टियं । तेहिं पुक्खरिणीओ मिउपिंडो उवणीओ, हत्थिकुंभे य आहतो । भणिया य जिणेण—एरिसयाणि पत्ताणि काऊण अगणिदड्ढाणि, ततो उदयसंजुत्तपरिकम्मवियाओ ओसहीओ पयह. ततो उवउत्ताओ सरीरपत्थाओ भे भविस्संति त्ति । तेहि य मेहावीहिं बहुप्पयाराणि वियप्पियाणि, तत्थ कुंभगारा उप्पण्णा । जे य अय-रयय-सुवण्णाईहिं भायणाणि वियप्पेंति, [तत्थ लोहगारा उप्पण्णा] । वेत्थरुक्खेसु पखीणेसु कुविंदोपदेसो कओ, तेहिं वत्थविहीओ वियप्पियाओ । गेहागारदुमपरिक्खए वड्ढगीओ कम्मगरो । ण्हाविओ रोम-णह-परिवड्ढीए । एयाणि य पंच मूलसिप्पाणि, एक्केक्कं वीसइभेदं । कम्माणि तणहारगादीणि ततो चेव उप्पण्णाणि । विभूसा वि, राइणो विभूसं देवेहिं विहियं दट्ठूण लोगो वि तहेव चेट्ठति । बंभी-सुंदरीणं भयवया उंकमुवट्ठियाणं दाहिण-वामेहिं हत्थेहिं लिवि-गणियाणि उवइट्ठाणि । रूवं भरहस्स उवइट्ठं । चित्तकम्मं बाहुबलिस्स, लक्खणं इत्थि-पुरिसाईणं । कमेण य कलाओ कुमाराणं मणिरयणायभूसणेसु मोत्तिगादीण य । रोगतिगिच्छा वाणिज्जाओ य पवत्ता अयरिभूतचित्तपडियारा य ।

उसहसिरिपवज्जा

एवं च भरहे गामा-ऽऽगर-नयरमंडिते तेवट्ठिं च पुव्वसयसहस्साइं रज्जपालणवावारं काऊण, संवच्छरं किमिच्छियं दाणं दाऊण, लोगंतियपडिबोहिओ भरहादीणं पुत्ताणं रज्जं दाऊण, कच्छ-महाकच्छादीणं खत्तियराईणं चउहिं सहस्सेहिं समं सुरोवणीयाए सुदंसणाए सिवियाए सिद्धत्थवणे एक्कं देवदूसमायाय पव्वइओ भयवं मोणेण विहरइ । पारणगकाले भिक्खत्थे पविट्ठस्स कण्णगाओ कणग-दूस-भूसणाणि आसे हत्थी य जणो णीणेइ । ते छुहाभिभूआ वयणं पि अलभमाणा णिव्विण्णा साणेणं भरहस्स रण्णो भएण अरण्णेसु मूल-फलाहारा ठिया तावसा वक्कला अजिणधरा जाया ।

नमि-विनमीणं विज्जाहररिद्धिपत्ती

नमि-विनमी य भयवओ संबंधिकुमारा अत्थाणिवेलासु दो वि खग्गपाणिणो सेवंति अपरितंता । धरणो य नागराया तित्थयरवंदणरयो पस्सइ णं विणएण पज्जुवासमाणा । कोऊहलेण य पुच्छिया—किमत्थं सेवह सामिं ? ति । ते भणंति—सामिणा पुत्ताणं खत्तियाण य विदिण्णाओ भूमीओ, अम्हे पुण दूरत्था आसि, तं इयाणिं सेवंताणं काहिति णे पसायं पहु त्ति । एवं भणिए ईसिं सप्पहासो भणइ पण्णगवई—भो ! सुणह—भयवं रायरोस-तोसो, सरीरे वि णिम्ममत्तो, अकिंचणो, परमजोगी, निरुद्धासवो, कमलपलासनिरु-

१ °य मे स° शा० ॥ २ तस्थ रु° ली ३ उ २ मे० ॥ ३ समंक° ली ३ । समक° गो ३ शां० ॥ ४ °क्खये कु° ली ३ शा० ॥ ५ °त्थाणे मे° शा० विना ॥

बलेवचिसो चिर ज मे उवासिओ तस्स मे फल देमि—वेयड्ढपव्वओमयपासट्ठियाओ दुवे विज्जाहरसेढीओ दोण्ह वि जणाण ताओ य न सक्का पादचारेण गतु, ततो मे गगण गमणजोग्गाओ विज्जाओ देमि, ताओ य महप्पभावाओ विज्जाहि य विलोहेऊण जण णेहि त्ति । ते एव भणिया पणया भणति—पसादो णे, देह विज्जाओ । ततो तेण गधव्व पण्णगाण अडयालीस सहस्साणि दिण्णाणि, महारोहिणी-पन्नत्ती-गोरी विज्जुमुही-महा जाला तिरिक्खमणि-बहुरूवाइयाओ । ततो ते लद्धपसाया वेयड्ढउत्तरसेढीए विणमि सट्ठिं णगराणि गगणवल्लहप्पमुहाणि निवेसेइ, णमि दाहिणसेढीए रहणेउरचक्कवालादीणि पण्णास णिवेसेइ । जे य जओ जणवयाओ आणीया मणुया तेसिं तनामा जणवया जाया वेयड्ढे । विज्जाण य सन्नाहिं निकाया जाया, त जहा—गोरीण गोरिका, मणूण मणु पुव्वगा, गधारीण विज्जाण गधारा, माणवीण माणवा, केसिगाण केसिगपुव्वगा, भूमीतुंडगविज्जाहिवयओ भूमीतुडगा, मूलवीरियाण मूलवीरिया, सकुयाण सकुका, पंडुगीण पडुगा, कालगीण कालगेया, मायगीण मायगा, पव्वईण पव्वएया, वसल याण वसलया, पसुमूलिगाण पंसुमूलिगा, रुक्खमूलिगाण रुक्खमूलिया, कालि याण कालकेसा, एव एएहिं विणमि-णमीहिं विभत्ता अट्ठ य अट्ठ य निकाया । तओ ते देवा इव विज्जाबलेण सयण परियणसहिया मणुयदेवा भोए भुजति । पुरेसु य भयव उसहसामी देवय सभासु ठाविओ, विज्जाहिवती य देवया सगे सगे निकाए । दोहि वि जणेहि य विभत्ताणि पुराणि सुयाण खत्तियाण य सबधेण ।

सिज्जसस्स उसभसामिणो इक्खुरसदाण

भयव पियामहो निराहारो परमधिति-बल-सत्तसीगरो सयभुसागरो इव थिमिओ अणाचलो सवच्छरं विहरइ, पत्तो य हत्थिणाउर । तत्थ य बाहुबलिस्स सुओ सोम प्पहो, तस्स य पुत्तो सेज्जंसो । ते य दो वि जणा णयरसेट्ठी य सुमिणे पासति त रयणिं । समागया य तिण्णि वि । सोमस्स समीवे य कहेइ सेज्जसो—सुणह अज्ज मया ज सुमिणे दिट्ठ—मेरु किल चलिउ इहाऽऽगतो मिलायमाणप्पभो, मया य अमयकलसेण सित्तो साहाविओ जावो पडिबुद्धो । सोमप्पभो कहेइ—सुणाहि सिज्जंस ! ज मया दिट्ठ—सूरो किर पडियरस्सी जातो, तुमे य से उक्खित्ताओ रस्सीओ, ततो पभासमुदयो जातो । सेट्ठी भणति—सुणह जं मया दिट्ठ—अज्ज किर कोइ पुरिसो महया दरसुबलेण अभि भूओ, सेयससामी य से सहाओ जातो, ततो णेण पराजिय परबल एय दट्ठूण पडिबुद्धो । ततो ते सुमिणफलनिप्फत्तिमविंदमाणा गिहा निग्गया ।

---

१ °ह त्ति शा । °हेत्ति मे ॥ २ विज्जामु° क्री ३ । °विज्जमु° उ । °विंजमु° खं ॥ ३ °या पी° शा ॥ ४ °ण विज्जाण शां विना ॥ ५ °कुआ क्री ३ । °कुका खं ॥ ६ कस उ मे विनाऽन्यत्र—°लगया क्री ३ मो स गो ३ । °लगा शा ॥ ७ °या सामगीण सामगा माय° शा विना ॥ ८ °सारो खं ॥ ९ °मप्पमसमो° खं ॥ १ सोमो क° शा विना ॥

भयवं पि अणाउलो सेयंसगिहमतिगतो । ततो सो पासायगतो आगच्छमाणं पियामहं पस्समाणो चिंतेइ—'कत्थ मण्णे मए एरिसी आगिई दिट्ठपुव्व?'त्ति, मग्गणं करेमाणस्स तदावरणखओवसमेण जाईसरणं जायं । संभंतो उट्ठिओ 'एयस्स सव्वसंगविवज्जियस्स भत्त-पाणं दायव्वं' ति भवणंगणे परसई इक्खुरसकलसे पुरिसोवणीए । तओ परमहरिसिओ पडिलाहेइ सामिं खोयरसेणं । भयवं अच्छिद्दपाणी पडिगाहेइ । ततो देवेहिं मुक्का पुप्फवुट्ठी, निवडिया वसुधारा, दुंदुहीओ समाहयाओ, चेलुक्खेवो कओ, 'अहो! दाणं' ति आगासे सद्दो कओ । जत्थ य पदेसे भयवं संठितो पढमजिणो तत्थ णेण मणिपेढिया कारिया 'गुरुचरणथाणं पूयणिज्जं' ति । तत्थ भोयणकाले अच्चणं करेइ । तओ लोगो वि जत्थ जत्थ ठिओ भिक्खं गेण्हति तत्थ तत्थ ण मणिपेढिगाओ करेइ । एत्तो पाएण वंभत्थलपवत्ती जाया । सेयंसो इमीए ओसप्पिणीए पढमजिणभिक्खादाया ।

सिज्जंसं पइ सोमप्पभादीणं भिक्खादाणविसया पुच्छा

तं च जिणपूयणं सेयंसस्स सोऊण रिसओ रायाणो य सोमप्पभादयो परमेण कोउहल्लेण पुच्छंति सेयंसकुमारं—सुमुह! कहं तुमे विण्णायं जहा 'भगवओ परमगुरुस्स भिक्खं दायव्वं?' ति. कहेहि णे परमत्थं । ततो भणति—सुणह जह मया जाणियं अण्ण-पाणं दायव्वं पभुस्स त्ति । सेयंसो पकहिओ सवणसुइसुहेण सद्देण—मम पियामहस्स दिक्खियस्स रूवदंसणे चिंता समुप्पण्णा—'कत्थ मण्णे एरिसं रूवं दिट्ठपुव्वं?' ति. विचारेमाणस्स बहुभवियं जाईसरणं समुप्पण्णं. ततो मया विण्णायं भयवओ भिक्खादाणं । ततो ते रायाणो परमविम्हिया भणंति—(ग्रन्थाग्रम्-४६००) साह, केरिसो सि केसु भवेसु आसि? । तओ भणति—

सिज्जंसक्खायं उसभसामिसंबद्धं पुव्वभवचरियं

इओ सत्तमे भवे मंदर-गंधमादण-णीलवंत-मालवंतमज्झवत्तिणीए सीयामहानदीमज्झविभत्ताए उत्तरकुराए अहं मिहुणइत्थिया, भयवं पुण मिहुणपुरिसो आसी । ततो तम्मि देवलोयभूए दसविहकप्पतरुप्पभवभोगोपभोगपमुइयाइं कयाइ उत्तरकुरुदहतीरदेसे असोगपायवच्छायाए वेरुलियमणिसिलायले नवनीयसरिससंफासे सुहनिसण्णाइं अच्छामु । देवो य तम्मि हरए मज्जिउं उप्पइओ गगणदेसं । ततो णेण णियगप्पभावेण दस दिसाओ पभासियाओ । ततो सो मिहुणपुरिसो तं उप्पिंजलकं पस्समाणो किं पि चिंतेऊण मोहमुवगतो । इत्थियाए य ससंभमुट्ठियाए पत्तपुडगहिएण सलिलेण सित्तो लद्धसण्णो भणइ—हा! सयंपभे! कत्थ सि? हा! सयंपभे! कत्थ सि?, देहि मे पडिवयणं ति । तं च तस्स पडिवयणं सोऊण इत्थी वि 'कत्थ मण्णे मया सयंपभाहिहाणं अणुभूयपुव्वं?' ति चिंतेमाणी तहेव मोहमुवगया, पच्चागया भणति—अज्ज! अहं सयंपभा, जीसे मे

---

१ °समवणमति° शा० ॥ २ °इ खोयरस° शा० ॥ ३ °यद्दतव्व ति ली ३ ॥ ४ °भासेण शा० ॥ ५ तं घ उप्पिं° क ३ । तमुपि° शा० ॥ ६ ति । तओ तस्स शा० विना ॥

गहिय नाम ति । तओ सो पुरिसो पर तुट्ठिमुव्वहतो भणति—अज्जे! कहेहिं मे, कह तुम सयपभा? । ततो सा भणइ—कहेस्स मे, ज मयाऽणुभूय—

मिहुणित्थियाऽऽवेइया पुव्वभविया अत्तकहा

अत्थि ईसाणो णाम कप्पो, तस्स मज्झदेसाओ उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए सिरिप्पभ नाम विमाण । तत्थ य ललियगतो नाम देवो पभू, तस्स य सयपभा अग्गमहिसी बहुमया आसी । तस्स य देवस्स तीए सह दिव्वविसयसुहसागरगयस्स बहू कालो दिवसो इव गतो । कयाइ चिंतापरो पव्वायमल्लदामो अहोदिट्ठी झायमाणो विण्णविओ मया सह परिसाए—देव! कीस किं विमणा दीसह? को भे मणसतावो? । तवो भणति—मया पुव्वभवे थोवो कओ तवो, तओ मे 'तुब्भे विप्पजुजामि' त्ति परो सतावो । तवो अम्हेहिं पुणरवि पुच्छिओ—कहेह, तुब्भेहिं कह थोवो तवो कओ? कह वा इमो देवभवो लद्धो? त्ति । ततो भणति—

ललियगयदेवकहिया पुव्वभविया अत्तकहा

जबुद्दीवे अवरविदेहे गधिलावतिविजये गधमादण-वक्खारगिरिपासण्णे वेयड्ढपव्वए गधारओ नाम जणवओ । तत्थ जणसमिद्धसेविय गधसमिद्ध नयरं । राया राजीवविबुद्धवयणो जणवयहिओ सयबलस्स रण्णो नत्तुओ अइबलस्स सुओ महापलो नाम, सो अह पिइ पियामहपरपरागय रज्जसिरिमणुभवामि । मम वि बालसहो खत्तियकुमारो सयबुद्धो जिणवयणभावियमती, सभिण्णसोओ पुण मे मती बहुसु कज्जेसु परिपुच्छणिज्जो ।

समतिच्छिए काले बहुम्मि कयाइ गीय-वाइयपडिरओ नच्चमाणिं णट्टिय पस्सामि । सयबुद्धेण य पण्णविओ—देव! गीय विलविय विजाणउ पुरिसस्स, नट्ट विडबणा, आभरणा भारा, कामा दुहावहा, परलोगहिए चित्त निवेसेयव्व, अहिओ विसयपडिबधो असासए जीविए त्ति । तवो मया रागेण भणिओ—कह गीय सवणामय विलावो? कह वा नट्ट नयणब्भुदय विडबणा? कह वा देहभूसणाणि भारं भाससि? लोगसारभूए कामे पीइकरे दुहावहे? त्ति । ततो असभतेण सयबुद्धेण भणिय—सुणह सामि! पसण्णचित्ता जहा गीय पलावो—

जहा काइ इत्थिया पवासियपइया पइणो सुमरमाणी तस्स समागमकखिया समतीय भत्तुणो गुणे वियप्पमाणी पओस-पच्चूसे दुहिया विलवइ । भिच्चो वा पभुस्स कुवियस्स पसायणनिमित्त जाणि वयणाणि भासइ पणओ दासभावेण अप्पाण ठाविऊण, सो य विलावो । तहेव इत्थी पुरिसो वा अण्णोण्णसमागमाहिलासी कुवियपसायणनिमित्ते जावो काय-मण-वाइगीओ किरियाओ पउजियाओ कुसलजणचिंतियाओ विविहजाइनिबद्धाओ 'गीयं' ति वुच्चइ । त पुण चितेह सामि! 'किं विलावपक्खे वट्टइ? न वट्टइ?' त्ति ॥

१ °रय° उ० ॥ २ शां० विनाऽन्यत्र—°पज्जुवासामि कहं सहं च मे ॥ ३ °समय° शां० ॥ ४ °मसुहय° ली ३ ॥

इदाणिं णट्टं सुणह जह विडंवणा—इत्थी पुरिसो वा जो जक्खाइट्ठो परवत्तव्वो, मज्जे पीए वा जातो कायविक्खेवजातीओ दंसेइ, जाणि वा वयणाणि भासवि सा विलंबणा। जइ एवं, जो य इत्थी पुरिसो वा पहुणो परिओसनिमित्तं निजोजिउ धणवइणो वा विउसज्जणनिवद्धं विहिमणुसरंतो जे पाद-सिर-नयण-कंधरादि संचालेइ सा विलंवणा परमत्थओ॥

आभरणाणि भारो त्ति गहेयव्वाणि—जो सामिणो निओए कडकाईणि आभरणाणि पेढागयाणि वहेज्जा सो अवस्सं पीडिज्जइ भारेण । जो पुण परविम्हयनिमित्तं ताइं चेव जोगेसु सरीरत्थाणेसु सण्णिवेसियाणि वहति सो रागेण णं गणेइ भारं, अत्थि पुणो से। जो य परपरिओसनिमित्तं रंगयरो नेवत्थिओ सुमहंतं पि भारं वहेज्ज 'न मे परिस्समो' भावेमाणो। कज्जगुरुययाए ण मण्णेज्ज वा भारं, तत्थ वि भारो परमत्थओ॥

कामाणं दुहावहत्तं

कामा दुविहा—सद्दा रूवा य। तत्थ सद्दमुच्छिओ मिगो सेहं 'सुहं' ति मण्णमाणो मूढयाए अपरिगणियविणिवाओ वह-बंध-मरणाणि पावइ। तहेव इत्थी पुरिसो वा सोतिंदियवसगतो सद्दाणुवाई सद्दे साहारणे ममत्तवद्धबुद्धी तस्स हेउं सारक्खणपरो परस्स कलुसहियओ पदुस्सइ, ततो राग-द्दोसपबंधपडिओ रयमाइयइ, तन्निमित्तं च संसारे दुक्खभायणं होइ गीयरागा। तहा रूवे रत्तो रूवमुच्छिओ साहारणे विसयसमुद्दे ममत्तबुद्धी रूवरक्खणपरो परस्स पदूसइ, संकिलिट्ठचित्तो य पावकम्मं समज्जिणइ, तप्पभवं च संसरमाणो दुक्खभायणं भवइ। एवं भोएसु वि गंध-रस-फासेसु सज्जमाणो परंसि पदूसंतो मूढयाए कम्ममायययति, तओ य जम्म-जरा-मरणबहुलं संसारं परीइ । तेण दुक्खावहा कामा भोगा य परिचइयव्वा सेयत्थिणा॥

एवं भणंतो सयंबुद्धो मया भणिओ—मम हिए वट्टमाणस्स अहिओ सि, दुट्ठमई घट्टसि, जो मं ससतियपरलोगसुहेण विलोभेतो संपयसुहं निंदंतो दुहे पाडेउमिच्छसि। ततो संभिन्नसोएण भणिओ—सामि! सयंबुद्धो जंबुग इव मच्छकंखी मंसपेसिं विहाय जहा निरासो जातो, तहा दिट्ठसुहं सदिद्धसुहासया परिच्चएंतो सोइहिति। सयंबुद्धेण भणिओ—जं तुमं तुच्छं-कप्पणामेत्तसुहमोहिओ भणसि, को तं सचेयणो पमाणं करेज्जा?. जो कुसलजणसंसियं रयणं सुहागयं कायमणियमणुसरंतो न इच्छइ तं केरिसं मण्णसि?. संभिण्णसोय! अणिचयं जाणिऊण सरीर-विभवाईणं धीरा भोए पजहिय तवस्सी संजमे य निव्वाण-सुरसुहसंपायगे जयंति । संभिण्णसोओ भणति—सयंबुद्ध! सक्का मरणं होहिति सुसाणे ठाइउं तुमं. जहा टिट्टिभी गगणपडणसंकिया धरेउकामा उद्धपाया सुयइ तहा तुमं किर 'मरणं होहिति' त्ति अइपयत्तकारी संपयसुहं परिचइय कालियं पसंसेसि पत्ते य मरणसमए परलोगहियं आयरिस्सामो।

१ °ण जाणइ ली ३॥ २ सद्दो शां० विना॥ ३ °सपयप° शां० विना॥ ४ °रिच्चियव्वा शा०॥ ५ °च्छकमुए° ली ३ विना॥ ६ को ते स° शां० विना॥ ७ कज्जा ली ३ शां० विना॥ [illegible]

सयंबुद्धेण भणिओ—सुद्द! न जुद्धे संपलग्गे कुंजर-तुरगदमणं कज्जसाहगं, ण वा णगरे उवरुद्धे जवसपत्थिंधणोपायाणं, ण य गिहे पलित्ते कूवखणणं कज्जकरं. जइ पुण दमण-भरण-खणणाणि पुव्वकयाणि भवंति, ततो परबलमहणं चिरसहणं जलणणिव्वावणाणि सुहेण भवंति, तहेव जो अणागयमेव परलोगहिए ण उज्जमति सो[1] उक्कमंतेसु पाणेसु, छिज्जमाणेसु मम्मथाणेसु विसंवदितदेहबंधो परमदुक्खाभिभूओ किह परलोगहियं अणुट्ठेहिति? एत्थ सुणाहि वियक्खणकहियं उवएसं—

वायसाहरणं

एक्को किर हत्थी जरापरिणओ[2] उम्हकाले किंचि गिरिनइं समुत्तरंतो विसमे तीरे पडिओ। सो सरीरगुरुयाए दुब्बलत्तेण य असत्तो उट्ठेउं तत्थेव य कालगतो। मिग-सियालेहि य अवाणदेसे परिखइओ, तेण मग्गेण वायसा[3] अतिगया मंससुदयं च उवजीवंता ठिया। उण्हेण डज्झमाणे कलेवरे सो पवेसो संकुचितो। वायसा तुट्ठा—अहो! निराबाहं आयं वसियव्वं। पाउसकाले य गिरिनदिवेगेण निज्झुब्भमाणं महानइसोयपडियं पत्तं समुद्दं, मच्छ-मगरेहि य छिण्णं। ततो ते जलपूरियकलेवरातो वायसा निग्गया तीरं पस्समाणा तत्थेव णिधणमुवगया। जइ पुण अणागयमेव निग्गया होंता तो दीहकालं सच्छंदप्पयारा विविहाणि मंस-सोणियाणि आहारंता।

एयस्स दिट्ठंतस्स उवसंहारो—जहा वायसा तहा संसारिणो जीवा। जहा हत्थिकलेवरपवेसो तहा मणुस्सभवलाभो। जहा उदगं भत्तं मंसोदगं तहा विसयसंपत्ती। जहा मग्गस्स निरोहो तहा संभवपडिघो। जहा उदयसोयविच्छोहो तहा मरणकालो। जहा वायसनिग्गमो तहा परभवसंकमो॥

एवं जाण संभिन्नसोय! जो तुच्छए निस्सारे थोवकालिए कामभोगे परिचइत्ता तव-संजमुज्जोयं काहिइ सो सुगतिगतो न सोचिहिति, जो पुण विसएसु गिद्धो मरणसमयमुविक्खइ सो सरीरभेदे अगहियपाहेज्जो चिरं दुहिओ होहिति. मा य जंबुक इव तुच्छकप्पणामेत्तसुहपडिबद्धो विपुलं दीहकालियं सुहमवमण्णसु। संभिण्णसोओ भणइ—कहेहि णे, का जंबुकसुहतुच्छकप्पणा? । सयंबुद्धेण भणिओ—सुणाहि—

जंबुकाहरणं

कोयं[4] किर वणयरो वणे संचरमाणो[5] एयत्थ हत्थिं पासिऊण विसमे पएसे ठितो। एगकंडप्पहारपडियं गयं जाणिऊण धणुं सजीवमवकिरिय[6], परसुं गहाय, दंत-मोत्तियहेउं गयमच्छिंदमाणो हत्थिपडणपेल्लिएण महाकाएण सप्पेण खइओ तत्थेव पडिओ। जंबुएण य परिब्भमंतेण दिट्ठो हत्थी मणुस्सो सप्पो धणुं च। भीरुत्तणेण य अवसरिओ, मंसलोलुयाए पुणो पुणो अल्लीणो 'निज्जीव' त्ति य निस्संको तुट्ठो अवलोएइ, चिंतेइ—'हत्थी मे

१ सो अक° शां ॥ २ °ओ उन्हका° क ३ गो ३। ओ गिम्हका° शां ॥ ३ वाइसा शां ॥ ४ कोइ कि° शां विना ॥ ५ °णो वणहत्थि परिमऊ° शां ॥ ६ °मवक्किरि° शां ॥ ७ °भावे° की ३ ॥

जावज्जीवियं भत्तं, मणुस्सो सप्पो य किंचि कालं होहिति, जीवाबंधणपदं ताव खायामि' त्ति उवरओ मंदबुद्धी धणुकोडीए छिण्णपडिबद्धाए तालुदेसे भिण्णो मओ। जइ पुण अप्पसारं छड्डेउं हत्थि-मणुस्सोरगकलेवरेसु सज्जंतो तो ताणि अण्णाणि य चिरं खायंतो। एवं च जो माणु-(ग्रन्थाग्रम्—४७००)स्सए सोक्खे पडिबद्धो परलोगसाहणनिरवेक्खो सो जंबुक इव विणस्सिहिति॥

जं पि जंपह 'संदिद्धं परलोयं, तप्पभवं च सोक्खं' तं अत्थि. सामि! तुब्भे कुमारकाले सह मया णंदणवणं देवुज्जाणमुवगया. तत्थ य देवो उवइओ. अम्हे तं दट्ठूण अवसरिया. देवो य दिव्वाए गतीए खणेण पत्तो अम्ह समीवं. भणिया अणेण अम्हे सोमरूविणा—'अहं सयबलो, महब्बल! तव पियामहो रज्जसिरिं अवेज्झिऊण चिण्णवओ बंभलोए कप्पे अहिवई जातो, तं तुब्भे वि मा पमाई होह, जिणवयणेण भावेह अप्पाणं, ततो सुगतिं गमिहह' त्ति. एवं वोत्तूणं गतो देवो. जइ सामि! तं सुमरह ततो 'अत्थि परलोगो' त्ति सद्दहह।

मया भणिओ—सयंबुद्ध! सुमरामि पियामहदरिसणं। लद्धावकासो य भणति पुणो वि सयंबुद्धो—सुणह पुव्ववित्तं—

महाबल-सयंबुद्धपुव्वजाणं कहासंबंधो

तुब्भं पुव्वको राया कुरुचंदो नाम आसि, तस्स देवी कुरुमती, हरिचंदो कुमारो। सो य राया णाहियवादी, 'इंदियसमागममेत्तं पुरिसकप्पणा, मज्जंगसमवाए मयसंभव इव, न एत्तो परभवसंकमणसीलो अत्थि, न सुकय-दुक्कयफलं देव-नेरइएसु कोइ अणुभवइ' त्ति ववसिओ, बहूण सत्ताण वहाय समुट्ठिओ, खुर इव एकंतधारो, निस्सीलो, निव्वओ। तओ तस्स एयकम्मस्स बहू कालो अतीतो, मरणकाले य असायावेयणीयबहुलयाए नरयपडिरूवपुग्गलपरिणामो संवुत्तो—गीयं सुइमहुरं 'अक्कोसं' त्ति मण्णइ, मणोहराणि रूवाणि विकिंताणि पस्सति, खीर-खंड-सक्करोवमं 'पूइं' ति मण्णइ, चंदणाणुलेवणं मुम्मुरं वयइ, हंसतूलमउयं सेज्जं कंटगसाहासमाणं वेदेइ। तस्स य तहाविहं विवरीयभावं जाणिऊण कुरुमती देवी सह हरिचंदेण पच्छण्णं पडियरइ। सो य कुरुचंदो राया एवं परमदुक्खिओ कालगतो। तस्स य नीहरणं काऊण हरिचंदो सयं नयरं गंधसमिद्धं नाएण अणुपालेइ। ततो य तहाभूयं पिउणो मरणमणुचिंतयंतस्स एवं मती समुप्पण्णा—अत्थि सुकय-दुक्कयफलं ति। ततो णेण एगो खत्तियकुमारो बालवयंसो सदिट्ठो—भद्दमुह! तुमं पडियजणोवइट्ठं धम्मसुयं मे कहयसु, एसा ते सेव त्ति। तओ सो तेण निओगेण जं जं धम्मसंसिय वयणं सुणेइ तं तं राइणो निवेएइ। सो वि

१ °द चेव शा० विना॥ २ कस० उ २ मे० विनाऽन्यत्र—त्ति णवउव° मो० सं० गो ३। त्ति ण उव° ली ३॥ ३ °ण णामुज्जा° ली ३॥ ४ °वइज्झि° शा० विना॥ ५ विकियाणि शा० विना॥ ६ पूय ति उ २ विना॥ ७ °चदरा° शा० विना॥ ८ °हइसु उ २ मे० विना॥

सद्दहतो सुसीलयाए सहेव पडिवज्जति । कयाइ च नगरस्स नाइदूरे तहारूवस्स साहुणो केवलनाणुप्पत्तीमहिम काउ देवा उवागया । त च उवलभिऊण सुबुद्धिणा खत्तियकुमारेण रण्णो निवेदित हरिचदस्स । सो वि देवाऽऽगमणविम्हइओ जयणतुरगारूढो गतो साहुसमीव, वदिऊण य विणएण निसण्णो सुणइ केवलिमुहुग्गय वयणामय । संसारकहमोक्खसुह च से सोऊण 'अत्थि परभवसकमो'त्ति निस्सकिय जाय । ततो पुच्छइ कुरुचंदो राया—मम पिया भयव ! क गइ गतो ? त्ति । ततो से भयवया कहिय विवरीयविसउवलंभेण सत्तमपुढवीनेरइयत्त च—हरिचद ! तव पिया अणिवारियपावाऽऽसवो बहूण सत्ताण पीडाकारी पावकम्मगुरुत्ताए ण नरग गतो तत्थ परमदुव्विसह निरुवम निप्पडियार निरंतरं सुणमाणस्स वि सचेयणस्स भयजणग दुक्खमणुभवति । त च तहाविह केवलिणा कहिय पिउणो कम्मविवाग सोऊण ससारभीरू हरिचदो राया वदिऊण परमरिसिं सनयरमइगतो । पुत्तस्स रायसिरिं समप्पिऊण सुबुद्धिं सदिसति—तुम मम सुयस्स उवएसं करेज्जासि त्ति । तेण विण्णविओ—सामि ! जदि अह केवलिणो वयण सोऊण सह तुब्भेहिं न करेमि तव तो मे न सुय जो पुण 'उवएसो दायव्वो' त्ति सदिसह त मम पुत्तो सासिणो कहेहि त्ति । राया पुत्त सदिसइ—तुमे सुबुद्धिसुयसंदेसो कायव्वो धम्माधिकारे त्ति । तुरिय निग्गओ सीहो व पलित्तगिरिकदराओ, पव्वइओ केवलिसमीवे सह सुबुद्धिणा, परमसविग्गो सज्झायपसत्थचिंतणपरो परिखवियकिलेसजालो समुप्पण्णनाणातिसओ परिनिव्वुओ त्ति । सुणिभो—तस्स य हरिचदस्स रायरिसिणो वसे सखातीतेसु नरवईसु धम्मपरायणेसु समतीतेसु तुब्भे सपद सामिणो, अह पुण सुबुद्धिवसे । त एस अम्ह नियोगो वहुपुरिसपरपरागतो धम्मदेसणाहिगारो ॥

ज पुण त्थ मया अयंडे विण्णविया त कारण सुणह—अज्ज अह नदणवणे गओ आसि, तत्थ मया दिट्ठा दुवे चारणसमणा आइच्चजसो अमियतेओ य ते मया वदिऊण पुच्छिया—भयव ! महाबलस्स रण्णो केवइय आउ धरइ ? त्ति तेहिं निद्दिट्ठो—मासो सेसो तवो समतो मि आगतो एस परमत्थो ततो ज जाणह सेय ति त कीरउ अकालहीण । ताणि य उवसमवयणाणि सयबुद्धकहियाणि सोऊण अह धम्माभिमुहो आवपरिक्खयसुतीय आममट्टियाभायणमिव सलिलपूरिज्जमाणमवसण्णहियओ भीओ सहसा उट्ठिउ कयजली सयबुद्ध सरणमुवागतो—वयस ! किमियाणिं मासावसेसजीवी करिस्स परलोगहिय ? ति । तेण म्हि समासासिओ—सामि ! दिवसो वि बहुओ परिचत्तसव्वसावज्जजोगस्स, किमग पुणो मासो ? । तओ तस्स वयणेण पुत्तसकामियपयापालणवावारो ठिओ मि सिद्धाययणे कयभत्तपरिचाओ सथारगसमणो सयबुद्धोपदिट्ठजिणमहिमासपायणसुमणसो अणिच्चय ससारदुह पाउवगमण च वेरग्गजणियाणि सुणमाणो कालगतो इह जातो । एव थोवो मे तवो चिण्णो त्ति ॥

१ °सुप्पायम° शां ॥ २ अवीत° शां ॥ ३ °उहण शां ॥ ४ °रसुवग° क ३ ॥ ५ काहे° शां ॥ ६ °कारि ति शां विना ॥ ७ °माहूसेसो व° शां ॥ ८ °हुवसपरं° शां विना ॥

एवं च अज्जललियंगएण देवेण कहियं मम सपरिवाराए। ईसाणदेवरायसमीवाओ य दढधम्मो नाम देवो आगतो । सो भणइ—ललियंगय! देवराया नंदीसरदीवं जिणमहिमं काउं वच्चति त्ति गच्छामि अहं, विदितं ते होउ त्ति । सो गतो । ततो अहं अज्जललियंगयदेवसहिया 'इंदाणत्तीए अवस्स गमणं होहि त्ति इयाणिं चेव वच्चामो' त्ति गया पुण नंदीसरदीवं खणेण । महिमा कया जिणाययणेसु, तिरियलोए य तित्थयरवंदणं करेमाणो सासयचेइयपूयं च चुओ ललियंगओ । परमसोगग्गिडज्झमाणहिययघरा य अहं विवसा गया सपरिवारा सिरिप्पभं विमाणं । परिहायमाणसोहं च ममं दट्ठूण आगतो सयंबुद्धो देवो भणति—सयंपभे! जिणमहिमं कुणसु, चयणकालो, बोहिलाभो भविस्सइ त्ति । तस्स वयणं परिग्गहेऊण नंदीसरे दीवे तिरियलोए य कयपूया अहमवि चुया समाणी जंबुद्दीवकविदेहे पुक्खलावइविजए पुंडरगिणीए नयरीए वइरसेणस्स चक्कवट्टिस्स वसुमतीए देवीए दुहिया सिरिमती नाम जाया। सा हं पिउभवणपउमसररायहंसी धावीजणपरिग्गहिया जमगपव्वयससिया इव लया सुहेण वड्ढिया । गहियाओ य कलाओ अभिरामियाओ ।

कयाइं च पओसे सव्वओभद्दगं पासायमभिरूढा पस्सामि नयरबाहिं देवसंपायं। ततो चिंतापरायणाए मे सुमरिया देवजाती, सुमरिऊण य दुक्खेणाऽऽहया मुच्छिया । परिचारिगाहिं जलकणपडिसित्ता पच्चागयचेयणा चिंतेमि—'कत्थ मण्णे पिओ मे ललियंगतो देवो ? त्ति, तेण य मे विणा किं जणेण आभट्ठेणं'ति मूयत्तणं पकयं । भणइ परियणो—जंभएहिं से वाया अक्खित्ता। कओ य तिगिच्छएहिं पयत्तो, कयाइं बलि-होम-मंत-रक्खाविहाणाइं । अहं पि मूयत्तणं न मुयामि, लिहिऊण य आणत्तीं देमि परिचारियाणं । उववणगयं च ममं अम्मधाती पंडिया नाम विरहे भणति—पुत्त सिरिमइ[1] जइ कारणेण केणइ मूई ततो मे अजंतिया साह, ततो सत्तीए कज्जसाहणे पयइस्सं. अत्थि मे विज्जाबलं, जेण मणुस्सलोए साहीणं पयोयणं संपाइस्सं. अह पुण सच्चमूई देव्वदोसेण तो किं सक्का काउं ? । तीय वि एव भणिए मया चिंतियं—सुट्ठु भणइ धाई, मम हिययगयं अत्थं को साहेइ ? तं कहेमि से सब्भावं । तओ मया भणियं—अम्मो[2] अत्थि कारणं, जेण संपइकालं मूयत्तणगं करेमि त्ति। ततो सा तुट्ठा भणति—पुत्त[3] साहसु मे कारणं, तं च सोऊण जह भणसि तह चेट्ठिस्स त्ति । ततो मया भणिया—सुणाहि—

सिरिमइनिवेइया निण्णामियाभवसंबद्धा अत्तकहा

अत्थि धायइसडे दीवे पुव्वविदेहे मंगलावइविजए नंदिग्गामो नामं सण्णिवेसो । तत्थ अहं इओ तइयभवे दरिद्दकुले सुलक्खण-सुमंगल-धण्णियाउज्झिगाईणं छण्हं

---

१ °च्चहि त्ति शां० ॥ २ अह चंदित्तु तं से शा० विना ॥ ३ °ग्गिणा ड° क ३ गो ३ उ० मे० । °ग्गिणा पड° टी ३ ॥ ४ पकारिय शा० ॥

भगिणीण पच्छओ जाया, न कयं च मे नामं अम्मा पिऊहिं 'निन्नामिय'त्ति भण्णामि। सकम्मपडिबद्धा य तेसिं अवसाणं जीवामि।

ऊसवे य कयाइ अड्ढकड्डिमाणि नाणाविहभक्खहत्थगयाणि सगिहेहिंतो निग्गयाणि। ताणि य दट्ठूण मया माया जाइया—अम्मो! देहि मे मोयगे अण्णं वा भक्खयं वि, डिंभेहिं समं रमामि त्ति। तीए रुट्ठाए हया निच्छूढा य गिहाओ—कओ ते इह भक्खा? वच्चसु अंबरतिलयं पव्वयं, तत्थ फलाणि खायसु मरसु व त्ति। तओ रोयंती निग्गया मि। सरणं विमग्गमाणीए दिट्ठो य मया जणो अंबरतिलयपव्वयाभिमुहो पत्थिओ। गया मि तेण सहिया। दिट्ठो य मया पुहवितलतिलयभूओ, विविहफलभरनमिरपायवसंकुलो, कुलहरभूओ सउण मियाण, सिहरकरेहिं गगणतलमिव मिणिउ समुज्जओ अंबरतिलगो गिरिवरो। तत्थ य गेण्हइ जणो फलाणि, मया वि पक्क-पडियाणि साऊणि फलाणि भक्खियाणि।

रमणिज्जयाए य गिरिवरस्स संचरमाणी सह जणेण गंभीरं सुणिमो सद्दं अइमणोहरं। तं च अणुसरंती गया मि तं पदेसं सह जणेण। दिट्ठा मया जुगंधरा नाम आयरिया, विविह नियमधरा, चोद्दसपुव्वि-चउणाणिणो, तत्थ य जे समागया मणुया देवा य तेसिं जीवाणं बंध मोक्खविहाणं कहयंता, संसए य विसोधिंता। तओ हं तेण जणेण सह पणिवइऊण निसण्णा एगदेसे सुणामि तेसिं वयणं परममहुरं। कहंतरे य मया पुच्छिया—भयवं! अत्थि ममाओ कोइ दुक्खिओ (ग्रन्थाग्रम् ४८००) जीवो जीवलोए? त्ति। तओ तेण भणियं—णिण्णामिए! तुमं सद्दा सुभा ऽसुभा सुतिपहमागच्छंति, रूवाणि य सुंदर-मंगुलाणि पाससि, गंधे सुभा ऽसुभे अग्घायसि, रसे वि मणुण्णा ऽमणुण्णे आसाएसि, फासे वि इट्ठा ऽणिट्ठे संवेदेसि, अत्थि य ते पडियारो सी-उण्ह-तण्हा-छुहाणं, निद्दं सुहागयं सेवसि, निवाय पवायसरणासओ वि य ते अत्थि, वससि जोतिप्पगासेण कज्जं कुणसि नरए नेरइयाणं निच्चं असुभा सद्द-रूव-रस-गंध-फासा, निप्पडियाराणि परमदारुणाणि सी-उण्हाणि खुहा-पिवासाओ य, न खणं पि निद्दासुहं दुक्खसयपीडियाणं, निच्चंधयारेसु नरएसु चिट्ठमाणा निरयपालेहिं कीरमाणाणि कारणसयाणि विवसा अणुहवमाणा बहुं कालं गमयंति तिरिया वि सपक्ख-परपक्खजणियाणि सी-उण्ह खु प्पिवासादियाणि य जाणि अणुभवंति, ताणि य हुणा वि कालेण न सक्का वण्णेउं तव पुण साहारणं सुह-दुक्खं पुव्वसुकयसमज्जियं अण्णेसिं रिद्धिं पस्समाणी दुहियमप्पाणं तक्केसि त्ति जे तुमओ हीणा वयणागारेसु किलिस्संति, जे य दास-भयगा परवत्तव्वा णाणाविहेसु देहपीडाकरेसु कम्मेसु णिउत्ता किलिस्संति, आहारं पि तुच्छमणिट्ठं भुंजमाणा जीवियं पालेंति, ते वि ताव पस्ससु त्ति। मया पण याए 'जहा भणह त्ति तहा' पडिसुयं। तत्थ धम्मं सोऊण केइ पव्वइया, केइ गिहवास जोग्गाणि सीलवयाणि पडिवण्णा। मया वि विण्णविया—जस्स णियमस्स पालणे सत्ता मि तं मे उवदिसह त्ति। तओ मे तेहिं पंच अणुव्वयाणि उवइट्ठाणि। वंदिऊण परितुट्ठा

१ °पाला कीरमाणा कार° शां विना॥ २ °विउ पा° ली ३ विना॥

जणेण सह नंदिग्गामं गया, पालेमि वयाणि संतुट्ठा। कुडुंबसंविभागेण य परिणयाय संतीय चउत्थ-छट्ठ-ऽट्ठमेहिं खमामि।

एवं काले गए कम्हिइ कयभत्तपरिच्चाया राईए देवं पस्सामि परमदंसणीयं। सो भणति—णिण्णामिए! पस्स मं, चिंतेहि य 'होमि एयस्स भारिय' त्ति, तओ मे देवी भविस्ससि, मया य सह दिव्वे भोए भुंजिहिसि त्ति। एवं वोत्तूण अदंसणं गओ। अहमवि परिओसवियसियहियया 'देवदंसणेण लभेज्ज देवत्तं' ति चिंतिऊण समाहीए कालगया, सणियाणा ईसाणे कप्पे सिरिप्पभे विमाणे ललियंगयस्स देवस्स अग्गमहिसी सयंपभा नाम जाया। ओहिणाणोपओगविण्णायदेवभवकारणा य सह ललियंगएण जुगंधरगुरुवो वंदिउमवइण्णा। तं समयं च तत्थेव अंबरतिलए मणोरमे उज्जाणे समोसरिया सगणा य। तओ हं परितोसविसप्पियमुही तिउणपयाहिणपुव्वं णमिऊण णिवेइयणामा णट्टोवहारेण महेऊण गया सविमाणं, दिव्वे कामभोए देवसहिया णिरुसुगा बहुं कालं अणुभवामि। देवो य सो आउपरिक्खएण अम्मो! चुओ ण याणामि कत्थ गओ? त्ति। अहमवि य तस्स विओगदुहिया चुया समाणी इहाऽऽयाया, देवउज्जोवदंसणसमुप्पण्णजाईसरणा तं देवं मणसा परिवहंती मूयत्तणं करेमि 'किमेतेण विणा संलावेणं कएणं?'। एस परमत्थो॥

लद्धमणुस्सजम्मणो ललियंगयदेवजीवस्स गवेसणा

तं च सोऊणं अम्मधाई ममं भणति—पुत्त! सुट्ठु ते कहियं. एतं पुण पुव्वभवचरियं[2] पडे लेहिऊणं तओ हिंडावेमि. सो य ललियंगओ जइ माणुस्सए भवे आयाओ होहित्ति तओ सचरियं दट्ठूण जाई सुमरिहिति. तेण य सह णिव्वुया विसयसुहमणुभविस्ससि त्ति। तओ तीए मएणाऽणुसज्जिओ पडो विविधवण्णाइं पट्टियाहिं दोहि वि जणीहिं। तत्थ य पढमं णंदिग्गामो लिहिओ, अंबरतिलगपव्वयसंसियसुकुसुमियाऽसोगसण्णिसण्णा गुरवो य, देवमिहुणं च वंदणागयं, ईसाणकप्पे सिरिप्पभं विमाणं सदेवमिहुणं, महब्बलो राया सयंबुद्ध-संभिन्नसोयसहिओ, णिण्णामिगा य तवसोसियसरीरा, ललियंगओ सयंपभा य सणामाणि। तओ णिप्फण्णे लेक्खे धाई पट्टगं गहेऊण 'धायइसंडं दीवं वच्चामि' त्ति तीसे विज्जापभावेण आगासगमणं उप्पत्तिया जुवतिकेसपास-कुवलय-पलाससामं नहयलं। खणेण य पच्चागया पुच्छिया मया—अम्मो! कीस लहुं णियत्ता सि? त्ति। सा भणइ—पुत्त! सुणह कारणं—'इहं अम्हं सामिणो तव पिउणो वरसवट्टमाणिणिमित्तं विजयवासिरायाणो बहुका समागया, तं जति इहेव होहित्ति ते हिययसाहीणो दइओ तओ कयमेव कज्जं' ति चिंतिऊण णियत्ता तम्मि य जइ ण होहित्ति इह परिमग्गणे करिस्सं जत्तं ति। सुट्ठियहियया[3] मया भणिया। अवरज्झ(ण्ह)ए गया पट्टगं गहेऊण पच्चावरण्हे आगया पसण्णमुही भणइ—पुत्त! परिणेव्वुया होहि, दिट्ठो ते मया सो ललियंगओ। मया

१ °वभाव° शां०॥ २ पडि ले° ली ३ उ० विना॥ ३ सुट्ठिहिया मो० स० गो३ उ २। सुट्ठहियया क३०॥

पुच्छिया—अम्मो [1] सोहइ—सो कह ? त्ति । सा भणइ—पुत्त ! मया रायमग्गे पसारिओ पट्टओ । त च पस्समाणा आलिक्खकुसला आगम पमाण करेंता पससंति, जे अकुसला ते वण्ण रूवाणि पासति । दुमरिसणरायसुओ दुद्दतो कुमारो, सो मुहुत्तमेत्त पासि ऊण मुच्छिओ, खणेण आसत्थो पुच्छिओ मणूसेहिं—सामि ! किं थे मुच्छिया ? । सो भणइ—चरियं नियग पट्टलिहिय दट्ठूण य मे सुमरिया जाई—अह ललियगतो देवो आसि, सयपभा मे देवि त्ति। मया पुच्छिओ—पुत्त ! साहसु को सण्णिवेसो ? । भणइ—पुडरिगिणी नयरि त्ति । पव्वय 'मेरु' साहति, अणगारो को वि एस विस्सरइ से नाम, कप्प सोहम्म कहेइ, राया मतिसहिओ को वि एस त्ति, का वि एसा तवस्सिणी न जाण से नाम ति। ततो 'ईचावगो' त्ति जाणिऊण मया भणिओ—पुत्त ! सच्च सच्च, ज ते जम्मतरे वीसरिय तेण किं? सच्च तुम सि ललियगतो सा पुण सयपभा नदिग्गामे पगुली केण वि कम्मदोसेण जाया एय च णाए चरिय लिहिय तव वत्तमग्गणहेउ मम य धायइस डगयाए दिण्णो य पट्टओ मया य अणुकपाए तीसे सव्व परिसग्गण कय एहि पुत्त ! जाव ते नेमि धाइसड ति। अवहसिओ मित्तेहिं, 'गम्मउ, पोसिज्जउ पगुलि' त्ति । तओ अव क्कतो। मुहुत्तमेत्तेण आगतो लोहग्गलाओ धणो नाम कुमारो, सो धावण लघणा ऽऽय रणेसु असमाणो त्ति वइरजघो भण्णइ । सो उवागतो पट्टग दट्ठूण मम भणति—केणेय लिहिय चित्त ? ति। मया भणिय—किंनिमित्त पुच्छसि ? । सो भणइ—मम एय चरिय—अह ललियगतो नाम आसि देवो, सयपभा देवी 'असस्सय तीए लिहिय ति, तीए य वा सवदेसेण' तक्केमि । ततो मया पुच्छिओ—जइ ते चरिय, साहसु य को एस सन्निवेसो ? । सो भणति—नदिग्गामो एस, पव्वओ अवरतिलओ, जुगधरा य आयरिया, एसा खमणकिलता णिण्णामिया, महब्बलो राया सयबुद्ध-सभिण्णसोएहिं सह लिहिओ, एस ईसाणो कप्पो, सिरिप्पभ विमाण, एय सव्व सपच्चय परिकहिय तेण । तओ य मया दुद्धाए भणिओ—जा एसा सिरिमती कुमारी पिउच्छाए दुहिया सा सयपभा, जाव रण्णो णिवेएमि ताव से लब्भइ त्ति सुमणसो गतो ।ततो मि कयकज्जा आगया। पुत्त ! रण्णो निवेएमि, ततो ते पियसमागमो भविस्सइ त्ति । एव वोत्तूण गया। निवेदियमणाए रण्णो। ततो ह सद्दाविया रण्णा, देवी य वसुमई । तओ दोण्ह वि राया पकहिओ—सुणह, जो सिरिमतीए ललियगओ देवो आसी जहा ण अह आण ण तहा सिरिमती—

वइरसेणकारिओ ललियगयदेवपरिचओ

इहेव जबुद्दीवे अवरविदेहे सलिलावतिविजए वीयसोगा नयरी, जियसत्तु नाम

१ कहह री ६ ॥ २ आलेक्ख° शां ॥ ३ दुमसेणराय° ली ३ । दुमनिसणराय° मो स गो ३ ॥ ४किं थ मु° क ३ । किं पमु° ली ३ ॥ ५ °व पि नि° शां विना ॥ ६ उब्भाव° ली ३ ॥ ७ °या आग मेसु कुसला पुण शां० ॥ ८ °य विसिय ति ली ३ ॥ ९ पुव स° शां० ॥ १ विमयस° शां ॥

राया, तस्स मणोहरी य केकई य दुवे देवीओ, तासिं अचलो विहीसणो य पुत्ता । उपरए पिउम्मि विजयद्धं भुंजंति बलदेव-वासुदेवा ।

मणोहरी य बलदेवमाया कम्मिय काले गए पुत्तं आपुच्छति अयलं—अणुभूया मे भत्तुणो सिरी पुत्तसिरी य. पव्वयामि, परलोगहियं करिस्सं, विसज्जेहि मं ति । सो नेहेण न विसज्जेइ । निब्बंधे कए भणति—अम्मो ! जइ निच्छओ ते[1] कओ तो मं देवलोयगयाए[2] वसणे पडिबोहेयव्वो त्ति । तीए पडिवन्नं । पव्वइया य परमधितिबलेण एगारसंग[3]धरी वासकोडी तवमणुचरिऊण अपरिवडियवेरग्गा समाहीए कालगया लंतए कप्पे इंदो आयाओ । तं ताव जाणेह ममं ।

बल-केसवा य बहुं कालं पमुइया भोए भुंजंति । कयाइं च निग्गया अणुयत्तयं[4] आसेहिं वायजोगेण अवहिया अडविं पवेसिया[5] । गो-रहसंचारेण य न विण्णाओ मग्गो, जाव णं दूरं गंतूण आसा विवण्णा, विभीसणो य कालगतो । अयलो[6] नेहेण न जाणइ, 'मुच्छिओ' त्ति णेइ णं सीतलाणि वणगहणाणि 'सत्थो भविस्सइ' त्ति । अहं च लंतगकप्पगतो पुत्तसिणेहेणं संगारं च सुमरिऊण खणेणं[7] आगतो विहीसणरूवं विउव्विऊण । रहगतो भणिओ[8] बलो—भात ! अहं विज्जाहरेहिं सह जुज्झिउं गतो, ते मे पसाहिआ. तुम्हे पुण अंतरं जाणिऊण केण वि मम रूवेणं मोहिया, वच्चिमो नयरं. एयं पुणो 'अहं' ति तुब्भेहिं वूढं कलेवरं, सक्कारेमु णं । तं डहिऊण रहेण सनयरमागया पूइज्जमाणा जणेणं, घरे य एक्कासणनिसण्णा ठिया । तओ मया मणोहरीरूवं दंसियं । संभंतो य अयलो भणति—अम्मो ! तुब्भेत्थ कओ ? । पव्वज्जाकालो संगारो य सव्वो परिकहिओ, बिभीसणमरणं, 'अहं लंतगाओ कप्पाओ भवपडिबोहणनिमित्तं इहमागतो, परलोगहियं चिंतेहि अणिच्चं मणुयरिद्धिं जाणिऊण' । गतो सकप्पं लंतगइंदो ।

अयलो पुत्तसंकामियरायसिरी तवमणुचरिय ईसाणे कप्पे सिरिप्पभे विमाणे ललियंगओ नाम सुरो जाओ । अहं पुण सदेवीयं पुत्तसिणेहेणं अभिक्खणं लंतयं कप्पं नेमि त्ति जाहे जाहे सुमरामि । सो पुण ललियंगतो देवो सत्तनवभागे सागरोवमस्स देवसुहं परिभोत्तूणं ततो सिरिप्पभाओ विमाणाओ चुओ, तत्थ अण्णो उववण्णो । तं पि अहं पुत्तसिणेहेणं चेव लंतयं कप्पं नेमि । एवं सत्तरस ललियंगया अईआ । एसो वि य जो मे सिरीमतीए ललियंगओ अट्ठारसमो लंतयकप्पं नीअपुव्वो बहुसो, जाणामि णं । तओ लंतयकप्पाओ चुओ हं वइरसेणो जातो ॥

राया भणइ—सद्दावेह वइरजंघं ति । आणत्तो कंचुंगी गतो । आगतो य वयरजंघो । दिट्ठो य (ग्रन्थाग्रम्-४९००) मया परितोसवियसियच्छीए अच्छेरयभूओ, सरयरयणि-

---

१ मे शां० विना ॥ २ °या वसणे पडिबोहेव्व त्ति शा० ॥ ३ °गवी वा° शा० विना ॥ ४ °त्त आ° शा० विना ॥ ५ °या । तो रह° शा० ॥ ६ °लो मोहे° ली ३ ॥ ७ °णमाग° शां० ॥ ८ °ओ अयलो य° ३ ॥ ९ त जहिं° सस० शा० विना ॥ १० तव ली ३ शा० ॥

सरसोमवयणचंदो, तरुणरविरस्सिबोहियपुंडरीयनयणो, मणिमंडियकुंडलघट्टियपीणगंडदेसो, गरुलाऽऽययतुंगनासो, सिलप्पवालकोमलसुरत्तदसणच्छयणो, कुंदमउलमालासिणिद्धदसणपती, वरत्थवसभनिभखंधो, वयणतिभागूसियरयणावलिपरिणद्धगीवो, पुरफलिहाऽऽयामदीहबाहू, नयरकवाडोवमाणमसलविसालवच्छो, करसगेज्झमज्झदेसो, विमउलवरपंकयसरिसनाभी, मिगपत्थिव तुरगवट्टियकडी, करिकराभिभऊरुजुयलो, निगूढजाणुपदेसगवहरिणसमाणरमणिज्जजंघो, सुपइट्टियकणगकुम्मसरिसलक्खणसबाहचलणजुयलो । पणओ य रायणो । भणिओ य—पुत्त वइरजंघ ! पडिच्छसु पुव्वभवसयपहं सिरिमतिं ति । अवलोइया णेण अहं कलहंसेणेव कमलिणी । विहिणा य पाणिं गाहिओ मम ताएण 'वइरजंघो !' त्ति महुरमाभासमाणेण, दिण्णं विउलं धणं परिचारियाओ य । विसज्जियाणि य अम्हे गयाणि लोहग्गलं । भुंजामो निरुविग्गा भोए ।

वइरसेणो वि राया लोगंतियदेवपडिबोहिओ संवच्छरं किमिच्छियं दाणं दाऊण निययपुत्तेहिं नरवईहि य मंतिवसभसमेतेहिं सह पव्वइओ पोक्खलपालस्स रज्जं दाऊण । उप्पण्णकेवलनाणो य धम्मं देसेइ । मम वि कालेण पुत्तो जातो, सो सुहेण संवड्ढिओ ।

कयाइ य पोक्खलपालस्स के वि सामंता विसंवइया । तेण अम्हं पेसियं—एउ वइरजंघो सिरिमती य त्ति । अम्हे विउलेण खंधावारेण पत्थियाणि पुत्तं नयरे ठवेऊण । सरवणस्स य मज्झेण पंथो पडिसिद्धो जाणुकजणेण—दिट्ठीविसा सरवणे सप्पा, ण जाति तओ गंतु त्ति । तं परिहरंता कमेण पत्ता पुंडरिगिणिं । सुयं च णेहिं नरवईहिं वइरजंघाऽऽगमणं । तओ ते सक्किया पणया । अम्हे वि पोक्खलपालेण रण्णा पूएऊण विसज्जिया, पत्थियाणि सनयरं । भणइ य जणो—सरवणुज्जाणमज्झेण गंतव्वं, सप्पा निव्विसा जाया, केवलनाणं तत्थ ठियस्स साहुस्स उप्पण्णं, देवा य उवइया, देवुज्जोएण य पडिहयं दिट्ठीगयविसं सप्पाण वि । तओ अम्हे पत्ताणि कमेण सरवणे आवासियाणि । सागरसेण-मुणिसेणा य मम भायरो अणगारा सगणा तत्थेव ठिया । तओ अम्हेहिं दिट्ठा तवलच्छिपडिहत्था सरयसरजलपसण्णहियया सारयसगलससिसोमवयणा । ते य सपरिवारा परेण भत्तिबहुमाणेण वंदिया । सपरिवारा य फासुएण असण-पाण-खाइम-साइमेण पडिलाहिया ।

तओ अम्हे तेसिं गुणे[2] अणुगुणेंताइं 'अहो[3] महाणुभावा सायरसेण-मुणिसेणा, अम्हे विमुक्कवज्जधुरावावाराइं कया मण्णे णिस्संगाइं विहरिस्सामो ?' त्ति विरागमग्गमोइण्णाइं कमेण पत्ताइं सनयरं । पुत्तेण य अम्हं विरहकाले भिच्चवग्गो दाण-माणेहिं रंजिओ, वासघरे य विसधूमो पओइओ । विसज्जियपरियणाणि य विगाढे पओसे अइगयाणि वासगिहं, साहुगुणरयाणि धूमदूसियधातूणि कालगयाणि इहं आयाइं उत्तरकुराए त्ति ।

तं जाणाहि अज्ज[1] जा णिण्णामिका, जा य सयपभा, जा य सिरिमती सा अहं

१ कलमेण य शां ॥ २ °वीए त्ति शां ॥ ३ °णे गेण्हत अहो शां ॥

ति जाणेह. जो महब्बलो राया, जो य ललियंगओ, जो य वइरजंघो राया ते तुब्भे। एवं जीसे नामं गहियं भे सा अहं सयंपभा ॥

ततो सामिणा भणियं—अज्जे ! जाइं सुमरिऊण देवुज्जोयदंसणेण चिंतेमि 'देवभवे वट्टाहि' त्ति, ततो य से सयंपभा आभट्ठा. तं सव्वं एयं जं तुमे कहियं। परितोसमाणसाणि पुव्वभवसुमरणसंधुक्कियसिणेहाणि त्ति सुहागयविसयसुहाणि तिण्णि पलिओवमाणि जीविऊण कालगयाइं सोहम्मे कप्पे देवा जाया। तत्थ वि णे परा पीई आसि। विपलिओवमम्मियं ठितिं अणुपालेऊण चुया वच्छावइविजए पहंकराए नयरीए तत्थ सामी पियामहो सुविहिविज्जपुत्तो केसवो नामं जातो, अह पुण सेट्ठिपुत्तो अभयघोसो, तत्थ वि णे सिणेहाधिकया। तत्थेव नयरे रायसुओ पुरोहितसुओ मंतिसुओ सत्थवाहसुओ य, तेहिं वि सह मित्ती जाया। कयाइं च साहू पडिमापडिवण्णो किमिकुट्ठी दिट्ठो समागएहिं, भणिओ य पंचहिं वि जणेहिं केसवो परिहासपुव्व—तुब्भेहिं नाम एरिसाणं तवस्सीणं तिगिच्छं न कायव्वं, जे अत्थवंता जणा ते तिगिच्छियव्व त्ति। सो भणति—वयंस ! अम्हं धम्मियजणो निरुजो कायव्वो, विसेसेण पुण साहवो पडिचरियव्वा. एस पुण साहू ओसहं पाउं नेच्छइ छड्डियदेहममत्तो, सो अब्भंग-मक्खणेहिं पडिचरियव्वो त्ति, तत्थ मम विल्लं अत्थि सयसहस्सनिप्फण्णं, गोसीसेणं चंदणेण कज्जं कंवलरयणेणं च त्ति। अम्हेहिं पडिवन्नं—कीरउ, सव्वं पि सपाडेमो। रायपुत्तेण कंवलरयणं दिण्णं, चंदणं च गहियं। पडिमाए ठिओ साहू विण्णविओ—भयवं ! अम्हे ते हितबुद्धीए जं पीडं करेमु तं खमसु त्ति। अब्भंगिओ तेल्लेण, तेणाऽहिगतरं किमी संचालिया, ते परमवेदणं उदीरेंता निग्गया, मुच्छिओ तवस्सी कंबलेण सवरिओ, तं सीयलं ति तत्थ लग्गा किमी, पप्फोडिया सीयले पदेसे, चंदणेण लित्तो, पच्चागओ पुणो वि मक्खिओ, तेणेव कमेण किमी निग्गया, चंदणेण सत्थो कओ, जाहे खीणा किमी ताहे चंदणेण लिंपिऊण गया मो सगिहाणि। सुयधम्मा य सव्वे पडिवण्णा सावयधम्मं, केसवो साहुवेयावच्चपरो विसेसेण ताव उग्गेहिं सीलव्वय-तवोवहाणेहिं अप्पाणं भावेऊणं समाहीए कालगया अच्चुए कप्पे इंदसमाणा देवा जाया। दिव्वं च सुहमणुभविऊणं ठितिखएण चुया कमेण केसवो वइरसेणस्स रण्णो पुक्खलावईविजए पुंडरिगिणीए नयरीए मंगलावतीए देवीए पुत्तो वइरनाभो नाम। रायसुयाई कणगनाभ-रुप्पनाभ-पीढ-महापीढा कमेण जाया कुमारा। अहं च तत्थेव नयरे रायसुओ जातो, बालो चेव वइरनाभं समल्लीणो सारही जातो सुजसो नाम। वइरसेणो वइरनाभाईण रज्जं दाऊण लोगंतियदेवपडिबोहिओ सवच्छरं कयवित्तविसग्गो पव्वइओ, समुप्पण्णकेवलनाणो धम्मं देसेइ सयंबुद्धो। वइरनाभो समत्तविजयाहिवो चक्कवट्टिभोए भुंजति। भयवं तित्थयरो पुंडरिगिणीए अग्गुज्जाणे समोसरिओ। वइरनाभो वंदिउं निज्जाओ सपरिवारो, जिणभासियामयपरिसित्तहियओ समु-

१ काउ शा० विना ॥ २ °सीसच° ली ३ ॥

प्पण्णवेरग्गो पुत्तसकामियरज्जसिरी ससहोयरो पव्वइओ । अहमवि पुव्वसिणेहाणुरागेण वइ रनाभमणुपव्वइओ । ततो वइरनाभो लद्धिसंपन्नो थेवेण कालेण चोद्दसपुव्वी जाओ, कण गणाभो वेयावच्चकरो । भयवया य 'वइरनाभो भरहे पढमतित्थयरो उसभो नाम भविस्सइ' त्ति निद्दिट्ठो, 'कणगनाभो चक्कवट्टी भरहो नाम तव पुत्तो भविस्सइ त्ति, रुप्पणाभाई एगमणुस्सभवलाभिणो अंतं करेस्सति' । पुव्वभवियकेसवादीण चरिय सील-संजयासंजयभावुज्जलं कहियं । ततो अम्हे छ प्पि जणा बहुगीओ वासकोडीओ तवमणुचरिऊण समाहीए कालगया, कमेण य सव्वट्ठसिद्धे देवा जाया । ततो चुया इह जाया । मया य पियामहलिंगदरिसणेण पोराणाओ जाईओ सरियाओ । विण्णाय च अण्ण-पाणं दायव्वं ति, न दव्वं तवस्सीणं ॥

एयं च कहं सोऊण सेज्जंसो पइट्ठमणसेहिं पूइओ नरवइपभिईहिं । ततो उसभसा मिणो वाससहस्सेण केवलनाणं दंसणं च उप्पण्णं । सम्मत्ताइसेसपयासो भवियाण धम्मं देसेइ । नमि विनमी य बहुं कालं देवा इव सच्छंदगमणालया निरुव्विग्गा भोए भुंजंति । समुप्पण्णवेरग्गा य पुत्ताणं नयराणि संविभजिऊण जिणचंदसमीवे पव्वइया, जेसिं मया वसकित्तणा कया ॥

नीलजसापरिचओ

णमिस्स य वंसे सखातीयाणि नरवतिसयाणि समतीताणि, जाणि रायसिरिं तणमिव पडग्गलग्गं पयहिऊण पव्वइयाणि । तम्मि य वंसे अपरियावत्ते विहुसियसेणो नाम राया, तस्स पुत्तो पहसियसेणो णाम, तस्साइ भारिया हिरण्णमती नाम विक्खाया विज्जाहरलोए नलिणिसभनगरसामिणो हिरण्णरहस्स सुया पीईवद्धणाए देवीए अत्तिया । मम य सीहदाढो पुत्तो, तस्स य दुहिया नीलजसा दारिया पहाणकुलसभवा कीलापुव्वं विज्जाणु वत्ती मायगवेसा, सा तुमे दिट्ठा । पज्जासि त्ति त पएसं, ततो ते सोहणं भविस्सइ त्ति । मया भणिया—जाणीहामो त्ति । ततो विमणा णिग्गया 'जाणिहिसि' त्ति वोत्तूण ।

अहमवि गंधव्वदत्ताकोवपसायणोवायचितापरो दिवसं गमेऊण पदोसे सन्निविट्ठो सय णीए हत्थफासेण पडिबुद्धो चिंतेमि—अपुव्वो हत्थफासो, न एस गंधव्वदत्ताए त्ति । त दुम्मिल्लियलोयणो दीवमणिपगासिय पस्सामि वेयालं भीसणरूवं । चिंतियं मया—सुणामि, दुविहा वेयाला—सीया उण्हा य जे उण्हा वेयाला ते सत्तुं पडजंति विणासेउकामा सीया वेयाला पुण णेइ आणेइ त्ति णितिय–ति एवं चिंतेमि । कड्ढति मं वेयालो बला वि कयाइ । मम वि चिंता जाया—नेउ ताव मं, जेणाऽऽणत्तो त्ति तस्स समीवं तेण सह जं पत्तकालं तं करिस्सं । णीओ मि णेण गब्भगिहाओ, चेडीओ पस्सामि पसुत्ताओ । चिंतेमि— ओसोविया वेयालेण, जं पाएहिं वि छिक्का न चेयंति । पत्तो य दुवारं, उगच्छिय णेण

१ °स्स हिरण्णमती णाम भई भारिया विक्खा° डां ॥ २ °ण्णरहस्स या ॥ ३ भेस° उ २ विना ॥ ४ सि य एव डां । सि णिंतिय ति पूर्वे क ३ गो ३ उ ॥ ५ °डाविला वि उ २ मे विना ॥ ६ म विदूति ली ३ क ३ गो ३ । म विंदूति उ ॥ ७ भयाव° डां ॥

वीसरियाणि कवाडाणि, णिग्गएणं संमिलियं मुहं, संवरियं दुवारं । चिंतियं मया—वेयालेण कओ अवकारिणा वि उवगारो सेट्ठिभवणं संवरियदुवारं करेंतेणं ति । निग्गयस्स मे सिरिदामगंड[1] पाएसु लग्गं, तं च चंदप्पमापगासियं दट्ठूणं 'से सोहणं निमित्तं' ति परिग्गहियं । थोवंतरे सेओ वसभो अणुलोमो दिट्ठो, तं पि से परिग्गहियं सुंदरबुद्धीए । थोवंतरे हत्थी सतीतो दिट्ठो, रायगिहे य थेरियाए सद्दाविओ—एहि वच्चामो, सा ते पियो[2] पुत्त! पडिच्छइ त्ति. एहिं तुमं, हत्थिस्स उवरिं अच्छसु मुहुत्तं जावमहमागच्छामि । सा आरूढा[3], उट्ठिओ य हत्थी, सा भीआ, (ग्रन्थाग्रम्–५०००) आहोरणेण भणिआ हसंतेण—सोभिता सि भयवति ! त्ति । ततो मे उप्पण्णा चिंता—इमो [4]संजोयसंलावो पसत्थं निमित्तं । पस्सामि य चेइयघरं, साहुसद्दं च सुणामि । ततो एवंविहेहिं पसत्थसउणेहिं अणुमण्णियगमणो इव नीणिओ वेयालेणं, संपाविओ पिउवणं । दिट्ठा य मया मायंगवुड्ढा किं पि जंपंती । भणिओ अणाए वेयालो—भद्दमुह ! संपावियं ते पयोयणं, सुट्ठु कयं ति । ततो ममं मोत्तूणं हसिऊण अदरिसणं गतो । अहं पि णाए आभट्ठो—पुत्त ! मा ते मण्णु भवउ 'वेयालेणाऽऽणीओ.' अहं जाणामि ते सत्तं पभावं च. न ते मया परिग्गहियस्स कायि सरीरपीला. 'अवमण्णसि ममं' ति तो मे एवं आणीओ. नयामि ते वेयड्ढं, मा किंचि भणासि त्ति । मया भणिया—तुब्भे जाणह जं पत्तकालं । ततो अणाते उक्खित्तो । णेइ मं मणोणुकूलाणि वयणाणि भासंती । एगम्मि य पएसे कणयधूमं पियंतं पुरिसं पस्सामि । पुच्छिया मया—देवी ! को एस पुरिसो ? त्ति । सा भणइ—पुत्त ! एस अंगारओ विज्जाभट्ठो साहणं कुणति विज्जाए. वच्चासु से समीवं, उत्तमपुरिसदंसणेण सिज्झंति विज्जाओ. पस्सउ तुमं ति, तो कयत्थो होहिति त्ति । मया भणिया—दूरेण परिहरह, न एयं दट्ठुमिच्छामि । ततो तीए तं परिहरतीए आणीओ मि खणेण वेयड्ढं । उज्जाणे य निक्खिविऊण गया मं ।

ततो मुहुत्तंतरस्स आगया पडिहारी, तीय मि सपरिचारीए कोउयसएहिं ण्हविओ, अइणीओ मि नयरं । पस्सइ मं जणो पसंसमाणो रूवाइसयविम्हिओ 'न एस माणुसो, देवाणं अण्णतरो' त्ति । पत्तो मि रायभवणं, पूजिओ मि अग्घेण, पविट्ठो मि अब्भंतरोवट्ठाणं, दिट्ठो य मया राया सीहदाढो सीहासणत्थो । चिंतियं मया—अवस्स गुरुजणो पूयणीओ त्ति । मया य से कओ अंजली । पहट्ठवयणेण राइणा उट्ठिएण नमंतो छित्तो बाहूसु । ततो उवणीए आसणे उवेसाविओ मि रण्णा सबहुमाणं । ततो विज्जाहरवुड्ढेहिं पउत्ताँसिस्स पुरोहिएण उदीरिओ पुण्णाहो । ततो निग्गया नीलजसा रायदुहिया णीलबलाहकसंकडाओ विव नवचंदलेहा, हंसलक्खणाणि धवलाणि खोमाणि निवसिया, सियकुसुमदुमापवालसणाहकेसहत्था, महग्घाऽऽभरणालंकिया,

१ °रिदत्त गढ पालएसु शा० विना ॥ २ °या पिया पडि° शा० ॥ ३ आसाढा वेढिओ य हत्थी उ २ मसं० मोस० विना ॥ ४ सजायसं° ली ३ । संयोगस° शां० ॥ ५ °रिचाराए ली ३ ॥ ६ °ड्ढेण प° शां० विना ॥ ७ °त्तासीसस्स शां० ॥

सहिजणपरिवारा दिसादेविपरिवारा इव वसुमती । संवच्छरेण भणियं—देव ! पसत्थं निमित्तं, मुहुत्तो य सोहणो, सामिपादा नीलजसाए पाणिं गिण्हसु त्ति । ततो पहुप्पाइयाणि तूरसयाणि, पगीयाओ अविहवाओ, पढंति सुयमागधा । ततो हं उवगओ, विरइयं ण्हाणपीढं । ततो नियगपक्खेण उवणीया नीलजसा । निकायवुड्ढेहिं अविहवाहि य कणगकलसेहिं सुरभिसलिलभरिएहिं कओ णे अभिसेओ । हुओ हुयवहो मंतपुरोगेहिं, गहिओ मे पाणी रायदारियाए, पयक्खिणीकओ हुयवहो, पक्खित्ता लायजलीओ, पवासीसाणि हंसलक्खणाणि खोमाणि परिहियाणि, पेच्छाघरनिसण्णाण य कयं पडिकम्मं, पज्जालियकणगदीवं अइगया मो वासगिहं सह परिचारिगाहिं । ततो सुरपतिनीलमणिसुकयचक्कवालं, नवकणयचियसुकयफुल्लविरत्तगंधं, नाणारागभत्तिरइयं, रयणचित्तं, चित्तकम्मविब्बोयणं, विपुलतूलीयेयवेणसमुच्चएण(?) अच्छुयं, भागीरहिरम्मपुलिणोवमं, पीढियापरंपरागयं, अभिरोहिणीयं, सुकयउल्लोयं, आविद्धमल्लदामकलावं, महसुहं सयणीयमभिरूढो मि । अतिच्छिया मे रयणी सुहेण पवियारसुहसणाहा । पडिबुद्धो मि मंगलेहिं विभाए । कयं मे पडिकम्मं कुसलाहिं कम्मपडिगारियाहिं । निग्गओ मि पेच्छाघरं, उवट्ठवियं मे कल्लमभोयणं पत्थं सुहपरिणामं च, भुत्तो मि सह पियाए, गहियसुहवासओ अच्छड्ढे ।

सुणामि य कोलाहलं बहुजणस्स समुद्दारावभूयं । पुच्छिया मया पडिहारी पभावई नाम—किंनिमित्तो एस समुद्दोवमो सद्दो महाजणस्स ? त्ति । सा मं विण्णवेइ—

सुणह सामि !, णीलगिरिम्मि सगडामुहे नयरे अंजणसेणाए देवीए नीलधरस्स विज्जाहररण्णो दुवे पुत्तभंडाणि—नीलंजणा दारिया, नीलो य कुमारो । तेसिं बालभावे कीलंताणं इमो आलावो आसि—अम्हं जया पुत्तभंडाणि होहिंति ततो चेव विवाहियाणि होहामो त्ति । णीलंजणा य नीलधरेण पत्तजोव्वणा अम्हं सामिणो सीहदाढस्स दत्ता । नीलकुमारो वि सविसए राया, तस्स नीलकंठो नाम पुत्तो जाओ । अम्हं पुण सामिणीय नीलजसा । रण्णा य सीहदाढेण बहस्सतिसम्मो नाम नेमित्ती पुच्छिओ—दारिगा कस्स देया ?, केरिसं वा भत्तारं पाविज्जा ?, तुब्भे णाणचक्खुणा अवलोएऊण सदिसह त्ति । तेण निमित्तबलेण भणियं—राय ! एस कण्णा अद्धभरहसामिणो पिउस्स भज्जा भविस्सइ त्ति । राइणा पुच्छिओ—सो कत्थ ? किह व जाणियव्वो ? त्ति । तेण भणियं—चंपाए चारुदत्तगिहे अच्छति सपयं, महासरजसाए दट्ठव्वो त्ति । ततो देवीओ निकायसहियाओ कुमारिं गहाय गयाओ, आणीया य तुम्हे इमं नीलगिरिं । नीलो य निकायवुड्ढेसु उवट्ठिओ—मम दारिया पुव्वदत्ता सीहदाढेण धरणिगोयरस्स दत्ता, पिच्छह नायं ति । तेहिं पुच्छिओ—किह तुह पुव्वविदिण्णा ?, कहयसु त्ति । सो भणइ—

१ दिसदेवयापरि° शां ॥ २ तूराणि शां विना ॥ ३ नियगवु° शां ॥ ४ °तोहिएहिं शां ॥ ५ °लीयधरेणीसमुच्चए° मो १ च मे । °लीयपाकर्णासमुच्चए° क ३ । °लीयणवणीयमुच्चए° ली ३ ॥ ६ °लिणाथाम ली ३ ॥ ७ °णाहो प° शां विना ॥ ८ कत्थ कह शां० विना ॥

वालभावे अहं नीलंजणा य कीलामो. ततो अम्हं संलावो आसि—जस्स मो एगयरस्स दारिया होज्जा दारगो वा ततो वेवाहिगाइं होहामि—त्ति. मम य नीलकंठो पुत्तो जाओ, नीलंजणाए देवीए नीलजसा दारिया जाया, सा मम समयओ अजाया चेव पुव्वदत्ता। तेहिं भणियं—न जुज्जइ दाणं. कण्णा पिउवसा, पिउणा अविदिण्णा न पभवति किंचि दाउं. अजाया तव कहं दत्ता दारिया?. दिण्णा कण्णा भत्तुणो वसा ण पभवति अवच्चाणं. माया उयरए भत्तुणो आभवेज्ज. तं जइ राइणा सीहदाढेण दत्ता पुव्विं, पच्छा धरणिगोयरस्स देइ, ततो अववहारी होज्जा. मिगतण्हाए जलं पत्थेमाणो मोहं किलिस्सइ त्ति। एवं वुड्ढेहिं भणिओ निव्वयणो ठिओ। एयनिमित्तं सामि! कलकलो आसि त्ति सा गया कहेऊण।

अहमवि पियाए नीलजसाए सह नीलसुओ पंचलक्खणविसयसुहसायरावगाढो विहरामि। कयाइं च भणइ ममं नीलजसा—अज्जउत्त! 'तुब्भे अविज्ज' त्ति विज्जाहरा परिभवेज्जा, तं सिक्खह विज्जाओ, ततो दुद्धरिसा होहिह त्ति। मया भणिया—एवं भवउ, जं तव रुयियं। ततो तीसे अणुमए विज्जागहणनिमित्तं अवइण्णो मि वेयड्ढं। तत्थ य रमणीयपएसे पियासहिओ विहरामि। दिट्ठो य अणाए संचरमाणो मोरपोयओ, सिणिद्धमणहरो, पिच्छच्छादणो, ईसिंविभाविज्जमाणचंदकविचित्तपेहुणकलावो। सो य अम्हं आसन्नेण संचरइ। तं च दट्ठूणं नीलजसा भणति—अज्जउत्त! घेप्पउ एस मोरपोयओ, कीलणओ भविस्सइ त्ति। मया भणियं—एवं होउ त्ति। अणुवयामि णं। सो य पायवसकडाणि वणविवराणि पविसइ, सिग्घयरं च गच्छति। ततो मया भणिया—असत्तो हं मोर घेत्तुं, अइसिग्घयाए नस्सइ, तुमं चेव णं गिण्ह विज्जाबलेणं। सा पधाविया विज्जापभावेण उवरिं सि ट्ठिया। मोरो य तं पिट्ठीए घेत्तूणं दूरं च गंतूण अंतरं लहिऊण य उप्पइओ। मया चिंतियं—रामो मिगेण छलिओ, अहमवि मोरेण, नूणं हिया पिया नीलकंठेण। अहं पि अडवीए हिंडामि त्ति॥

॥ इति सिरिसंघदासगणिविरइयाए वसुदेवहिंडीए चउत्थो नीलजसालंभो सम्मत्तो॥

नीलजसालंभग्रं० ७२४ अ० १४. सर्वग्रन्थाग्रम्—५०७४.

पंचमो सोमसिरिलंभो 25

हिंडंतो पत्थिओ मि एगाए दिसाए। दिट्ठा य मया मिगा, ते उप्पइया दूरं गंतूणं सउणा इव निवइया। ततो मे उप्पण्णा चिंता—एते वायमिगा दिट्ठा पसत्थदंसणा महंतं [3]लंभ वेदिहि त्ति सुवए विउसजणाओ। ते अइक्कंतो मि। दिट्ठा य मया गावो जूहगयाओ, ताओ ममं पस्समाणीओ गंधेण उव्विग्गाओ पहकरेण ममं उवगयाओ। तासिं सम्मदं

१ °ओवजाया शां० विना॥ २ °जाबलेण शां०॥ ३ °भ देहिति त्ति सु° ली ३। °भ वेदिहिति सु° उ २ मे०॥

परिहरंतो अह आसण्ण रुक्ख दुरूढो। ताओ वि परिवारेऊण उम्मुहीओ ठियाओ। ताओ सव्वत्था परिसिऊण गोवा डडहत्था त पदेसमुवागया। दिट्ठो य गेहिं अह। ततो गेहिं गाओ पारद्धाओ, अह च पुच्छिओ—कयरो सि इहाण?, कहेहि अच्छलेण? ति। मया भणिओ—अह माणुसो, मा माह, इह जक्खिणीण दोण्ह कलहतीण पडिओ[1] मि साहह, को इमो गामो? नयरं वा आसण्ण? ति। ते भणति—इह[2] वेदसामपुर नयरं. तत्थ कविलो राया इह पुण समीवे गिरिकूंड[3] नाम गामो। मया भणिया—कयरो मग्गो तत्थ गतु?। ते भणति—न कोइ पहो, किमग पुण जा दुद्धवाहिएहिं पदपज्जा[4] कया तीएऽणुसज्जमाणो वच्चसु त्ति। तीए पदपज्जाए पत्थिओ दूरं गतूण वावि-पुक्खरिणि-वणसडमडिय पत्तो मि गामसमीव।

पस्सामि दियादओ तेसु थाणेसु समागए वेदपरिचय कुणमाणे। गओ मि एग पुक्खरिणिं, अवगाढो तत्थ सिण्हाओ। आभरणाणि चेलते बधेऊण अइगओ गिरिकूड गाम। आययण च रमणीय पस्सिऊण पविट्ठो य। तत्थ य माहणदारया वेयपदाणि उच्चारिते खलियाणि णिएति। ते य दट्ठूण तहागए पुच्छिओ मया माहणो—किं एते दियादयो इह आययणे वेयपयाणि अब्भसति? पुणो पुणो य निग्गच्छति खलिया? कहेहि कारण। सो भणति—सोम्म! सुणाहि—इह देवदेवस्स गामभोइयस्स दुहिया सोमसिरी नाम सोमलेह व अभिमया, मणोहरसरीरा, कमलनिलया इव सिरी कमलविरहिया, पसत्थकर-चरण-नयण-वयणा सा उत्तमपुरिसभारिया आदिट्ठा नेमित्तिणा बुहविबुधपुरओ वेदिकपुच्छ दाहिति तस्स दायव त्ति तओ तीसे रूवा ऽऽगमविम्हइया माहणा वेदमागमति एय कारण। ततो मया सो पुच्छिओ—को एत्थ उवज्झाओ पहाणो?। सो भणति—बभदत्तो पहाणो, तस्स य सतोरण गिहमालोयए, गच्छ, तत्थ अहीय त्ति। तओ मया चिंतिय—आगमो महागुणो पुरिसेण सव्वपयत्तेण य आगमेयव्वो। एव सपहारेऊण गतो मि बभयत्तस्स गिह, दिट्ठो य मया मज्झिमवए वट्टमाणो विणीयवेसो। मया वदिओ 'अह खदिलो गोयमो' त्ति (ग्रन्थाग्रम्—५१००) भणंतेण ति। तेण म्हि महुरमाभट्ठो—अहमुह! सागय?, निविसमु आसणे त्ति। माहणी य निग्गया गिहदेवया इव रूविणी मगलमेत्तभूसणालकिया। तीए मे कओ पणिवाओ। सा भणइ मम अवलोएऊण—जीव पुत्त! बहूणि वाससहस्साणि त्ति। सदिट्ठा अणाए चेडी मम पादसोयनिमित्त। कयपायसोएण य मया दिण्णाणि कडयाणि माहणीए 'इमाणि मे दक्खिणाए लद्धाणि तुब्भे परिभुजह' त्ति। सा ताणि दट्ठूण परितो समागया। दसियाणि अणाए बभयत्तस्स। सो भणइ म—केण सि आगमेण वि अत्थी? जमह जाणामि तस्स पभवसि त्ति। मया भणिओ—वेयत्थ पढेज्जा तुब्भ अणुमए। सो भणइ—एव भवउ, वेदा दुविहा, आरिया अणारिया य, कयरं सिक्खसि? त्ति। मया भणिय—सुणामि विसेसं। सो आयरिय(आरिय)वेदुप्पत्तिं कहेइ—

१ °ओ त्ति। हा° शी ३ ॥ २ व मे चिनाऽन्यत्र—°इ वेद साम° क ३ गो ३ शी ३। °इ देवसाम° शां ॥ ३ °रिकड° शां। एवमग्रेऽपि ॥ ४ पदकया पजा, तीए शां ॥

आरियवेयउप्पत्ती

इह किल भरहे मिहुणकुसुदचंदा कुलगरा आसि विमलवाहणादि सत्त । सत्तमस्स नाभिस्स मरुदेवा य भारिया, उसभो नाम तिहुयणगुरू इक्खागवंसतिलओ पुत्तो आसी। सो य किर जायमेत्तो चेव मेरुसिहरे सुरेहिं तित्थयराभिसेएण अहिसित्तो । विवड्ढमाणो य कलाविहाणाणि सिप्पसयं पयाहिओ उवइसित्ता, रायधम्मं पवत्तेऊण, वीस सयसहस्साणि पुव्वाणं कुमारवासमज्झाऽऽवसिऊणं, तेवट्ठिं पुव्वसयसहस्साणि रायसिरिमणुभविऊण, पुत्तसयस्स जणवयसतं विभजिऊण चउहिं खत्तियसहस्सेहिं सह निक्खंतो । वाससहस्सेण य पुरिमताले उप्पाइयकेवलणाणो भरहसुयं उसभसेणं पढमगणहरं ठवेऊण, बंभी य भरहभगिणी पवत्तिणीपए, ततो भविए विबोहेमाणो सरदकाले रवी विव कमलायरे विहरति वसुहं निरुवसग्गं ।

भरहो य भयवओ उसभस्स पढमसुओ । तस्स सामिणो केवलुप्पत्तिदिवसे रयणाणि चक्कादीणि समुप्पण्णाणि । उप्पण्णरयणेण य सट्ठीए वाससहस्सेहिं भरहमोयवियं । ततो विणीयाए महारायाभिसेयं पत्तो । भयवं च उसहसिरी चउरासीतीए रिसिसहस्सेहिं तीहि य अज्जासयसहस्सेहिं सहिओ विणीयाए नयरीए समोसरिओ । ततो भरहेण रण्णा तिन्नि सट्ठाणि सूयसयाणि संदिट्ठाणि—जाव भयवं तित्थयरं वंदिमो जामि ताव साहुजोग्गं विविहं भत्त-पाणं उवट्ठावेज्जाह त्ति । पत्तो य भरहो भयवंतं परमगुरुं वंदिऊण उवासए । सक्कादओ य देवा उवागया । तदंतरे उवट्ठिया महाणसाहिगया—सामि ! आणीयं भोयणं ति । ततो भरहो वंदिऊण विण्णवेइ—तात ! गिण्हंतु साहवो साहुणीओ य भत्त-पाणं ति । उसभसामिणा भणियं—भरह ! साहुनिमित्तं भत्त-पाणं एत्थेव आणीयं रायपिंडो य पीडाकर वयाणं, न कप्पइ जईणं । एवं भयवया भणिए 'तातेहिं अहं सव्वहा परिचत्तो'त्ति चिंतेऊण विसण्णो ठितो । सक्केण य देवराइणा तस्स चित्तपसायणनिमित्तं भयवं पुच्छिओ—कतिविहो उग्गहो ? त्ति। सामिणा भणिओ—सक्क ! पंचविहो उग्गहो—देविंदोग्गहो राउग्गहो गहवइउग्गहो सागारिउग्गहो साहम्मिउग्गहो । ततो भणति देवराया—भयव ! भरहे अहं पभवामि णं ? ति । भयवया भणियं—चक्कवट्टिभोयकाले न पभवति इंदो, चक्कवट्टिविरहे पुण पभवइ त्ति । ताहे भणति—जया अहं पभविस्सं तया मए अणुण्णाओ उग्गहो साहूणं—दव्वओ जं दव्वं उवउज्जइ, खेत्तओ पुण जाव लोयंतो, कालओ दो सागरोवमाइं, भावओ वि सुहुमा विसेसा । ततो भरहेण चिंतियं—सक्को जया पभविस्सइ तदाऽणुजाणिहिति. अहं पि ताव पुच्छामि उट्ठेऊणं । वंदिऊणं पियरं पुच्छति—ताय ! अहं पभवामि भरहे वासे कित्तियस्स ? त्ति । सामिणा भणिओ—भरह ! तुमं पभवसि सयलस्स भरहविजयस्स. तवाऽणुमए भरहे पवावेमि मणुए. अणुजाणंतो तुमं विपुलेणं णिज्जराफलेण संजुज्जिहिसि. जया अचित्तं दव्वं समणाणं उवओगे वट्टति तस्स तुमं सामी ।

१ °यस्स सत ली ३ ग्रां० विना ॥ २ °स्सेण सह ग्रां० ॥

सओ पहट्ठो विण्णवेइ—ताय ! मया पव्वइउकामो मणुस्सो इत्थी वा अणुण्णाया, जइ इत्थीरयणं पव्वयइ, जं मा दव्वं उवउज्जति साहुवग्गस्स। एवं भणिए तित्थयरवयणामयसित्ताइं भरहस्स पंच पुत्तसयाइं सत्त य नत्तुयसयाणि पव्वइयाणि सयराहं, स अब्भुयमिव आसि।

भणिओ य सक्को भरहेण—देव ! अम्हं तित्थयरसमीवे वट्टमाणाणं वदण-संसयपरिच्छेओ य साहीणो, तुम्हं मणुस्सलोअमागतव वदिज्ञ ति। सक्को भणइ—जो ससओ वितिमिरो न होहिति तन्निमित्तं तित्थयरसमीवमागतव जा पुण वदण-पज्जुवासण-पूया तत्थ वि सा सिद्धाययणसन्निहियासु पडिमासु पजुज्जति तित्थयरचित्तं निवेसेऊण ति। एवं सोऊण जिणाययणाणि काराविंयाणि वड्ढइरयणेण। सक्कसदेसेण य सावयो 'तव सील-कलिय' त्ति समोसरणंगया भोइया साहुजणुद्देसिककड भत्त-पाणं।

पुणो अणेण पुच्छिओ इंदो—देव ! जारिसं तुब्भ रूवं देवलोए तं मे दसेहि त्ति। सक्केण भणिओ—भरह ! मम दिव्वं रूवं पिहुजणो न सत्तो दट्ठुं, तुज्झ पुण एगदेसं दसेमि त्ति। ततो णेण परमरूववस्स नियगस्स पदेसिणी सभूसणा दसिय त्ति। दट्ठूण य सा आगिती ठाविया, महिमा य कया, ततो इंदमहो पवत्तो।

सावगा णेणं सदिट्ठा—पइदिवसं भुजतु मम गिहे, भुत्ता य मम भणतु 'जिवो भव' त्ति। ते परमण्णं भुजिऊण रायरायं दाहिणहत्थेण समुस्सवेऊण भणति 'जिओ भव' ति। ततो चिंतेइ—मया सागरं हिमवंतगिरिमेरगं निज्जियं भरहं, को मं जिणइ ? त्ति। पुणो से समतीए विचारेंतस्स एवं मणसी भवइ—सच्चं, जिणंति ममं इंदियविसयपसरा अणिवारिया राग-दोसं त्ति।

एवं च काले वच्चमाणे रायदरिसणं देवदरिसणमिव भण्णमाणो कोऊहलिगो जणो सावगेहिं समं पविसति, आसीसं पउंजति। भोयणाहिगारे य दुवारनिउत्तेहिं पुरिसेहिं ते तहागए जाणिऊण रण्णो निवेविदं—देव ! सावगववएसेण बहुतरा भोयणत्थाए तुब्भे दट्ठुं पविस्सति, एत्थ सामी पमाणं ति। ततो भरहेण चिंतिऊण भणिया—होउ, करिस्सं विसेसणं ति। तेसिं च पइण्णा—ण हतव्वा पाणिणो, 'मा हणह जीवे त्ति तओ माहण' त्ति वुच्चति। सदावेऊण राइणा पुच्छिया—एयाणि सीलाणि जस्स जावतियाणि सो तावतिगाणि कहेउ त्ति। पत्तेयं कहेंति तव सील-गुणव्वयाणि। तत्थ जे पचाणुव्वया तेसिं एगं कागणिरयणेण वेगच्छिगं रेहं करेति, जे य तिन्निगुणव्वय-अणुव्वयधरा तेसिं दुवे रेहाओ करेइ, जस्स अणुव्वय-गुणव्वय सिक्खावयाणि तस्स तिन्नि रेहाओ करेइ, एवं च माहणा अंकिया पगासा जाया। तेसिं जा आयारधम्मया सा सयसहस्सेण निबद्धा। ततो ते एक्कारसउवासगपडिमाविहाणसहियं, सीलव्वय नियमवियप्पभूसियं, मरणविहि-सुगतिगमण-सुकुलपच्चायाइ बोहिलाभफलं, णिव्वाणगमणोवायदेसणासारं वेयमारियं पढंति परमरिसिदेसियं।

१ °मीवे समाग° शां ॥ २ °या पतसी° क ३ गो ३। °या बमसी° उ मे ॥ ३ °णमागया° उ २ मे ॥ ४ सा अंगुली ठा° ली ३। सा आगती ठा° शां ॥ ५ °ण आदि° शां ॥ ६ °णो माहण त्ति वु° शां कसं विना ॥ ७ °रियं प° शां ॥

उसहसामिनिव्वाणं

भयवं च जयगुरू उसभसामी पुव्वसयसहस्सं वाससहस्सूणयं विहरिऊण केवली अट्ठावयपव्वए सह दसहिं समणसहस्सेहिं परिनिव्वाणमुवगतो चोद्दसेणं भत्तेणं माघबहुले तेरसीपक्खे अभीइणा णक्खत्तेणं एगूणपुत्तसएण अट्ठहि य नत्तुयएहिं सह एगसमयेण निव्वुओ। सेसाण वि य अणगाराणं दस सहस्साणि अट्ठसऊणगाणि सिद्धाणि तम्मि चेव रिक्खे समयंतरेसु बहुसु। ततो भरहो राया परमसंविग्गो सुरा-ऽसुराहिवा सहस्सनयणादयो तीसु सिविगासु थावेऊण सिद्धसरीराणि तित्थयर-इक्खागवंस-सेसाणं अणगाराणं, महया तूरनिनाएणं कुसुमवरिसाणि वरिसंता नाइदूरं नेऊण, गोसीसचंदणचितीसु थावेऊण, जहाकमेण थुणंता सुतिमहुराहिं थुतीहिं पयाहिणं करेंति देव-गंधव्वा सअच्छरगणा। ततो सक्कसंदिट्ठेहिं अग्गिकुमारेहिं देवेहिं अग्गिमुहाणं विउव्विय अग्गी उप्पाइया, तप्पभिइं रूढं लोए 'अग्गिमुहा देव' त्ति। ततो सुरहिगंधदव्वपब्भारं घयं महुं च पक्खिवित्ता दहंति सिद्धसरीराणि देवा। उयहिकुमारेहि य खीरोदसायरसलिलेण निव्वावियाओ चियाओ। गहिया य देविंदेहिं जिणसकहाओ मंगलत्थं, नरवईहि य सिद्धसरीरावयवा, जणेण माहणेहि य अग्गी नीओ चियगाहिंतो। पिहप्पिहा य थाविउं पयत्तेणं सारक्खंति। जस्स य उग्गा काय सरीरपीडा सो तीए भूईए छित्तो सत्थो भवति। ततो ते तमग्गिं चंदणकट्ठेहिं सारक्खेंति। भरहो य राया पूएति। तेहिंतो अग्गिकुंडउप्पत्ती माहणाणं। थूभा य कारिया भरहेण जिणपरिणिव्वाणभूमीए, महिमं च करेइ। माहणा वि जिणभत्ति(त्ति)-चक्कवट्टिअणुमतीए महेंति, समागया वि जिण-चक्कवट्टीहिया। आइच्चजसादीहि य सुवण्णसुत्ताणि दिण्णाणि माहणाणं।

एवं आरियाणं वेयाणं माहणाणं च भरहाओ पढमचक्कवट्टीओ उग्गमो। सावयपण्णत्ती वेदो कालेणं संखित्तो तुच्छो धरति।

॥ एसा आरियवेदउप्पत्ती ॥

खंदिल! इदाणिं सुणह अणारियाणं वेदाणं उप्पत्तिकारणं—

सगरसंबंधो

अत्थि चारणजुवलं नाम नयरं। तत्थ अयोधणो नाम राया। तस्स दितिनाम महादेवी। तीसे सुलसा नाम दुहिया, सा परमरूववती, सुरजुवईणं पि विम्हयजणणी, रूवलच्छीए लच्छी विव कमलवणविणिग्गया। तं च दट्ठूणं तहागयं जाणिऊणं पिउणा से अजोधणेण सयंवरो आदिट्ठो। विदितकारणा समागया रायाणो। अपराजित-जियभय-भीम-अरिंद-संभ-भीसण-मघवं-सुजात-महुपिंगल-हिरण्णवम्म-धणरहपभितओ अणेगे कुल-सीलविण्णाणसालिणो समागया रायाणो। अहिराया य तं समयं साकेए नयरे सगरो नाम

१ °व्विया अ° शा० विना ॥ २ रूढिं ली ३ उं० मे० ॥ ३ °उ चेय णं सा° शा० विना ॥ ४ काइ स° उ० मे० ॥ ५ °रिसाणं शा० ॥ ६ °रिसवे° शा० ॥ ७ °तरभय° ली ३ मो० स० गो ३। °तरभयं° कसं० उ० मे० ॥ ८ °सम्म° उ० मे० ॥ ९ °सुजासमहु° शा० विना ॥ १० °णणवम्म° शा० विना ॥

राया। तस्स पडिहारी बहुमया मंदोदरी नाम। पुरोहिओ पुण बहुस्सुओ विस्सभूती। ततो सगरेण पडिहारी अयोधणगिहे पेसिया (ग्रन्थाग्रम्–५२००) 'उवलभसु सयवरदिवसं' ति। अतिगया सा दितिदेवीगिहं। सा य पमयवणे सह सुलसाए आलावं करेंती अच्छति लयाहरे। मंदोदरी य देवीए परिजणेण न निवारिया पमयवणमतीति। सा आसण्णा ठिया तासिं पच्छण्णा 'सुणामि ताव सिं माया दुहियाण रहस्सं' ति। एयम्मि वेलाए दिती परुवती सुलसाए भणिया—अम्मो! मा रोवह, कण्णा पिइ-मायाहिं दिण्णाओ अवस्सं अम्मा-पिऊहिं विजुज्जंति त्ति। सा भणति—नाऽहं पुत्त! 'तुमे विजुज्जेहामि' त्ति रोवेमि 'तुहं विदिण्णो सयवरो पिउणा, अम्हं कुलधम्मं वइक्कमेज्जासि' त्ति मे माणसं दुक्खं उप्पण्णं। कण्णाए भणिया—कीस एवं सलवसि? अमंगलं करेहि वा? कहं मिह कुलधम्मं वइक्कमते सका?। दिति भणति—सुण पुत्त!—

इह सुरासुरिंदविंदवंदियचलणारविंदो उसभो नाम पढमो राया जगप्पियामहो आसी। तस्स पुत्तसयं। दुवे पहाणा—भरहो बाहुबली य। उसभसिरी पुत्तसयस्स पुरसयं जणवयसयं च दाऊण पवइओ। तत्थ भरहो भरहवासचूडामणी, तस्सेव नामेण इहं 'भरहवासं' ति पवुच्चति, सो विणीयाहिवती। बाहुबली हत्थिणाउर-तक्खसिलासामी। भरहस्स य रण्णो आउहघरे चक्करयणं समुप्पण्णं। ततो चक्करयणदेसियमग्गो गंगाए महानदीते दाहिणेण कूलेणं भरहमभिजिणमाणो, पुरत्थिमेण मागहतित्थकुमारेण पूइओ 'अहं देवस्स अंतवालो आणाकरो' त्ति, दक्खिणेण वरदामतित्थकुमारेण पणएण पूइओ, पच्चत्थिमेण पभासेण सम्माणिओ, ततो सिंधुदेवीए कयपणामो, वेयड्ढकुमारपणमिओ, तिमिसगुहाहिवकयमालदेवदत्तविचारो, उत्तरड्ढभरहनिवासीचिलायपक्खियमेहमुहा देवा मेहवरिसोवसग्गनिवारणं छत्त चम्मरयण संपुडकय व खंधावारकयपरित्ताणो, हिमवंतकुमारविणयसम्माणिय-पणमिओ, उसभकूडे नियनामकिय, सिंधु हिमवंतंतरे सेणावतिकयविजओ, नमि विनमिविज्जाहराहिवोवणीयजुवइरयणो, गंगादेवीकयपणामो, हिमवंत-वेयड्ढविवरगंगानदीविजितपुव्वभागो, खंडप्पवायगुहाविणिग्गओ, नवनिहिकयपूओ, गंगा-वेयड्ढंतरनराहिवसपेसियरयणभरियकोसो विणीयणयरिमणुपत्तो।

एत्तो महयरमहारायाहिसेओ अट्ठाणवतिं भायरो भणति—सट्ठीए वाससहस्सेहिं निज्जिय मया भरहं सविज्जाहरं तुम्हे मम विसयवासी सेवह मं, अहवा निव्विसया होह त्ति। ते भणंति—तातेण विदिण्णविसयाणि अम्हं आणं दाउं नाऽरिहह त्ति। जोहे सेवानिमित्तं पुणो पुणो चोएइ ताहे ते उसभसामिणो गया समीवं, पणया विण्णवेंति—ताया! तुम्हेहिं कयप्पसाया, माहति णे भरहो, संदिसह अम्हेहिं कायव्वं ति। भयवया य वेरग्गजण

१ °रहिता सु° शां ॥ २ °अहिहिसि शी ३ क ३ गो ३। °जिहिहिसि उ मे ॥ ३ °जुज्जाहिमि शां ॥ ४ °सुरवंदवं° शां ॥ ५ °नंगए दा° शां विना ॥ ६ °पयथाणो वेय° कसं संसं उ मे०॥ ७ °वतुथरे शां ॥ ८ °ण तुम्हे मा° शां ॥ ९ आणे शा ॥ १० करणिमं ति शां० ॥

गेहिं वयणेहिं अणुसासिया अणुत्तरदेवभावं च संभारिया । ततो ते चरिमसरीरा तित्थयरभासियामयसित्तहियया वेयालियवित्तसंबोहिया विमुक्कवादवावारा समणा जाया ।

बाहुबलिस्स भरहेण सह जुज्झं दिक्खा णाणुप्पत्ती य

तओ तेसिं च पुत्ते रज्जे ठवेऊण भरहो तक्खसिलाहिवस्स पेसेइ—सेवसु ममं ति । बाहुबलिणा य दूओ भणिओ—होउ, जियं भरहेण भरहं, को वा अण्णो अरिहति पहुत्तं?. जं पुण ममं तातेण भूमीभागं विइण्णं इच्छति सेसपत्थिवसमाणं काउं, तं न सुट्ठु संलवइ त्ति । ततो दूओ गहियवयणत्थो गओ भरहसमीवं । निवेइयं अणेण सबं । ततो भरहो सबबलेणं तक्खसिलाविसयं पत्थिओ । बाहुबली विसयाओ विणिग्गओ । समागया उ रज्जसीमंते । तो तेसिं च परिणिच्छिए उत्तमे जुज्झे दिट्ठीपराजिओ जिओ बाहुबलिणा भरहो । तओ मज्झिमं मुट्ठीजुज्झमाढत्तं । तत्थ जियसप्पाणं जाणिऊण भरहो चिंतइ—किं मण्णे अहं न होज्ज चक्कवट्टी ? बाहुबली ममाओ अहिगबलो त्ति । एयम्मि समए देवयाए से चक्कं करे पक्खित्तं । तं च तहागयं दट्ठूण बाहुबली भणति—तुमं अहमजुद्धमस्सिओ, मुट्ठीजुद्धेण निज्जिओ आउहं गिण्हसि । सो भणति—न मम कामचारो, देवयाए पक्खित्तं सत्थं हत्थे । तओ भणति बाहुबली—जइ तुमं लोगुत्तमसुओ होऊणं मज्जायमतिक्कमसि पिहुजणे का गणणा[1]?. अहवा न तुमं दोसो, विसयलोलुयाए तुमं सि अपदं कारिओ 'उसभसिरिसुतो' त्ति जणेण पसंसिज्जमाणो जइ य तुम्हंविहा णं पि पहाणपुरिसा णं विसयवसगा अकज्जुज्जया भवंति तो अलं मे एरिसपज्जवसाणेहिं भोगेहिं । परिचत्तसबसावज्जजोगो ठितो । 'अहं अणुप्पन्नकेवलाइसओ य कहं डहरए भाउए दच्छिस्सं ?' ति वोसट्ठकाओ ठितो । ततो भरहो जायाणुसओ अणुणेइ । सो वि भयवं मंदरो इव थिरज्झवसाओ न हु ताणि अणुणयवयणाणि पसत्थज्झाणमस्सिओ चित्ते निवेसेइ सयलेण वि भरहविसएण निमंतिओ । ततो भरहो राया सोमप्पहस्स रज्जं दाऊण सनयरमागतो । सो वि बाहुबली संवच्छरं थाणूभूओ[2] चिट्ठति, अइमुत्तयवल्लिए य समीवजायाए पायवो विव वेढिओ । भयवं च उसहसामी सगणो विहरमाणो तक्खसिलाए समोसरिओ । बंभीए य अज्जाए पुच्छिओ—भयवं ! बाहुबलिस्स परमजोगिणो दुक्करतवुज्जयस्स पुढवी विव सबफासविसहस्स केवलं कहं नोप्पज्जए ? । भयवया भणियं—अज्जे ! तस्स माणपबयारूढस्स न केवलनाणलंभो. तस्स 'कहं डहरए भाउए कयकज्जा वंदिस्सं ?' ति परिणामो, ततो नियत्तस्स उप्पज्जइ नाणं । तीए भयवं पुच्छिओ—पडिचोइओ मया विमदो लभेज्ज केवलनाणं ? ति । ततो भयवया भणिया—आमं ति । ततो बाहुबलीअवरोहसहिया बंभिभयवती गया तं पएस, जत्थ ठिओ महप्पा बाहुबली । पडिमं ठितो दिट्ठो य णाए तवतेयसा दिप्पमाणो तावसेहिं 'एस अम्हं देवय'त्ति मण्णिज्जमाणो सबहुमाणं, पलासपट्टपरिहिओ विव सक्कज्झओ, जडाहिं भमरावलीरूवचोरीहिं कणगपबइओ इव सिरपवत्तंजणधाउधरो,

१ का गणणा गो ३ उ० मे० । का सण्णा शा० ॥ २ खाणू° ली ३ ॥

एक्कपोग्गलपइट्ठियविसरियनिसित व पसण्णदिट्ठी । देवीहि य 'अहो! अच्छरियं, सामी ज जगमपवरो होइऊण थावरो सि जाओ, सुहोइएण य सए कह सी-उण्ह-वरिसनिवाय सहियं ?' करुण भणतीहिं वदिओ । तओ य णाहिं वल्लीओ वेल्लिया । बभीए सरस्सईए य पवक्खेण भणिओ—जेट्ठज्ज! ताओ आणवेइ—न मायगामिरूढस्स केवलनाणसंपत्ती हवइ गम्मउ तित्थयरसमीव । त च से वयण अमयमिव सुइपहमुवगय विसुज्झमाणलेसस्स । 'हुहु कय, ज तिलोगगुरुपादमूल न गओ' चिंतयतो अपुव्वकरण पविट्ठो । चलियमो हावरणतराएण य पादो चालिओ, उप्पण्ण च से केवल, ताहिं वदिओ । अहासण्णिएहि य देवयएहिं मुक्काओ पुप्फवुट्ठीओ, थोउ च सुविमहुरं पवत्ता । सो वि बाहुबली सव्वण्णू गओ भयवओ उसभसिरिसमीव, अइगओ केवलिपरिसं । बभी वि सपरिवारा गया तित्थयरपादमूल साहियकज्जा ।

कयाइ च आइच्चजसेण रण्णा सोमप्पभेण य कओ समवाओ—अम्ह रायाणो भिन्ना, जइ तेसिं धूयाओ दाहामो तओ गव्विया भविस्सति अम्ह दुवे कुलाणि प्पभवतु, परोप्परं च कण्णादाणं तओ सोहण भविस्सइ त्ति । बाहुबलिवसे य अजिय-जय-सजय विजय वेजयत-सल-मेहरह-समविंदु घुघुमारअतीतेसु असखेज्जेसु, सणकुमार-संति कुथु-अर-सुमोमेसु य चक्कवट्टीसु अतीतेसु, भवसिद्धीयनरवईसु य, पगासे बाहुबलीवसे तिणपिंगू नाम राया आसि, तस्स अहं भगिणी । तस्स पुण तव पिउणो अयोधणस्स भगिणी सच्चजसा नाम महादेवी, तीसे पुत्तो महुपिंगलो नाम राया ।

त पुत्त! एव काले अतिच्छिए भरह-बाहुबलीवसगामिणीओ कण्णाओ आसि 'तुम भरहस्स पढमचक्कवट्टिणो वसे जाया, ण जाणामि क रूवमोहिया वरइस्ससि' त्तिं मे रुण्ण । तओ सुलसाए भणिया दितिदेवी—अम्मो! न ममाओ कुलधम्मो विणस्सिहिति अहं महु पिंगलं चेव रायमज्झे वरइस्सं ति ॥

एव सोऊण मदोदरी 'एस से परमत्थो' त्ति चिंतेऊण थोवतरे समोसरिऊण देवीस मीवमुवगया । दितीए समवणमइणेऊण पूइया विसज्जिया य । सगरस्स णाए कहियं—निग्गाओ देव! सयवरो त्ति । तेण पुच्छियं—कह ? ति । तीए जहासुय कहियं ति । 'केरिसी सा दारिय ?' त्ति पुच्छिया साहति—तिलोयसुदरि त्ति, न सक्का तीसे एक्काए जिब्भाए रूव सिरिं वण्णेउ सिरी जइ तारिसी 'कयत्थ' त्ति तक्केमि, सुरवहूण पि विम्हयजणणी । जह जह य वण्णेइ मंदोदरी सुलसारूवातिसय तह तह सगरो मदणबाणमायण जाओ ।

विस्सभूइयस्स णेण विरहितेहिं कहियं—सुलसा कण्णा जइ मम न होहिति भारिया किं मे रज्जेण रायभावेण य ?, किं च मे जीविएण ? भग्गमणोरहो त्ति त चिंतेहिं, कह मम सा हत्थ मांस पावेज्ज ? त्ति विक्कमेण ? उवाएण ? त्ति । तेण भणिओ—सुण राय!, जइ बला हरसि कण्ण तो वज्झो भविस्ससि रायसेण्णस्स उवाय तहा ह चिंतेमि जहा तुम

१ संकेमो ली ३ ॥ २ °ाण भवि° कस ग्रां विना ॥ ३ भजियजस-अय रिजय° ली ३ संसं ॥ ४ °सु संखे° ग्रां विना ॥ ५ त्ति तओ मे ली ३ ॥ ६ °सं भवित्ता इथि ग्रां ॥

सुलसं कण्णं लभिहसि. अकल्लकं करेहि ततो सयंवरदिवसो अतिच्छिहिति. उवाओ य सुसंधी भविस्सति. ततो 'अकल्लो अहिराया सगरो' त्ति सविग्गो अओधणो भविस्सइ, समागओ य खत्तियजणो त्ति । तेण विस्सभूइमएण गेलण्णं दरिसियं । इयरेण तयपत्तेसु तणुगेसु रायलक्खणं रएऊणं तिहल्लारसेणं तिम्मिऊण तंवभायणे पोत्थओ पक्खित्तो, निक्खित्तो नयरबाहिं दुधावेढमज्झे । सगरेण य विस्सभूइमएण से उवागया रायाणो भणिया—जावाऽहं सहो होमि ताव सहिया कत्थइ पदेसे वावीओ पोक्खरिणीओ खणावेह कित्तिहेउं । 'तमेवं भवउ' त्ति सव्वेहिं पडिवण्ण । विस्सभूइणा य निहाणभूमी दंसिया—इमा आसण्णोदगा । तत्थ य णं खम्ममाणे कलसो दिट्ठो । आणीओ य रायसमीवं । 'किं होज्ज एत्थं ?' ति उग्घाडिओ,(ग्रन्थाग्रम्–५३००)दिट्ठो य पोत्थओ । 'धुवं एत्थ निहीपरिमाणं लिहियं' ति उग्घाडिओ पोत्थओ, परिमज्जिओ वाइओ य विस्सभूइणा । तत्थ लिहियं—

कंको रिसी जयसत्तुणा पोयणाहिवेण रण्णा पुच्छिओ 'भयवं[1] जयनामा चक्कवट्टी वोलीणो, पुरओ केरिसा रायाणो भविस्सति आगमिस्से जुगे ?' भणति—सागेयाहिवो सगरो नाम राया भविस्सति। तस्स य जा सरीरागिती सा लक्खणसंजुत्ता वण्णिया।[* सगरो हिंडणिरक्खियं च *] तस्स य सुलसा नाम अग्गमहिसी भविस्सइ अओहणरायदुहिया, सा य मंदोदरीजहाकहिया वण्णिया । जे य पहाणा रायाणो जेसु जेसु देसेसु तेसिं पि य जहादिट्ठाणि पसत्थाणि लक्खणाणि निबद्धाणि । महुपिंगलो य सव्वहा णिलक्खणो वण्णिओ खुज्ज-काण-गाण, मूयं-ऽध-बहिर-चडभेहिंतो [महु]पिंगलो अहमो विणीणिओ अब्भसित्त ण सक्को त्ति ।

ततो 'महुपिंगलो राया पुव्वरिसिनिंदिओ' त्ति निब्भच्छिओ परिसामज्झे लज्जिओ निग्गतो । सगरो राईहिं पसंसिओ । खत्तियाणुमए य 'सुलसा पुव्वरिसिनिदिट्ठ' त्ति दिण्णा सगरस्स । महुपिं[3]गलो वि तेण निव्वेएण पुत्तस्स रज्जं दाऊण तावसो पव्वइओ, तवमणुचरिऊण जमस्स लोगपालस्स अमच्चो परमाहम्मिओ महाकालो नाम देवो जाओ । सगरो य सुलसाए सह भोगे भुंजति । महाकालो देवो विण्णायकारणो पदुट्ठो सगरस्स य, राईणं च जेहिं निब्भत्थिओ, विस्सभूइस्स य, सुलसाए य 'जं इमिणाए पढमो वरिओ, जा मम गती तीए सा अणुयत्तियवा होइ, असमत्थयाए वा पाणपरिच्चाओ कायव्वो' त्ति पदुट्ठो वहेउकामो वि 'थोवदुक्खाणि मारिज्जमाणाणं होहिंति' त्ति नरयगमणहेउं तेसिं चिंतेंतो उवेक्खति दलियं विमग्गमाणो ।

नारय-पव्वयग-वसूणं संबंधो

इओ य चेइविसए सुत्तिमतीए नयरीए खीरकयंबो नाम उवज्झाओ । तस्स य पव्वयओ पुत्तो, नारओ नाम माहणो, वसू य रायसुओ । सेसा (सीसा) य ते सहिया वेयमारियं पढंति । कालेण य विसयसुहाणुकूलगतीए कयाइं च साहू दुवे खीरकयं[4]बघरे भिक्खस्स ठिया । तत्थेगो अइसयनाणी, तेण इयरो भणिओ—एए जे तिण्णि जणा, एएसिं एक्को

१ °यराणो शां० ॥ २ °ण सिंचेऊण शां० विना ॥ ३ °पिंगो वि शां० विना ॥ ४ °वस्स घ° शां० ॥

राया भविस्सइ, एगो नरगगामी, एगो देवलोयगामि त्ति । तं च सुयं खीरकदंबेण पच्छण्णदेसट्ठिएण । ततो से चिंता समुप्पण्णा—वसू ताव राया भविस्सइ पव्वय-नारयाण को मण्णे नारगो भविस्सइ ? त्ति । तेसिं परिच्छानिमित्तं छगलो णेण कित्तिमो कारिओ । लक्खरसभरियगब्भं च कारिऊण णारओ णेण संदिट्ठो—पुत्त ! इमो छगलो मया मंतेण थंभिओ, अज्ज बहुलट्ठमीए संता(झा)वेला, वच्चसु, जत्थ कोइ न पस्सति तत्थ णं वहेऊण सिग्घमेहि त्ति । सो नारओ तं गहेऊण निग्गओ 'निस्संचाराए रच्छाए तिमिरगणे पच्छण्णं सत्थेण वहेमि' त्ति चिंतेऊण 'उवरिं तारगा नक्खत्ताणि य पस्सति' त्ति वणगहणमतिगतो । तत्थ चिंतेइ—वणस्सइओ सचेयणाओ पस्सति । देवकुलमागतो, तत्थ वि देवो पस्सति, ततो निग्गतो चिंतेति—भणियं 'जत्थ न कोइ पस्सति तत्थ णं वहेयव्वो' तो अहं सयमेव पस्सामि 'अवज्झो एसो नूणं'—ति नियत्तो । उवज्झायस्स जहाविचारियं कहेइ । तेण भणिओ—साहु पुत्त ! नारय ! सुट्ठु ते चिंतियं वच्छ, मा कस्सइ कहयसु त्ति एयं रहस्सं ति । बितियदिवसे य पव्वयओ तहेव संदिट्ठो । तेण रत्थामुहं सुण्णं जाणिऊण सत्थेण आहवो, सित्तो लक्खारसेण 'रुहिरं' ति मण्णमाणो सचेलं ण्हाओ, गिहमागतो पिउणो कहेइ । तेण भणिओ—पावकम्म ! जोइसियदेवा वणप्फतीओ य पच्छण्णचारिय गुज्झया पस्सति जणचरियं सयं च पस्समाणो 'न पस्सामि' त्ति विवाडेसि छगलगं गतो सि नरगं अवसरं त्ति । नारदो य गहियविज्जो खीरकयंब पूएऊण गओ सयं ठाणं । वसू दक्खिणं दाउकामो भणिओ उवज्झाएण—वसू ! पव्वयकस्स समाउयस्स रायभावं गतो सिणेहजुत्तो भविज्जासि एसा मे दक्खिणा, अहं महतो त्ति । वसू य राया जातो चेईए नयरीए । अडवीए य वाहेण 'मिगं वहेमि' त्ति सरो छूढो । आगासफलिहपत्थरसंछिओ मिगो न विद्धो, नियत्तो सरो । सकिएण वाहेण सरपहजाइणा विण्णाओ फलिहो । 'एस रायजोग्गो' त्ति रक्खे वच्छेऊण अभिण्णाणनिमित्तं वसुमतिस्स कहेइ । तेण पूइओ । आणाविओ फलिहपत्थरो । तत्थ ठवियं रायसिंहासणं । जेहिं आणीओ मणी ते सदारा विणासिया रहस्सभेदभीएण मतिणा । सीहासणट्ठिओ य आगासत्थिओ दीसइ जणेण । ततो खाइं गतो 'उवरिचरो वसु' त्ति । खीरकदंबो य कालगतो । पव्वयओ उवज्झायत्तं करेइ । पव्वयसीसा य कयाइ णारयसमीवं गया । ते पुच्छिआ नारएण वेयपयाणं अत्थं वितहं वण्णेंति, जह—'अजेहिं जवियव्वं' ति, सो य अजसद्दो छगलेसु तिवरिसपज्जुवसिएसु य बीएसु वीहि-जवाण वट्टए, पव्वयसीसा छगले भासति । नारएण चिंतियं—वच्चामि पव्वयसमीवं सो वितहवादी चोएयव्वो, उवज्झायमरणदुक्खिओ य दट्ठव्वो त्ति संपहारिऊण गतो उवज्झायगिहं । वंदिया उवज्झायिणी । पव्वयओ य संभासिओ—अप्पसोगेण होएयव्वं ति । कयाइ च महाजणमज्झे पव्वयओ 'रायपूजिओ अहं'

१ क ३ विनाऽन्यत्र—°मीए संता वेला ब° ली ३ । °मी पसत्ता वेला ब° गो ३ उ मे । °मीए सत्तवेलाए ब° शां० ॥ २ चोएयव्वो शां ॥

ति गविओ पण्णवेति—अजा छगला, तेहिं य जइयव्वं ति । नारएण निवारिओ—मा एवं भण, समाणो वंजणाहिलावो, अत्थो पुण धण्णेसु निपतति दयापक्खण्णुमतीए य त्ति। सो न पडिवज्जति । ततो तेसिं समच्छरे विवादे वट्टमाणे पव्वयओ भणति—जइ अहं वितहवादी ततो मे जीहच्छेदो विउसाणं पुरओ, तव वा। नारएण भणिओ—किं पइण्णाए?, मा अधम्मं पडिवज्जह, उवज्झायस्स आदेसं अहं वण्णेमि। सो भणति—अहं वा किं समईए भणामि?, अहं पि उवज्झायपुत्तो, पिउणा मम एवमातिक्खियं ति। ततो नारएण भणियं—अत्थि णे तइयओ आयरियसीसो खत्तियहरिकुलप्पसूओ वसू राया उवरिचरो, तं पुच्छिमो, जं णे सो लवति तं पमाणं । पव्वइएण भणियं—एवं भवउ त्ति । ततो पव्वएण माऊए कहियं विवादवत्थु । तीए भणिओ—पुत्त! दुट्ठु ते कयं. नारओ पिउणो ते निच्चं सम्मओ गहण-धारणासंपण्णो । सो भणति—मा एवं संलवसि. अहं गिहीयसुत्तत्थो नारयकं वसुवयण[3]पडिहयं छिण्णजीहं निव्वासेमि दच्छिहिसि त्ति। सा पुत्तस्स अपत्तियंती गया वसुसमीवं । पुच्छिओ य तीए संदेहवत्थु—किह एयं उवज्झायमुहाओ अवधारितं? ति। सो भणति—जहा नारओ भणति तह तं, अहमवि एवंवादी । ततो सा भणति—जइ एवं तुमं सि मे पुत्तं विणासेतओ, तओ तव समीवे एव पाणे परिच्चयामि-त्ति जीहं पगड्डिया । पासत्थेहि य वसू राया भणितो—देव! उवज्झाइणीए वयणं पमाणं कायव्वं जं चेत्थं पावगं तं समं विभंजिस्सामो त्ति । सो तीसे मरणनिवारणत्थं पासत्थेहि य माहणेहिं पव्वयगपक्खिएहिं गाहिओ । ततो कहंचि पडिवण्णो 'पव्वयपक्खं भणिस्सं' ति। ततो माहणी कयकज्जा गया सगिहं । बितिय-दिवसे जणो दुहा जातो—केइ नारयं पसंसिया, केइ पव्वयं । पुच्छिओ वसू—भण किं सच्चं? ति। सो भणति—छगला अजा, तेहिं जइयव्वं ति। तम्मि समए देवयाए सच्चपक्खि-काए आहयं सीहासण भूमीए ठवियं । वसू उवरिचरो होऊण भूमीचरो जातो । अवलो-इया णेण पोत्थाहका दिया । तेहिं भणियं—सो चेव ते वाओ अवलंबियव्वो त्ति । सो मूढ-याए भणति—जं पव्वओ भणति तहा सो अत्थो । नारएण भणिओ—राय! अणुयत्तिओ पव्वओ. इयाणिं पि सच्चमवलंबह ट्ठिओ य धरणिवट्ठे। तेतो दियचोतिओ 'ते उद्धरामो अम्हे' त्ति भणंतो चेव रसातलं अहिगतो । धिक्कारिओ पव्वओ 'विणासिओ णेण राय'त्ति । तदंतरे अवक्कंतो नारओ। कुमारा य वसुसुया अट्ठ कमेण अहिसित्ता विणासिया देवयाए। एयम्मि समए महाकालो देवो 'लद्धो सहाओ' त्ति माहणरूवं काऊण पव्वयसमीवमुवगतो। रोयमाणो पव्वयकेण पुच्छिओ—किं रोवसि? त्ति। सो भणति—सुणाहि पुत्त!—विण्हु उदंको पव्वतो खीरकयंब संडिल्लो त्ति गोयमस्स सीसा पंच तत्थ अहं संडिल्लो त्ति. मम य खीरकयंबस्स य अतीव पीई आसि, तं मयं सोऊण तुह समीवमागतोऽहं. जं तेणाऽऽगमियं तं ते गाहेमि त्ति । तेण 'तह' त्ति पडिवण्णं । ततो देवो सुत्तिमतीए मारिं उवदंसेइ, पसुवहमंते य

१ °लए वसू शा० विना ॥ २ °दत्थ । शा०॥ ३ पडिच्छय हयं उ २ मे० विना ॥ ४ °भतिस्सा° शा० ॥
५ तेहि य चोदितो शा०

राया भविस्सइ, एगो नरगगामी, एगो देवलोयगामि त्ति। तं च सुयं खीरकदंबेण पच्छण्णदेसट्ठिएण। ततो से चिंता समुप्पण्णा—वसू ताव राया भविस्सइ, पव्वय-नारयाणं को मण्णे नारगो भविस्सइ? त्ति। तेसिं परिक्खानिमित्तं छगलो तेण कित्तिमो कारिओ। लक्खारससंभं च कारिऊण नारओ णेण सदिट्ठो—पुत्त! इमो छगलो मया मंतेण थंभिओ, अज्ज बहुलट्ठमीए संता(झा)वेला, वच्चसु, जत्थ कोइ न पस्सति तत्थ णं वहेऊण सिग्घमेहि त्ति। सो नारओ तं गहेऊण निग्गओ 'निस्संचाराए रच्छाए तिमिरगणे पच्छण्णं सत्थेण वहेमि' त्ति चिंतेऊण 'उवरिं तारगा नक्खत्ताणि य पस्संति' त्ति वणगहणमतिगतो। तत्थ चिंतेइ—वणस्सइओ सचेयणाओ पस्संति। देवकुलमागतो, तत्थ वि देवो पस्सति, ततो निग्गतो चिंतेति—भणियं 'जत्थ न कोइ पस्सति तत्थ णं वहेयव्वो' तो अहं सयमेव पस्सामि 'अवज्झो एसो नूणं'—ति नियत्तो। उवज्झायस्स जहाविचारियं कहेइ। तेण भणिओ—साहु पुत्त! नारय! सुट्ठु ते चिंतियं वच्च, मा कस्सइ कहयसु त्ति एयं रहस्सं ति। चिंतियवाईए य पव्वयओ तहेव सदिट्ठो। तेण रत्थामुहं सुण्णं जाणिऊण सत्थेण आहतो, सित्तो लक्खारसेण 'रुहिरं' ति मण्णमाणो सचेलं ण्हाओ, गिहमागतो पिउणो कहेइ। तेण भणिओ—पावकम्म! जोइसियदेवा वणप्फतीओ य पच्छण्णचारिय गुज्झया पस्संति जणचरियं, सयं च पस्समाणो 'न पस्सामि' त्ति विवाडेसि छगलं, गतो सि नरगं अवस्सं ति। नारदो य गहियविज्जो खीरकदंबं पूएऊण गओ सयं ठाणं। वसू दक्खिणं दाउकामो भणिओ उवज्झाएण—वसू! पव्वयकस्स सभाउयस्स रायभावं गतो सिणेहजुत्तो भविज्जासि एसा मे दक्खिणा, अहं महत्तो त्ति। वसू य राया जातो चेईए नयरीए। अडवीए य वाहेण 'मिगं वहेमि' त्ति सरो छूढो। आगासफलिहपत्थरसरिसो मिगो न दिट्ठो, नियत्तो सरो। संकिएण वाहेण सरपहजाइणा विण्णाओ फलिहो। 'एस रायजोग्गो' त्ति रण्णो वच्छेऊण अभिण्णाणनिमित्तं वसुमतिस्स कहेइ। तेण पूइओ। आणाविओ फलिहपत्थरो। तत्थ ठविय रायसिंहासणं। जेहिं आणीओ मणी ते सदारा विणासिया रहस्सभेदभीएण मतिणा। सीहासणट्ठिओ य आगासत्थिओ दीसइ जणेण। ततो लोए गतो 'उवरिचरो वसु' त्ति। खीरकदंबो य कालगतो। पव्वयओ उवज्झायत्तं करेइ। पव्वयसीसा य कयाइ णारयसमीवं गया। ते पुच्छिआ नारएण वेयपयाणं अत्थं वितहं वण्णेंति, जह—'अजेहिं जतियव्वं' ति, सो य अजसद्दो छगलेसु तिवरिसपज्जुवसिएसु य बीएसु वीहि-जवाणं वट्टए, पव्वयसीसा छगले भासंति। नारएण चिंतियं—वच्चामि पव्वयसमीवं सो विवहवादी चोएयव्वो, उवज्झायमरणदुक्खिओ य दट्ठव्वो त्ति संपहारिऊण गतो उवज्झायगिहं। वंदिया उवज्झायिणी। पव्वयओ य संभासिओ—अप्पसोगेण होएयव्वं ति। कयाइ च महाजणमज्झे पव्वयओ 'रायपूजिओ अहं'

१ क ३ विनाऽन्यत्र—°मीए संता वेला व° ली ३ । °मी पसंता वेला व° गो ३ उ मे । °मीए संतवेलाए व° खं ॥ २ चोएयव्वो खं ॥

ति गव्विओ पण्णवेति—अजा छगला, तेहि य जइयव्व ति । नारएण निवारिओ—मा एवं भण, समाणो वंजणाहिलावो, अत्थो पुण धण्णेसु निपतति दयापक्खाणुमतीए य त्ति । सो न पडिवज्जति । ततो तेसिं समच्छरे विवादे वट्टमाणे पव्वयओ भणति—जइ अहं वितहवादी ततो मे जीहच्छेदो विउसाणं पुरओ, तव वा । नारएण भणिओ—किं पइण्णाए ?, मा अधम्मं पडिवज्जह, उवज्झायस्स आदेसं अहं वण्णेमि । सो भणति—अहं वा किं समईए भणामि ?, अहं पि उवज्झायपुत्तो, पिउणा मम एवमातिक्खियं ति । ततो नारएण भणियं—अत्थि णे तइयओ आयरियसीसो खत्तियहरिकुल[1]प्पसूओ वसू राया उवरिचरो, तं पुच्छिमो, जं णे सो लवति तं पमाणं । पव्वइएण भणियं—एवं भवउ त्ति । ततो पव्वएण माऊए कहियं विवादे[2]वत्थु । तीए भणिओ—पुत्त ! दुट्ठु ते कयं, नारओ पिउणो ते निच्चं सम्मओ गहण-धारणासंपण्णो । सो भणति—मा एवं संलवसि, अहं गिहीयसुत्तत्थो नारयकं वसुवयण[3]पडिहयं छिण्णजीहं निव्वासेमि, दच्छिहिसि त्ति । सा पुत्तस्स अपत्तियंती गया वसुसमीवं । पुच्छिओ य तीए संदेहवत्थुं—किह एयं उवज्झायमुहाओ अवधारितं ? ति । सो भणति—जहा नारओ भणति तह तं, अहमवि एवंवादी । ततो सा भणति—जइ एवं तुमं सि मे पुत्तं विणासेंतओ, तओ तव समीवे एव पाणे परिच्चयामि-त्ति जीहं पगड्ढिया । पासत्थेहि य वसू राया भणितो—देव ! उवज्झाइणीए वयणं पमाणं कायव्वं, जं चेत्थ पावगं तं समं वि[4]भजिस्सामो त्ति । सो तीसे मरणनिवारणत्थं पासत्थेहि य माहणेहिं पव्वयगपक्खिएहिं गाहिओ । ततो कहंचि पडिवण्णो 'पव्वयपक्खं भणिस्सं' ति । ततो माहणी कयकज्जा गया सगिहं । बितियदिवसे जणो दुहा जातो—केइ नारयं पसंसिया, केइ पव्वयं । पुच्छिओ वसू—भण किं सच्चं ? ति । सो भणति—छगला अजा, तेहिं जइयव्व ति । तम्मि समए देवयाए सच्चपक्खिकाए आहयं सीहासणं भूमीए ठवियं । वसू उवरिचरो होऊण भूमीचरो जातो । अवलोइया णेण पोत्थाहका दिया । तेहिं भणियं—सो चेव ते वाओ अवलंबियव्वो त्ति । सो मूढयाए भणति—जं पव्वओ भणति तहा सो अत्थो । नारएण भणिओ—राय ! अणुयत्तिओ पव्वओ, इयाणिं पि सच्चमवलंबह ठिओ य धरणिवट्टे । ततो[5] दियचोतिओ 'ते उद्धरामो अम्हे' त्ति भणंतो चेव रसातलं अहिगतो । धिक्कारिओ पव्वओ 'विणासिओ णेण राय'त्ति । तदंतरे अवक्कंतो नारओ । कुमारा य वसुसुया अट्ठ कमेण अहिसित्ता विणासिया देवयाए । एयम्मि समए महाकालो देवो 'लद्धो सहाओ' त्ति माहणरूवं काऊण पव्वयसमीवमुवगतो । रोयमाणो पव्वयकेण पुच्छिओ—किं रोवसि ? त्ति । सो भणति—सुणाहि पुत्त !—विण्हु उदंको पव्वतो खीरकयंब संडिल्लो त्ति गोयमस्स सीसा पंच, तत्थ अहं संडिल्लो त्ति मम य खीरकयंबस्स य अतीव पीई आसि, तं भयं सोऊण तुह समीवमागतोऽहं जं तेणाऽऽगमियं तं ते गाहेमि त्ति । तेण 'तह' त्ति पडिवण्णं । ततो देवो मुत्तिमतीए मारिं उवदंसेइ, पसुवहमंते य

१ °लए वसू शा० विना ॥ २ °दुत्थ । शा० ॥ ३ पडिच्छय हय उ २ मे० विना ॥ ४ °भतिस्सा° शा० ॥ ५ तेहि य चोदितो शा०

रएऊण भणति—पव्वयय ! पुत्त[1] सतिं करेहि जणस्स, इमे पढसु मंते त्ति । सहि य देवसहस्साणि आभिओग्गाणि पव्वयगपणयाण तया ससिया कहेंति—पसू अम्हे देवा जाय त्ति । विमाणगया दसवि अप्पाणं । विम्हिओ जणो—अहो[2] अच्छरियं ति । मारी पउरिया घरे घरे । वसु वि य ससरीरो दरिसिओ जणस्स । मसव्वभावपडिरत्तो पडिओ सडिल्लदेवस्स पव्वयगस्स य । ततो सगरविसए मारी विउव्विया । सुयं च सगरेण—चेदीविसए माहणा सतिकरा अत्थि त्ति । अब्भत्थिया य गया पव्वयग-सडिल्ला । तत्थ य पसूहिं सती कया । दसेंति य आहिओग्गा देवा—अम्हे पसवो आसी, पव्वयसामिणा मतेहिं हया देवा जाय त्ति । सगरो दट्ठूण पाडिहेरं भणति—सामि[3] जहा हं सुगतिगामी भवामि तहा मे कुणह पसायं । सडिल्लेण भणिओ—रज्ज पसाहमाणस्स बहुं पावं सुणं, विहीए जहा सग्गगामी भवति मणुस्सा । ततो अस्समेह-रायसुयाइहिं कया विहाणरयणा, सुणाविओ य सग्गगमणफलं च । जायसड्ढो सगरो सेसया रायाणो विस्सभूती य । सगरो आसमेहेण दिक्खिओ, सुलसा य पत्ती, विस्सभूती उवज्झायो सत्ताण च वहूण वह कारविओ । अंते य सुलसा आसमेहेण भणिया—जोणिं कुसहु, तो विसुपपाया सग्गगामिणी भविस्ससि त्ति । देवेण य(ग्रन्थाग्रम् ५४००)तेणं गहिया, कुमराविया य सयवरमहुपिंगुसण । सा तिव्ववेयणापरिगया मउयसहावयाए धरणग्गमहिसी जाया । रायसुएण य दिक्खिओ सगरो । जण्णसभारं च गंगा-जउणसंभागमे दिवायरदेवो रायसुओ नारयवयणेण गगाए पक्खिवति । सडिल्लो पुच्छिओ—को सभारं अवहरइ ? त्ति । भणइ—रक्खसा देवपीणग असहवा अवहरंति थावेज्जव उसभसामिपडिमा । थविया य जण्णरक्खणनिमित्त । ततो दियायरदेवो नारयं भणति—अज्ज[4] इयाणिं मम एएसिं पावकम्माण न चाइ विग्घो काउं विज्जापडियाओ भवति विज्जाहराणं जिणपडिमाय अवराहं करेंताण त इयाणिं मज्झत्था होहामो किं वा अम्हे एएहिं दुक्खएण संवज्झिस्सामो त्ति ठिओ सह नारएण । ततो सो सडिल्लो सगरं भणति—कीरउ मे इट्टया, कलेवराणि अगमाण सत्ताण विविहाणि पक्खिविऊण कद्दमवावीसु, कुहियाण अट्ठीणि उद्धरिज्जतु, जाहे किमिपुजा इव जाया तंतो सीयमट्टियाए य इट्टगो किज्जंति अक्खतनियघपमाणाओ, ततो अंगुल सेसपागेहिं हीणाओ भवति । गाहाविओ सगरो । ततो घय-महु-वसाओ आवागे रयतेहिं पक्खिप्पति थेरे थरे । तेण वीसगवेण सिरीसिवाणि होइति किमि पिपीलिका य । ताहि य इट्टकाहिं चिती कीरइ अग्गपंयपयड्डियपुरिसपमाणा । छगला आसा पुरिसा य वहिज्जति पयाग-पइट्ठाणमज्झे

१ कस० संस विनाऽन्यत्र—°ससेहेण मे । °ससेफेण शां । °ससोहण्ण ली १ मो गो १ ॥ २ °ण महि° कस सेस० मो गो० शा विना ॥ ३ °संगसे शां ॥ ४ °आयमण जि° शां ॥ ५ शां विनाऽन्यत्र—कीरेतु ली १ क २ मो १ । कीरउ उ मे० ॥ ६ °हाण प° शा विना ॥ ७ °उवरि° शां ॥ ८ °तो तेमवसिकाए इहि° शा ॥ ९ गा विउं° क ३ मे ॥ १० °नियघप° शा ॥ ११ थरं थरं शा ॥ १२ महति क ३ गो ३ उ मे ॥ १३ °पयवडिढ्य° शा ॥

पगूणपण्णं दिवसे। कल्लाकल्लिं च पंच पंच वड्ढंति, वितिओ आएसो—चउसट्ठायं पंच पंच वड्ढंति सत्ताणि। दक्खिणलोभीय य समागया बहवे दिया पससति पव्वय-संडिल्ले।

नारएण य भणिओ सगरो राया—पव्वयगेण वसुराया णिहणमुवणीओ. मा एतस्स पावकम्मस्स सोऊण पाणवहं करेह त्ति। सो भणति—संडिल्लसामी पव्वयओ य मम हिया कामं, जं एते उवदिसति त मे पमाण, तव न करेमि वयण. जेण सि अत्थी तं गि-णिहऊण वच्चसु, अवसर त्ति। सो एवभग्गपणओ दयाए दिवाकरदेवेण सह रायसुएण अवक्कंतो। सगरस्स य दढकरणत्थं रातीण य वसू महाकालेण दंसिओ विमाणगतो। वीसभूती य 'विहिं[2]' त्ति पुव्वं पव्वाइओ। सगरं पि गहियनिरयगतिसवळ जाणिऊण, 'ससरीर सग्ग नेमि' त्ति भावेऊणं, संभारिय वेरकारणं निवाडेति अकमुही सेणमुही महाचुल्ली य किर-यल्लविणीओ। तत्थ य सोमवल्ली, त छिंदिऊण सोमपाणं। एत्थ य किल पयारया बहुका तं 'दितिपयाग'न्ति वुच्चति तित्थं। परमत्थमयाणमाणेहिं य 'पयागं' ति पयासियं।

दिवागरदेवो य कुमारो य वेदसामपुराहिवो जातो। वुह-विवुहाणं च साहूणं तम्मि समए गिरितडे केवलनाणुप्पत्ती। अहासन्निहिया य देवया य महिमानिमित्तं उवागया। देवुज्जोयविम्हिओ य दिवाकरदेवो राया नारयसहिओ तमुवगतो। वदिय केवलिं पुच्छइ सगरगतिं। केवलीहिं य से नरगगमण वेरनिज्जामणं च महाकालदेवपउत्त कहियं। तं च सोऊण णारओ पव्वइओ भीओ संसारगमणस्स। सिद्धा य वुह-विवुहा केवलिणो। इहेव नारयसुयाण दिवाकरदेवेणं गिरितडग्गामो दिण्णो। तेहिं वुध-विवुहवोहियाओ पडिमाओ थावियाओ आययणे।

एवं महाकालदेवचरियं इह परपरागयं ति। जा संडिल्लऽद्धाणुमयाणुसारिणी गंथ-रयणा सो अणारिओ वेओ॥

वसुदेवस्स वेयज्झयणं तप्परिक्खा य

इहं च आसि नारओ, तस्स सुओ सारओ, ततो बहुरओ, परओ मरुमरुओ मरुभूई नारओ वीसदेवो सूरदेवो त्ति परपरेण सामिणो इमस्स गामस्स. ततो खंदिल[1] देव-देवस्स सुया सोमसिरिदारिया परमरूववती न सक्का पागयमाणुसेण वुह-विवुहपुरओ वेयं समज्जिणति(ती)। तओ मया भणिओ—वेयं दुविहं पि पढामि त्ति, कुणह पसायं ति तेण। तहवभेय(?)समागएसु वेयवाईसु ममं परिसिऊण देवदेवो वंभदत्तं पुच्छति—कओ एए आगय? त्ति। तेण भणियं—मम गिहे सज्झायपसंगेण चिट्ठंति मागह त्ति। तेण भणिय—दुट्ठु कयं जं न ममं कहियं। तओ न कोइ वेयविऊ अणुओगं दाउमिच्छति। तुसिणीया परिसा थिमियसागरो इव ठिया। भोइएण भणियं—जइ ता कोइ न उच्छहइ वुत्तुं, गच्छंतु जहागयं माहणा. पुणो समागमो भविस्सइ त्ति। ततो मया भणियं—पुच्छंतु अहि-कया, कयाइ अम्हे भणिस्सामो। पुच्छिओ य। मया सरोववण्णं अखलियं भणियं, तस्स

१ वयसु ली ३॥ २ °ह त्ति सुक प° शा०॥

परमत्थो अवितहाणुवाई अत्थो त्ति । तओ[1] भोइएण लविय—भो[2] सुणह वेयपारगा[3], जो वा अहिययविन्नो, अब्भुवगच्छउ इमेसिं वेयपारगाणं वुड्ढाणं पुरतो पुच्छं णिव्वत्तेउ । ततो न कोइ वेयविऊ अणुओगं दाउमिच्छति । तुसिणीया परिसा थिमियसागरोवमा ठिया । तओ अहं लविओ उवज्झाएण—भद्दमुह[4] पायसु पुच्छाए कम्मारयणं ति । तओ समुट्ठिओ, कओ मे पणामो जिणाणं । दिट्ठो य बहुजणेण अणुओगसमागएण कोमुइचंदो गीवासमुल्लसतनम्मोइयपविचो । तओ मे लविया वेयत्थपारया वुड्ढा—पुच्छह जो नत्थ संसओ[5], जत्थ अ या पुच्छेयव्वं । तओ गंभीरत्थानिग्घोसवायं सोऊण विम्हिया अणुओगगया जंपति—सम्माणिओ णेण पुच्छाहिकारो त्ति कहेइ से इमा पुडविसय करारा वाय त्ति । तओ इ लविओ वुड्ढेहिं—भो पियदंसण[6] कहयसु, को वेयस्स परमत्थो ? त्ति । ततो मया लवियं—नरुविया भणति—विय जाणं ति वियति, तेण वा विदति, तम्हि वा विदति वेओ भण्णति तस्स परमत्थो अवितहाणुवाई अत्थो त्ति । तओ परितुट्ठा वेयपारगा, लविय य—तस्स किं फलं ? ति । मया लवियं—सो विन्नाणफलो त्ति । तेहिं लवियं—विण्णाणस्स किं फलं ? । मया लवियं—विरईफलं ति । तेहिं लवियं—विरई किंफला ? । मया लवियं—संजमफला । तेहिं लवियं—संजमो किंफलो ? । मया लवियं—अणासवफलो । तेहिं लवियं—अणासवो किंफलो ? । मया लवियं—तवोफलो । तेहिं लवियं—तवो किंफलो ? । मया लवियं—तवो निज्जराफलो । तेहिं लवियं—निज्जरा किंफला ? । मया लवियं—केवलनाणफला । तेहिं लवियं—केवलनाणं किंफलं ? । मया लवियं—अकिरियाफलं । तेहिं लवियं—अकिरिया किंफला ? । मया लवियं—अजोगफला । तेहिं लवियं—अजोगया किंफला ? । मया लवियं—सिद्धिगमणमपज्जवसाणं अव्वाबाहसुहफला य त्ति ।

तओ परितुट्ठा वेयपारगा । जमगसमगं मम साहुक्कारेण पूरियं गगणं परिसापहाणेहिं । तुट्ठेण भोइएण 'देवाणं नूणं एक्को तेत्तीसाए' त्ति पसंसिज्जमाणो नीओ घरं, पूइओ वत्था ऽऽभरणेहिं । सोहणम्मि य दिणे सोमसिरी दिक्खिया, अहं च । उवणीयाणि मो चाउरंतयं । दिट्ठा य मया सोमसिरी पसत्थमुह-नयण-दसण-कर-चरण-जहण-थणकलस भल्लणविहीए । तीसे पाणिं गाहिओ मि । रमामि य तीए सहिओ रईए विव कामो । पस्सइ म माहणो देवयमिव । वुह विवुहाण य णिकेते कयाइ वियोदओ पुच्छति य मं आगमेसु । अहमवि पभवतो चउगयस्स भणामि निस्सयं । एवं मे तत्थ गिरितडे वसंतस्स वच्चति सुहेण कालो त्ति ॥

॥ इति सिरिसंघदासगणिविरइए वसुदेवहिंडीए सोमसिरिलंभो पंचमो सम्मत्तो ॥[7]

सोमसिरिलंभग्रं १९८ अ ९ सर्वग्रन्थाग्रम्—५४७२-९

---

१ ली ३ विनाऽन्यत्र—°ओ आएण क ३ गो ३ उ मे । °ओ माणएण शा ॥ २ भो! ज° शा ॥ ३ °ओ ज डा ॥ ४ °सुरू° शां विना ॥ ५ °या पु शां विना ॥ ६ °रिह्रूदे क ३ ॥ ७ सोमसिरिलंभो पंचमो सम्मत्तो इत्येवरूपा पुष्पिका शा ॥

छट्ठो मित्तसिरि-धणसिरिलंभो

कयाइं च पस्सामि बहिया गामस्स[1] इंदजालिय । तेण णागकुमारा णग्गोहपायवम-स्सिया दसिया । मया चिंतियं—एस विज्जाहरो केणइ कारणेण इहागतो, एएण सह का-यव्वो संगमो त्ति । पुणो य मे बुह-विबुहायतणे य दिट्ठो । सो मं आयरेण पुणो पुणो निज्झायइ । मया पच्चभिन्नाओ—एस सो विज्जाहरो त्ति । पुच्छिओ य—भणह किमाग-मणं ? किं वा कीरउ ? त्ति । सो पुण सुणेऊणं विरहे ममं भणति—भद्दमुह! अहं विज्जा-हरो, अत्थि मे दुवे विज्जाओ सुहसाहणाओ सुंभ-निसुंभाओ उप्पय-निप्पयणीओ[2], ताओ तव देमि. तुमं सि तासिं भायणं ज पुण बलिविहाण तं अह सव्व उवणेमि. तुमं कालच-उद्दसीए एगागी ममं मिलसु. अट्ठसहस्साऽऽवत्तिया य ते विज्जा सिज्झिहिति त्ति । मया पडिवण्णं । चउद्दसीए य उववासिओ । गहियाओ विज्जाओ । भणिया य मे सोमसिरी—नियमो मे को वि, आययणे वसिस्सं[3] ति । सोमसिरिं आपुच्छिऊण 'मा कस्सइ कहे-ज्जासु' त्ति निग्गओ वियाले । तेण णीओ मि पव्वयविवर छिण्णकडगसंसिएँ[4] य पएसे । कयं बलिविहाणं । भणति—आवत्तेह विज्जं, अट्ठसहस्से य पुण्णे[5] विमाणं उवयति तं आरुह णिस्संको. सत्तट्ठतलग्गाणि उप्पइओ य इच्छाए निवत्तणि आवत्तेति ततो उवयइ. सिद्धा एय ते विज्जा अहं नाऽइदूरे रक्खानिमित्तं अच्छिस्सं-ति अवक्कतो । अहं पिं[6] जवामि एगचित्तो । उवइयं च विमाणं घंटाजालकणरवंत विविहकुसुमदामसुरहिगंध । तत्थ य मज्झे आसणं। मया चिंतियं—सिद्धा य मे विज्जा, आरुहामि विमाणं-ति सपद्दा-रेऊण आसीणो आसणे। उप्पयत्ति य सणियं सणियं। थोवंतरमुप्पइय तं पव्वयकडगाणुसारेण 'पत्तं समं' ति तक्केमि । पउत्तं एक्कदिसाहिमुह, णीणुन्नएसु खलंतं वच्चति । उप्पण्णा मे चिंता—जहा पव्वयभित्तिमणुसरति, णिण्णुण्णयं च गच्छति खलमाणगतियं, तहा कोइ पओगो होज्जा तो उवयणिं आवत्तेमि त्ति । आवत्तिए वि वच्चति । मणुस्साण य परिस्समजणिय-मुस्साससद्दमाकण्णेमि । विभाय च, दिट्ठा य मया तत्थऽवक्खेवेण मणुस्सा कहं पि मं निंति । चिंतेमि—रज्जूओ ओसारियं नूण एय कित्तिमं विमाणं केण वि पुरिसेण पउत्तं कस्स वि मएण ति। अवइण्णो मि विमाणाओ । पच्छओ य मे लग्गा मणुस्सा 'देव' मा भाहि, मा पलायसु, कहिं वा गच्छसि त्ति अम्हेहि अणुबज्झमाणो ?' त्ति जपमाणा । अहं पि सिग्घं पलायामि। जत्थ मंदायंति तत्थ वीसमामि। एवं तेहिं चिर अणुगतो, न चातिओ गहेउं ।

दूर च भमिऊण अवरण्हे सूरत्थमणवेलाए परिस्सतो तिलवत्थुगं नाम सन्निवेस पत्तो । दुवार च सवरियं । न देंति मणुस्सा पवेसं । मया भणियं—अहं माहणो अद्धाणेण परिस्सतो, देह मे पवेस ति । ते भणंति—(ग्रन्थाग्रम्—५५००) अम्हे पोरिसायस्स बीहेमो.

१ °स्स आगइ इंद° शा०॥ २ शां० विनाऽन्यत्र—°निपयणी° उ० मे० । °निओयणी° क ३ गो ३ ली ३॥ ३ °सियव्वं शा० ॥ ४ °सियए पए° शा० ॥ ५ °ण्णे अपुण्णे वा विमा° शा० ॥ ६ पि झाएमि शा० ॥

माहणो समणो वा होहिति, अवेलाए जो संचरति सो रसतो खज्जति रक्खसेण ति। एवं निरणुकंपे जाणिऊण गामेयगे, णातिदूरे गामस्स आययणं, तत्थ य मि गतो। अइगतेण य संवरियदुवारो पसुत्तो मि। अद्धरत्ते आगतो पुरिसो, सो उ महया सद्देण भणति—उग्घाडेसु दुवारं पहिय![1], मा ते कवाडं भंजेऊण पहिस्सं ति। तेण सद्देण पडिबुद्धो मि। मया भणियं—अवसरह, मा मे उण्णिद्दयं करेह, मा ते सिक्खावयं काहं ति। ततो रुट्ठो सुद्धुयरं रवति। मया य उग्घाडियं दुवारं। पस्सामि य पुरिसं लउडहत्थं, महाकायं, अचेलं, पलंबनइं पेसं मंसुं, भायरदसणं च, नरवसाविस्सगंधियं, रंधणं गहिरतरदसणं। महया केसभारेण विलुलिएण तेण मे छउटो मुक्को, सो मया वंचिओ। गीवापएसे य पराहुत्तो, ततो मुट्ठिजुद्धं लग्गो। आहम्ममाणो य मया महया सद्देण रसति, ओसरिओ य पुणो पुणो अभिद्दवति। अहमवि तस्स गायफरिसं परिहरंतो मुट्ठीय अग्गहत्थेहिं निवारेमि। गामजणो य तेण रवियसद्देण पडिबुद्धो पहट्ठसद्दं कलकलसद्दं च करेइ। गहिओ य अणेण अहं। मया 'एस ण परिमवियव्वो' त्ति पुरिसाओ बाहुजुयलेहिं पीलिओ रुहिरं वमंतो महया सद्देण रसंतो पडिओ। अहमवि देवकुलमतिगओ, 'पभाए ण्हाइस्सं' ति ठिओ।

सञ्झाकाले य साउहो बहुओ गामलोओ निग्गतो। दिट्ठो य णेहिं पुरिसादो बाहिं देवकुलस्स गओ विव गेरुयधाउभूसिओ पडिओ। सद्दो य णेहिं कओ। मया य अवलोइओ जणो, निग्गतो म्हि। समकं तेहिं मे कओ पणामो— देव! जीवह बहूणि वाससयसहस्साणि' त्ति। भणंति—अम्हेहिं नायं—माहणो रक्खसेणं खइओ 'रवतो भवसि' त्ति। तं सामी! तुम्हे देवा, जेण इमस्स विसयस्स अकालमच्चू पुरिसादो विणासिउ त्ति। ततो णेहिं सन्निवेसवासीहिं परितुट्ठेहिं इमस्स कलसऽट्ठसएहिं पुव्विं माहणेहिं ण्हविओ मतपूएण य वारिणा, पच्छा वुड्ढाहिं धवलपडसंवुयाहिं। ततो पच्छा कण्णाहिं विचित्तवत्थ-मल्ला ऽणुलेवणाहिं दिसादेवयाहिं विव समागयाहिं वत्था ऽऽभरणभूसिओ, तुडियनिनाएण य महया रहं सेययलिवट्टसपवत्तं आरोविओ मि। मंगलवयणाभिणंदिओ कयतोरणविमाणं च पट्ठागमालोवसोहियं पविट्ठो मि तिलवत्थुयं। कयवंदणमाला-पुण्णकलससस्सिरीए आवासपहिदुवारे अवइण्णो मि रहाओ। अइगओ आवासं वित्थिण्णसयणा-ऽऽसणं। आसीणो मि आसणे। ततो महत्तरएहिं समवाएऊण कण्णाओ रूववतीओ सदक्खिणा मालकियाओ ववट्ठवियाओ। विण्णवेंति य मम—सामि! तुब्भेहिं परित्ताविओ इमो जणो, तुह इच्छाणिं आणाविहेओ अजप्पमिति एयाओ दारियाओ पहाणकुलसंभूयाओ, ताओ भवतु सुस्सूसिकाओ पसायं कुणह त्ति। ततो मया भणियं—सुणह, अहं माहणो सज्झायनिमित्तं निग्गओ अओ मम दारियाहिं पूजिओ नाम अहं पतीए य पडिवत्तीए. एसा मे तुट्ठी

१ क्षी ३ विनाऽन्यत्र—°रिसो मह° शा। °रिसो उ मह° क ३। °रिसाओ मह° गो ३ मे॥ २ सधियवधेण गहिर° उ २ मे विना॥ ३ वक्रोसि शा॥ ४ °कुलुगले° क्षी ३ क ३ गो ३॥ ५ °सेहिं सह° शां० विना॥ ६ मि सयणासणे शां मस विना॥ ७ °ववरो अक° शां विना॥

जं तुम्हं सिवं. विसज्जिया य मया सुद्धभागिणीओ होंतु-त्ति फण्णावंदं विसज्जियं । ताओ ममं पुप्फेहिं देवमिव अवकरेऊण गयाओ सगिहाणि । पच्छिमकाले य अन्नेसिं दिजमाणीओ वि न इच्छंति भत्तारं 'अम्हं स एव भत्ता' ।

पुच्छिया मया वुड्ढा—को एस पुरिसाओ ? त्ति । ते भणंति—सुणह—

सोयासपुरिसायस्स उप्पत्ती

कंचणपुराहिवस्स रण्णो एस पुत्तो सोयासो नाम मंसलोलो । रण्णा य कयाइं अमाघाओ घोसिओ । तओ सोयासगणूमा वंसगिरीओ मऊरे आणंति कुमारस्स मंसनिमित्तं । सूयस्स य वक्खित्तस्स कप्पिओ मऊरो विरालेण हिओ । सो भीओ कुमारस्स निग्गतो मंसहेउं—कत्थ लभेज भक्खगभक्खं वा ? । तेण बालरूवं परिहाए मंजमयमुज्झियं दिट्ठं, तस्स मसं सघयं, भोयणकाले कुमारस्स सोयासस्स दिण्णं । 'रसियं' ति भुत्त-भोयणो सूयं भणति—तुमं जाणमाणो अण्णया मम एरिसं न पयसि कीस ? त्ति । तेण अभएण विण्णविओ—देव ! विरहे वो कारण कहतिस्सं ति । तेण कयजलिणा सब्भूयं कहियं । सो तुट्ठो, पूजितो तेण सूदो भणिओ य—सोम्म ! अल अण्णेण मंसेण, पइदिवसं कीरउ जत्तो त्ति । ततो सयंमयाणि दाररूवाणि गवेसेति से मणूसा, अलभता य पच्छण्णं वहंति बालाणि । सो य गिद्धो माणुसमसस्स सेसाण न इच्छइ । पउरउवद्दवे य रण्णा पच्छण्णं रक्खपुरिसा ठविया । तेहिं गहिया कुमारमणूसा । तेहिं पुच्छिएहिं कहियं—सोयासस्स सामिणो नियोगेण अम्हे अणाहगयगाणि जीवताणि य विवाडेऊण मंस उवणेमो त्ति । परिचिंतेऊण रुट्ठेण रण्णा निव्विसयो आणत्तो । एगागी मारेऊणमाऽऽमगं पउलियगं च माणुसमंसं खायइ । रक्खसेण अहिट्ठितो भमतो इमं भूमिमागतो । विसओ तस्स भएण इहमावासिओ । तो जं पस्सति तं एक्केणेव लउडप्पहारेण मारेऊण खायति । साचइं पि जणं न गणेइ । तो तुम्हेहिं जणो परित्ताइओ त्ति ॥

उवणीयं मे भोयणं । समागयाणं वीणा-ऽणाहाणं दिण्णं भोयणं, दिण्णसेस भुंजामि । वसिऊण य तत्थ निग्गओ, गओ मि अयलग्गामं । तत्थ रायपहे एक्कस्स सत्थवाहस्स आवणं अल्लीणो । तेण अब्भुट्ठेऊण दिण्णं आसण । मुहुत्ततरेण य लाभो महंतो लद्धो । तेण वि नीओ सगिहं । मजिओ मि सोवयार । भुत्तभोयणस्स य मे पणओ कहेइ—

सुणह सामि !—अहं धणमित्तो नाम वइसजाइओ, सिरी मे भज्जा सरिसकुलसभवा, तीसे दुहिया मित्तसिरी दारिया । सा मया नेमित्तियस्स कहिया—पस्स ताव दारिकं, केरिसी से भवियव्वया ? । तेण लक्खणाणि परिसिऊण भणियं—एस पुहइपइणो भारिया भविस्सति । मया भणिओ—कत्थ सो ? कहं वा विण्णायव्वो ? त्ति । सो भणति—जम्मि ते पासट्ठिए सयसहस्सगुणो लाभो भविस्सति, तक्खणादेव तं जाणिज्जासि त्ति । तं एस दारिया तुम्हं सुस्सूसिया होउ त्ति ।

१ ततो शां० ॥ २ सयमय° ली ३ ॥ ३ तीते दु° शां० ॥ ४ °इवीपतिभा° शां० ॥ ५ जाणेजा° शां० ॥

ततो सोभणे दिवसे पाणिग्गहणवेलाए आणिया मित्तसिरी सिरीसकुसुमसुकुमालसरीरा, सरससररुहनयणलोभणमुही, सुहकमलभूमणकसणतारकालवियनयणजुयला । विहीय पाणिग्गहणे वित्ते उवट्ठविया सोलस कोडीओ सत्थवाहेण । ततो रमामहे सह तीए महुर वरभासिणीए ।

तस्स य गिहस्स समीवे सोमस्स माहणस्स दइया सुनंदा नाम माहणी । तीसे पचण्ह दारगाण अणुमग्गजाया भगिणी धणसिरी नाम दारिया । पुत्तो य से एक्को, सो मेहावी उल्लो । ततो मे वहेइ मित्तसिरी—अज्जउत्त[1] सोमस्स सुओ एस दारओ असत्तो चेय पढिउ, तेण दुक्खियाणि माहणाणि सचे ज्ज वो तिगिच्छं काउ जेण अज्झयणजोग्गो भवे ? । मया भणिया—तव पियनिमित्त पत्तिस्सामि त्ति । ततो से मया कत्तरीए जीहा तनु लिग्घयाए कसिणा छिण्णा, रोहणाणि से पउत्ताणि[2] । ततो विसद्दवाणी संवुत्तो । तुट्ठेहि य मे धणसिरी महुमासवणसिरी विव रूविणी उवणीया—दय[1] जीवाविया अम्ह दारय तिगिच्छतेहिं । सो य मे दारओ वेय पाढिओ, थोवेण कालेण बहु गय । ततो ह दोहिं वि मित्तसिरी धणसिरीहिं सहिओ कीलमाणो तत्थ वमामि किंचि काल ति ॥

॥ इति सिरिसंघदासगणिविरइए वसुदेवहिंडीए मित्त
सिरि धणसिरिलंभो छट्ठो सम्मत्तो ॥

मित्तसिरि ग्रंथाग्रम्-१ -६ सर्वग्रंथाग्रम्—५५७२-१५

सत्तमो कविलालंभो

उप्पण्णवीसभाए य सिं दोण्ह वि जणीण कहिओ मे पुच्छतीण पभवो सच्छंदविहारो य । ततो परिओसविसप्पमाणसोभासमुदयाओ संवुत्ताओ । अण्णया य पयहिऊण निग्गतो मि[3] गओ वेदसामपुरं । तत्थेव वहिया 'वीसमामि' त्ति उज्जाणमतिगतो । पस्सामि य तरुणजुवतिं एकाए वुड्डाए डहरएहि य चेडरूवेहिं सहिय उववणदेवयामिव किं पि हियय गयमत्थमणुचिंतयती[4] लेप्पयजुवतिमिव निचलच्छी झायमोणी अच्छइ । ततो सा मम पस्समाणी सहसा उट्ठिया, कंठे गहेऊण पकंदिता—सहदेव ! वल्लह[1] देवर[1] कओ सि ? त्ति । ततो कुसु मियाऽसोग छायासण्णिसण्णस्स मे कहइ रोवती—इह कविलस्स रण्णो महऽस्सपती पिया मे वसुपालिओ नाम, तस्साह दुहिया वणमाला णाम सा ह पिउणा कामरूवातो नरवइनिओएण कयाइ दोवेण रा(या)यस्स सुरदेवस्स कामरूवगस्स दिण्णा सो मम गहेऊण सगिहमागतो ततो ह सहदेव[1] तुमसि पवसिए कहिं पि सुरदेवेण कुलघरस्स सुमरमाणी करसइ कालस्स इहाऽऽणिया थोवस्स य कालस्स सो साहे सुरदेवो अप्पणो मम वा मदभागयाए पाणेहिं वित्तो ततो ह परमदुक्खिया गिहे रतिं अविंदमाणी इमीए धंहिरवुड्डाए थालरूवेहिं सहिया उज्जाणमिहमागया सोगविणोयणनिमित्त तुम प

१ सुपुञ्चज्जा° शा विना ॥ २ मित्तसिरि धणसिरीय लंभो छट्ठो सम्मत्तो शां ॥ ३ मि परिभमो मि वेद° शा ॥ ४ चिंतिअती शा० ॥ ५ °ओ पिच्छइ शां विना ॥ ६ वहिं तु° शा विना ॥

मे दिट्ठो, इयाणिं धिइं लभिस्सामो-त्ति एवं कहेइ । अहं पि णं 'हुं हुं' ति करेमि । चिंतियं च मया—कयमिमीए देवरनाडयं, तं पस्सामि ताव से परिणामं ति । सा य भणति—वच्चामो गिहं ति । ततो पत्थिया मो वेदसामपुरमज्झेण । विम्हितो जणो पेच्छति मं 'को णु एसो देवरूवि ?' त्ति । अइगतो मि वसुपालियगिहं ति । वणमाला कहेइ घरजणस्स—एस मे देवरो सहदेवो चिरपवसिओ दिट्ठो त्ति । तुट्ठेण य घरजणेण अच्छेरयमिव दिस्सहे । कयपायसोयस्स य सिणेहऽब्भंग[1]-सम्मद्दण-पघंसण-सिण्हाणाणि वणमाला करेइ सयं । सिणेहऽब्भंगगत्तस्स परिहियवत्थ[2]स्स य चिरायमाणे वसुपालिए उवणीयं मे भोयणं । भुत्तभोयणो य आसणगतो अच्छामि । आगओ वसुपालिओ । तेण मे कओ [3]पणिवाओ दंसणेणेव । कहियं च से वणमालाए—ताय ! एस मे देवरो सहदेवो त्ति । सो भणति—सागयं ते ? त्ति । पुणो पुणो य मे पस्सति । तीए य भणिओ—ताय ! 'तुब्भे चिरायह' त्ति भुत्तो सहदेवो. कहाऽवक्खेवो आसि ? त्ति । सो भणति—सुट्ठु कयं जं भुत्तो, मम पुण वक्खेवं सुणाहि—

कविलो राया भिगुणा नेमित्तिणा अण्णया भणिओ—राय ! कविला कण्णा सत्थकाराऽणुमयलक्खणोववेया अड्ढभरहाहिवपिउभज्जा भविस्सति । रण्णा पुच्छिओ—कत्थ सो होज्जा ? कहं वा नायव्वो ? त्ति । सो भणति—निमित्तबलेण भणामि—(ग्रन्थाग्रम्—५६००) जो फुलिंगमुहं आसं दमेहित्ति त जाणसु सो पुण गिरितडे सपयं अच्छति[4] देवदेवस्स गिहे । तं वयणं परिघेत्तूण महरिहवत्थाऽऽहरणा जे कुसला मणुस्सा ते भणिया—को त गिरितडाओ इहाणेज्जा अविजाणियं ?। तत्थ इंदसम्मेण इंदजालिएण पडिवण्णं—अह आणेमि तं तव नेमित्तीकहियं जामाउगं ति । सो सपरिवारो गतो अज्ज बहुयस्स कालस्स आगतो कहेइ राइणो—देव ! अह गतो गिरितडं, दिट्ठो य मया सो पुहवितलं[5]ति-लओ [6]मणस्स अच्छेरयभूओ. विज्जासाहणववएसेण य निणीओ गामाओ पव्वयकडयसंसि[7]ए य पएसे विमाणं जंतमयं रज्जुपडिबद्धं विलइओ राओ ततो णं गगणगमणसंठियं निस्संदं नेमो विमाए च नाऊण 'हीरामि' त्ति पलाओ, महाजवो न सक्किओ गहेउं. इमो य मे कालो परिभमताणं, ण य से[8] सुती वि लद्ध त्ति निवत्ता मो । तं एयमट्ठं सोऊणं राया विमणो 'कह तस्स पडिवत्ती होज्ज ?' त्ति वियारेमाणो अच्छति। तस्स समीवे अहं आसि । [9]एसाऽवक्खेवो-त्ति तेण वणमालाए कहियं ।

तं च वयण सोऊण मे चिंता जाया—जातं इहं अच्छियव्व ति । अवरज्जुके य वसुपालियसमक्खं वणमाला ममं भणति—सहदेवसामि ! सक्केह फुलिंगमुहं आसं दमेऊणं ?। मया भणिया—आसं दट्ठूण तस्स पगती विण्णायए । वसुपालिएणं भणिय—पस्सह आसं

१ °गगत्तस्स उम्मद्द° शा० विना ॥ २ °त्थनियत्थस्स शा० ॥ ३ पणामो दसणेण । क° शा० विना ॥ ४ °ति सुरदेव° शा० ॥ ५ °लस(म)गलतिल° शा० ॥ ६ मणुस्सअ° शा० ॥ ७ उ० मे० विनाऽन्यत्र—°सियपए° ली ३ शा०। °सियए य पए° क ३ गो ३ ॥ ८ से पउत्ती वि क ३ गो०॥ ९ एसो व° शा० विना ॥

सच्छंदेण । दिट्ठो य मया फुलिंगमुहो बालकुसुमपत्तरासिवण्णो, उविट्ठप्पमाणो, पण्णत्तरिं अंगुलाणि ऊसिओ, अट्ठसयगुलपरिणाहो, बत्तीसगुलिवयणो, आवत्तसुद्धो, पसत्थगुर-कण्ण केस-सर-संठाण-णयण-जघो, अतितेयरिसयाए जणारोहणीओ। तं दट्ठूण य मया भणिओ— सधा आस दमेऊण ति। वसुपालितो भणति—एगा पुण सन्दिट्ठो मि—जो इच्छति आस दमेऊण तस्स वियरह कामओ दमिय य मम निवेदसु त्ति त संदिसह ज पत्थ कायव्व। मया से वलिविहाण संदिट्ठं, कुचमुहीओ सकला पडियवाओ 'सूइओ चत्तारि कारह' ति। तेण जहासंदिट्ठ कय। अह वि पयमगलो फुलिंगमुहमभिरूढो। सूईओ सकलिय पला णस्स चउसु अंगेसु सन्निवेसियाओ। जओ पडिडमि ठवि तओ सूतीपडिपसिओ ठाति। उद्धाइओ निवारिज्जइ, न य सें दोस होति। तओ ठाउ इ ठवि, त वहिउमारद्धो। राया अवलोयणगओ पस्सवि। वायगजणो य सिक्खाकुसलो विम्हिओ य पससवि साहुवार-मुहलो। तओ मया तोसिओ य राया, दमिओ फुलिंगमुहो। इदसम्मो य परिसऊण मम पडिओ पाएसु—रामह ज अम्हेहिं तुम्ह भवियव अयाणमाणेहिं चेट्ठिय गिरितडे।

तओ सोहणे दिवसे कविला रायकण्णा दिक्खिया, अह य। उवणीया य मे समीव कणगसुघोयलिम्पिया विव देवया, नियपणिज्जमणोहरसरीरा, सरयपसाहियसरकोमलकम लवयणा। तओ हुओ विहिणा हुयासणो पुरोहिएण। गाहिओ मि पाणिं कविलाए राय वरकण्णाए कविलेण। तओ मे परमपरितोसविसप्पियनयणजुयलेण पयक्खिणीकओ जलण देवो, छूढा लायंजलीओ। उवणीया बत्तीस कोडीओ विलिएण कविलेण। धुवदसणसुम णसो य कविलाय सह मुदितो वसामि कविलरायगिहे। तस्स य सुओ असुमतो नाम कुमारो, सो म सेवति विणीओ। गाहेमि ण कलासु विसेस। कविलागुणपडिरत्तस्स निवसुयस्स य मे वच्चति कालो। जणेमि ण तत्थ इ कविल नाम कुमार॥

॥ इति सिरिसंघदासगणिविरइए वसुदेवहिंडीए
कविल(ला)लंभो सत्तमो सम्मत्तो॥

कविलालंभग्रन्थाग्रम्—श्लोक ६२ अ १७ सर्वग्रन्थाग्रम्—श्लोक ५६२१



---

१ °देण य। दि° शां विना॥ २ °वेत्तियम्ह त्ति शां विना॥ ३ °णगो प° शां०॥ ४ कविलालंभो सत्तमो समत्तो इतिरूपा पुष्पिका शां ॥